DR. BHAU DAJI
MEMORIAL

उपदेशो श्रुणण सम्यग्गाथा सूत्रार्थे आणीनाम नेतस्य वीतराग पदद्वार आद्यस्य मूलसूत्र कला निवार्तक हित अल्प बुद्धि विनयना कृत

॥६०॥ पद्यानां संयोग बाह्य अभ्यंतर रागादिक तेहथी मूकाणा छइ घरथकी रहित तते अणगारः भिक्षुक आचार वंत विनय प्रगट करीस अनुक्रमइं सांभलो कहुं तुम्हनें आणा आदेस

॥ संजोगाविप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो विणयं पाउकरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे १ आणानिद्देस

कारे गुरुनइ पासइ आवइ बेसइ गुरुनां इंगित आकार जाणइ तेहनइ विनीत कहीइ २ आज्ञा करइ बलीकेवी ते गुरुनइ पासइ नावइ

कर गुरूणमुववायकारए इंगियागारसंपन्ने सेविणीएत्तिवुच्चई २ आणाणिद्देसकरे गुरूणमणुववाय

करे प्रत्यनीक अबुद्ध मूर्खवचन कहइ ते अविनीत कहीइ ३ जिम कुतरो निकालीइ कीडा सडी कानि ते सर्व थानकथी निकालीइ कुशील अनाचारी

कारए पडिणीए असंबुद्धे अविणीएत्तिवुच्चई ३ जहासुणीपूइकन्नी निक्कसिज्जईसव्वसो एवंदुस्सील

प्रत्यनीक मुखरी वाचाल ते गुरुनइ ४ कणनो कुंडलो मूकी विष्टा खाइ सूअर जेम ते अनाचारी वाले तेहवा सुशिष्य काढीइ तेहनइ तीनइ मृगनी परि

पडिणीए मुहरीनिक्कसिज्जई ४ कणकुंडगंचइत्ताणं विठंभुंजइसूयरे एवंसीलंचइत्ताणं दुस्सीलेरमई

आत्मनूं हित करीवा चाहतो दृष्टांत सांभलीनइ ॥ सूअरनो भाव सांभलीनइ ॥ विनय ॥ आपणपुं स्थापइ पोतइ वांछतो हित आपणपो आत्मानइ ६ ते विनय

मिए ५ सुणियाभावंसाणस्स सूयरस्सनरस्सय विणएठविज्जअप्पाणं इच्छंतोहियमप्पणो ६ तम्हावि

करवो उत्तम आचार पामइ ज्ञानवंत मोक्षार्थी शिष्य किहां थकी पण न नीकालीइ ७ सुशिष्य गुरु पासइ रहे सदा मान लहइ मयलइ कदाचित्

णयमेसिज्जा सीलंपडिलभेजओ बुद्धपुत्तनियागट्ठी ननिक्कसिज्जइकण्हुइ ७ निसंतेसियाअमुहरी बु

कोपनकरइ क्षमा आपणइ विक्षमा गुरु सुशिष्य

बाल मूर्ख सरिस अर्थ युक्त सीखवइ सांभलि अनइ निरर्थक तिवारे वाकइ ८ सुशिष्य काढु कोपनकरइ क्षमा आपणइ वि ... गुरु ख

द्धाणअंतिएसया अट्ठजुत्ताणिसिक्खिज्जा निरट्ठाणिउवज्जए ८ अणुसासिओनकुप्पिज्जा खंतिसेविज्जपंडिए खु

कहीइ हीनाचारी सं घातइ संसर्ग हास्य क्रीडा वर्जइ ९ [illegible] करी अब बहु कालइ कीधुं सूत्र ॥ आलपाल बोलि कालइ भणी नइ ध्यान करइ एकाकी ॥ १०

ड्डेहिंसहसंसग्गिं हासंकीडंचवज्जए ९ मायाचंडालियंकासी बहुयंमायआलवे कालेणयअहिज्जित्ता त

वार पछी ध्यान करइ एक लूं अवीनीतवइ । १० किवारइ पापकर्म करीनें न उलवे किवारइ कीधानइ कीधुं कहइ अणकीधानइ अणकीधुं कहइ ११

ओझाइज्जएगगो १० आहच्चचंडालियंकट्टु नणिहविज्जकयाइवि कडंकडेत्तिभासिज्जा अकडंनोकडेत्तिय ११

[illegible] ॥ गलीयो बलद जिम वार वार कहवा न पामइ गुरु कहइ सुशिष्य गुरुनी आज्ञा आलपंपाल बोलइ ... जोइ पापकर्मनी परइ ... दूर रहइ ... वालइ ... ना ...

मागलियस्सेवकसं वयणमिच्छेपुणोपुणो कसंवदट्ठुमाइन्ने पावगंपरिवज्जए १२ अणासवाथूलवयाकुसीला

... करी माल करइ गुरुनइ चित्तइ ... कोमल करइ ... मल करीनइ सवता रिस १३ सुशिष्य ... अणाइ

मिउंपिचंडंपकरंतिसीसा चित्ताणुयालहुदक्खोववेया पसायएतेहुदुरासयंपि १३ नापुट्ठोवागरेकिंचि पु

अणपूछ्यो न बोलइ गुरु नुं अणपूछ्यो असत्य न बोलइ क्रोध करी मनइ प्रीय अप्रीय करी मनइ १४ आपणुं आत्मा तेह दमवो आत्मा निग्रह करीनइ सदा दमइ

ट्ठोवानालियंवए कोहंअसच्चंकुव्विज्जा धारिज्जापियमप्पियं १४ अप्पाचेवदमेयव्वो अप्पाहुखलुदुद्दमो अ

२

... सीख करवी ... नालायक

कलक ... उकडु ... इस्यात

अव ... आचार्य ... न ... वा ...

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

आत्मादमतुसुखीथाइ इहलोकिअनेपरलोकइ वरप्रधानआत्माद मइंकरीनइंसंयमइअ नदमीइअनेरांअपर बांधनेदोरकरीवध
१५ सुखुकृतउ नइ तपकरी १ नेइ बस्सइ लाकडइ, आस्यु
उ०ए२वो अप्पादंतोसुहीहोइ अस्सिंलोएपरत्थए १५ वरंमेअप्पादंतो संयमेणतवेणय माहंपरेहिंदंमंतो बंधणेहिवहे
करीन १६ प्रत्यनीकक आचार्यनें वचनइंकरीअथवाकाम अथवाअथ तानुंकाम नकरइ गुरुनुंकपूंकदीइ १७ शिष्यगुरुने
दमीइ पराबउ करवइकरीनइ इकाम हिंअपासिअ
हिअ १६ पडिणीअंचबुद्धाणं वायाअदुवकम्मणा आवीवाजइवारहस्से नेवकुज्जाकयाइवि १७ नपरक
मीनलिंगसआ अथवापाछलिअमीलिमि अनेगुरुदेषतापरनेपर अनेगुरुनुंवचनसंथारइबे साधुलगकानीपालठीनकरे अनेपइहींफि
पलनवइसइ अथपुंवदइनबइसइ पानाबकांधीनबइसइ [illegible] १८ कडतावांइ
उनपुरउ नेवकिच्चाणपिट्ठउ नजुंजेऊरुणाऊरुं सयणेनोपडिस्सुणे १८ नेवपल्हत्थिअंकुज्जा पक्खपिंडंव
हनीपालठी अनेसाधुपगलांबांधा नबइसइ गुरुआगलि १९ शिष्यआचार्यइंतेडयुथिकु अलीकअणबोलतुंनरहइक शिष्यगुरुनुप
नकरइ लीनइ हीइ साहवा
वसंजए पाएपसारिएवावि नचिट्ठेगुरुणंतिए १९ आयरिएहिंवाहित्तो तुसिणीउनकयाइवि पसायपे
क्षेतोमोक्षार्थी गुरुपासइरहुगुरुसेवाकरे मुसाथुगुरिबोलावुबोला बिसीनइरकदाचितक तजीनें बइसणु धीर विन
२० लाव्याकृतो तेतो छितांकदीइ कालि
हीनियागट्ठी उवचिट्ठेगुरुंसया २० आलवंतेलवंतेवा ननिसीएज्जकयाइवि चइऊणआसणंधीरो जउ
यवचनसांभलेपासें २१ थासनगउशिष्यआपणइंघू अनिसथारइरहानश्वइ आवीगुरुसमीपिउकडिका सुखइसूत्रार्थदावजोडीने
आवीन मनेरहासूत्रअर्थगुरुनेनपूछे कदापि सानेिसमीपगउधाघालीइ २२
जुत्तंपडिस्सुणे २१ आसणगउनपुच्छिज्जा नेवसिज्जागउकया आगमुक्कुडुउसंतो पुच्छिज्जापंजलिउडो २२ ग
नेउकडिकासनकदीइ

एहवागुणअनेविनय शिष्यनेसूत्रअनेअर्थ पुछतांकृतां शिष्यनइ गुरुकहेजेहवुंसांभल्युं २३ साधुमृषानबोलइ अनइ
सहीत बलिकइ होइतेह वु निश्चइ
एवंविणयजुत्तस्स सुत्तंअत्थंचतदुभयं पुच्छमाणस्ससीसस्स वागरिज्जजहासुयं २३ मुसंपरिहरेभिक्खू नय
भाषानबोलइअथवा अनइभाषानादो अनइमहामायावर्जइ २४ साधुनबोलइ सावद्यक निरर्थकमनताइन आपणइअर्थ
रणीनुंभाषावयनाषा दूषरिहरइ कपटवर्जइ पूछ्युं नबोलइ, बोलइ
उहारिणिंवए भासादोसंपरिहरे मायंचवज्जएसया २४ नलविज्जपुट्ठोसावज्जं नेनिरट्ठंनमम्मयं अप्पणट्ठाप
अर्थपरा अथवाबिजनइअर्थेजु २५ साधुलुहारनीकुकडए घरनइ महापंथिराज एकलोएकलीस्त्रीसाथइ बेसइनहीबोलइ नहीं
वीइ वउनबोलइ कलुअघसनेइघरइ अंतरइ मार्गइ
रट्ठावा उभयस्संतरेणवा २५ समरेसुअगारेसु संधीसुअमहापहे एगोएगित्थिएसद्धिं नेवचिट्ठेनसंलवे
२६ जेमुझनेआचार्यकहइ टाढेवचने अथवाकठोर तसुझनोलाभहोइ तेवचनयत्नइंकरीमानजइ २७ गुरुआज्ञाहितकेरवीबोले गीयद्युगीवइ
वचनइ तकरीमानइ पापावारक
२६ जंमेबुद्धाणुसासंति सीतेणफरुसेणवा ममलाभोत्तिपेहाए पयउतंपडिस्सुणे २७ अणुसासणमोवायं
दुहतपापनइमूकावइ हितमानइतेशिष्यनें द्वेषमानइशिष्यअसाधुजेहते २८ सुशिष्यहितमानइसरसत्य कर्कशवचनकठक
वइशिष्य माउ कहीइ शिष्यआचार्यनुं
दुक्कडस्सयचोअणं हिअंतंमन्नएपन्नो वेसंहोइअसाहुणो २८ हिअंविगयभयाबुद्धा फरुसंपिअणुसा
शिक्ष तेवचनदुषहइपकार किमीवडगुरुशिष्याहितिं २९ साधुवइसइनीचइआसन हालतइजा थिराकानि कानविषेपेमांडुक
चनइ मूर्खनइ क्षमानइनिर्मलपणुंकरिवइ शिगुरुथकीऊंचउनवइसइ मनिनबेसइ थइसइ दइ चपलपणइन
सणं वेसंतंहोइमूढाणं खंतिसोहिकरंपयं २९ आसणेउवचिट्ठिज्जा अणुच्चेअकुएथिरे अप्पुट्ठाईनिरु

उत०८

जइ वेलायं निग्गछइ भिक्खु साधु काले जे नीसरइ निक्खेने काले करे कालेलेई निक्खमावे अकाल सन्ना विवर्जीने समयइ करे
णाइ निग्गछए भिक्खू ३० कालेण य निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे अकालं च विवज्जित्ता काले का
क्रियाः नुशन साधु गृहीनइ यति गृहाप्रति ... साधु ... आहार ... यति ... आहारादि ... करइ ३१ ... एषणाइ चाजइ योग्य ... नइ
लं समायरे ३१ परिवाडीए न चिट्ठिज्जा भिक्खू दत्तेसणं चरे पडिरूवेण एसित्ता मियं कालेण भक्खए
३२ ... साधु ... एकरखो ... साधु ... अर्थे ... ३३ ... नाइ
३२ नाइदूरमणासन्ने नन्नेसिं चक्खुफासओ एगो चिट्ठिज्ज भत्तट्ठा लंघिया तं नइक्कमे ३३ नाइउच्चे व नीए वा
... फासु ... संयत साधु ३४ ... दियादि ... कढ्वामि ... नमइ
नासन्ने नाइदूरओ फासुयं परकडं पिंडं पडिगाहेज्ज संजए ३४ अप्पपाणेप्पबीयंमि पडिछन्नंमि संवुडे
... ३५ ... ३६ ... ३६ ...
समयं संजए भुंजे जयं अपरिसाडियं ३५ सुकडित्ति सुपक्कित्ति सुछिन्ने सुहडे मडे सुणिट्ठिए सुलट्ठित्ति
... ३६ ... २६ ... गुरु
सावज्जं वज्जए मुणी ३६ रमए पंडिए सासं हयं भद्दं व वाहए बालं सम्मइ सासंतो गलियस्सं व वाहए ३
... बालक ... साधु ... सामायक ... बुद्धि ... गलियार ... साधु ३७

गुरुवचन ... चपेटाकरी आक्रोसकरी वधकरी ... गुरु ... ३८ पुत्र ... साधु
३७ खड्डुया मे चवेडा मे अक्कोसा य वहा य मे कल्लाणमणुसासंतो पावदिट्ठि त्ति मन्नई ३८ पुत्तो मे भाय णाइ
... गुरु ... ३९ ... गुरु ...
साधु ... गुरुनी सीखमानइ
त्ति साहू कल्लाणमन्नई पावदिट्ठी उ अप्पाणं सासं दासं त्ति मन्नई ३९ न कोवए आयरियं अप्पाणं पि न कोवए
आचार्यने कदाचित् ... कदाचित् ... ४० ... आचार्यनइ कोप्या ... करी ... कोप
... गुरुना ... जाणीनइ गुरुनो मन ...
बुद्धोवघाई न सिया न सिया तोत्तगवेसए ४० आयरियं कुवियं नच्चा पत्तिएण पसायए विज्झविज्ज पंजलिउडो
... ४१ ... धर्मने ... व्यवहार ... आचरित ... व्यवहार ... साधु ४२
... सदा ...
वएज्ज न पुणोत्ति य ४१ धम्मज्जियं च ववहारं बुद्धेहायरियं सया तमायरंतो ववहारं गरिहं नाभिगच्छई ४२
मननु कार्य वचननु ... आचार्यनु ... कार्य ... ४३ ...
कार्य ... निरंतर
मणोगयं वक्कगयं जाणित्तायरियस्स उ तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ४३ वित्ते अचोइए निच्चं खि
... गुरु ... ४४ ... गुरु कार्य करवानइ ...
प्पं हवइ सुचोइए जहोवइट्ठं सुकयं किच्चाइं कुव्वई सया ४४ नच्चा नमइ मेहावी लोए कित्ती से जायए

तिलि छक्कत्य व्यावच्चादि तिमइ जीवन्नेत्र प्राणीआ ४५ पूज्यआचार्य तेहनइ आचार्य पूर्वसंस्तव्या क तेहमनु विद्याकामदइ
कराणेआरणे कनिक [illegible] नइआधारेजइ जिन मादकरइ हीइप्रसीचित प्रसन्नमुज्ञान

उपदबुध हवइ किच्चाणसरणं भूयाणजगईजहा ४५ पुज्जाजस्स पसीअंति संबुद्धापुव्वसंथुआ पसन्नालाभइस्संति

२ विउलं विस्तीर्ण अर्थीयकरीइ तेमाबुद्धनीक विनी कन्यामाद वलीकिहवानइं श्रय कर्मजेह आवि वलीतपसमाचारीसमाधि
मोक्षार्थमहितकलपमाडइ जे अवेमाणुतर ते हवइ ममार्पइ निश्चलवइ समाचारी १ लक्ष्मी रीमङ्गतसंवरमहित

विउलं अहिअं सुयं ४६ स पुज्जसत्थे सुविणीअसंसए मणोरुई चिट्ठइ कम्मसंपया तवोसमायारिसमाहिसं
वलीकहवावेमहाद्युतिकांतिवतलइपां ४७ तेदेवकेवुवे गधर्वादेवमनुष्ये पूजीइ इन इमेल अपवित्रकाया तेमिइसोइभ्यो
चमाहाव्रतपाल इवइ पूजितहइ हवइ नीपतुरतवाधिनइ ततामइ डाइ श्रय

वुडे महज्जुइ पंचवयाइं पालिया ४७ स देवगंधव्वमणुस्सपूइए चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं सिद्धे वा

देववाइं अल्परिजया माहर्द्धिकथाइ अनुस्वतामीइ मक ४८ विनय श्रुत प्रथम अध्ययन संपूर्ण सुधर्मस्वामिकहइ जंबूप्रतइ
निलोभी [illegible] [illegible] अध्याक अपकिर २२ सांभल्युमइ [illegible]

४ देववाइं हवइ सासए देवे वा अप्परए महिड्ढिए त्तिबेमि ४८ विणयसुयपढमअज्झयणंसम्मत्तं १ सुयंमेआउसंतेणंभ
भगवंतेइमकह्यो लाभइ तिनजाणिनेमा श्रमण भगवंत महावीरइ काश्यपगोत्रीइ कह्या जेमाधु
बावीस परिसह

गवयाएवमक्खायं इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भि
जीएसांभलीनइ जाणीनेजे जीपीनइ गोचरीइ पर्याइ परिव्रजतु कहिता परिसहे करसुजेहसाधु १ जेबुस्वेइ
भिक्षाचरीकरी जाउ मार्दन हवइ

क्खूसोच्चानच्चाजिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठोनोविहन्नेज्जा १ कयरे ख

सुधर्मजीकहइ निश्चइते श्रमण भगवंतइ महावीरइ काश्यपगोत्रीइ कह्या जेमाधुसाध्यसांभली जीपीनइ
बावीसपरिसह भिक्षाचरीकरी

लुतेबावीसपरीसहा समणेणंभगवया महावीरेणं कासवेणंपवेइआ जेभिक्खूसोच्चानच्चा जिच्चा अभिभूय
गोचरीइ परिव्रजतु जातो परिसहे जेहुमाधुमार्गनदलो एते निश्चइ बावीसपरिसह श्रमण भगवंत महावीरे काश्यपेक

भिक्खायरियाएपरिव्वयंतो पुट्ठोनोविहन्निज्जा २ इमेतेखलुबावीसंपरीसहा समणेणंभगवयामपकाय
जेमाधु सांभलीजाणी जीपीनइ गोचरीइ जातो बावीसपरिसह कह्या तेकिमते भूखनु परिसह १
तरसनुइ लाइ कहइ

इलिरकसुद्या जिच्चा अभिभूअ भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुठ्ठोनोविहन्नेज्जा तंजहा दिगिंछापरीसहे
तरसनुपरिसह २ टाढिपरीसह ३ तापनोप ४ डांसमसानु मइलावस्त्रनो अरतिरतिपरीसह ७ स्त्रीनुप ८ चालवानु ९ नि
परिसह परीसह ५ परिसह ६ परिसह परिसह

१ पिवासापरीसहे २ सीयपरि ३ उसिणप ४ दंसमसगप ५ अचेलप ६ अरतिरतिप ७ इत्थीप ८ चरीआप ९ नि
सिकाबेसवाना उपाश्रयप्रमुख कारीसकरे १२ कोमारेलणे विहरवानु १४ नपामेनेरीस रोगआवेकालहवे १६ दी
वामणामाल १० ग्राहुइर ११ तपनइ १३ परिसह बाढ १५ परसासरइ तेसहइ

सीहिआपर १० सिज्जापरी ११ अक्कोसप १२ वहपरी १३ जायणाप १४ अलाभप १५ रोगप १६ तणफासप १७ ज
ल्लनुप १८ कोमानदइ अभ्युत्थान नातलाज्ञा २० धर्मनइ तपनेकरइ २१ सम्यक्त्वनोप तपरिसहनी विचारणा काश्यपगोत्री
रिसह पमानइ तेसहइ १९ बहुंगर्वनकीजे रुपाइनेअज्ञान १० रिसह २२

ल्लप १८ सक्कारपुरक्कारप १९ पन्नापरी २० अन्नाणपरी २१ दंसणप २२ परिसहाणंपविभत्ती कासवेणंप

४

MEMORIAL
MEMORIAL

प्रवेदिता तीर्थंकरदेवइं कहिया केतलाएकं ... सांभलीनइं भिक्षु ... फलादिकनी कथा॥

...सा तउ उदाहरे स्सुएमि आणुपुव्विं सुणेह मे २ दिगिंछापरिगए देहे तवस्सी भिक्खु थामवं न छिंदे

छिंदावए न पए न पयावए ३ कालीपव्वंगसंकासे किसे धमणिसंतए मायन्ने असणपाणस्स अदीणमण

सो चरे ३ तउ पुट्ठो पिवासाए दोगुंछी लज्जसंजए सीउदगं न सेविज्जा वियडस्सेसणं चरे ३ छिन्नावाएसु पं

थेसु आउरे सुपिवासिए परिसुक्कमुहे दीणे तं तितिक्खे परीसहं ४ चरंतं विरयं लूहं सीयं फुसइ एगया

नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासणं ५ न मे निवारणं अत्थि छवित्ताणं न विज्जए अहं तु अग्गिं सेवामि इ

इ भिक्खु न चिंतए ६ उसिणपरियावेणं परिदाहेण तज्जिए घिंसु वा परियावेणं सायं नो परिदेवए ७ उ

५

ण्हाहितत्तो मेहावी सिणाणं नो वि पत्थए गायं नो परिसिंचिज्जा न वीएज्जा य अप्पयं ८ ९ पुट्ठो य दंसमसएहिं स

मरेव महामुणी नागो संगामसीसे वा सूरो अभिहणे परं १० न संतसे न वारेज्जा मणं पि न पउसए उवेहे

न हणे पाणे भुंजंते मंससोणियं ११ परिजुन्नेहिं वत्थेहिं होक्खामि त्ति अचेलए अदुवा सचेलए होक्खं

इइ भिक्खु न चिंतए १२ एगयाऽचेलए होइ सचेले आवि एगया एयं धम्महियं नच्चा नाणी नो परिदेवए १३

गामाणुगामं रीयंतं अणगारं अकिंचणं अरई अणुप्पवेसे तं तितिक्खे परीसहं १४ अरइं पिट्ठउ किच्चा

विरए आयरक्खिए धम्मारामे निरारंभे उवसंते मुणी चरे १५ संगो एस मणूसाणं जाउ लोगंमि इत्थि

उणएस्वर्ग अनुभव रूप जा तिहनइ सुखइ वारिज्र एआवलेइ मेधावी कहि कादवसरीषी स्त्री जाणीनें एसी
तेहुने इ छलमइ १५ इनाकाङ्गा॥ चितवइ

संगोएसमणूसाणं जस्सएआपरिण्णाया सुकडंतस्ससामन्नं १६ एवमादाय मेधावी पंकभूया उ इत्थीउ नोता
स्त्रीएजमननी अनइ साधु आत्मस्वरूप साधु एवतकेतोराग स्त्री परीसहनी जीपीनइ गाम अथवा नगरनइ निगमए राजधानीनइ
राद विचारतो चालइ इपरिहतवलीचालेकेदबुत नीतिमापुलीदेकदइ नीति विषइ राहमी विषइ परिस

हिं विहन्निज्जा चरिज्जगावसए १७ एग एव चरे लाढे अभिभूय परीसहे गामे वा नगरे वावि निगमे वा रायहा
स्त्रीए १७ साधु सर्वरहीत कृतो चालइ अनइ परि सहनकरइ अनइ साधु गृहस्थसुं जेनस्वगामाइ अविहार करे अमनानि अवस्
उचाले गृहस्थाकरतु अमकेवामि जाइ समतापितवे १८

णीए १८ असमाणो चरे भिक्खू नेव कुज्जा परिग्गहं असंसत्तो गिहत्थेहिं अणिएओ परिव्वए १९ सुसाणेसुन्न
नेपइरि अवहदसूल एकलु आवीरदे सामयाल्पिरस पीवेसइ आल्प राजा अवनइ ना निराल साधु आर्य जु अयमपीठइ तेसदन
सन तमाहइ मिजइ ना कता

गारेवा रुक्खमूले व एगओ अकुक्कुओ निसीएज्जा न य वित्तासए परं २० तत्थ से चिट्ठमाणस्स उवसग्गाभिधारए
अनइ उपसर्ग पीनीनो कापी उद्दीनइ अनेरइ आसनि १ २० तेवारन अनुपालनार साम्या तपयती आमवकहीइ स्वाध्याय की जिला
दक्षकानजाइ एव वीपरिसह न्यनपाय याइकरी वन समता अमइ बलवंत

संकाभीओ न गच्छेज्जा उट्ठित्ता अन्नमासणं २१ उच्चावयाहिं सिज्जाहिं तवस्सी भिक्खु थामवं नाइवेलं
वानदइ अनइ कुनवेप आवत्ताव २२ साधु वइरि ककंदइ ताजि कहुंवाम अथवा दुःखइम एकरात्रि माहइ सुख करवु वइ इम
उपावइ सोइ मलमपलइ वृजं तवसानिलाय करी नाचन वइ

विहन्निज्जा पावदिठिविहन्नई २२ पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं कल्लाणं अदुव पावगं किमेगराइं करिस्सामि एवं ६

इमाति ला अहीआसइ आक्रोसक कविनवतन परम साधु तेहु परिसहतिल कोपक स्तुत पीअरि युमइ तेनपीसाधु कोपनकरेरइ
एवमति नापरिसह ११ नि रानइ यतीनवा जइ इनहीं

एवंतत्थहियासए २३ अक्कोसिज्ज परो भिक्खू नतेसिं पडिसंजले सरिसो होइ बालाणं तम्हा भिक्खू नसंजले २४
साधु कनोरवचनसांभलीने केरूवी तसामा हारण रत सांभलीनइ आपणवो नेलोकनुवालमु निनाणे १२ साधुसुद्यादि केहणु
सइ वलीके दुःबोइदिय लाटइ कोपन करे इ

सोच्चाणं फरुसा भासा दारुणा गामकंटगा तुसिणीओ उवेहेज्जा नताओ मणसीकरे २५ हओ न संजले भि
मनमादि मणहेषना पुइ अनइ सहइ उकाहरा यतीक्षमावानो चितवइ २५ श्रमण संयतनइ मानइ कोएकिहिकालि
लीनइ जिनतेशियनइ

क्खू मणंपि न पओसए तितिक्खं परमं नच्चा भिक्खुधम्मं विचिंतए २६ समणं संजयं दंतं हणिज्जा कोई कत्थई न
नहीजीवनुनाश इमचीनवइ यती १३ तो साधुनि सदइ निरंतर अणगारनइ निहननइ सु मागतमानइ सर्वे मागुं अलइ
एदोहिल्युलइ

त्थिजीस्सनासुत्ति एवं पेहिज्ज संजए २७ दुक्करं खलु भो निच्चं अणगारस्स भिक्खुणो सव्वं से जाइयं होइ न
नहिकाइ इ आणमागु २७ जे साधु गोचरीइ गया हाथ लाजइ करी पसारे तावनाथ उलाजतु ची इमयतीन चितवइ
नही नतो गृहस्थावास मलो

त्थिकिंचिअजाइयं २८ गोयरग्गपविट्ठस्स पाणीनासुप्पसारए सेओ अगारवासुत्ति इइ भिक्खू न चिंतए २९
सयत रहीनइ घरि ग्राम नोजननी पनइ पामिउ पिंड मैं अलनपामु पछिप आतापन करइ साधु आजइ भाचना करतु
वाइइ २९ कोइ नहीं लहु

परेसु घासमेसिज्जा भोयणे परिणिट्ठिए लद्धे पिंडे अलद्धे वा नाणुतप्पिज्ज संजए ३० अज्जेवाहं न लब्भामि

नइका
रापा पाइवइ
एना वनाल्क
णनेइखक
इइएदवाव
वन

मि अवि लाभो सुए सिया जो एवं पडिसंचिक्खे अलाभो तं न तज्जए ३१ २४ नच्चा उप्पइयं दुक्खं वेयणाए दुह-

अपि लाभ नाइं कालि थाय आज मुझने न मिल्यो तो काले मिलस्यै इम विचारें तेहने अलाभ परीसह न हुइ ३१ जाणीनइ उपनुं दुख वेदनाइं रोगनुं

ट्टिए अदीणो ठावए पन्नं पुट्ठो तत्थ हियासए ३२ २५ तेगिच्छं नाभिनंदेज्जा संचिक्खत्तगवेसए एवं

पीड्यु अदीनपणइ थिर मन करइ कर्मनुं कारण आलोचइ आसहइ साधु ज्यारे रोग उपनो तिवारे औषध करवानी वांछा न करइ आतम गवेसक रहइ

खु तस्स सामण्णं जं न कुज्जा न कारवे ३३ २६ अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो तणेसु सुयमा-

इस्यो रहिनै बोले अपि निश्चइ ते साधुनें साधुपणु जे वैद्य न करे न करावे तेहनु वली तेहने ३३ अल्प वस्त्रनइ लूखा आहारी संयमी तपस्वीनइ तृणनइ विषइ सूतांनइ

णस्स हुज्जा गायविराहणा ३४ आयवस्स निवाएण अउला हवई वेयणा एवं नच्चा न सेवंति तंतुजं

शरीरनी विराधना हुइ तृणस्पर्श ते जाणीनइ आतापना तडको वेदना उपजै ए जाणीनइ वस्त्र न सेवइ तृणनी पीडा सहइ

तणतज्जिया ३५ २७ किलिन्नगाए मेहावी पंकेण व रएण वा घिंसु वा परितावेणं सायं नो परिदेवए ३६

साधु मेलि करी मलीन गात्र पसेवड करी शरीर मलीन थाय ग्रीष्मकालनइ तापइं सुखने काजे विलाप न करे

वेएज्ज निज्जरापेही आरियं धम्ममणुत्तरं जाव सरीरभेउ त्ति जल्लं काएण धारए ३७ २८ अभिवायणम

साधु कर्मनी निर्जरा वांछतो आचरइ धर्म सर्वज्ञनो शरीरनु विनाश जाव मल परीसह सहइ साधु स्वामी सामा आवी जे

णुट्ठाणं सामी कुज्जा निमंतणं जे ताइं पडिसेवंति न तेसिं पीहए मुणी ३८ अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्ना-

वंदनादिक न करे तेहने निमंत्रण न करे ते लोकने सेवइ लोक तेहने साधु वांछा न करइ ते साधु कषायरहित थोडी वांछा वली केहनी

सी अलोलुए रसेसु नाणुगिज्झेज्जा नाणुतप्पेज्ज पन्नवं ३९ २९ से नूणं मए पुव्वं कम्माणाणफला कडा

अणजाण्यो पीनग्रही रसनें विषइ गृद्धिपणु न करे साधु सरस आहारनी पश्चात्ताप न करइ ३९ निश्चइ में पूर्वइ कर्म अज्ञानफल कीधा

जेणाहं नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कण्हुई ४० अह पच्छा उइज्जंति कम्मा नाणफला कडा एवमस्सा-

जिणइ हुं न जाणु पूछ्यो कोइकइ सर्व जाणु ते अज्ञान फल विपाक उदय आव्या पछी

सि अप्पाणं नच्चा कम्मविवागयं ४१ ३० निरट्ठगंमि विरओ मेहुणाओ सुसंवुडो जो सक्खं नाभिजाणामि ध-

कर्मनु विपाक जाणीनइ आतमाने साधु सहइ अज्ञान परीसह

म्मं कल्लाणपावगं ४२ तवोवहाणमादाय पडिमं पडिवज्जओ एवं पि विहरओ मे छउमं न नियट्टई ४३ ३१

तपनइ उपधान अंगीकरी प्रतिमा पडिवजी इम पिण विचरतां मुझने छद्मस्थपणु निवर्ते नही

नत्थि नूणं परे लोए इड्ढी वा वि तवस्सिणो अदुवा वंचिओ मि त्ति इइ भिक्खू न चिंतए ४४ अभू जिणा अ-

उ०टबु

८

ददृना अथवाआगलिजमइ एजुठ कुरणजाणइ ददबुमाबुनेवीतलइए ४४ ग्रा एतावीमयस्मिदसमय कालपणगोवो श्रीम
त्तामिड़ाकनो मर्वस्मा बुरुम बीनवइ लाइ लावीरइकपि

ढिलिंगा अडवा विन विस्सइ मुसातएवमाहंसु इइ भिक्खु न चिंतए ४५ ग्रा एए परीसहा सव्वे कासवेण पवेइ

जिनद्वानाजाणइ कांपरीसह फरसुजतोमयम इकहइनदीतसव ४५ परीसह अध्ययनसहुले बीजुएर एतीवसमासमार
इमकदसाधीर हुरर लमणकरनुसार

आ जे भिक्खु न विहणेज्जा पुट्ठो केणइ कएहुइ त्तिबेमि ४६ परीसह अज्झयणं सम्मत्तं बीयं चत्तारि परमं

अंग दोहिलापामइ जीव तेकिहाशमनुषा सेतारसमि अहीलावइमनइसमयमनेर बलीसमारकेद्दबुलमसार
बततणसुभनज ३ २ विष्ट बलव नाजीवपामइ गुरुआगोत्रनेजाति

गाणि दुल्लहाणीह जंतुणो माणुसत्तं सुइ सिद्धा संजमम्मि य वीरियं १ समावन्नाण संसारे नाणागुत्तीसु

नीककेइवा नानाप्रकारकर्म्मनाक प्रथकरविस्तारइ २ जीवसमारेसमनुबकएक नरकेपणितेमीव एकदाअसुर
अइजली शलगारइ नमाइबुधाबइ बादवलोकइजाइ एकदाप सावइ

जाईसु कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढो विस्संभिया पया २ एगया देवलोएसु नरएसु वि एगया एगया आ

नेवमाद आधाकद्दीजीवजाल्याक ३ एकदातउजनीव निरपुवासालवाइस जीवबुकमक तेहजीवकीलुलामाद तिलाथीइ
इसाइ मीलपार करीनइ दियोमाइ दैसाजनीवकुलपिताकव कलानानेहनु इवतगमाफिवोवइ बुयामाद

सुरं काउं आहाकम्मेहिं गच्छइ ३ एगया खत्ती होइ तउ चंडाल बुक्कसो तउ कीड पयंगो य तउ कुंथु

कीदामाआवे ४ एहवेणप्रकारेइजीवकर्मइकरी शाणीउकर्मकरीमेलोकीबु समारथिकनथीनिवर्त्तं जिमक्षत्रीयपरुहापाइथाकी
नानाविधयोनिसम ना तेवइ मक रेनुपावडंनोस २५

पिवीलिआ ४ एवमावट्टजोणीसु पाणिणो कम्मकिब्बिसा न निविज्जंति संसारे सव्वट्ठेसु व खत्तिआ ५

पुनरेषु कामकर्त्तइ

८

पाणीजीवकर्मसंगइक दुखीजतोघणी वेदनाइ माणसनीयोनिपाम्वइ हणाइसयलाइजीव ६ आबुधाय
रीमूढप नाइ लीप्रथकिमे

कम्मसंगेहिं संमूढा दुक्खिया बहुवेयणा अमाणुसासु जोणीसु विणिहम्मंति पाणिणो ६ कम्माण

हीधिकी जीवकुबाइवोबुयार आवइमाणसनीयोनि आवइमाणसानीयोनि ७ तिजीवमाणसनुआरीरपामी
रुक्सइकर्मइ आनुपूवी एका जीवामाद्दिकुदइवाबुयार नइ

तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइ उ जीवा सोहिमणुप्पत्ता आययंति मणुस्सयं ७ माणुस्सं विग्गहं लद्धुं

सामलानासधीगादहि मेमानलीनइपामइ तपक्षमाजीवदया ८ कदापिमानलवानायो तावकुसांदोहिलु
ली गमिआनु

सुई धम्मस्स दुल्लहा जं सुच्चा पडिवज्जंति तवं खंतिमहिंसयं ८ आहच्चसवणं लद्धुं सद्धा परमदुल्लहा

सामलीनइ मोक्षमार्ग घणुतकाणामइसावखे ए जीवसिरुतसामव्रुथ बीर्यबारदोहिलु घणुइजीवजाणउजतो
वना बीजे आस्त्र सायामीनइ

सुच्चा नेआउअं मग्गं बहवे परिभस्सइ ९ सुइं च लद्धुं सद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं बहवे रोयमाणा

धर्मनुअक्षमपक्षिवजइनहो १० जिममनुष्यपणुपामीनइ जोधर्मकुसामलीसहहे जेतपनेवीर्योचारउद्य संवरीजेनो
मलहीनइ

वि नो अ णं पडिवज्जए १० माणुसत्तंमि आयाउ जो धम्मं सुच्च सद्दहे तवस्सी वीरियं लद्धुं संवुडे

जयापनइफकर जीवनिर्मलथाइमाया रहतोने निर्मलधर्मनइविषेउरहे तेमाकुगेकूटपपणपामइ धीइसीच्याविध्यानरनी
जतो पाकदीसुमाइ

निद्धुणे रयं ११ सोही उज्जुअभूअस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ निव्वाणं परमं जाइ घयसित्तव्व पावए

उत्तरवु॥

१३ तेजीवकर्मतणुदेवलोकमांहिनइ जमकपात्र्यंकमाहि तेपासेवकरीइमाटीचुत्रा उहिदेवलोकजाइ १३ तादवाविशाल
रीरवंदिनइ

१४ विसालिसेहिंसीलेहिंजरकाउत्तरउत्तरा महासुक्कावदिप्पंता मन्नंताअपुणच्चवं १४ अप्पियादेवकामाणंक
निर्मलसीलकरी जरकरूपउत्तरुप्रदेवने मोटाउकलपनासीसूर्यच जेदेवस्थायणउमाराजाणे वे देवताकामभोगपाम्याते वलीके
इनीपरइदीसइ वइ एववुमानतानथीतथीइ १४
हिसीजिहिं जरकउत्तरउत्तरा महासुक्काव दिप्पंता मन्नंताअपुणच्चवं १४ अप्पियादेवकामाणंक
इरसारूपविउरवइ तेदेवलोकेरहइछइ पुवेवरसनासइकाण्नेया १५ देवतिहांयथास्थानकिरहीने जरकाआउखइकरी
युपरहइ
मरूवविउविणा उड्ढंकप्पेसुचिट्ठंति पुव्वावाससयाबहू १५ तत्थठिच्चाजहाठाणं जरकाआउरकरा
निपवइ उपजइमाणसनीयोनि तादवरूसाजालसंहितम १६ हिरण्यपसरपिराण पशु दासदासी इत्यादिक
उष्मध्याइलाकमाजाल नमिरवस्तु हार आरिकाम
चुआउवंतिमाणसंजोणिं सेदसंगेभिजायए १६ खित्तंवत्थुंहिरणंच पसवोदासपोरसं चत्ता
नांबंधाणिदशबोल तिहांकथनइतेबोल १७ मित्रवंत नातिवंतहोइउ अंजाणोत्र रूडोवर्णहुइ रोगरहितहोइ महाप्र
मइ आगलीगाथाइकहीते जइर हुइ जाइइ
रिकामरखंधाणि तत्थसेउववज्जइ १७ मित्तवंनायवंहोइ उच्चागोएअवन्नवं अप्पायंकेमहापन्ने
ज्ञलीनरूपउजसवंत बलवंतउप सारषधामलीइदत्ताबालपण उक्रमनुस्कथाकयालगइ निर्मलक्षत्रधर्मपामी केवलबो
तजइ १८ मनमनुष्यनालागातोगवीनइ धि
अभिजाएजसोबले १८ भुच्चामाणुस्सएभोए अप्पडिरूवेअहाउयं पुव्वंविसुद्धसद्धम्मे केवलं

१०

समकितजाणीने १९ जिसीसंयमसुखीनदूलभजाणी संयमपडिवजीनइ तपइकरीफेरइकर्मअंश पछेसिद्धथास्यस्थनीपमे
मारिरूपालइ इत्युं वोल्युं
बोहिंबुज्झिआ १९ चउरंगंदुल्लहंणच्चा संजमंपडिवज्जिआ तवसाधुअकम्मंसे सिद्धेहवइसासए
नइत्युकहूं २० चउरंगअध्ययन संपूर्ण ३ जीवीतव्यसमारइ जीवप्रमादमकरि जराइपस्याउंतेनिअशरणकहेता
२० नातवहेइवइ कारोषइनेरी
त्तिबेमि ३ चउरंगज्झअज्झयणंसम्मत्तं ३ असंखयंजीवीयमापमायए जरोवणीयस्सहुनत्थिताणं
जीवइमजाणिलोकप्रमादइकरीइत्स्वे केतुवोलेआदीविरमानिवीषदिमानाकरे जेपापकर्मेइकरीधनअपाइमालसा सपावरइमा
गही नारकनइ जोइजो मइ वारवे अनइअयाणी नाथवइरीलेहे १
एवंविआणाहिजणेपमत्ते कंनुविहिंसाअजयागहिंति १ जेपावकम्मेहिधणंमणुस्सा समायय
यावेन अमतिग्रहीनइ तमनुष्यसंसाररूपीयापासनइ विस्तानोध्यानरकिजाइ इष्टांतवलीदेखा तेनचोरसंधिमुखपाडे नु
विष इववाविइ जिमकारालीतंमरइतिम इइहइ जिम उधइरहातकालु जेतो
यंतिअमइंगहाय पहायतेपासपईहिएनरे वेराणुबद्धानरयंउविंति २ तेणेजहासंधीमुहेग
पोतानइकर्मइकरीनइकातनलीइका एणइइहा नइउजालाकइ कीधाकर्मनुमोक्षमुकाइनहीभोगव्याविना संसारने
पीइछइचोरकइदुषइपापकारी परलोके इहलोकि ३ नइशीन
हीए सकम्मुणाकिच्चइपावकारी एवंपयापिच्चइहंचलोए कडाणकम्माणनमुरकुअत्थि ३ संसा
ऊतोपरअनेरनइअर्थइ पुत्रकलत्रमित्रनइअर्थइ जेमा तकर्मनोभोगववानइकालइ साइएवधमातपितापनमु
धारणकर्मबइ काइअनेमित्रपिरतेइपांण
रमावन्नपरस्सअट्ठा साहारणंजंचकरइकम्मं कम्मस्सातेतस्सउवेअकाले नबंधवाबंधवयंउ

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

उववृ

सा पढेनदी इप्यइत्रास्तानुरूइश्रमादीनइ ।। इहलोकि अथवा परलोकि दीवुनाउइकाइदेयनदीपूर्वदीवुहरनदीवु । इमादक
ध शनेक इश्व इ दीइप्रगुसथकारइमूढउइतिमनी वानेकीयाथकनी इमा०

ट्ठिं ति ४ विज्जागतारणवल्लभेण ललिए हंसमिलाए ओउवाय पत्ता दी इएप्पाइट्ठ अणतम्मोहे णेआउयमेवदक्खुमेव ।

पडिलस उरूर रुउ ४ नितिबुवनमीजीवतेसा वोमोमनकरइप्रमाद दुष्य दिनरा ओप्रमत्त माइम्र वो । नवे मंत्रे घोर । तेतणीसाररूप एवोनी
इ अवीना । ते दाउन्स्पुकेत्रदाव यणीकरी ॥ क्र गाइमुक्रतेमात्रइसूलसमरी रजइ एरइप्रमाद रहित

व ५ सुत्तेसु आवि पडिबुद्धजीवी न वीससे पंडिए आसुपन्ने घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं भारंडपक्खी व चरे
बालइ इ दाउजूमयप्रकार्य । वित इत्रालइ जके समारीकवानीकाउंके कामवा अयइलोना वालाबइ अजी वितव्य एवइ परिणाम यकहि
सकारुथिक ॥ नाकरीमानइ श्रारीनइ अनुषगुवरूकरीनइ नाविचारीने अथ्रव

प्पमत्तो ६ चरे पयाइं परिसंकमाणो जं किंचि पासं इह मन्नमाणो लाभंतरे जीविय वूहइत्ता पच्छा परिन्नाय मलाव
आनुलेईनइ मल वीयमननणीइछा रूथवइकु जिम अश्वसीयकुकिउजरस्या पसुवइ जिमसाधुप्रथमथवेनइअप्रमत्त तेनणीपुनि
यायकनारजइ शैयामइमोहनइ शेयुकाइ क्रतो बालइ ३ ॥

लावधंसी ७ छंदं निरोहेण उवेइ मुक्खं आसे जहा सिक्खियवम्मधारी पुव्वाइं वासाइं चरेप्पमत्तो तम्हा मुणी
त्रिप्रुनिममोद्रुपामइ ८ अरजीवपदइलावद्यनीपरइ एउपमाशाश्वतवादिनी विषवादपामेसिथिलआकवइ
मसीलानइ गरइ० न ॥ ॥

खिप्पमुवेइ मुक्खं ८ स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा एसोवमा सासयवाइयाणं विसीयई सिढिले आउयम्मि
कालमरणेजिवारइसरीरनइ नदमइ ताजीवः क्षिप्रविवेकपामी । तेनणी उद्यमकरीनइ छांडी काम लोकस्वरूपजाणी समतास्मइ
ए नमकइ ॥ नइनोगनइ णीनइ करीमरारवि

कालोवणीए सरीरस्स भेए ९ खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे समिच्च लोगं समया महे

२४

आत्मानइ उमाद बुरायइ अप्रमत्त थकु चाले वलीश्मोहने गुणेजीपदले अनइ अनेक रूप साधु चालतो फरसकरसनु एन अस
१० परूजापाइश्री लारकरतु तेनी अमानयासीनाजम
सी आयाणुरक्खी चरमप्पमत्तो १० मुहुं मुहुं मोहगुणे जयंतं अणेगरूवा समणं चरंतं फासा फुसंती असमंज
सूफा तेमाधुमनमाइदूषवाणे ११ स्त्रीनाफरससुरूप लइमदयणुकरइवइ तथाप्रकारनामाधुनिस्फर्शनेकरे क्रोधवारइ
नो तस्पर्शीक हवाबइ घणुलोनवईवइ

सं च न तेसु भिक्खू मणसा पउस्से ११ मंदा य फासा बहुलोहणिज्जा तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा । रक्खिज्ज कोहं
कहइमान मायानसेवइ त्यजइलोन जेमस्कूननाबोलमारस्थ ससकरिवा कोरि अम इव अनुरागनस दइनपर एधर्मइम
१२ साधर्मना करणदाररयाकापरापवादवोले बलपउतो नहउमय

विणएज्ज माणं मायं न सेवे पयहिज्ज लोहं १२ जे संखया तुच्छपरप्पवाई ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा एए अ
अस्मुजाणउ कनोगुण जालगइ शरीरनपुन दजइ तालगइ इम १३ अमसंस्कृत अध्ययन संपूर्ण ४ अर्णवसमुद्रसंसारसमोद
वाबइतम्मा त्मा कइइ ए वा वना अवगुणनगवाले केणाइ ग्रन्थाग्र २० समार स मु इ

हम्मु त्ति दुगुंछमाणो कंखे गुणे जाव सरीरभेउ त्ति बेमि ४ असंखयं अज्झयणं सम्मत्तं ४ अन्नवंसि महोहंसि
एकतस्या तीर्थंकर तिहां एक साजाणोम एववामिरी पुछ्याओबोल्या जीवनइ बेइ ए बइठाम कहाम रणसंबंधीया एके अको
दिउत्तरसमारउइ हार्वीरबवइ १ मरणदीनइ

एगे तिन्ने दुरुत्तरे तत्थ एगे महापन्ने इमं पण्हमुदाहरे १ संतिमे य दुवे ठाणा अक्खाया मारणंतिया अकाम
जाइमइउते सकाममरणधीरपणे ए मूर्खनइ अकाममरण मरुनतणीइनिरनरकइ पंडितनइ सकाममरण उत्कृष्टकनन
अकामक हइ मरइ तन सकाममरण णीइ एकवारइ

मरणं चेव सकाममरणं तहा २ बालाणं तु अकामं तु मरणं असइं भवे पंडियाणं सकामं तु उक्कोसेणं सइं

उपदेशु

निहावइ मरणनइ अधिका ... कामभोगनइ विषइ ... ४ जे नर कामभोगनइ विषइ
रि उ अकाममरण ... क्रूरकर्म करइ ... कूटकर ... इ ... गृद्ध

लि इ तहिं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं कामगिद्धे जहा बाले भिसं कूराइं कुव्वई ४ जे गिद्धे कामभोगेसु ए
... परलोकनउ दीठउ ... ए कामभोग ... हाथि आव्या ... कामभोग ... अनइ जे आगलइ ... तेमाटइ ...
... क्रूरकर्म करइ ५

गे कूडाय गच्छई न मे दिट्ठे परे लोए चक्खुदिट्ठा इमा रई ५ हत्थागया इमे कामा कालिया जे अणागया को जा
णइ परलोक ... ६ ... बाल मूढ ... कामभोगनइ अनुरागइ ...
क ... करइ ...

णइ परे लोए अत्थि वा नत्थि वा पुणो ६ जणेण सद्धिं होक्खामि इइ बाले पगब्भई कामभोगाणुराएणं केसं
... ७ ... यावज्जीव ... अर्थइ ... अनर्थइ ... भूतग्राम ... हिंसा
... करइ ... ८ ...

संपडिवज्जई ७ तओ से दंडं समारभई तसेसु थावरेसु य अट्ठाए य अणट्ठाए भूयग्गामं विहिंसई ८ हिंसे
मृषावादी ... माया ... पिशुन ... शठ ... मदिरा ... मांस ... जीवकाया ... वचनइ ...
करइ ... ९ ... करी ... मानइ ...

बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे भुंजमाणे सुरं मंसं सेयमेयं ति मन्नई ९ कायसा वयसा मत्ते वित्ते
... बिहुं प्रकारइ पापमल ... जिम ... ते कर्मबंध ... गिलाण ... पुण्य ... परलोक ...
... रूपा ... जइ बिहुं प्रकार ... ते ... लोकनइ

गिद्धे य इत्थिसु दुहओ मलं संचिणई सिसुणागु व्व मट्टियं १० तओ पुट्ठो आयंकेणं गिलाणो परितप्पई पभीओ
... मरण ... मार्टी ... ३

विषइ जातो ... कर्म ... ११ ... नरकनी गति ... अनाचारीनइ जे गति ... क्रूरकर्म ... जिहां व
वेदइ ... की ... दनाकइ ...

परलोगस्स कम्माणुप्पेही अप्पणो ११ सुया मे नरए ठाणा असीलाणं च जा गई बालाणं कूरकम्माणं पगाढा जत्थ वे
यणा १२ ... जिम मइं सांभल्युं ... जिहां निपजनी ... कर्म ... १३ ... जिम सागडी
... करी जातु ...

यणा १२ तत्थोववाइयं ठाणं जहा मेयमणुस्सुयं आहाकम्मेहिं गच्छंतो सो पच्छा परितप्पई १३ जहा सागडि
... समुं मार्ग ... विषम मार्गइ ... धर्म अतिक्रमीनइ अधर्मनइ ...
... १४

ओ जाणं समं हिच्चा महापहं विसमं मग्गमोइण्णो अक्खे भग्गंमि सोयई १४ एवं धम्मं विउक्कम्म अहम्मं पडिवज्जि
... १५ ... अकाममरण ... मरइ ... ते
नइ मूर्ख ... काल ... अकाममरण ...
... धूतारा ...

या बाले मच्चुमुहं पत्ते अक्खे भग्गे व सोयई १५ तओ से मरणंतंमि बाले संतसई भया अकाममरणं मरई धुत्ते व कलि नामा
... धर्म विना अकाम ... मूर्खनइ ... सकाममरण ... सकाम म
... मरणवहिलु ...

लिणा जिए १६ एयं अकाममरणं बालाणं तु पवेइयं इत्तो सकाममरणं पंडियाणं सुणेह मे १७ मरणं पि सु
... जिम ते मइं सांभल्युं ... पुण्य ... १८ ... सर्व ... सर्वे
... वेदनइ ...

पुन्नाणं जहा मेतमणुस्सुयं विप्पसण्णमणाघायं संजयाणं वुसीमओ १८ न इमं सव्वेसु भिक्खुसु न इमं स

तो ... करइ

उ०२बु॥
इवेरत
लोवाना
आचारवि
णकइन
हीनेकि९

नथीतोकिम अनइ नानाविधआचार अनेविषमसीलआचारीइ २० इहएकमाधुकीपीधरयाहइ इहिमसंयमीपर नेना
गृहीस्थनइ कइ निम्साधुकहइ कदेनाक्रियाइउत्कृष्ट नाथि

विसु गारिसु नाणासीला अगारत्था विसमसीला य भिक्खुणो २० संति एगेहिं भिक्खूहिं गारत्था संजमुत्तरा गा

वारगृहीस्थनेकइ माधुकधीसुसंयमी चीरकहीइवा मृगचर्म नम्नपणो जेजस ... लनीनस्थ
एकमवेगृहीस्थपाहइ ... २१ कलाधतुमाजेमु ... वसीस्यइ लानीवनेकेटेनुहीयाण

रत्थेहिं य सव्वेहिं साहवो संजमुत्तरा २१ चीराजिणं नगिणिणं जडी संघाडिमुंडिणं एयाणि वि न तायंति

मुइ जीलेआचारइचालइ जीवआदारनइअर्थइ नरगथकीनमुकाइ साधुवेषहस्ये अथवागृही सुरूइआचारइदेवलोकेजाइ
तावसकेकइरक्षानकर२इ२१ अनाचारथालइइ विषाया २२

दुस्सीलं परियागयं २२ पिंडोलए व दुस्सीले नरगाउ न मुच्चई भिक्खाए वा गिहत्थे वा सुव्वए कम्मई दिवं २३

दहइश्रावकनुमार्गकहइछे कायाइस्पर्शइएतलं श्रावकगृहीस्थविइय एकराति ... ते सिख्याइंपामइश्रावके गृ
आतततुहीस्थाणावकना ... इक्षा वइयक धवाकूणमहेतनी लहुयवर्तीमइपामइलेइ२३

अगारिसामाईअंगाइं सड्ढी काएण फासए पोसहं दुहओ पक्खं एगरायं न हावए २४ एवं सिक्खासमावन्ने गि

हस्वासथकहृ मृकाइ ... अनइदेवलोकइजाइ२४ इहगात्मवसुनिवृक् ... सर्व
इतेपालइ छिकइ ... २ ... २२२

हवासे वि सुव्वए मुच्चई छविपव्वाओ गच्छे जक्खसलोगयं २५ अह जे संवुडे भिक्खू दोण्हं अन्नयरे सिया सव्व

दुक्खकर्मोक्षपामे अथवा ... देवताना विकालि अनुक्रमइ घणी तेविमानघणादेवसमा सहदेवताआवा
२६ माल ... कारहीन वन ... कीर्तिनस्था मजमइ ...

दुक्खपहीणे वा देवे वावि महड्ढिए २६ उत्तराइं विमोहाइं जुइमंताणुपुव्वसो समाइन्नाइं जक्खेहिं आवासाइं

॥वि॥

२१

वइतिरा वलीकिदवाबइतेदेवहीर्घ स्पृहिविनोपलक्ष्मीवं अनइ ... वलीकिदवाबेतेदेव वन्यनली
उपजइ २६ ... तेषा आचारीबइ ... इयणकर्मनीकाते समानबइ

जसंसिणो २७ दीहाउआ इड्ढिमंता समिद्धा कामरूविणो अहुणोववन्नसंकासा भुज्जो अच्चिमालिप्पभा

२७ जीवतेणइ ... सीधीनेसंयमनइतपइ भीमाधुनसाऊगृहीस्थहवा जेआतरसेकरी मोक्षपाम तेदेवाववनसातनी
करातु ने ... २८ नइते

२८ ताणि ठाणाणि गच्छंति सिक्खित्ता संजमं तवं भिक्खाए वा गिहत्थे वा जे संति परिनिव्वुडा २९ तेसिं सोच्चा सपु

नकेथ आत्मावसिकीधुवइ ... मरणातइ जेआचारवंत ... आत्माराम तिन्तापलेइने दयाधर्मंनु
ताबइ ... २९ करीनइ

ज्जाणं संजयाण वुसीमओ न संतसंति मरणंते सीलवंता बहुस्सुया ३० तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स

क्षमाइ ... तथा ... ३० ... मरणकालि ... २ ... पामइ
करी नइ ... आत्माकरइ ... ऊपलापामइ ...

खंतीए विप्पसीएज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणा ३१ तओ काले अभिप्पेए सड्ढी तालिसमंतिए विणएज्ज लोमह

तेदकरवादेहनुवालइ ३२ अथमरणकालिपामेकृते आघातालअवतीनेदेहने सकाममरणेमरइ तेहनेमुनिकहीइ

रिसं भेयं देहस्स कंखए ३२ अह कालंमि संपत्ते आघायाय समुस्सयं सकाममरणं मरई तिण्हमन्नयरं मुणि

बवीमि ३२ अकाममरणसकाममरणानु ... तेविलाइतइ ... तेमूर्ख संसार
... अध्ययन ... ववनारहोइ

॥उन॥

त्तिबेमि ३३ अकाममरणिज्जं पंचमं अज्झयणं ५ जावंतविज्जापुरिसा सव्वे ते दुक्खसंभवा लुप्पंति बहुसो मूढा संसारंमि

अनंतइ २ तेनणी ज्ञांणीनिं देषीनिं आ. पासइ रोषा संसार अनंतइ पोतइ मत जाणी मैत्री सर्वजीव प्रतइं कल्पइ २ माता पिता व
नामाई न इ

णंतए १ समिक्ख पंडिए तम्हा पासजाईपहे बहू अप्पणो सच्चमेसिज्जा मित्तिं भूएसु कप्पए २ माया पिया ण्हुसा

भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा नालं ते मम ताणाए लुप्पंतस्स सकम्मुणा ३ एयमट्ठं सपेहाए पासे समियदंसणे

छिंद गेहिं सिणेहं च न कंखे पुव्वसंथवं ४ गवासं मणिकुंडलं पसवो दासपोरुसं सव्वमेयं चइत्ताणं कामरू-

वी भविस्ससि ५ थावरं जंगमं चेव धणं धन्नं उवक्खरं पच्चमाणस्स कम्मेहिं नालं दुक्खाउ मोयणे ६ अज्झत्थं स-

व्वओ सव्वं दिस्स पाणे पियायए न हणे पाणिणो पाणे भयवेराओ उवरए ७ आयाणं नरयं दिस्स नायएज्ज तण-

मवि दोगंछी अप्पणो पाए दिन्नं भुंजिज्ज भोयणं ८ इहमेगे उ मन्नंति अपच्चक्खाय पावगं आयरियं विदि- २५

त्ताणं सव्वदुक्खा विमुच्चई ९ भणंता अकरिंता य बंधमुक्खपइन्निणो वायाविरियमेत्तेणं समासासंति अप्पयं

१० न चित्ता तायए भासा कुओ विज्जाणुसासणं विसन्ना पावकम्मेहिं बाला पंडियमाणिणो ११ जे केइ सरीरे सत्ता व- ×म×

न्ने रूवे य सव्वसो मणसा कायवक्केणं सव्वे ते दुक्खसंभवा १२ आवन्ना दीहमद्धाणं संसारंमि अणंतए तम्हा स-

४पुरि४ व्वदिसं पस्स अप्पमत्तो परिव्वए १३ बहिया उड्ढमादाय नावकंखे कयाइवि पुव्वकम्मखयट्ठाए इमं देहं समुद्धरे १४

विविंच कम्मुणो हेउं कालकंखी परिव्वए मायं पिंडस्स पाणस्स कडं लद्धूण भक्खए १५ संनिहिं च न कुव्विज्जा

लेवमायाए संजए पक्खी पत्तं समादाय निरविक्खो परिव्वए १६ एसणासमिए लज्जू गामे अनियओ चरे अ-

उपरनु

[illegible interlinear gloss]

...सिद्धं [illegible] एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे अरहा

[illegible interlinear gloss]

नायपुत्ते भयवं वेसालिए वियाहिए त्तिबेमि १८ खुड्डागनियंठियअज्झयणं सम्मत्तं ६ । जहाएसं समुद्दिस्स कोइ पोसे

[illegible interlinear gloss]

ज्ज एलयं ओयणं जवसं दिज्जा पोसिज्जावि सयंगणे १ तओ से पुट्ठे परिवूढे जायमेए महोदरे पीणिए विउले देहे आए

[illegible interlinear gloss]

सं परिकंखए २ जाव न एइ आएसे ताव जीवइ से दुही अह पत्तंमि आएसे सीसं छित्तूण भुज्जई ३ जहा खलु से उ

[illegible interlinear gloss]

रब्भे आएसाए समीहिए एवं बाले अहम्मिट्ठे ईहई नरयाउयं ४ हिंसे बाले मुसावाई अद्धाणंमि विलोवए अन्नद

[illegible interlinear gloss]

त्तहरे तेणे माईकण्हुहरे सढे ५ इत्थीविसयगिद्धे य महारंभपरिग्गहे भुंजमाणे सुरं मंसं परिवूढे परंदमे ६ अय १४

[illegible interlinear gloss]

कक्करभोई य तुंदिल्ले चियलोहिए आउयं नरए कंखे जहाएसं व एलए ७ आसणं सयणं जाणं वित्तं कामाय भुं

[illegible interlinear gloss]

जिआ दुस्साहडं धणं हिच्चा बहुं संचिणिआ रयं ८ तओ कम्मगुरू जंतू पच्चुप्पन्नपरायणे अयव्व आगयाएसे मरणं

[illegible interlinear gloss]

तंमि सोअइ ९ तओ आउपरिक्खीणे चुआ देहा विहिंसगा आसुरीं दिसं बाला गच्छंति अवसा तमं १० जहा कागिणीए

[illegible interlinear gloss]

हेउं सहस्सं हारए नरो अपत्थं अंबगं भुच्चा राया रज्जं तु हारए ११ एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अंतिए सहस्स

[illegible interlinear gloss]

गुणिआ भुज्जो आउं कामा य दिव्विया १२ अणेगवासानउआ जा सा पन्नवओ ठिई जाणि जीअंति दुम्मेहा ऊण

[illegible interlinear gloss]

वाससयाउए १३ जहा य तिन्नि वणिआ मूलं घित्तूण निग्गया एगोत्थ लहई लाहं एगो मूलेण आगओ १४ एगो

[library stamp, illegible]

गामा पारिपाकीने आव्यो तिहां वाणीओ आपाउनी उपमा जाणवी इम धर्मनी स्थिति जाणवी
आ वउ लकहउ छेइ

उपरबु॥ मूलछिन्नारिसा आगउत्तक्ख्याणिउ ववहारउवमाएसा एवं धम्मे विआणह १५ माणुसत्तं भवे मूलं लाभो देव
गति मूलदारो आपुने जीवने नरगतिर्यचगति पामइ मूलनइ घाटनइ सवइ नरगतिक हवीवइ तिणी देवपणुअ निमाणस
कुवतिरइ ए इवइ गति जाइ नरकतिर्यच प्रमुख मूलवइ पणो

गईभवे मूलच्छेएण जीवाणं नरयतिरिक्खत्तणं धुवं १६ दुहओ गइ बालस्स आवइ वहमूलिआ देवत्तं माणुसत्तं च
जेणि करी लोलपणा १७ तिहार इवइ जीवदेव वइ गति होइ इम ते देहि लइ जीवनीसरो घणाइ काल गइ छूटे एम इडी
इणइ सवकार गतिहार वइ छूतइ सकइ १८ पइ

जं जिए लोलुआसढे १७ तत्तो जिए सइ होइ दुविहं दुग्गइं गए दुल्लहा तस्स उम्मुग्गा अद्धाए सुचिरादवि १८ एवं
आपणो बुद्धइ करी बालपणे पणुठाली नइ पाडेन तिजी वमूलक हीइ मनुष्य मनुष्यनी योनि इते जे जीव रूडइ पुण्यकृत इसु
विचारीन इ पण उ आपणइ ॥ पंडितपा मइ आचार इकरी व्रतमाइ आवो

जिअं सपेहाए तुलिआ बालं च पंडिअं मूलिअं ते पवेसंति माणुसं जोणिमिंति जे १९ वेमाया हिं सिक्खाहि जेन
तिनरसुशील पनइ निकमजइ मनुष्यनी जोनि कर्मकहीकार्यकामकमा २० जे मनुष्यनइ विस्तीर्ण महा ते मनुष्य सलघन मनुष्यजन्म आतिक
वीय ववहारपालना जीव व्रतरू पशिष्या पालइ इ साकहवा वइ ति मनुष्य सीलवंत व माव सप

रा गिहिसुव्वया उवेंति माणुसं जोणिं कम्मसच्चा हु पाणिणो २० जेसिं तु विउला सिक्खा मूलिअं ते अइच्छिआ सी
कहीइ उ ममुल पात इमण वलीकह वा वइ दीन गणइ उकारइ दीनपणा अनइ हइस्य जाणीनइ एह बुला ताकि मदरा वोइ
पाकलक्षणपिहा व सुश्रिसां पणार विलवइ २२ राहत मा सु आगार

लवंता सवीसेसा अद्दीणा जंति देवयं २१ एवमद्दीणवं भिक्खुं अगारिं च विआणीआ कहण्णु जिच्चमेलिक्खं जि २५
हारलतइपण

अनइ सुर्व तइ तजीपी जेम डाभने अग्रि बिन्दु समुद्र सावइ कोण मवइ एणइ प्रकारइ मानवमनाओ देवना भोग नइ पामइ जा मह क
बुद्धरी बीनइ जाणइ नहीं २२ पाणीनु वेइ ग होन्हा एम नुष्यना भोग

च्चमाणो न संविदे २२ जहा कुसग्गे उदगं समुद्देण समं मिणे एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अंतिए २३ कु
माचिइ समान जाणि अने आकु वेइ इ इइ छतइ कर्मचुदेवआयाति टाणाहे मनजाणइ हइते याग तेहम इणेमसारकामलोगइला आ
४ न्ना४ वा कुरीनइ निलाभी पाली अणमाधीवमुल कवीइ वइ कुअणणि इतरीछूतउ साधे

४ उरा ४ सग्गमित्ता इमे कामा संनिरुद्धमि आउए कस्स हेउं पुराकाउं जोगक्खेमं न संविदे २४ इह कामानियट्टस्स अत्तट्ठे अ
माया जु नेयाउ कमो कमायसा वारइलइजा पामइ २५ इणइ संसारि कामभोग आत्माथी अन्य पामइ न अयविछ आदहइ धव
मइ नलीन इस हइ इनहीउ इमानुनिवलइ छूतइ दी इवाम्वइ

वरज्झई सुच्चा नेआउअं मग्गं जं भुज्जो परिभस्सई २५ इह कामानियट्टस्स अत्तट्ठे नावरज्झई पूइदेहनिरोहे
देवथाइ मह इसमान लइ २६ ऋद्धि वतकांति यजा रूप बल आयु नइ सुख उ कृष्ट वली अजिहा माणस मांकइ तिहाव तदे उपजइ २७
पाइ

ण भवे देवित्ति मे सुअं २६ इड्ढी जुइ जसो वण्णो आउं सुहमणुत्तरं भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु तत्थ से उववज्जई २७
मूर्खपणु जोउ तेमूर्ख अधर्म पडिवजइ वाली धर्मनइ अधर्मीथइ नरकमाहइ उपजइ २८ धीर विज्ञान सते इनु धीरप
पणाइ

बालस्स पस्स बालत्तं अहम्मं पडिवज्जिआ चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे नरएसु उववज्जई २८ धीरस्स पस्स धीरत्तं स
धीर वीर बुध इसर्वधर्म अधर्म हणीनइ धर्मनइ तो देवमाहे उपजइ २९ तोलीने बालना वरूप अनइ अबालनाव पंडित त्प
पालइवइ त नर नाजइ

व्वधम्माणुवत्तिणो चिच्चा अहम्मं धम्मिट्ठे देवेसु उववज्जई २९ तुलिआण बालभावं अबालं चेव पंडिए व

उपदव्युं।

तेज्ञानद र्शनसमय नाधरणहा रमहितवे

तीर॥ सुर्षनोनाव यमितनुलावसेवतं मुनिइमकरे ग्रव एलकाअध्ययन संपूर्ण थ ॥ ससमारनि वलीस्वामा सत्या
ग्रंथाग्रं५२अक्षर२११ स्थलनथी स्थनंत्रुवइ यणं

इक्कारणुवालपाद अव्वालेसेवएमुणितिवेमि ३०॥ एलयअध्ययणमसमत्तं ७ अखुदेज्जमासदासी समा
वइबालावइतेमसारमा त्रणइक्रंइगोतिनजावितेक वालीनेश्ववेसयोगधरणा स्नेहनकरइ किहइकदाइनकरे
सुकर्मबइकिसुकरणीव इहवइ १ ग्रह

मकुस्कतकमद्य डोणादंडगाथंनगखेसा १ विजादिनुप्ववंमजोग नमिणोदेवकंदिविद्दुखिद्या
लतो दोषकदइनावध्वेवमनतस्मानर हवेक्केपलकथीस्वरंकहेते हितकारीआमचेजीवनइनिश्च नेरनइसम
कनाइरवामि अमुकाइकथोस्वर२ सानलुकेदवुवेकाप लक्षण यकहीइमुक्तिनेअर्थइमाहदेवां मुकाववानं

प्रदि दोसमउसेदि मुच्चणतिरक्कु म तोनाणदंसणसमग्गो दियनिस्सेसायसवजीवाणं तसिंविम
वरक्कपिलकेदवुबइत्तमु साधुसयलाइयषपरि सजइनसाविधतेदवुमाधु सघलाइकामभोगना पामवानेअ
नीवरविगतमादक्रनते ३ ग्ररुकूलदेवदवामि कदवेव समहनइविषइ शुबइत्राईव

णिवरोविगयामोहा ३ सव्वंगधंकलदंच विप्पजदेनहाविहंतिरक्कू साव्वसुकामजाएसु पासम
कामालाग रुपआमिषतहना हृदयनिज्ञाणवुधिनषीक मूर्छ आतस्तुमोदग्रहे कर्मग विवाधइकहइनीप
दोषनइविषइंआयोकवइ दवुवइत्त सकतवे रइजिममाली ग्रन्थमाइवधाइ

लोगामिस्सदोसंनिसमेग दियनिस्समबुद्धिवोबवे बालेअमदिएमूहे बज्झईमच्छिआसरवेलामि
कदहनइदोदिल्या जेमअधीरपुर अथवइजेसदाचारीसाधुतेम जिमवाणिआतरवाआन्नाकातेस अमण
स्तनइआर्मियावतनइ सारसमुदहीनरइविषयदीनरे सुइतेरइतिमअज्ञाकविषयतेरइ साधव

मकामा नोसुज्जहा अधीरपुरिसेहिं अदंमंतिसुवयासाक्रं जेनरंतिअतरंनिवणिआवा समणा
माधु

अनइ परलोक २० एकापिलनुं अध्ययन समाप्तं ८ देवइ ते नमिराजानुं अध्ययन उपनु मनुष्यलोक माहइ उपशांत मोह
इम कहइ अथ श्लोक कहइ अर्थ ग चवीनादेवलोक थका दृनिगीकर्म नमि

लोगंमि २० इतिकाविलीयं सम्मत्तं ८ चइऊणदेवलोगाउ उववन्नोमाणुसम्मिलोगम्मि उवसंतमोहं ॥ मि ॥

राजा संभारइ पाछला भवनी जाति नमीराजा इणि विलुन सहसबुद्ध नकालथकि बोध्या उत्तनइ राज्यमाहीनइ दरबुनि सरइ नमिराजा
इ व स्थिपीनइ स्वयंबुद्ध हु धर्मनिविषइ

ज्जो सरईपोराणिअं जाइ १ जाईसरित्तुभयवं सहसंबुद्धो अणुत्तरेधम्मे पुत्तंठवित्तु रज्जे अभिनिक्खमई न

२ तेनमीइ देवलोक सरिषा अंतेउरमाहइ वरू भोग भोगवीनइ नमीराजा प्रतिबुद्ध थइ तेनो गथकी त्यजइ ३ माथिलानगर
थया पछी गरपुरम

मीराया २ सोदेवलोगसरिसे अंतेउरवरगए वरेभोए भुंजित्तु नमीराया बुद्धोभोगेपरिच्चयई ३ महिलंस

देश नगरीजनप कट अंतेउर परिवार सर्व छांडीनइ बाहीने नीसर्या एकांतमोक्षमार्गे तणी स्माही ४ नीसरतां कोलाहल थयु
राय जनइ क अंत पुर कद्दि तु थयो ते नगवत नमि

पुरंजणवयं बलमोरोहं च परिअणं सव्वं चिच्चा अभिनिक्खंतो एगंतमहिट्ठिओ भयवं ४ कोलाहलगभूयं आसी ।

नगरीमहि पवर्तालतइ निकलेतइ राजा ऋषि समता रहित नीसरतां नमीराजा जानइ ५ बाहिरनइ निकइ ब्राह्मण प्रव्रज्यानस्थान
लाहारइ लानराज ऋषि

महिलाए पव्वयंतंमि तइआरायरिसिंमि नमंमिअभिनिक्खमंतंमि ५ अब्भुट्ठिअं रायरिसिं पव्वज्जाठाण

सर्वइ इन्द्र ब्राह्मण नइ रूपइ इम कहइ वाणीप्रति ६ आरसु आज मिथिलानगरी माहि कोलाहल तुम्याप थया छइ सामली इइ रौद्र
इनइ

मुत्तमं सक्कोमाहणरूवेण इमंवयणमब्बवी ६ किंनुभोअज्जमिहिलाए कोलाहलगसंकुला सुव्वंतिदारुणा

PAGE(S) MISSING
NOT AVAILABLE

FOLIO NO - 16 - 17
1ST PART - 2ND PART

उप८बु

इमह शस्मादनइविपइयान नइविप एडस्मुद्धर्थे मानलीनः हेतुयुक्तइ रुपकारण तिक्कारइनमिराज्ञर्षीपि इइयनइइमकदइवाला
ऊह गु इयस्थाऊतते गु

सद्दा पासाएसु गीया दसुज्ज ७ एयमट्ठं निसामित्ता हेउकारणचोइउ तउनमी रायरिसी देविंदं इणमब्बवी

८ मिथिलानगरी तणइस्थाने सादइवांदीइ मनोरमान केदवृक्षइतलवनपत्रफले बहुजनानइघणागुणाव ९ लहुक्तवाइइलावा
मानक्सीलीइ वइनामइ कृमिसाहितवइ ततइदीमकरइहक्तसदा तइक्तइ

८ मिहिलाए चेइए वच्छे सीयछाए मणोरमे पत्तपुप्फफलोवेए बहूणं बहुगुणे सया ९ वाएण हीरमाणं

वनसाइक्तमनोरम इखीआ असरणाइआर्तेनणीइ एरवापखीआआकदकरेवे एअर्थ मानलीनइ हेतुयुक्तिकारणइ
वोलालइ १०

मि चेइयंमि मणोरमे दुहिया असरणा अत्ता एए कंदंति भो खगा १० एयमट्ठं निसामित्ता हेउकारणचो

इउ तिक्कारइनमिंक्वपितइ इइइमकदेवालागतं ११ देवनमिराजऋषिस्याअम आदाअइवइघर नगवनप्रयातेअर माद
राजा वायुमादेत

इउ तउनमिं रायरिसिं देविंदो इणमब्बवी ११ एस अग्गी य वाऊ य एयं डज्झइ मंदिरं भयवं अंतेउरं तेणं की

मुक्तांइनथीउतेत १२ एअर्थ मानली हेतुकारणे तिक्कारइनमिराजऋषि इइयतिकदइवालायु १३ सुखेसुखइजीवनेवु
बसवा॥

स णं नावपेक्खह १२ एयमट्ठं निसामित्ता हेउ० तउनमी रायरिसी देविंदं इणमब्बवी १३ सुहं वसामो जीवामो

तेअमारइनथीकाइइ मिथिलानगरीबलतइ मादइकाइइबलतुनथी १४ त्यज्याबाप्या कलत्रनइ अनइपरनाव्यापारइ
पुत्र तेऋषिनइत्यजा

जेसिमे नत्थि किंचणं मिहिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किंचणं १४ चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खु ॥ २५

रातीनइप्रियवालानुकाइइनुदइ अनइअप्रियकाइनुदइ १५ मुनिनोघणोकल्याणहुइ कइवाअंगरभिक्षुनागारवा सर्वथकी
रइतीनवइसा क वइ विप्रमुक्त

णो पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जई १५ बहुं खु मुणिणो भद्दं अणगारस्स भिक्खुणो सव्वउ विप्प

वइनुइ एकांतमाहन्मार्थे १६ एडस्युअ हेतुकार प्रस्तुतिकारइन बलेइइकदे १७ प्राकारगढकरावीनइ पोलिपोलिऊपरि
अतइ लाइवइ वेमानली प्रयुक्त मि राजानइ भूमि

मुक्कस्स एगंतमणुपस्सउ १६ एयम० हेउ० तउनमिं रायरिसिं देविंदो इ० १७ पागारं कारइत्ताणं गोपुरट्टालगाणि

पालिका ज्ञातप्रीकदीइथइ तिक्कारपछीजातजाइजी १८ एअर्थ हेतुयुक्तं तिक्कारपछीनमी इइयतेकदे १९ ऊपीस्वरऊप्रनावास नव
वाइ मानली राजऋषि नारूपनगरकरीनइ मव

य उस्सूलगसयग्घीउ तउ गच्छसि खत्तीया १८ एय० हेउ० तउनमी रायरिसी देविंद० १९ सद्धं नगरं किच्चा त

रूपनीभागलक क्षमारूपीगढरुड तिगुप्तात्रिपराका केदवुतेनोगढवे बलीकदवुबेमाधुपराक्रम धणवइतेईयो धनिनलाइमतायक
रीनइ धणटकरीनइ रविजिगुप्तीरूपकरीन ऊणइनुजीता मरूपीव्रधनुषकरीनइ ममानिसदीय वीनकलन्नुलीइवा न

वसंवरमग्गलं खंतिं निउणपागारं तिगुत्तं दुप्पधंसयं २० धणुं परक्कमं किच्चा जीवं च इरियं सया धिइं च केउ

पनाक सत्यरूपपालिमदकदनावायु तपरूपानदानाराच ग्रहुतेकम्मरूपकवुक मुनीसंग्रामरहीतक नवथिऊमुकाइ प्रव
रीनइ छुइतेणइनगरमाकार २१ कदीइतीरसहित तजरदलदीनइ गहारहीन

णं किच्चा सच्चेण पलिमंथए २१ तवनारायजुत्तेण भित्तूण कम्मकंचुयं मुणी विगयसंगामो भवाउ परिमुच्चए २२

एअर्थमा हेतु तिक्कारनमिराजऋ इइइमकद दरूचीप्रासादमीरीय वर्द्धमानकदीइविचित्रघर वाराकपरिवजाकरा तिना
नलीनइ युक्त पिनइ अवालोगु २३ रकरावीनइ वीनइपवइ रवली
त्रिवा

एयम० हेउ० तउनमिं रायरिसिं देविंदो इ० २३ पासाए कारइत्ताणं वद्धमाणगिहाणि य वालग्गपोइयाउ य तउ

खमि खत्तिया २४ एयम हेऊका तओ नमी रायरिसी देविंदं २५ संसयं खलु सो कुणई जो मग्गे कुणई घरं जत्थेव गं

तुमिच्छेज्जा तत्थ कुविज्ज सासयं २६ एयम हेय तओ नमी देविंदं २७ आमोसे लोमहारे य गंठिभेए य तक्करे

नगरस्स खेमं काऊणं तओ गच्छसि खत्तिया २८ एय हेउ तओ नमी देविंदं २९ असइं तु मणुस्सेहिं मि

च्छादंडो पउंजई अकारिणोत्थ बज्झंति मुच्चई कारओ जणो ३० एयम हेय तओ नमी देविंदं ३१ जे केइ प

त्थिवा तुब्भं नानमंति नराहिवा वसे ते ठावइत्ताणं तओ ३२ एयम हेय तओ नमी देविंदं ३३ जो सहस्सं

सहस्साणं संगामे दुज्जए जिणे एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ३४ अप्पाणमेव जुज्झाहि किं ते जु

ज्झेण बज्झओ अप्पाणमेव अप्पाणं जइत्ता सुहमेहए ३५ पंचिंदियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोहं च दुज्जयं

चेव अप्पाणं सव्वमप्पे जिए जियं ३६ एय हेय तओ नमी देविंदं ३७ जइत्ता विउले जन्ने भोइत्ता समण

माहणे दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य तओ गच्छसि खत्तिया ३८ एयम हेय तओ नमी देविंदं ३९ जो सहस्सं सहस्साणं मा

से मासे गवं दए तस्सावि संजमो सेओ अदिंतस्सवि किंचणं ४० एयम हेय तओ नमी देविंदं ४१ घोरासमं

चइत्ताणं अन्नं पत्थेसि आसमं इहेव पोसहरओ भवाहि मणुयाहिवा ४२ एयम हेय तओ नमी देविंदं ४३

मासे मासे तु जो बालो कुसग्गेणं तु भुंजए न सो सुयक्खायधम्मस्स कलं अग्घइ सोलसिं ४४ एय हेउ तओ देविंदं ४

उ॰८सु

ह्लादिकी अणघ मणिमो कांसुपटकूल वाहन कोसभंडारवधारीनें निकलपवी ४६ एअर्थसांभलीनें तिहारपवीनें इइयतक किरणपु मुभिनु रत्ने तौ: जाणइकरी उपकरणेपवृ नमीराजऋषि इंद्रइंद्र प्रतइ

हिरणंसुवंणमणिमुत्तं कंसंदूसंचवाहणं कोसंवद्धावइत्ताणं तउगच्छ ४६ एयमट्ठं निसामित्ता तउनमीरायरिसी देविंदमिणमब्बवी ४७

सोनालिइरूपानापर्वत: किवारइनिश्चेमेरुजेवडाअसंख्याता तेइइअउ लोभीनेअनेकाइइ निश्चेआकाससमान लाइजीवनइ नथी छइइच्छाअनंतीसभी

सुवण्णरूप्पस्सउपव्वयाभवे सियाहुकेलाससमाअसंखया नरस्सलुद्धस्सनतेहिंकिंचि इच्छाहुआगाससमा

अणंतिया ४८ वलीपृथ्वीसालिइजवकरी सुवर्णइकरीपशुतेरस: परिपूर्ण काइदातारहीन इमजाणीजीतलप ४७ ए हित दइ तेइइ ज्ञान पुराइ कार अ

माअणंतया ४८ पुढवीसालीजवाचेव हिरणंपसुभिस्सह पडिपुण्णंनालमेगस्स इइविज्जातवंचरे ४९ ए

र्थसांभली हेतुकारण निकलपवी इइइ नकइ देवेंद्रप्रते आश्चर्यजि बलानोगवाकीनेहेपा अछताकामनोगवांछे एणीसकल्पना नलीयकरी नमिराजा प्रते ५० मकइनिमगालिकप्रत हिं ब मि इत्राप्यणपुरुषी

मट्ठंनिसामित्ता तउनमिंरायरिसिं देविंदोइणमब्बवी ५० अच्छेरगमब्भुदए भोगेचयसिपत्थिवा असंतेकामपत्थेसि संकप्पेणविह

इ एअर्थसांभली हेतुकारण निकलपवी इइन्द्रके ५१ सालसरीपा विषसरीपा एकामदृष्टीविषसर्पसरीषा कामाभोगवांछता पो राजा नमीराजा॥ दइ कामसेवइ कामछइ मानवइ जीव

म्मसि ५१ एयमट्ठंनिसामित्ता तउनमीरायरिसी देविंदमिणमब्बवी ५२ सल्लंकामाविसंकामा कामाआसीविसोवमा कामेपत्थेमाण २०

अवर्णीनिलाजीव ५३ अधोगतिक्रोधइकरी मानइअधमगतिकइ मायागतिनइघातकरइ लोभतिहुंप्रकारइहलो इगतिजाइ कियरलोकनेयकरइ ५४

अकामाजंतिदुग्गइं ५३ अहेवयइकोहेणं माणेणंअहमागइ मायागईपडिग्घाओ लोभाओदुहओभयं ५४

इइब्राह्मणनुरूपत्यजीनइ विकुर्वीइंद्ररूप स्तवनकरतोवांदइ इममधुरवचनेकरीनइ ५५ अहोतेवइआछ

अवउज्झिऊणमाहणरूवं विउव्विऊणइंदत्तं वंदइअभित्थुणंतो इमाहिमहुराहिवग्गूहिं ५५ अहोतेनिज्जिउ

वइतइको अहोतइमानपराजयो अहोतइकपटी माया अहोतइलोभवशकर्यो ५६ हिमानु अहोइमइआश्चर्यइं ऊजु षडीता उत्तम आर्जवसरलपणवइ मार्द

कोहो अहोतेमाणोपराजिउ अहोतेनिरक्किया माया अहोतेलोभोवसीकउ ५६ अहोतेअज्जवंसाहु अहो

निरहंकारपणुं अहो उत्तमादइ मोटी क्षमा अहो आश्चर्यकारिणी उत्तम ५७ हेनगवनइलोकइसमा पालपरलोकिथकी उत्तम इनसे निलोभतापणुवइ रिउत्तम वइ मलइस कमा

तेसाहुमद्दवं अहोतेउत्तमाखंती अहोतेमुत्तिउत्तमा ५७ इहंसिउत्तमोभंते पच्छाहोहिसिउत्तमो लोगु

पदउत्तमवासि मुक्तिजाएसिनि:पापहूंतो एयअभिस्तवनुत्तमराजऋषिनइउत्तमभावनाइ प्रदक्षणाकरतो वारवार वांद ५८

त्तमुत्तमंठाणं सिद्धिंगच्छसिनीरउ ५८ एवंअभित्थुणंतोरायरिसिंउत्तमाइसद्धाए पयाहिणंकरंतो पुणोपुणोवंद

इइ ५९ तिहारपछीपूजइपगे चक्रअंकुसअनेकलक्षणेसहीतवइ आकासिउपत्युइइ केहवुंछइ लहइकतावपल दीनइकुंडलवोडइया मुनीनापग॥ इतेइइ

इसक्को ५९ तोवंदिऊणपाए चक्कंकुसलक्खणेमुणिवरस्स आगासेणुप्पइउ ललियचवलकुंडल

कुंडलसे ६० नमीयतीआपणइनमइ नेमिकेदेवुवडसाक्षात अतइघरबारीनइसुव चारित्रनइविषइपर्युपा इमकर मुगटवइ तइइइप सुवइ लोमइजारीरवइ तनलीइउद्यमवंतवइ ६१ इश्रेन

तिरिडी ६० नमीनमेइअप्पाणं सक्खंसक्केणचोइउ चइऊणगेहंवइदेही सामन्नेपज्जुवट्ठिउ ६१ एवंकरं

उपरबु॥

वोधपामा जेपंडितबइंतवचरुणा निवर्तइभोगथी जिमतेननमिराजऋषिनीपरइइतिबो ६२ नमिप्रत्येकबुद्धनीप्रव्रज्या
ता कंनइ हुं ध्ययन ९ मुं ॥ ० ॥ २ ॥ २३

तिमबुद्धा पंडिआपविअरकणा विणिअट्टंतिभोगेसु जहासेनमिरायरिसित्तिबेमि ६२ नमिपवज्जाअ०समत्तं ९

तिमद्रुमपत्रपानफुंपा पडइरात्रिनेसमूहव्यतिक्रमइ एवबुमनुष्यनुजीवीत समयमात्रथोडइकालप्रमाद गोतमतुनामले
कियकइ नजाणीनइ मकरिसिगौतम श्रीवीरजीकहे १ तामु ... वली ...

दुमपत्तएपंडुआएजहा निवडइराइगणाणअच्चए एवंमणुआणजीविअं समयंगोयममापमायए १ कुसग्गेजहा

... साकुकालरहइल इमसमनुष्यनुं समयमात्र इणिप्रकारिइ थिरकइहेता जीवीतव्यबहुपणुवसतेइतेने फेमि
... लकालाथिको। आयुजाणी प्रमादनकर बोधिथाकरवइलतइअनइ वायप
रता विसे

उसबिंदुए थोवंचिट्ठइलंबमाणए एवंमणु समय २ इइइत्तरियंमिआउए जीविअएबहुपच्चवायए विहु

... तेतलीधर्मलही निश्चेतोहेतुषमालसनुंतव घणइकालइमर्च्चजीवनइ गाढाचीकणाकर्मनाविपाक
गोतमप्रमादकरि तिकारणइगोतम

णाहिरयंपुराकडं समयं ३ दुल्लहेखलुमाणुसेभवे चिरकालेणविसव्वपाणिणं गाढायविवागकम्मुणो

समयमात्र पृथ्वीकायमांगयुजे अतिघणुजीवरमइते असंख्यातकालनत गोतमप्र अपकायमांगयुहुंतो उत्कृष्ट जीवरमेतो
प्रमादनक तो ... मादमकर
रतो थ

समय ४ पुढवीकायमइगओ उक्कोसंजीवोउसंवसे कालंसंखाईयं समय ५ आउक्कायमइगओ उक्कोसंजीवोउ

असंख्यातकाल अग्निकाय उत्कृष्टजीव असंख्यात वायुकाय उत्कृष्टरमे असंख्यात तेतलीसमय वनस्पतिकाय उत्कृष्टजीवकाल
लगेरहइतेतलो ६ ... ७ ... ८ ... मांदइग ...

कालसंख ६ तेउकाय उक्कोस कालं ७ वाउक्काय उक्कोस कालं समय ८ वणस्सइकाय उक्कोस का

तोतमसमयमात्रप्रमादमकरि
४ समयंगोयममाप०

४ जीव
गोतमसम
यमात्रप्रमाद
मकरि
४ समयप

१२

रहइतोहिलइश्व गोतमसम बेइंदिमांहइजीवगयुउ उत्कृष्टव असंख्यातोकालरहइतेतलो प्रमाद ९ तेइंदिमांहगयु उत्कृष्टोका
नकरिमकरिइ तिसलो समय ९ ... मइतो मकरि १० जीव लवसइतो

मात्रप्रमा
दमकरि

लमणंतदुरंतं समय ९ बेइंदियकायम उक्कोस कालंसंखिज्जसन्निअं समय १० तेइंदियम उक्कोस

एततलोगएथावरमलगइतेतलो चउरिंदीमांहइ उत्कृष्टोजीव संख्यातोकाल तेतलीदे १२ पांचेंदीमांहइगयुहुंतो उत्कृष्ट
संख्यातोकालरहे गौतमप्रमाद गयुजीव रहइ तउ गोतमसमयमात्रप्रमादमकरि
मकर

कालंसंखिय समयं ११ चउरिंदियम उक्कोस कालंसंखिय समय १२ पंचिंदियकायमइगओ उक्को

जीवरहइउ सातआठभवलगइ तेतलीधर्मलही देवनारकीमांहइगयु उत्कृष्टकाले एकएकभवलीजइ तेतलीधर्म
हिणोतमसमयमात्रप्रमादनकरावा जीवरहेतो यामीदेगाते

सजीवोउसंवसे सत्तट्ठभवग्गहणे समय १३ देवेनेरइअमइगओ उक्कोस एक्केक्कभवग्गहणे समय १४

इमएणइप्रकारइभव भमण कहायाहुआकर्म तेतलीप्रमादन माणसपणुलाधापछी आर्यपणुवलीपि
तिर्यंचनारकीदेकेक करइ करीनइ करवोहेगोतम १४ जीवनइ
री.समी.१मा

समयमात्रप्र
मादनकरवु

एवंभवसंसारे संसरइसुहासुहेहिंकम्मेहिं समय १५ लद्धूणविमाणुसत्तणं आयरिअत्तणंपुणरावि

दोहिलु घणाइअधर्मीम्लेछजातिपामे तेतलीरतपामीनिक्षत्रममाम १६ पामीनइआर्यधर्मनुंठाम पांचेंइंद्रीपूरीहोहि
पामइ गौतमसमयमात्रप्रमादनकरवुहेगोतम

जीवकेतबुबे
...
४जीवोसमा
वाथकुलो

दुल्लहं बहवेदसुआमिलरकुआ समयंगोयममापमायए १६ लद्धूणवि आयरियत्तणं अहीणपंचें

लाधामीनइ विगलेंद्रीहीनइंद्रीघणाइदीसइ १७ पूरापंचेंद्रीयपणुपामीनइ तउत्तमधर्मनुसांभलवानासंजोगदोहि
हेगोतम समयमात्रप्रमादनकरवु लोतेतलीत्तधर्मपामीनइ

दियादुल्लहा विगलिंदियआउदीसइ १७ अहीणपंचिंदियत्तणंपि सेलहेउत्तमधम्मसुई दुल्लहा

आ४ समयं०

हेगौतम कुतीर्थ सेवा कदाचि साधु पासी प्रमाद धर्मनि तु उत्तम सिद्धांत सांभलवु वली ते दोहिलुं अनेकमिथ्यात्वनामेतक सम
कनीसेव करणादीसइ देखनम बाइ मानतवु रलोकजइ तेतणी ग्रमा

उपदेशु॥ कुतिसेवनसेवएजणे समयंगो १७ लधूणविउतमंसुई सद्दहणापुणरविदुल्लहा मिछत्तनिसेवएजणेस
प्रमाद धर्मसद्दहइ तिकइ दोहिलीकायाइं क्रियाकरवी तिस्यानणी जीवकामगुणे समयमात्र हेगौतमतादुकमरी
नकरवु मूर्छीरहइ तिननो हेगौतम मादनकरवु

मयं १८ धम्मंपिसद्दहंतया दुल्लहाकाएणफासया इहकामगुणेहिंमुछिआ समयं १९ परिजूरइतेस
रजीर्ण अनइमाथइ केसपांडुरा तिकारइं कानना बल तेतणीसमय जीर्णथाइ केसधुला तेनाकनुबलहीन ति तणी
थाइ जइतादरा हीनजइ मात्रप्रमादनकरवु सरीरतादक थाइ थाइ समयमात्रप्रमादन करवो

रीरं केसापंडुरयाहवंतितेसेसोअबलेहायई समयं २० परिजूरइ केसाय सेघाणबलेणहायई समय
जीर्णथाइं केसाधुः तिकारइतेचक्षुनु तेनणीप्रमा जुजुसरी केसथाइ तेजीभनुबल तेनणीप्र जुजुसरी केसाधु ते
२१ सरीर लाथाइ बलहीणथाइ दनकरवु २२ रथाइ गथाइते हीनथाइ मादनकरवु २४ रथाइ नथाइ कार
कारइ

२२ परिजू केसाय सेचक्खुबलेअ समयं २३ परिजू केसाय सेजिब्भबलेय समयं २४ परिजू केसाय से
तस्पर्शबलहीणथा समयमात्रप्रमा जुजुथाइ केसाधा तिकारइसबलाइ तेनणीप्रमाद हेगौतमअरतिगंडमालाअ रागविं
इतेनणीगौतमधर्मलही दनकरवु जारितिकार गथाइ इदिनणा बलहीणथाइ नकरवु नइविसूचिकातणाकरी विवि

फासबलेअय समयंय २५ परिजूरइ केसाय सेसव्वबलेय समयं २६ अरईगंडंविसूइआ आयंका
धप्रकारनाभ्यस्पर्शइ एहालीथकइइ दीविड्सं तेनणीप्रमा वेदीसिंदसरीरनुआयणु। जिमकमलशारद पाणीनेस्पर्शी
थमइतादक हेगौतम दनकरावो २७ शारदकालनुजल, अलगुरहइ

विवहाफुसंतिते विहडयविद्धंसइते समयं २७ वुछिंदसिणहमप्पणो कुमुअंसारइअंवपाणीण

४ सरीरयं

तां तेमसर्वोस्नहवर्जीनइ समयमात्र गौतम धनअनइनारी दीक्षानुपामुंवइ अणगारपणुं तेकाटइंविम्युतवलीमजिम
हेगौतमप्रमादनकरवु बाईन.ड मे

सेसव्वसिणेहवज्जिए समयं २८ चिच्चाणधणंचभारियं पव्वइउहिसिअणगारिअं मावंतंपुणोविआविए
गौतमप्रमाद हेगौतम बांधीनइ मित्रबा अनइ घणुधनतुसमुदह मूकीने उमनों बिसिरी जीवार गौतमप्रमाद हेगौतमपवम
नकरवु २८ धव नइ नाना प्रकारनुस नु तिह नइ मकवमि उप काल इनिश्चइ

समयं २९ अवउज्झियमित्तबंधवं विउलंचेवधणोहसंचयं मातंबिइअंगवेसए समयं ३० नहुजिणेअ
जिनकेवली अनइ घणामतदीसइ मोक्षमार्ग तेनणीहक्कोमा हेगौतम हेगौतम कांटासहित मार्ग बांधीने उत्तमो
नदेखीसइ नादेखाडनार ततलइ गुरुआमतीजेस हमार्ग नइ विषइ मादनकरवु

जदिस्सई बहुमएदिस्सइमग्गदेसिए संपइनेआउएपहे समयं ३१ अवसोहियकंटयापहं उइणोसि
छइमोटइ ज्ञानसिउत्तममारग बांधीनइ मोक्ष समय ३२ हेगौतम जिम बलहीन भार विसमुमार्ग आदरीनइ पछइ पश्चाता
मार्गि तेनणीप्रमादनकरावो मात्र वाहकभारनु कपाडणहार पकरइ तिम

पहंमहालयं गछसिमग्गंविसोहिआ समयं ३२ अबलेजहभारवाहए मामग्गेविसमेवगाहिआ पुछा
पश्चातापकारसिनवमा तेनणीप्र हेगौतम ताहुं उतसमु अनइ वलीकांइ आवुं छे तरीनै पामेजा हेगौतमधर्मलही
३३ मंतरविषं इसपोलइ उकारदइ समयमात्रप्रमादनम करवे

पछाणुतावए ३३ समयं तिणोसिअणवंमहं किंपुणचिट्ठसितीरमागउ अभितुरपारंगमित्तए समयं ३४
हेगौतम उंमिहश्रेणि कवीइइ तेसिद्धिस्थान गौतम सलोकांतइ लोकनोकहवु छे कल्याणमय तेपामवाप्रमा हेगौतम बुद्धिकहीइ
सातइ समि उत्तरसरीरथइ सर्वोत्कृष्ट लोकइ दमकरवो। ३५ ज्ञानवइ समाधान
बइतेन ली

अकलेबरसेणिंमुसियआ सिद्धिंगोयमलोयंगछसि खेमंचसिवंअणुत्तरं समयंगोय ३५ बुद्धेपरिनिव्वुडे

उपटबु

विहार गामनगरनइ विषइ संयत अनइ उपसमनमार्गप्रति समनयमाचूर श्रीमहावीर नाम्युकह्यु केवलबुवइ गायमु रहुवे
करजे स्त्रुबुलइ तिनदाय ३६ धमनातिनशाउदगात माहमकारमे वीरनु लीनइ अनइ अर्थपदइ मङस
चरे गामागए नगरे व संजए संतिमग्गं च वूहए समयं गोयम मा पमायए ३६ बुद्धस्स निसम्म भासियं सुकहियमट्ठपओवसोहियं
राग दोष छेदीने सिद्धि गइ गया गोतमस्वामि एहवु कह्यु ३७ द्रुमपत्रकाध्ययनसंपूर्ण १० संजोगथकी मुकाणा ते
ग्रथ श्लोक ३८ २२

रागं दोसं च छिंदिया सिद्धिगइं गए गोयमे त्ति बेमि ३७ दुमपत्तियं अज्झयणं समत्तं १० संजोगा विप्पमुक्क
अणगारनु भिक्षुनु आचार प्रगटकरीस अनुक्रमइ सुणनइ कह ज्ञेमाधु जइ विद्यारहीत मानी लो
दइ तीमानयु जड लो

स्स अणगारस्स भिक्खुणो आयारं पाउकरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे १ जे आवि होइ निव्विज्जे थद्धे लु
जइ इंद्रीय वारवार लवकरइ जे अविनीत जइ सिद्धांतथी अबहुश्रुत तापहत्यइ पाच जेमाधुसीखमणनथाम क्रोधइ
नुदइ इकाणइ ३ स्थानकेकरी इतकिस्याय

द्धे अणिग्गहे अभिक्खणं उल्लवई अविणीए अबहुस्सुए २ अह पंचहिं ठाणेहिं जेहिं सिक्खा न लब्भई थं
क्रोधइ प्रमादइ रोगइ आलसइ ३ एतला अनंतर आठ ठामेक सीखदेवानोयोग्य हुइ केहाइ ठाम सदाइ
गी हास्यरहित इंद्रीय

भा कोहा पमाएणं रोगेणालस्सएण य ३ अह अट्ठहिं ठाणेहिं सिक्खासीले त्ति वुच्चई अहस्सिरे सया
मइ अनइ कदइ नु मर्मन ४ शीलसयुक्त अतिचार कदीइ चपल पणे रहीत क्रोधरहीत सत्यवचन एहवु सीख जइ
२ बोलइ रहीत ५ ७ इद्रीयमको इतहनइ

दंते न य मम्ममुदाहरे ४ नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए अक्कोहणे सच्चरए सिक्खासील २३

सिखाहेवा एतला अनंतर चऊदे ठाम वर्ततु संयत जइ अविनीत कहइ तेहनइ ते अनइ मोक्षनजाइ ६ ल
नु आचार ५ करीनइ वढ

त्ति वुच्चई ५ अह चउदसहिं ठाणेहिं वट्टमाणे उ संजए अविणीए वुच्चई सो उ निव्वाणं च न गच्छई ६ अ
वारंवार क्रोधी हुइ प्रबंधनीइ दीर्घरोस मित्री करीनइ वमइ कोरइ श्रुत पामीनइ मानक ७ अपि पाप
स्वलरक्रोधीजइ यकरइ रइ लि

भिक्खणं कोही हवई पबंधं च पकुव्वई मेत्तिज्जमाणो वमई सुयं लद्धूण मज्जई ७ अवि पावपरिक्खेवी अ
इसी सघलाव नाइ पापना अनि श्रइ मित्रनु वांकुविरूउ बोलइ ८ प्रमवधनो योजनयाप स्वइ लोभी इंद्रीनेमोकले
वरिषवी कही इनदके लोपयथाव्याख्या बोले ३११ लामुक इसला
कइइ नमित्र नाविषकापनकरे

वि मित्तेसु कुप्पई सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ पावगं ८ पइण्णवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे अस
पनकरइ अप्रीय करी इसा इसुं जइते अविनीत कहीइं ९ एतला अनंतर पनरठामकरीने सुविनीत कहीइ तेकिहो गुरुनाविनयथी नीचो वर्त
सइ वपलमुंदइ

विभागी अवियत्ते अविणीए त्ति वुच्चई ९ अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई नीयावित्ती अचव
माया रहीत कुतूहल नकरइ १० थोडु बोलइ स्वजनइ कर्क दीर्घरोषन करइ मैत्री करीनइ सेवइ श्रुत पामीनइ मान नकरइ ११
मवचनबोलइ ५

ले अमाई अकुऊहले १० अप्पं चाहिक्खिवई पबंधं च न कुव्वई मेत्तिज्जमाणो भयई सुयं लद्धुं न मज्जई ११
आचार्यादिकनी निंदा नकरइ मित्रनइ विषइ कोपनकरइ अप्रीयहोइ मित्रनु रहस्य एकांतइ कल्याणबोलइ १२ कलहडमर कदीइ विवाद
नकरइ १० वर्जइ १८

न य पावपरिक्खेवी न य मित्तेसु कुप्पई अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाण भासई १२ कलहडमरवज्जए

बुद्धिवंतनीबुद्धिरु लक्षण इसीसंघवी तेसुविनीतकहीइ १४ तमइगुरुकाजवासीनित्य जोगवयातनकहीइ भीयकरइ द्वि

उत्त० वृ०॥ बुद्धे अभिजाईए हिरिमं पडिसंलीणे सुविणीइ त्ति वुच्चई १३ वासेगुरुकुले निच्चं जोगवं उवहाणवं पियंकरे पि

यंवाई सेसिक्खं लद्धुमरहई १४ जहा संखंमि पयं निहियं दुहओ वि विरायई एवं बहुस्सुए भिक्खू धम्मो कित्ती त

हा सुयं १५ जहा से कंबोयाणं आइन्ने कंथए सिया आसे जवेण पवरे एवं हवई बहुस्सुए १६ जहाइन्नसमारूढे सू ×बङ×

रे दढपरक्कमे उभओ नंदिघोसेणं एवं हवइ बहुस्सुए १७ जहा करेणुपरिकिन्ने कुंजरे सट्ठिहायणे बलवंते

अप्पडिहए एवं हवइ ब० १८ जहा से तिक्खसिंगे जायखंधे विरायई वसहे जूहाहिवई एवं हवइ ब० १९ जहा से ति

क्खदाढे उग्गे दुप्पहंसए सीहे मियाण पवरे एवं हवइ ब० २० जहा से वासुदेवे संखचक्कगयाधरे अप्पडिहयबले २४

जोहे एवं हवइ ब० २१ जहा से चाउरंते चक्कवट्टी महिड्ढिए चउदसरयणाहिवई एवं ह २२ जहा से सहस्सक्खे वज्जपाणी

पुरंदरे सक्के देवाहिवई एवं हवइ ब २३ जहा से तिमिरविद्धंसे उत्तिट्ठंते दिवायरे जलंते इव तेएणं एवं ह २४ जहा से

उडुवई चंदे नक्खत्तपरिवारिए पडिपुन्ने पुन्नमासीए एवं हवइ ब २५ जहा से सामाइयाणं कोट्ठागारे सुरक्खिए नाणा

धन्नपडिपुन्ने एवं हवइ २६ जहा सा दुमाण पवरा जंबूनाम सुदंसणा अणाढियस्स देवस्स एवं हवइ बहुस्सुए २७

जहा सा नईण पवरा सलिला सागरंगमा सीया नीलवंतपवहा एवं ह २८ जहा से नगाण पवरे सुमहं मंदरे गिरी

नाणोसहिपज्जलिए एवं ह २९ जहा से सयंभुरमणे उदही अक्खओदए नाणारयणपडिपुन्ने एवं ह ३० समुद्दगं

उ०८५॥

ऊणइक्खलाइंव नदी नयरवीत ऊणाइ नीपाइनदी अनइदकइ सूखाविस्तीर्णछेजीवेनः क्षपीकर्मनइ मुगतइ ग याजेमाधु ३ ज्ञानाकारी। १

सीसमा दुरासया अचक्किया केणइ दुप्पहंसया सुअस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ३१ १

तस्मात् श्रुतमवीइं उत्तमअर्थनो गोनार जेणआपानो बुआ मुक्तिपमाइ इमकहुं ३२ बहुश्रुतपुज्जअध्ययनसंपूर्णं तापरअनेरानइ आकृ४८ १६२२८

तम्हा सुअमहिट्ठिज्जा उत्तमट्ठगवेसए जेणप्पाणं परं चेव सिद्धिं संपाउणिज्जासि त्तिबेमि ३२ बहुसुअपुज्जअज्झयणं सम्मत्तं ११

स्वपाकचंडालकुलि ३ कृष्टगुणधरउमुनि हरिके बलएहवे इवे भिक्षु जितेंद्रीय १ इर्यासुमतरं नाषासमतउ उच्चा कृपनो गासी इनामइ एषणासुमति २ रपाश्र

सोवागकुलसंभूए गुणुत्तरधरो मुणी हरिएसबलो नाम आसि भिक्खू जिइंदिओ १ इरिएसणभासाए उच्चा-

वणसुमतिश्च आदाननादमात्रनिदेप उपसमीजितेंद्रीयवे २ मनागुप्तिवचनगुप्तिकायगुप्तिजितेंद्रीय भिक्षानइकारणइ णासुमतिकुन्नवइ नवल॥ इवे

रसमिइसु अ जओ आयाणनिक्खेवे संजओ सुसमाहिओ २ मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइंदिओ भिक्खट्ठा बंभइ-

ब्राह्मणसबंधीयइ ज्ञानइ पा ३ तपतपइ दषीनइ आवइ तपइ करीइ बलुइ बु बापडवइउपधि उपग्रहसवा अनार्यकुलहीनना मइ आवीरह्या वइ अनादग्व ए नातआवइ दषीनइ लोगा

ज्जंमि जन्नवाडमुवट्ठिओ ३ तं पासिऊण मिज्जंतं तवेण परिसोसियं पंतोवहिउवगरणं उवहसंति अणायरिआ

४ केहवा वइ अनार्य जा हिसानाकरनार अजि अब्रह्मचारी मूर्ख एहवे वचनक हिवालागा ५ कुणएह कितो बीभत्सरूप तिमइ करी स्तब्धना लेंद्रियवइ तत्ते आवइवइ

४ जाइमयपडिथद्धा हिंसगा अजिइंदिआ अबंभचारिणो बाला इमं वयणमब्बवी ५ कयरे आगच्छइ दित्तरूवे

कालुविकराल बीवाकानाक उपछलक दीइं रलो पिशाचसरीवुं ऊकरडानुवस्त्रपहइ पुकंठनादवु ६ केहारे तेपणइ पइ रजोवा अयोग्य का का दीनवस्त्रइ करी कां रुपवइ

काले विकराले फोक्कनासे ओमचेलए पंसुपिसायभूए संकरदूसं परिहरिय कंठे ६ कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे का- २

सी आस्याइ इहा आवुवइ दीनवस्त्रे करी रजइ करी पिशाच पुत्र निकल जाइ इहा बु इमकहे वाम्हण ७ यक्ष तइ पय डतिंदो तिंदुकवृक्ष स्युउवइ इ हां

ए व आसा इहमागओसि ओमचेलगा पंसुपिसायभूआ गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओसि ७ जक्खो तहिं तिंदुयरुक्ख-

वासी अनुकंपा तेमहामुनिनी करतु णापवीनइ आपणुम सरयतले अ एहवीवचनबोलवालागो तियक ८ यतीनाम श्रमण इहहां ब्राह्मणप्रतइ कर्मानइ कह

वासी अणुकंपओ तस्स महामुणिस्स पच्छायइत्ता निअगं सरीरं इमाइं वयणाइं उदाहरित्था ८ समणो अहं सं-

मणजमयतीह कांविरसु सम परिग्रहसी अन्नइ परनइ काजेप भिक्षाकाले तेअन्ननेअर्थइ इहां आवुं ९ दीजीइ ब्रह्मचारी धनधी बाधी सुवइ अन्न लोकनइ

जओ बंभयारी विरओ धणपयणपरिग्गहाओ परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले अन्नस्स अट्ठा इहमागओसि ९ वियरि-

वीइ खवराव लोगव अन्न घणुइ घरमादि आदीसइ जाणुतुम्हमा दरइ याचनानो आजी जीवकता कागरइ अन्न तपस्वी कइ जाइ १० सुलभ लइ नखइ, नखे विकावइ नेली

ज्जइ खज्जइ भुज्जई अ अन्नं पभूअं भवयाणमेअं जाणाहि मे जायणजीविणुत्ति सेसावसेसं लहउ तवस्सी १० उ-

रणक दइ वइ ए रांधुवइ ली अथवा महइ जइनो पनु वइणकपक्ष इ पाणिप दवुअन्नपाणी न दीसु इकनइ सुपुरसनेवइ यतो जनवाम्हणनइ अर्थइ उम ब्राम्हणकाहेतु ११ कहे

वक्खडं भोयणमाहणाणं अत्तट्ठिअं सिद्धमिहेगपक्खं नयवयं एरिसमन्नपाणं दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओसी ११

डाक्टर भाऊदाजीस्मारकम्
MEMORIAL

उ०व्वु॥

वेवलछे ते तमन्त्र मिनइ विषइ वी तेहनिमित्त यणं मगानि मित्त आहयाइं एणीवासमलाइं फलसुफलनइ आराधुणवुण्यक्षेत्र निश्चइं तिम फलवी तवावइ वइ फलवी मुणुणमवावोमीवइंतिमवावु १२

ते सुवीयाइं ववंति कासया तहेव निन्नेसु अ आससाए एआइं सद्धाइ दलाइ मज्झं आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं १२

वलीवाषणा करइ वालाणक्षेत्र वइ तेहेज दोधांजतां फलइ उलीयणं जेब्राह्मण जाति अनइ विद्याइं तेहेज नगलो क्षेत्र ब्राह्मण कह्यां तेब्राह्मण णा एप्पा वइलो कनइ विषइ करीसहितवइ वइ

खित्ताणि अम्हं विइआणि लोए जहिं पकिण्णा विरुहंति पुण्णा जे माहणा जाइविज्जोववेआ ताइं तु खित्ताइं सुपेसलाइं

१३ वलवयक्षेत्र करइ जेहनइं कोधमान घणा अदत्तलइ परिग्रह राखतला तेब्राह्मण जाति विद्या रहीत त्रुवइं वि तेथनः क्षेत्र पाप सहीत जीवनुवधजेहनइं वाणी वइ द्यारहीत कह्यइ

१४ कोहो अ माणो अ वहो अ जेसिं मोसं अदत्तं च परिग्गहं च ते माहणा जाइविज्जाविहूणा ताइं तु खित्ताइं सुपावयाइं

कह्यइं १४ अरवाक्य णाजाणो इव्वानास्थर नारपाणिवाणीनु अर्थ नजाणुवेद नणा त्रुइइं उचनीच कुलेकुलि वइ वइ तेनणी तेहेज खत्र

पावयाइं १४ तुब्भेत्थ भो भारधरा गिराणं अट्ठं न याणाह अहिज्ज वेए उच्चावयाइं मुणिणो चरंति ताइं तु खित्ताइं

जाणीवा १५ वलतावाम्हणमवाल्या अरे उपलि इम वइइं तेयुं अम्ह आगलि अरे असाकए तिणम्हु अन्नपाणी यतिउपज नइ अवर्णवाद बोलइ

सुपेसलाइं १५ अज्झावयाणं पडिकूलभासी पभाससे किं तु सगासि अम्हं अवि एअं विणस्सउ अन्नपाणं न य णं

नइं न दइ दे निग्रंथ १६ वलीयक्षे कहइं पांचेसुमतेकरीमुक्त गुप्तेकरी गुप्त वु जिलेन्द्रिय वु जुसुफलनइं न दी यु सुफतेअन्नत न एकमाधवइ

दाहामु तुमं नियंठा १६ समिइहिं मज्झ सुसमाहिअस्स गुत्तीहि गुत्तस्स जिइंदिअस्स जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं

२६

सुझालनइनुपामसुलाल १७ ब्राह्मण कहइ इहा के छेहे त्र अध्यापकवनारछोप्रसदइनअा एहनइं लाकडीयाटोइ हणी मारो कहिनि हात्र पाडइ जेअहमनइ प्रतकहइ वेतनलौ

इं किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाभं १७ के एत्थ खत्ता उवजोइआ वा अज्झावया वा सह खंडिएहिं एअं खु दंडेण फलेण हंता

न गलेमाडीनइ काढ ३ १८ वतिनानो वचनसांभलीनइ तेब्राह्मणयातेतोघणाकुमार दंडकरीपालीदोरेकरी

ता कंठम्मि घित्तूण खलिज्ज जो णं १८ अज्झावयाणं वयणं सुणित्ता उद्धाइआ तत्थ बहू कुमारा दंडेहिं वित्तेहिं कसेहिं

आवीनइ तेऋषिनइ ताडवालागा १९ राजाकोशलनीबेटीतिहां नराइ सइ नामइं अंगइसइ सुगवे तेमहात्मानेहणातादे

चेव समागया तं इसि तालयंति १९ रन्नो तहिं कोसलिअस्स धूआ भद्दत्ति नामेण अणिंदिअंगी तं पासिआ संजय

खीनइ कोप्याकुमारनइ सांतकरतीजइ २० कहइ वालापीदेवनइ अ दोधाइदेवइ उदइमनमाइ सु किस्युं फाव राजाएइंक नाण्णगदीधीहुंती कइपरि आदरनकीधउ गीवाह्मावइ

हम्ममाणं कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ २० देवाभिओगेण निओइएणं दिन्नामु रन्ना मणसा न झाया नरिंददेविंदभिवंदिएणं

जेणइ कवमीते एऋषीजाणयो २१ ऋषिश्चइं तेएउग्रतपवुकरणहार जितेन्द्रिय संयत ब्रह्मचारी जेणइ नवांछी दीधीहुंती महात्मा

जेणामि वंता इसिणा स एसो २१ एसो हु सो उग्गतवो महप्पा जिइंदिओ संजओ बंभयारी जो मे तया निच्छइ दिज्जमाणिं

पितांइ पोते कोसलराजाइं २२ महायशवंतएमहानुभाग मोरव्रतनुपालनार मोटापरा क्रमनुधणी एहनइं हीलुमो एहीलवायोग नथी

पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना २२ महाजसो एस महाणुभागो घोरव्वओ घोरपरक्कमो अ मा एअं हीलह अहीलणिज्जं

सघलाइ बाल्यतेजइं करी दहिस्सइ मा एहवां तेहनी स्त्रीनां वचन सांभलीनइं पत्नीनइ भद्रा मां वचन कह्या ऋषिनइं वैयावच्च करवा नइं अर्थ

उपरत्नु मासव्वतेएणभेनिद्दहिज्जा २३ एआइंतीसेवयणाइंसोच्चा पत्तीइभद्दाइसुभासिआइं इसिस्सवेयावडिअट्ठया

ते यक्ष कुमरनइं वारइ २४ ते रौद्ररूप करी रह्या आकाशि रह्या असुरदेव तिहां तेहनइं ताडना करइ ते ब्राह्मण होमु

ए जक्खाकुमारविनिवारयंति २४ तेघोररूवाठिअअंतलिक्खे असुरातहिंतंजणंतालयंति तेभिन्नदेहेरुहिर व

मंते पासित्तुभद्दाइणमाहुभुज्जो २५ गिरिंनहेहिंखणह अयंदंतेहिंखायह जायतेयंपाएहिंहणह जेभिक्खुअ

वमन्नह २६ आसीविसोउग्गतवोमहेसी घोरव्वओघोरपरक्कमोअ अगणिंवपक्खंदपयंगसेणा जेभिक्खुअंभत

कालेवहेह २७ सीसेणएयंसरणंउवेह समागयासव्वजणेणतुब्भे जइइच्छहजीवियंवाधणंवा लोगंपिएसोकुवि

१५

ओडहिज्जा २८ अवहेडिअपिट्ठिसउत्तमंगे पसारिआबाहुअकम्मचिट्ठे निब्भेरिअच्छेरुहिरंवमंते उड्ढंमुहेनिग्गय

वाहिरजीभ २९ तेहवादे बात काष्ठ कर्ण न मनथी विषवाद एतलां अनंतर ऋषिनइं प्रसन्न करइ

जीहनेत्ते २९ तेपासियाखंडियकट्ठभूए विमणोविसण्णोअहमाहणोसो इसिंपसाएइसभारियाओ हीलंचनिंदं

च खमाह भंते ३० बालेहिंमूढेहिंअयाणएहिं जंहीलिआतस्सखमाहभंते महप्पसायाइसिणोहवंति नहु

मुणीकोवपराहवंति ३१ पुव्विंचइण्हिंचअणागयंच मणप्पओसोनमेअत्थिकोइ जक्खाहुवेयावडियंकरेंति तम्हा

हुएएनिहयाकुमारा ३२ अत्थंचधम्मंचवियाणमाणा तुब्भेनविकुप्पहभूइपन्ना तुब्भंतुपाएसरणंउवेमो समा

गयासव्वजणेणअम्हे ३३ अच्चेमुतेमहाभाग नतेकिंचिनअच्चिमो भुंजाहिसालिमंकूरं नाणावंजणसंजुअं

३४ आहार पूजइं ... करी महीत

३४ इमंचमेअत्थिपभूयमन्नं तंभुंजसुअम्हअणुग्गहट्ठा बाढंतिपडिच्छइभत्तपाणं मासस्सऊपारणएमहप्पा ३५

उपरसु

तिहांतिवारइ गोधादिक अनइ उ मनोज्ञदेव रत्ननोप्रसिद्ध वज्रादीदेवइंउनिदेव अनइ आकाशिएदवीवाणीकइ २६
पकनी प्रसिद्ध मदेथाशा आव्हाम्माउदानरइ मत्याउ

तदिक्कगांधोदयावुग्गरनाम द्विवासदिवसुद्दारायवुक्का पदयाबद्धंबुद्दे उमुदरदि आणासेअहोदाणांबद्दुठं २६

माहात्तउकारइ निश्चइसइतप नज्ञाणवुजातिनुविशेषकाइ चांडालपुत्रहरिकेसबलसाधु जेहनइएहवी ऋद्धि मोटीदीसे
तुविशेष

सव्वंबुद्दीसइतवोविसेसा नदीसईजाइ विसेसकोइ सोवागपुत्तंहरिएससाहू जस्सेरिसाइड्ढिमहाणुभागा

२७ अरज्ञानस्थापणउमहेजातिनुआर पालीइकरीअद्दिबाह्मणाहिवांबुवो जेवलीअग्निबुहुबादहीनी त्तदातत्वनइन
न आनितुआरलकरूवउ अादि

२८ किंमाहणाजोइसमारंलता उदएणसोहिंबहियाविमग्गहा जंमग्गहाबाहिरिअंविसोहिं नतंसुदिठंकुसला

बोलइ २८ स्नानत्वगअम्हालसूक्ष्मनहण संघ्याइअनइउलातिपाणीस्य प्राणहतनइजीवनइमारता वलीदृष्टा
काष्टअग्नि जाता आकरूवउ

लावयंति २९ कुसंचजूवं तणकट्ठमग्गिं सायंचपायंउदयंफुसंता पाणाइभूयाइ विहेडयंता तुजोवि

पापइमकरूयतीइ ३० वामहणकहइ किमवालीइहसाधु पापकर्मनइ किमहूटीइ कहावमयतान्हयरूशब्रिन
अम्हा किमजीउ कर्म

मंदापकारदयाव ३० कहंचरेभिरकुवयंजयामो पावाइंकम्माइ पणुल्लयामो अरकाहिणोसंजयजरक

कहइजसुइसधानातिरूहयाणमहदेवुरु वजीवनिकायकहीइसमूहातइ हृपातु अदत्त आणामवनाक अनइपरिग्रह
पि क. पक फलात ३१ नाआरंलअणकर ना वउ नइ ना अनइमा

पूइआ कहंसुजिठं कुसलावयंति छज्जीवनिकाएअसमारंलंता मोसंअदत्तंचअसेवमाणा परिग्गहंइत्थि

मानमाया एहनइबोहनाजीताकाउइते ४२ वलीमकहवाइसाधुसंवरथा वलीइहलोकसंबंधीजीवीतपवांवता सनेकायाबोम
दहस्माइशीत व इपासंवसवाय क रीनइ नबी एवीरलाबइ

उमाणमायं एवंपरिण्णायचरंतिदंते ४२ सुसंवुडापंचहिंसंवरहिं इहजीविअं अणवकंखमाणा वोसट्ठकाउ

अनइकायोबुलइ साधुपमोटोयागयाग मोरथान ४३ ब्राह्मणकहइवेश्वानरवेयतीता तादहरवाइनेकेहा अनइताइरि इधणतोकहाबइ
हहाजणाइ यागइस्पातिकहइताकरउ हरइक्रणअनरक्रया त्तहाम वैश्वानरदीपावणगारहम

सुइचत्तदेहा महाजयंजयइजन्नसिट्ठं ४३ केतेजोईकेतेजोइठाणा केतेसुयाकिंचतेकारिसंग एहाइंतेकयरा

होमहुसाधु अनइकवणइहोमइकरीवैश्वानरहोमइकइ साधुबोल्पोतपतेज्योतिअग्नि योगनल जारीरतलगोर कर्मइधनाइ
४३ न नइजीवतेअग्नि चाहुआ

अंसंतिभिक्खू कयरेणहोमेणहुणासिजोइं ४४ तवोजोईजीवोजोइठाणं जोगासुयासरीरंकारिसंगं कम्मएहा

कणमयमयोगना एहवुहोमकरूं ऋषिनइप्रससरूछे ४४ तादहरउइहहुणकवणइ किंहांतहाइपावरलाफइ कहइहेयवामे
निक
तीर्थ कुउ तादरइ

संजमजोगसंती होमंहुणामिइसिणंपसत्थं ४५ केतेहरए केतेसंतितित्थे कहिंसिण्हाओवरयंजहासि आइक्खणो

जितमाहात्मा ज्ञानउलाणवाउलारइपामइ ४५ साधुकहइउहधर्मरूपीउदह निर्मलवइतीर्थतइआत्मानी लेश्याइतीर्थरूप
ब्रह्मरूपज्ञाततीर्थ हठीलेश्याइ यामिकानिर्मल

संजयजक्खपूइया इच्छामिनाउंभवउसगासे ४६ धम्मेहरएबंभेसंतितित्थे अणाउलेअत्तपसन्नलेसे जहिंसिणाउ

चापाधाइइ जेणतीर्थइसीतलथयुकेतदोषवांतु ४६ एस्नानकहितेकेकारकत्य यमोदुस्नान ऋषिनइप्रशस्त जेणइस्नानइविम

उविमलोविसुद्धो सुसीइभूओजहामिदोसं ४७ एअंसिणाणंकुसलेहिंदिट्ठं महासिणाणंइसिणंपसत्थं जहिंसिणाया ३७

उ॰टबु

लनिर्मलथइ जाइ तस्मानकरीमातक्षापितुझमहात्मामुकाता ४७ एवारेकहितुअध्ययनसंपूर्णथयुं १२ बुह्मदत्तजातिचुपराजयु
रिसिकवीडइनेकह्युछे निवाइकाता

पाविमलाविउझा महारिसिस्समम कारणयत्तिबेमि ४७ इतिहरिएसाणिझ्ययणंसम्मत्तं १२ जाईपराजिउखलु का

नीआणव हथिनागपुरि चलणीनीकूखइं उपनुनलनीगुल्मविमानथकुव १ कांपिलपुरिसंभूत चीत्रजु पुरिमतालिनग
कीधउं ब्रह्मदत्तवउनामइ थीनइ पुंडीकथयु जीव

सिनिआणंतुहत्थिणपुरंमि चुलणीइबंभदत्तो उववन्नोपउमगुम्माउ १ कंपिल्लेसंभूउ चित्तोपुणजाउपुरि

रिकपनु सेठिनाकुलनइविषइ विस्तीर्णकुलइं धर्मसांभलीनेदीक्षालीधी २ कांपिल्लनगरइ समागतआव्याबेभाइचित्रसंभूत तावडोसुखद
एकठा मिल्या ख

मतालंमि सिट्ठिकुलंमिविसाले धम्मंसोऊणपव्वईउ २ कंपिल्लंमिनयरे समागयादोविचित्तसंभूआ सुहदुक्ख

फलनाविपाक कहइ आपणआपणो ३ चक्रवर्तिमोटीऋद्धिनुधणी बह्मदत्तमहायशवंत माइप्रतइंबहुमानइंकरी एहवुंवचन
निजबोल्या

फलविवागंकहितितेइक्कमिक्कस्स ३ चक्कवट्टीमहिड्ढिउ बंभदत्तोमहायसो भायरंबहुमाणेणं इमंवयणम

कहे ४ हताआपणबेइभाइ माहोमाहिवशवर्त्या माहोमाहिप्रेमवंत एकएकनइहितकारी ५ दासहताइंहाआपणा बी
गत बोलतीकाइहत मोटाबेहदासमहत्या

ब्बवी ४ आसिमेभायरादोवि अन्नमन्नवसाणुगा अन्नमन्नमणुरत्ता अन्नमन्नहिएसिणो ५ दासादसण्णेआसी मि

हरणादिकालिंजरपरबतनइविषइ बीजोभवि गंगानदीनइ कांठइबेहंसहता मातंगचांडाल काशीनगरी ६ आपणबेहजदेवलोकि मुक्त आपणहता ऋद्धिवंतदेवा
सहताआपणबेहमृगहुआ कीबेहंसहुआविहंस इवारणसीनगरीविषइ देवथयाआपणबेहदेवहु कवणु

आकालिंजरेनगे हंसामयंगतीराए सोवागाकासिभूमिए ६ देवायदेवलोगंमि आसीअम्हेमहिड्ढिआ इमाणोछ
ट्ठिया

छट्ठीजाइ अन्नोन्नइआजानीमिल्या ७ यहीकर्मनीआणातेंकरयु तइंहेराजन चीतव्यु तेफलनाविपाकथी आपणावि
करइ

ट्ठियाजाई अन्नमन्नेणंजाविणा ७ कम्मानियाणप्पगडा तुमेरायविचिंतिआ तेसिंफलविवागेणं विप्पओग

विजोगपा ८ महइसत्यइ सोचनीमाया कर्ममइंपाछिलेभविकीधां तेआजभोगवुं छुं तेचित्रतणाक्यानथीनो ९ सर्वरुडुंकीधुंसफ
म्या प्रकृतइं धर्मना युक्तइ गवत्ताण बुमलइइकहतछे

मुवागया ८ सच्चसोयप्पगडा कम्मामएपुराकडा तेअज्जपरिभुंजामो किंनुचित्तेविसेतहा ९ सव्वंसुचिण्णंस

लकरइंतमइ डिमुतनवअसुतकर्मकरयांतेनो अर्थेउत्तमतणाकामइंकरीनइ आत्मामाहरुपुण्यफलसहितव १० हवइबेडकहइ
गत्याविनानमुकाईइ तेइबइ इवइब्रह्मदत्तने

फलंनराणं कडाणकम्माणनमुक्खअत्थि अत्थेहिंकामेहिंउत्तमेहिं आयाममंपुण्णफलोववेए १० जाणाहिसंभू

जाणिवेहेसंभूत महाईक तपुण्यनुफलसंयु पणिविचारनइपणितेमजाण ऋद्धिकांतिवतनइप्रणप्रचुरता ११ मोटीअर्थरूपवचने
तिमाषुफल लक्ष्मीवंत कवइ जाणिराजेंद्रछे घणी हती

यमहाणुभागं महिड्ढियंपुण्णफलोववेयं चित्तंपिजाणाहितहेवरायं इड्ढीजुईतस्सविअप्पभूआ ११ महत्थरूवावयण

करी वहवीगाथा मनुष्यनासमूहमांहे जेणसाधुसांभलीनेसाधुशीलगुणयुक्त तेणसाधुसांभलीमइंश्रमणइंकरी १२ उच्चउदयमधुकर्क
यांनी कहीगुरु दीताथइ बोल्युं उजु वलंबु ब्रह्मदत्तकहइ

प्पभूया गाहाणुगाआनरसंघमज्झे जंभिक्खुणोसीलगुणोववेआ इहज्जयंतेसमणोमिजाउ १२ उच्चोदएमहुकक्के

धवल्प कहाणपांचआवासदेवेदीधाब एघर हविचत्रधनेधनेसहीत एतलेदसमहीनगुणेसहीतव १३ वलीकवनाटिकवाजित्रेकरी

अबंभे पवेइआआवसहायरम्मा इमंगिहंचित्तधणप्पभूयं पसाहिपंचालगुणोववेआ १३ नट्टेहिंगीएहिअवाइएहिं

३५

स्त्रीजणीपरवस्त्रायतै ए भोगविलोग द्वक्रमीक्षर मुक्तनइं ए दीहाइ दुःखवर्मक्रवइ वइ १४ ते पूर्वे स्नेहइं करीकीधुं छै रागजाव

उपद्धु॥ नारीजणाइं परिवारयंता भुंजाहि भोगाइं इमाइं भिक्खु मम रोअए पव्वज्जा हु दुक्खं १४ तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं न

गजानप्रतइं कदइ दइ केवलु धर्मवंतानसं नुतनुहितकारी चित्रऋषिइं मवचनकहइवालागु १५ गसर्वविलापरूपगीत सर्वनाटि
वं नेग वा कामगुणलोलुपी वे

राहिवं कामगुणेसु गिद्धं धम्मस्सिउ तस्स हियाणुपेही चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था १५ सव्वं विलवियं गीयं सव्वं न

कनेविटंबणा सर्वआभरणते भारभूत सर्वे भोगानइं दुःखनुसमो १६ कामगुण बालमूर्ख दुःखनुआव नथी तेमुषकामगुणनो विषैराजन्
व छैनइं मनोज्ञवइ दुःखनुइ

ट्टं विडंबणा सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा १६ बालाभिरामेसु दुहावहेसु न तं सुहं कामगुणेसु रायं वि

विरक्तभोगशाघयानावारिन्नीया ते ऋषीश्वर सीलगुणआराऋतवइ १७ हेनरिंद जाति मांहइं अधमनर चांडालनी जाति आ पणबेजणा
हुआ

रत्तकामाण तवोधणाणं जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं १७ नरिंद जाई अहमा नराणं सोवागजाई दुहउ गयाणं जं

जिहां आपणइ सर्वलोकनें द्वेष्य वस्या चांडालनइं घरि १८ तेणइं पामरइं जातिमांमी वस्या चांडालनइं घरइं
पनेदनीकआहतइ मलितइसमनिनइकस्याते

हिं वयं सव्वजणस्स वेस्सा वसीअ सोवागनिवेसणेसु १८ तीसे अ जाईय पाविआए वुच्छामि सोवागनिवेसणेसु

सर्वनइं लोकनें निंदनीक थया पाछिला भवना जे पूर्वकृत कर्म १९ हमणां तो तुं देशनोराजा मोटो महाप्रभु मोटीऋद्धि पुण्यनां फलजा
वडै लाग

सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा इहं तु कम्माइं पुरेकडाइं १९ सो दाणिसिं राय महाणुभागो महड्ढिओ पुन्नफलोव ३५

णीन ए छवनो भोग असास्वता मेलीनइं गणइं देवइ नीसरिनें मार्ग ग्रहु इह लोकइं जीवितव्य अस्थिर नइं अज्ञाणमाहि पुण्यनइं
इ २० नइ

वेउ चइउ भोगाइ असासयाइं आदाणहेउं अभिनिक्खमाहि २० इह जीविए राय असासयंमि धणियं तु पुण्णाइं

अणकरतो तेजीवइ मरणकाले आविइ सोचकरतुधर्मअणकरतो परलोके २१ जिम सीहमृगलानइं ग्रहइ ते मृत्यु नरनइं लइ
पाछलिसोचइ

अकुव्वमाणो से सोअइ मच्चुमुहोवणीए धम्मं अकाऊण परंमि लोए २१ जहेह सीहो व मियं गहाय मच्चू नरं निइ हु अं

तकालि ते हनो माता वली पिता वली भ्राता तिणइं कालें तमृत्युनादुःखनासनकइ २२ ते हनुं दुःखविहचेजी नातिला नलइ मित्रवर्गनें सेवा न

तकाले न तस्स माया व पिआ व भाया कालंमि तंमि तस्स हरा भवे २२ न तस्स दुक्खं विभयंति नाइउ न मित्तवग्ग न सुआ

बेनाईनलइ एकलुपोतइं भोगवनार जाइं दुःख कर्तारप्रतें जं जोडइ कर्म्म २३ जीवनपतीनइं द्विपद चउपद क्षेत्र घर धन

न बंधवा एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं कत्तारमेवं अणुजाइ कम्मं २३ चिच्चा दुपयं चउप्पयं च खित्तं गिहं धणधन्नं च स

सघलु पोतानुं कर्म कीधुं तनवी जुआइ ले इनै परभवि सुंदर पापरूप पालइ तेजीवनुं एकलु तुच्छसरीर चिंतामांहइं गयुं तस्म थयुं वैश्वानरइं
२४ गे

सव्वं कम्मप्पबिइउ अवसो पयाइ परं भवं सुंदर पावगं वा २४ तं एक्कगं तुच्छसरीरगं से चिइगयं दहिअउ पावगेण भ

भार्या पुत्रनें अनेरा पोतीलानइं दातारप्रतइं नइं जाइं तत्ले सर्व मूकीजाइ जे हे राजन् जीवितव्य प्रमादरहीत जराआवि वर्ण हरे तेनर नुराजा
२५ मृत्युनइं कालइ आपोइ अनइ

ज्जा य पुत्ता वि अ नाइउ अ दायारमन्नं अणुसंकमंति २५ उवणिज्जइ जीविअमप्पमायं वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं

D. H. MEMORIAL

पंचालराजा वचन सांभलीनइ मोटा कर्म ते काम करिवा रीड कइ २६ कहइ तु साहस ते वचन ए तेम छइ ते मुझने कहइ छइ तेम वचनादर भोग
संग निबिड डोणेह गाढ करइ

३५२ बु॥ पंचालराया वयणं सुणाहि मा काहिसि कम्माइं महालयाइं २६ अहंपि जाणामि जहेह साहू जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं भो

मग सुख कारी छइ ते दुर्जय छइ तेह्ना आज अम्ह सरीखा माननी ज्ञाइ हस्तिनागपुरि चित्र देखीनइ सनतकुमार नरपतिनी ऋद्धि कामभोग
२७

गा इमे संगकरा हवंति जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं २७ हत्थिणपुरम्मि चित्ता दट्ठूणं नरवइं महिड्ढियं कामभोगेसु गि

द्धेणं नियाणमसुहं कडं २८ तस्स मे अपडिक्कंतस्स इमं एयारिसं फलं जाणमाणो वि जं धम्मं कामभोगेसु मुच्छिओ २९

नागो जहा पंकजलावसन्नो दट्ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ३० अ

च्चेइ कालो तूरंति राइओ न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा उविच्च भोगा पुरिसं चयंति दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ३१ ज ३१

इ तंसि भोगे चइउं असत्तो अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकंपी तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ३२

न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी गिद्धो सि आरंभपरिग्गहेसु मोहं कओ इत्तिओ विप्पलावो गच्छामि रायं आमंतिओ सि ३३ पं

चालराया वि य बंभदत्तो साहुस्स तस्स वयणं अकाउं अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ३४

चित्तो वि कामेहिं विरत्तकामो उदग्गचारित्ततवो महेसी अणुत्तरं संजमपालइत्ता अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ त्ति बेमि

३५ इति चित्तसंभूइज्जं १३ देवा भवित्ताण पुरा भवंमि केई चुआ एगविमाणवासी पुरे पुराणे उसुआरनामे

खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे १ सकम्मसेसेण पुराकएणं कुलेसु उग्गेसु अ ते पसूआ निव्विन्नसंसारभया जहाय जिणिं १सुदय/३२

दमग्गं सरणं पवन्ना २ पुमत्तमागम्म कुमार दोवी पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती विसालकित्ती अ तहेसुआरो

राजानी राणीकमलावती ॥ ३ ॥ प्रवर्त्तताविकाइ पुरोहितना पुत्र वइरागी । मोहन्नाएनेविषइं सावधानचित्तवे । संसारनाफिरवानुंका
थया जन्म जरा मरणनाभयथकीव्याकुलथ्या ।
अभिनवलकरनायण ...

उत्त०ट०बु॥ रायञ्च देवी कमलावई अ ॥ ३ ॥ जाई जरा मच्चुभयाभिभूआ बहिंविहाराभिनिविठ्ठचित्ता संसारचक्कस्स वि
वगानेअर्थेइं । ध्यतीदेषीनइंजोगथिकाविरक्तथा ॥ ४ ॥ विरक्तथ्याइं पुरोहितनापुत्रबेब्राह्मण । स्वधर्मनानीकर्मना पुरोहितनापुत्र संसारीथाव
कामविरम्यातावइत्या नीपोतावनाला इत्वसावाइं
मोक्खणठ्ठा दठ्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥ ४ ॥ पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स सकम्मसीलस्स पुरोहिअस्स सरित्तु पो
लानवनीजाति । तिमजसूत्रतप संयमनेपवर्तवाने ॥ ५ ॥ ताविकइं कुमारकामभोगनइंवि । मनुष्यनाभोगदेवनाभोग आ । मोक्षनावांछ
पइं सादीकनथी पामता गलिकाइनहीं
राणिअं तत्थ जाइं तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥ ५ ॥ ते कामभोगेसु असज्जमाणा माणुस्सएसुं जे आवि दिव्वा मुक्खाभि
लारूपनीअद्धालावनातेमाटे । तातप्रतेआवीनेइमकहिवालाग्या । देखआस्थिरमनुष्यनुंचालवुंदीठुं । अस्थिरीपणो अनेइघणुंआ । तेमाटेघ
ह ९नालए ॥ अंतराय ॥ घुनही
कंखी अभिजायसड्ढा तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥ असासयं दठ्ठु इमं विहारं बहुअंतरायं न य दीहमाउं तम्हा गि
हमांरतिनथीपामता । तेमाटेमाकलाघोइं । तालीमइमो । ७ । पछइपिताइंतेहीनाविरोधिपणइं । तपनोव्याघातकरवानुंवचनबोलुंग। पद
न्यवहारमार्ग मार्गइं
हंसी न रइं लभामो आमंतयामो चरिस्सामि मोणं ॥ ७ ॥ अह तायओ तत्थ मुणीण तेसिं तवस्स वाघायकरं वयासि इमं व
पुत्रवचनवेदीयाइंमकहे । तेअपुत्रीयानइंपरलोकनुंदइं । ८ । नणीनइंवेदब्राह्मणनइंजीमाडीनेपुत्रनेस्थापीनेघरे । दस्त्रा । भोग
भजेमारे
यं वेदविदो वदंति जहा न होइ असुआण लोगो ॥ ८ ॥ अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे पुत्ते परिठ्ठप्प गिहंसि जाया भु ३४

भोगवीनोसहइं । पछइआरण्यवासीनइंसाधुपणोलाधा । ९ । पुरोहितनइंशोकअग्निकरी । मोहरूपीवायुनइंकरीबल्यु
तमनागुणरूपइंधणवालइछइ
च्चाण भोगे सह इत्थिआहिं आरण्णगा होह मुणी पसत्था ॥ ९ ॥ सोयग्गिणा आयगुणिंधणेणं मोहानिलापज्जलणाहिएणं
दइं बलीनायपुत्रा नपीरघुरइं । लालपमणीइ । बलीप्रकारकरीनें । बलीकिम्पुत्रइंपुरोहितबेटा । बेटानइंनिमंत्रइंवइंधनइंकरीनें
ते वहइचिंते नु निवारतुइं ॥ १० ॥ नइम नाव लाइ
तत्त संतत्तभावं परितप्पमाणं लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥ १० ॥ पुरोहिअं तं कमसोणुणंतं निमंतयंतं च सुए धणेणं
अनइंअनुक्रमइंकामगुणाइंक । तेकुमारविचारइंधर्मनइंविषइंवइं ॥ ११ ॥ कुमारकहइंवेदभण्यानथीशरणं । अनइंब्राह्मणजिमाड्यादइंतमन
तीनइ लेमनइ ॥ ११ ॥ दीना त मानरत नइ
जहक्कमं कामगुणेहिं चेव कुमारगा ते पसमिरकधम्मं ॥ ११ ॥ वेआ अहीआ न भवंति ताणं भुत्ता दिआ ण्णिंति तमं तमेणं
जायापुत्रनदइशरण । को नाम अमइंकामभोगनंत्रणइता ॥ १२ ॥ जीवदइंकामभोग । अनइंघणुंकाल । बलीअति । बोलप्रसुखदेइं
न इम कत्र प्रकणमानइं तत्क्षणमात्रसुखदइं इपकारीजाइं दइंदुखादेइ
जाया य पुत्ता न हवंति ताणं को नाम ते अणुमन्नेज्ज एअं ॥ १२ ॥ खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा पकामदुक्खा अनिका
अलीका । संसारमूकावावइरीसिरीयाछइं । अनइंअनर्थनीखाणीछइंएकामभोग ॥ १३ ॥ कुरूपकामनइंविषइं अणनिवृत्त अहोरात्रिप
मात्र कामभोग तापइत
मसुक्खा संसारमुक्खस्स विपक्खभूआ खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥ १३ ॥ परिव्वयंते अनिअत्तकामे अहो अ राओ
तापिका । पुणुंधननइंसज्ञातपतलइंक्रूपणजीना पामइंमृत्युअनइंजराप्रतइं ॥ १४ ॥ आमादरइछइं आवस्तनथी आमाहरइंकरवानो

परितप्पमाणो अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणो पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥ १४ ॥ इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि इमं च मे किच्चमिमं

गपअनक जीवएणइं अकारइंला गतिदिवमरदरइं आयुउप १५ हवइं पिताधनचुलोलद्यानइसै तथा स्त्रजनतथाप्रकामनोगनासु
ढवाक्याप लावकरता मादिक्नकीतेइ अलपत्रोधणुधनस्त्रीसादितइइ घकामघणावइ

उत्तपटवु अकिंचं तंएवमेवं लालप्पमाणं हराहरंतित्ति कहंपमाए १५ धणंपभूअं सहइत्थिआहिं सयणातहाकामगुणोसुकामा

जेवस्तनइंकातइंतपकरी गतसर्वआपइंयीनइछइंतेउ १६ पुत्रकहइंवलतेउ धनइंस्युंकं सजनेस्युंकामतथाकामनागेस्युंकाम अ
नइं एलोकमोहइ ह्यालागवउ इधर्मनाधोरीनइं लम

तवंकए तप्पइ जस्सलोगो तंसव्वसाहीणमिहेवतुब्भं १६ धणेणकिंधम्मधुराहिगारे सयणेणवाकामगुणेहिंचेव सम

होइसइगुणनासमोहधरवा बाहरिव्यालीसइसंसारबाहरि १७ हवेजीवकर्मनातागवेतऊरारिनेक इधमाजि तिलमांहिमातल
आदरीनइंसाधथ्पुं हइवइं जीवकिहांबइसतनावएकू महूत
मआगअरणीमा सहुउ कप कइ

णाभविस्सामोगुणोहधारी बहिंविहाराअभिगम्मभिक्खं १७ जहायअग्गीअरणीअसंतो खीरेघयंतिल्लमहातिलेसु

एणीपरिंपुत्रोसरीरआजाक सबीरहे विणसेनरहइंआकाए इडीनइआत्म स्पानलीआ अरूपीनावमाटइंजइनित्यआत्मा
सत्वजाणीआ नोगवइलपनुरलाव १८ आत्मानुहइ त्माअहपीवइं

एमेवजायासरीरंसिसत्ता संमुच्छई नासइनावचिट्ठे १८ नोइंदिअग्गेज्झअमुत्तभावा अमुत्तभावाविअहोइनिच्चो अ

आध्यात्माहेतुक निश्चइंकर्म अनइंसंसारनइहेतइंबंधक १९ जिमआह्यधर्मअजाणताहुंता पापकर्मकीधउमोहेनाविसिरिके
हीइकारणाहेत तुबंधजइंस्नेतकहया इमावार केहोउ उवेइपहइ उ

अज्झत्थहेउंनिययस्सबंधो संसारहेउंचवयंतिबंधं १९ जहावयंधम्ममजाणमाणा पावंपुराकम्ममकासिमोहा

अनइंआत्मामहाअपराधीउ तवलीकमआत्मनरीसमाचर्न २० वलीकहइंजमएलोक एलोकमयलोपर लोकनइंजाहनीधार
अनइंपरअनइराधीनावउं हणीनइहतइ वस्यो लेइ वकताहजा

ओरुब्भमाणापरिरक्खयंता तंनेवभुज्जोविसमायरामो २० अब्भाहयंमिलोगंमि सव्वओपरिवारिए अमोहाहिंपडंती ३२

अहेगहीयावाजासिराति २१ पुत्रहिनकहइपुत्रनइंहे अनइंकाणइंपरवस्योवे अमवाकहीअमोघ हेपुत्रोमुजनइंवेनावइं ३२
नकांमुं आतोलोकहयो जणइ धारकहो

हिं गिहंसिनरइंलहे २१ केणअब्भाहओलोगो केणवापरिवारिओ कोवाअमोहावुत्ता जायाचिंतावरोहुमि ३२

हतातमा नेपुमुत्युइ अनइजराइपरवस्यो दितअनेरात्रेनेरूप इमपितानीजाणोउम्हे २३ जेजेदिनरात्रिजाइं तेपाछी
हत्पुलोक जाणनीधा

मच्चुणाब्भाहओलोगो जराएपरिवारिओ अमोहारयणीवुत्ता एवंतायवियाणह २३ जाजावच्चइरयणी नसापडि

नावइं पाणिअधर्मकरताहूंता अफलादिनरात्रिजाइं २४ वलीजेतेरात्रिजाइं तेनावइंवलतीपाणि धर्मकरतो

नियत्तई अहम्मंकुणमाणस्स अफलाजंतिराईओ २४ जाजावच्चइरयणी नसापडिनियत्तई धम्मंचकुण

जाइं तेसफलजाणवी २५ एगुकहइंआपणएकठा विहुंसम्यकयुक्त पछइहेवुजो जात्युदीक्षा कुलरनइविषइ
वसीनइकहइंतारहीनइ २ जात्युं लेस्युं भिख्यामाग

माणस्स सफलाजंतिराईओ २५ एगओसंवसित्ताणं दुहओसम्मत्तसंजुआ पच्छाजायागमिस्सामो भिक्खमाणाकु

सु २६ जमरकहइंदनानहेन जेहनइलपयधीनामवा हेतानाहजाणइजनहीसद जेनिश्च आगलीविताते २७ हेपिता
इमरण स्पत्रमित्रीजइ मुहामजाइ नरवावइं आजू

ले२ गिहे २६ जस्सत्थिमच्चुणासक्खं जस्सवत्थिपलायणं जोजाणेनमरिस्सामि सोहुकंखेसुएसिआ २७ अज्जेव

जिधर्मपडिवजवाहींडुं जेधर्मपडिवजताहूंतावली अनइंएसंसारमांहइंअवतस्युं तेनणीनावपु रालीनइरागने २८
संसारमांहइनहीआवउं काइनहीं कहवावाछउ

वधम्मंपडिवज्जयामो जहिंपवन्नानपुणब्भवामो अणागयंनेवयअत्थिकिंचि सद्धाखमंनोविणइत्तुरागं २८

[illegible]

पडीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो वासिट्ठि भिक्खायरियाइ कालो साहाहि रुक्खो लहए समाहिं छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं २९

[illegible]

पंखाविहूणो व्व जहेव पक्खी भिच्चविहूणो व्व रणे नरिंदो विवन्नसारो वणिओ व्व पोए पहीणपुत्तो

[illegible]

मि तहा अहं पि ३० सुसंभिया कामगुणा इमे ते संपिंडिया अग्गरसप्पभूया भुंजामु ता कामगुणे पगामं पच्छा ग

[illegible]

मिस्सामि पहाणमग्गं ३१ भुत्ता रसा भोइ जहाइ णे वओ न जीवियट्ठा पजहामि भोए लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं

[illegible]

संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ३२ मा हू तुमं सोयरियाण संभरे जुण्णो व्व हंसो पडिसोत्तगामी भुंजाहि भोगा

[illegible] ३४

इं मए समाणं दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ३३ जहा य भोई तणुयं भुयंगो निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मु

[illegible]

ते एमेव जाया पयहंति भोए ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्को ३४ छिंदित्तु जालं अबलं व रोहिया मच्छा जहा का

[illegible]

मगुणे पहाय धोरेयसीला तवसा उदारा धीरा हु भिक्खायरियं चरंति ३५ नहेव कोंचा समइक्कमंता त

[illegible]

याणि जालाणि दलित्तु हंसा पलिंति पुत्ता य पई य मज्झं ते हं कहं नाणुगमिस्सामेक्का ३६ पुरोहियं तं ससुयं

[illegible]

सदारं सोच्चाभिनिक्खम्म पहाय भोए कुडुंबसारं विउलुत्तमं तं रायं अभिक्खं समुवाय देवी ३७ वंतासी पुरि

[illegible]

सो राय न सो होइ पसंसिओ माहणेण परिच्चत्तं धणं आयाउमिच्छसि ३८ सव्वं जगं जइ तुहं सव्वं वावि धणं भ

[illegible]

वे सव्वं पि ते अपज्जत्तं नेव ताणाय तं तव ३९ मरिहिसि रायं जया तया वा मणोरमे कामगुणे पहाय ए

उत्तराध्य

निश्रुइं धर्म्मो दिन तारिइ त्राणशरण एतलइं संसारि थकी रक्षाकारि ४० हे राजन् तुम्हे संसार मांहि होई रहो हमे तो नक्कउं छोड्या महात्मानी कि परि
क्कोइ जनतापइं जेम पंखी पिंजरइ आत्मरूपि रहइ तेम माहनी आंदे दीनइ थाइ वालमु इहर

कोहु धम्मो नरदेवताणं नविज्जइ अन्नमिहेह किंची ४० नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं अकिं

चन मुनमुथ कार्य कीधा वइ अनइ परिग्रह आरंभ थी ४१ देवा जुन्ना जेम ठामा दाझता कैला जंतु अनेरा प्राणी आहर्षपा इराग
छती इत्यादि तेम जिम ज्ञान तदं जाणी सूर्ध्व परी ज्ञानी चालनहार रीतदं पिते सदा जागी सभ्र पदी

चणा उज्जुकडा निरामिसा परिग्गहारंभनियत्तदोसा ४१ दवग्गिणा जहा रन्ने डज्झमाणेसु जंतुसु अन्ने सत्ता पमोयंति राग

द्वेषनई वसि थइ ४२ तमी परइं अम्हे मूर्ख कामभोगनइं विषइं मूर्छा पाम्या बाझता जंतु रागद्वेषरूप अग्नि आइ ४३ हवइं भोगभोग
ध्याता जननइं जाण्यु वोमैसागविमी

दोसवसंगया ४२ एवमेव वयं मूढा कामभोगेसु मुच्छिया डज्झमाणं न बुज्झामो रागदोसग्गिणा जगं ४३ भोगे भुच्चा वमि

नइं मोक्षदल्लु आधइं व्यादार आनंद पामता जाइं तिमस्वछावारी पंखी आ ४४ एकाम भोगवेवलवई मोदरइं दावि छाआ आत्मीकां
करइं जाइ तिम कंता माजागइं

ताय लहुभूयविहारिणो आमोदमाणा गच्छंति दिया कामकमाइव ४४ इमे य बद्धा फंदंति मम हत्थज्जमागया वयं च स

आवार जिम पारादिता दिकाजिम ४५ ए जाए आमिष सहइ तेपंखी छोडावइ अनइ आ तिजलोप हांस दलोनइं बेंहार कीमइ हना
आजलाबा मुंजुरालन वेथाइ तेहलाकदी रहीनइं मरालीइ कहु

त्ता कामेसु भविस्सामो जहा इमे ४५ सामिसं कुललं दिस्स बज्झमाणं निरामिसं आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरामो निरामिस १

जहा छाइ मधु परवी आम अनइं कामभोग संसारवधार जिम मणि पुरुद नंपमारे राइ जांकातु चालइ तिम रा हस्वु ४५ हिवाजा गइंछेदनी परइं आपणु
रीषा एकीमा तेनवइं १५ति१ वेवणाव्रदीनइ तुं सा स

४६ गिद्धोवमेउनच्चाणं कामे संसारवद्धणे उरगो सुवन्नपासेव्व संकमाणो तणुं चरे ४७ नागोवबंधणं छित्ता अप्पं २५ १स्लो१

तिनइ छेवइ जाइं घरइं महाराजा इहइ सुकार राजाइ इहवं ४८ राजानइं विपुलराज्य कामभोग डाओपडीप विषयरहीत आसंसकीनें नि
मइ मार्गइं करनइं क्रनइ स्नेह

वसहिं वए एयं पत्थं महारायं उसुयारि त्ति मे सुयं ४८ चइत्ता विउलं रज्जं कामभोगे य दुच्चए निव्विसया निरामिसा निन्न

ने परीग्रहीथयो ४९ सम्यग्धर्मजाणीनइं तछोडीनइं कामभोग सारउंतपथयाउ आकरुषधणुंपराक ५० एतलइं प्रकारइं
महाराणी इडपति जाण्याली नइं प्रधाननइं मआदरीनइ अनुक्रमइं थति

हा निप्परिग्गहा ४९ सम्मं धम्मं विआणित्ता चिच्चा कामगुणे वरे तवं पगिज्झहक्खायं घोरं घोरपरक्कमा ५० एवं ते कमसो बु

बोधा सहुधर्मनइं विषइ अनइं जन्ममृत्यु दुःखनु अंत जोवालागा ५१ आजाइं ते विगतमोहदेवा पहइ लु भावना भावी बोधाइंका
ला॥ यतउ मालसा सर्वेणी दिनो हुता

द्धा सव्वे धम्मपरायणा जम्ममच्चुभउव्विग्गा दुक्खस्संतगवेसिणो ५१ सासणे विगयमोहाणं पुव्विं भावणभाविया अचिरेणेव

लइं करी दुःखनी अंत पाम्या ५२ राजा इषुकारक ब्राह्मण पुरोहित ब्राह्मणी अनइं बेउ पुत्र एसर्वे वारिक्लेइं मुगतइं ५३ इ
रानइं मलावती राणी पद्मासाइजम बोल्यु

कालेण दुक्खस्संतमुवागया ५२ राया सह देवीए माहणो अ पुरोहिओ माहणी दारगा चेव सव्वे ते परिनिव्वुडे त्ति बेमि ५३ इ १४नि१

षुकारीउं संपूर्ण ते मुनि महात्मा नीकियाइं वालु इजानइ मायारहीत ज्ञानकीधांक जोणइं ग्रही स्वस्थ परिचयवांधु मुनि चली
ग्रंथस्वाध्यायथी सी बुद्धिकरी धर्मपामीनइं जीनवाणि समदीन मंत्रनें छेदु नियाणुछइ वलीयतीलोगनइं विषइं शब्दनो अज्ञाणी
नवीक राता

सुआरिध्ययणं १४ मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने संथवं जहिज्ज अकामकामे अन्नाय

लिहानइं विषइं चालइं १ जे मुनि रागदेहैः अनइं ज्ञान अनइं विरमुख वलीआत्माने पाळ परिसह सहीदिवेक अनइं कुणइक
वीवरइं ते साधु बहीन कइं जाता योग्य इ जालवइ आत्मानें राखइं इइ जोषनइं दुविह इ दर्शनइं विषइं

एसी परिव्वए जे स भिक्खू १ रागोवरयं चरेज्ज लाढे विरए वेयवियायरक्खिए पन्ने अभिभूय सव्वदंसी जे कम्हि वि न मु

मुवीनयामडात २ आक्रोश्त्रानइवधतोणीनडं।मुनिनरप्रसमनीयवड।नित्यगुप्त आकुलमननथीअहंकारस्हीत जेकष्टसमपूर्णसहीसहे
सुरणमाधु मारइड ज्ञाताबाजड
३०८बु॥ हिएसभिक्खु २ अक्कोसवहं विदित्तु धीरे मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे जो कसिणं अहियासए
सहइ ते सुसाधु ३ जेसाधु अल्पमूल्यनां शय्या आसन लादनापविविधप्रकारना चपलमन नुहइ अहंकार नुहे जेकाष्टिएणहं जेकष्टसमक्रा
निनवडसइअल्पमूल्यवस्त्र कामममानुयरानवमद ५ घमडतिमाधु रवस्यादिकथनें
सएसभिक्खू ३ पंतं सयणासणं भइत्ता सीउण्हं विविहं च दंसमसगं अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे जो कसिणं अहियासए ४ नो सक्कियमि
च्छानवाछे अनेकपवादिकपुष्पसमानतवाछे वलीवांद सुव्रती तपस्वी ज्ञानादि आत्मानुस्वरूपडा‌गउडइ ५ जेमुनिजीवततणीवांवानकरे
बुगुप्सादिये महीन बडतिमाधु
इ न पूयं नो वि य वंदणगं कुउ पसंसं से संजए सुव्वए तवस्सी सहिए आयगवेसए स भिक्खू ५ जेणं पुण जहाइ जीवियं
अनेमघणीमादनवावड जेणडकरीमोहवधाडतवत्प जेयतीकवडलनजुइंनकरि नेमु ६ वस्त्रादिकछेदवनुलक्षणस्वर सुधन
स्वस्त्रीजानइतपस्वी माधु हणतकहेत्रमिकंपउल्कापातनुनेद लक्षण
मोहं वा कसिणं नियच्छई नरनारिं पजहे सया तवस्सी न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ६ छिन्नं सरं भोममंतलिक्खं सुविणं ल
दंडवास्तुविद्यासंबंधारनी अंगलोचनफरकवानीदेवि जेसाधुएणीविद्याइनजीवइएतलो ७ वलीमंत्रमूल विविधवैद्यपणा वम वमा
नास्वरतेदनुविचारकहइ ७ आजीविकानकरइतसाधु विरेचन नी नीचेंता नु लनु
व
क्खणं दंडवत्थुविज्जा अंगवियारं सरस्स विजयं जो विज्जाहिं न जीवई स भिक्खू ७ मंतं मूलं विविहं विज्जचिंतं वमणविरे
धूपमंत्री आर्याणी वोहनेत्र तेनीआना अवधवेकरवुं स्नानाय जाणीनइत्यजइ तेतिमाधु ८ जेसाधु क्षत्रियकौ नागगणसमोह ब्राह्मण
आपवु जेवध वैनिवड सरवाःपामिणुकरवुतदेवैद्य नडतेनागनराजपुत्रनावेटानइ दिकनइ
यण धूमनेत्तसिणाणं आउरे सरणं तिगिच्छियं च तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ८ खत्तियगणउग्गरायपुत्ता माहण ३६

लहमोय मघविविधविज्ञानीधंते आकइराकाम्यवप्रयारिजव तेकेनो जोणीनइत्यजेतेसुसाधु ९ गृहीस्थजे वारित्रलीधोदीक्षा वीधा
तनइ वीन कहइते देवनइनवपाणइ आण
भोइय विविहा य सिप्पिणो नो तेसिं वयइ सिलोगपूयं तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ९ गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा अप्प
लीधइपरे वयकरइ दिक्षाविनाडीठदीठानइसिलइइ जेसाधुसमस्तवनकरइतेसुसाधु १० सज्या आसनपाणीभोजन नानाविधना
हालाकनाफलनइअर्थई
व्वइएण व संथुआ हविज्जा तेसिं इहलोगफलट्ठयाए जो संथवं न करेइ स भिक्खू १० सयणासणपाणभोयणं विविहं खाइ
खादिमस्वादिमग्रनेरी वस्तुदेतीनिषधइकोनिग्रंथ तेउपरिइदवायनहीतेसाधु ११ जेकांइ आहारपाणी विविधप्रकारना खा स्वादि अ
दिम म डाहि
मसाइमं परेसिं अदए पडिसेहिए नियंठे जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ११ जं किंचि आहारपाणगं विविहं खाइमसाइमं परे
सथक जेतइ आहारादिकनडतिः नकारीइअनइमनवचनकायाइ १२ तिवतीकालवणदवजिणीपण एटाटु आमामण सरवे
जहीनइ विधइसाविसागनकरइतेसाधु सविराणकरेमवरीकइतेसाधु मइजेवतीप्रएतइ हइ विफ
सिं लद्धुं जो तं तिविहेण नाणुकंपे मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खू १२ आयामगं चेव जवोदणं च सीयं सोवीरं जव
नुसात हीलइनहीनीरसपिंडलहीने जेसामान्यकुलेवादेरइतेसुसाधु १३ सादविविधप्रकारनाइ देव माणस वातिर्यंचना
लोकनेइ। वेषइ तानी सना
वोदगं च नो हीलए पिंडं नीरसं तु पंतकुलाणि परिव्वए स भिक्खू १३ सद्दा विविहा भवंति लोए दिव्वा माणुस्सया तहा ति
रीइ तेमोत्तजीनयाकंपजइउदार जेनेमानलीनइपीपनयाम १४ वादनानाविधप्रकारना ज्ञानादि सहेसमार्थनु उपसर्गसुना
इ तेसुसाधु पामीनइलोकमाहइ युक्तकइ जेहुणकइ आत्मानइ
जो
रिच्छा भीमभयभेरवा उराला जो सोच्चा न विहिज्जई स भिक्खू १४ वायं विविहं समिच्च लोए सहिए खेयाणुगए य कोवियप्प

MEMORIAL

उपदेबु॥

फाड्या पाम्यु ज्ञानादिकने उपशांत थकेईमाररीनडाडातमु १५ वलीकलाआजीविकानेकरीआजीविका नथीति नेवीअवगुणे थने
काई कीने सर्वदेखइ साधु वीकानकरइघरवलीलवइमनहीमे मनवेशकरीजेथनेथअमूरकाणा किधा
करइ नहो

एगेअभिभूअसव्वदंसी उवसंतअविहेडएसभिक्खू १५ असिप्पजीवीअगिहेअमित्ते जिइंदिएसव्वउविप्पमुक्के अणु

पर लघुजीयथोनइअल्प अनइअरवीनीनइजागदेवनइआवइते १६ सभिक्खुअध्ययनसंपूर्णथ श्रीसुधर्मास्वामीकहइईतेशु
दीत आहारलइ तिइ ताकरवीघरकहीइ थ्य सोचथपाउथरहे धनइमेसांभल्युआकुथावत
नइ

कसाइलहुअप्पभक्खी चिच्चागिहंएगचरेसभिक्खुत्तिबेमि १६ सभिक्खुअज्झयणंसम्मत्तं १५ सुयंमेआउसंतेणं भ

श्रीमहावीरइइमक एणइजिनशासनि भगवंतइ दसब्रह्मचर्यनासमाधिनास्थानकप्रख्यां जेसाधुसांभलीनेहियामांहि चारित्र
बहुतमानतव्वेवइ संवरबहुलइवकइ नेविषइ

गवयाएवमक्खायं इहखलुथेरेहिंभगवंतेहिं दसबंभचेरसमाहिठाणापन्नत्ता जेभिक्खूसोच्चानिसम्म संजमबहु

गुरु संवरबहुलि समाधइघणु गुप्तइगुप्तइंद्रीय गुप्तब्रह्मचर्यकुंउसदाअप्रमत्तरहुविचरइ १ तेथिवरइकहि तेकहेभगवंतेदशब्र
इ घणउगुरू वइइइ अहूतकहा

लेसंवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी सयाअप्पमत्तेविहरिज्जा १ कयरेखलुतेथेरेहिंभगवं

ह्मचर्यनासमाधिस्थानककह्यां जेसांभलीहीयइअप्रमत्तपणेचालै २ सुधर्मकहइए स्थिवरे श्रीमहावीरदशब्रह्मचर्यनास्थानककह्यांतेसांभली नेः
पाळजुपालसर्वकहेवा तेनिहवइ साधुअप्रमत्तपणइचालइ एपालपाळजुकहेवो जे

तेहिं दसबंभचेरसमाहिठाणापन्नत्ता इमेखलु ते इमेखलुतेथेरेहिंभगवंतेहिं जेभिक्खूसोच्चा इमेव ३ तंज

स नकरावामरवादिरहीतसयनआसनसे तानिर्ग्रंथकहीइतसदालसी सहित सयन आसनतनसेवइसेवनरनकइ तानिर्ग्रंथ
वनारकइसाध होरनइसक

हा विवित्ताइंसयणासणाइंसेविज्जा सेनिग्गंथे नोइत्थीपसुपंडगसंसत्ताइंसयणासणाइंसेवित्ताहवइ सेनिग्गंथे

तेकांइतिकोय आचार्यकहइ निर्ग्रंथनइनिश्चइ स्त्रीपसुनपुंसक सहीत असयनआसन सेवताहता ब्रह्मचारीनां ब्रह्मचर्य
उवइइ नइ

तंकहमितिचे आयरियाह निग्गंथस्सखलुइत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइंसेवमाणस्स बंभयारिस्स बंभचे

आकाकहोइए विचिकित्सीनी ब्रह्मचर्यनाफल अपडाइइस भेदचारित्रनुविनाशपांमे ब्रह्मचारीनइउन्मादक घणुकालआश्रयीनइ रोगज्वरा
ब्रह्मचारीकुइः वाछाअपडइ तुमादव घडइकअएजावइ
नो तुरइ

रे संकावा कंखावा वितिगिच्छावा समुप्पज्जिज्जा भेयंवालभिज्जा उम्मायंवापाउणिज्जा दीहकालियंवा रोगायं

दिकनासः अथवाकेवलीप्रणीतधर्मथकीभ्रष्टथाइ तेमाटइनरहइस्त्रीपसुनपुंसकयुक्त सयनआसनकइ तिहांएतलइतेनसेवे तेनिर्ग्रंथ
थकहइ

कंहविज्जा केवलिपन्नत्ताउधम्माउभंसिज्जा तम्हानोइत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ताहवइ सेनिग्गं

नकरइस्त्रीनीकथाकहणहारनुकइ तेनिर्ग्रंथ जोष्यकहइ तस्यातणीआचार्यकहइ निर्ग्रंथवालेश्वइ स्त्रीसुकथाकहइउवातकरउ ब्र

थे नोइत्थीणंकहंकहित्ताहवइ सेनिग्गंथे तंकहमितिचे आयरियाह निग्गंथस्सखलुइत्थीणं कहंकहेमाणस्स बं

ह्मचारीना ब्रह्मचर्यनइ आकांक्षा संदेहफलनु संदेहफलनु कपजइ भेदब्रह्मचर्यपामइ घणाकालजागइ रोगआतंकउ
सकाजइ आकांक्षा

भयारिस्स बंभचेरे संकावा कंखावा वितिगिच्छावा समुप्पज्जिज्जा भेयंवापाउणिज्जा दीहकालियंवारोगायं

पजइ केवलीनुभाष्यु धर्मथीभ्रष्टकरइ तेतणीनसेवइस्त्रीसुकथावार्ता ३ स्त्रीसाथइएकइआसनइनबइसइब्रह्मचारीनिस

कंहविज्जा केवलीपन्नत्ताउधम्माउभंसिज्जा तम्हानोइत्थीणंकहंकहिज्जा २ नोइत्थीणंसद्धिंसंनिसिज्जागएविहरिज्जा ३

३७

उत्तराध्ययन टबु

तुरक तेनिग्रंथ तस्मातइ शिष्यपूछइ आचार्यकहइ निग्रंथनइ निश्चइ स्त्रीसाथइ एकइ आसनि बेठा ब्रह्मचारीनइ ब्रह्मचर्यनी संका
रइ
हवइ सेनिग्गंथे तंकहमितिचे आयरियाह निग्गंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं संनिसिज्जा गयस्स बंभयारिस्स बंभचेर
ऊपजइ वांछाऊपजइ फलनु तिहालगइ जा केवली नुभाख्यु धर्म तिहाथकी भ्रष्ट थाइ तेतलीति निग्रंथ स्त्रीसाथइ तथा ते बिहीबइठी ते गइ आ
संदेह एतलइ जांणेवु थाइ सनिनवइ सइ ब्रह्मचारी
संकावा कंखावा विति जाव केवलिपन्नत्ताउ धम्माउ भंसिज्जा तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीहिं संनिसिज्जा गए विहरइ
३ निग्रंथ स्त्रीतणाइंद्रीमुख मनोहर मननइं रमवायोग्य तेआलोकइ निरखइ नही तेनिग्रंथ कहीइ तेस्या तणी शिष्यपूछइ आचार्य कहइ निग्रं
जनही
३ नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ सेनिग्गंथे तंकहमितिचे आयरियाह नि
ग्रंथनइ निश्चइ स्त्रीनां इंद्रिकरचरण मनोहर जोतां थकां ते हनइ ब्रह्मचारीनइ ब्रह्मचर्यनी संकादेक जिहां केवलीप्रनत्ता देक
ग्गंथस्स खलु इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं जाव निज्झायमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संकादि जाव केवलिपन्नत्ता २
धर्म थकी भ्रष्ट थाइ तेतलीति निश्चइ साधु स्त्रीए नजीवा स्त्रीनां इंद्रीहाथ मुखक अनादि ४ निग्रंथ साधु स्त्रीतणा आडइ ऊभीनइ आंतरे परीअवने
४
उ धम्माउ भंसिज्जा तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं इंदियाइं निज्झाएज्जा ४ नो निग्गंथे इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा दूसंतरंसि
आंत लितनइ आंतरइ अव्यक्त सकल मात्र शब्द रातासरीषा शब्द गीतशब्द शृंगार हास्यना शब्द तोगुनइ भवस रिस्ती स्त्रीनि नवीरने भणमा
रइ लागअवसरि रमाविलाप करता नाम्ने दलव चन बोलइ तेवे आक्रंद करइ
सवा भित्तिंसि तरंसिवा कूइयसद्दंवा रुइयसद्दंवा गीयसद्दंवा हसियसद्दंवा थणियसद्दंवा कंदियसद्दंवा

त्रुट
अ थवानवइ
सोगइ प्रथम
भाया गइं ३२

तत्रीश नि वियोगे स्त्री सांभलता फाडइ इत्यादिक वानां सांभलता तेस्या तणी शिष्य पूछइ आचार्य कहइ निग्रंथ नइ निश्चइ स्त्रीतणां कुड्यांतरनां आदिः जीहालगइ र
विलाप करतो तमाटइ एतलां लवीइ ते निग्रंथ हितापचाद ला
विलावि असद्दंवा सुणित्ता हवइ सेनिग्गंथे तंकहमितिचे आयरियाह निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कुड्डंतरंसिवा जाव ह स
विलाप करता नेत्रा ब्रह्मचारीनइ ब्रह्मचर्यनी संकादिक जीहां केवली नुभाख्यु धर्म तेहथकी भ्रष्टथाइ तमाटइ निश्चइ निग्रं स्त्रीनां कुड्यांतर वस्त्रांतरे
सांभलतो जाव धर्माथकनइ
हं सुणमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संकावा केवलीपन्नत्ताउ धम्माउ भंसिज्जा तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं कुड्डंतरंसि
शब्दवाआद सांभलनार नुकइं निषेध निग्रंथनइ पूर्वस्नेह पूर्वक्रीडा स्त्रीनी संभारइ नहीं किस्या कारणइ ते निग्रंथ तेस्यातणी शिष्य गुरु कहइ वइ
५ थइ बइ
सवा जाव सुणमाणो विहरिज्जा ५ नो निग्गंथे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ सेनिग्गंथे कहमितिचे आयरियाह
निग्रंथनइ निश्चइ स्त्रीतणी पूर्वनालोग पूर्वनी रमति संभारतां हंतो ब्रह्मचारीनइ ब्रह्मचर्यनइ संकावीदे जीहालगइ धर्म केवली नुभाख्यु तां ते
स्स थकइ
निग्गंथस्स खलु इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरमाण बंभयारिस्स बंभचेरे संकावा जाव केवलीपन्नत्ताउ भंसिज्जा त
माटइं निश्चइ निग्रंथ स्त्रीनी पाछलीक्रीडा न संभारवी ६ निषेध साधुनइ आहार रसतलइ घणा घृत ते निग्रंथ तेस्यातणी शिष्य पूछइ गुरु कहइ नि
धबीबीः स्निग्ध संयुक्त आहार नलइ
म्हा खलु निग्गंथे इत्थीणं पुव्वकीलियं नो सरिज्जा ६ नो पणीयं आहारं आहारित्ता हवइ सेनिग्गंथे तंकहमितिचे आयरियाह नि
ग्रंथनइ निश्चइ स्निग्ध पांणी भोजननां आहार करतो ब्रह्मचारीनइ ब्रह्मचर्यनी संकादि ऊपजइ एहला वांछा पूजइ पहइला
कादाम नीपरइं तिहां जिहां केवली नुभाख्यु धर्म
ग्गंथस्स खलु पणीयं पाणभोयणं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संकावा जाव केवलिपन्नत्ताउ धम्माउ

उत्तराटबु

विकृत्य जा तेमाटइं निश्चइं निग्रंथनइं मात्रा अधिक आहार लेवु ७ तिमे साधु माधीनइं पाणी भोजन आहार न करिवु तानिग्रंथ कहीइं तेभणी
थाइ निषेध ४ अतिमात्राइं माटे

भंसिज्जा तम्हाखलुनोनिग्गंथेपणीअंआहारिज्जा ७ नोअइमायाएपाणभोअणंआहारित्ताहवइ सेनिग्गंथे तंक

शिष्य पूछइ स्युं करइ आचार्य कहइं निग्रंथनइ निश्चइं मात्रा रूप पहइं पान भोजन तिणि मन तिणि करइ ब्रह्मचारीनइं ब्रह्मचर्य संकादिक उ
जोडिमइं वीलिमता नइं विषयइं दोषरूप

हमितिचेआयरिआह निग्गंथस्सखलुअइमायाएपाणभोअणंआहारमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संकावाजाव

लगे केवलीनु भाष्यु धर्म तेथकी भ्रष्ट थाइ तेभणी निश्चइं निग्रंथ साधुनइं अतिमात्राइं पान भोजन न करिवा ८ निग्रं विभूषा शृंगारनु करणहा

केवलीपन्नत्ताओधम्माओभंसिज्जा तम्हाखलुनोनिग्गंथेअइमायाएपाणभोअणंभुंजिज्जा ८ नोविभूसाणुवाईहवइसे

र न थाइ ते कहिं शिष्य पूछइ गुरु कहइं निग्रंथनइ निश्चइं विभूषावर्ति शृंगारनें विषइं प्रवर्त्ति शृंगार सहित नारीजननइं वांछनीक हुइं ति
तानिग्रंथः ष्य पूछइ हित जाता

निग्गंथे तंकहमितिचेआयरिआह निग्गंथस्सखलुविभूसावत्तिए विभूसिअसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्ज

थाइं ब्रह्मचारीनइं ब्रह्मचर्यनइं संका कांक्षादिक दोष ऊपजइं भ्रष्ट पामइं तेभणी निश्चइं निषेधयतीनइं शृंगारवादी के कारइं न थावु
जाव केवली नु धर्म

माणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संकावा कंखावा जावधम्माओभंसिज्जा तम्हाखलुनोनिग्गंथे विभूसाणुवाईसिया ९

निग्रं जा कइ तिको नाके फरस्या लेई इंद्रिय स्युं तानिग्रंथ तेभणी माटइं शीइं प्रवइं गुरु कहइं निग्रंथनइं निश्चइं जा वेद जे का नांके स्पर्शें
साधुने ह प युरुम गंध स्पर्श विषयनें लोलइं हजीवु युरम गंध

नोसद्दरूवरसगंधफासाणुवाईहवइसेनिग्गंथे तंकहमितिचेआयरिआहनिग्गंथस्सखलु सद्दरूवरसगंधफासाणु ३५

रस्स इंद्रिय लोगवइं ब्रह्मचर्य संका आकांक्षादि दोष ऊपजइं भेद उन्माद तो कहीइं जो केवलीनो तेभणी निश्चइं निग्रंथ
ब्रह्मचारीनइं न इ नाम्या धर्मनु थाइ

वाइस्सबंभयारिस्स बंभचेरे संकावा कंखावा समुप्पज्जिज्जा भेयंवा उम्मायंवा जावधम्माओभंसिज्जा तम्हाखलुनिग्गंथे

शब्द रूप रस गंध स्पर्शना विषय भनु लोगवनार न हुइ एह ब्रह्मचर्यनो समाधिनो ठाम कहइं १० हवइं एहबोल ऊपरि दृष्टांत तेहिज जे साधु विविक्त
श्लोक कहइ प्रकारइं निर्दो

सद्दरूवरसगंधफासाणुवाईहविज्जा दसमेबंभचेरसमाहिठाणेहवइ १० हवंतिइत्थसिलोगा तंजहा जंविवित्तम

जनस्त्री रहित तथा चित्रामणा रहित ब्रह्मचर्य राखवानइं एहवु आलय ठाम सेवइं १ स्त्रीनी कथा मननइं ह काम राग ते वधारइं ब्रह्मच
दोषरहित स्त्रीरहित ऊपजावइ

णाइन्नं रहिअंथीजणेणय बंभचेरस्सरक्खट्ठा आलयंतुनिसेवए १ मणपल्हायजणणी कामरागविवड्ढणी बंभ

चर्यनइं रत साधु स्त्रीनी कथा वर्जइं स्त्री ३ संघातइं संस्तव परिचय कथा वारवार न करइं ब्रह्मचर्यनइं रत यती नित्य ति वर्जइ
सुवा तन करइं चय

चेररओभिक्खू थीकहंतुविवज्जए २ समंचसंथवंथीहिं संकहंचअभिक्खणं बंभचेररओभिक्खू निच्चसोपरिवज्जए

३ अंग उपांग संस्थान हेडुं बोलवु जोइवु ब्रह्मचर्यनुं रत स्त्रीनइं नेत्रइ इंद्री ना ग्राह्य ४ अल्प गाढ रोवु गीत हासवु स्नेह

३ अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लविअपेहिअं बंभचेररओथीणं चक्खुगिज्झंविवज्जए ४ कूइअंरुइअंगीअं हसिअंथ

वचन कहत ब्रह्मचर्यनिहं रत स्त्रीनी कानना नीपना टालइं ५ हास्य क्रीडा रति दर्प सहसाकारइं त्रासन ब्रह्मचर्य नचिंतवइं
तणइं नाव सवे डरावइ स्त्रीनें

णियकंदिअं बंभचेररओथीणं सोयगिज्झंविवज्जए ५ हासंकिड्डंरइंदप्पं सहसावत्तासियाणिअ बंभचनाणुचिंते

उपदबु॥

कदीइ ६ स्निग्धन्नातपाणी सीघ्र कंदर्पनइंवधारइं ब्रह्मचर्यनइं साधु नित्यइं त्यजइ ७ धर्मइंसूक्तलाधुमितपाठ
अवसरइं

कयाइवि ६ पणीअंभत्तपाणंच खिप्पंमयविवड्ढणं बंभचेररओभिक्खू निच्चसोपरिवज्जए ७ धम्मलद्धंमियंकाले

सिरीरनइंअर्थिइं ते पालिमात्राथीअधिक ब्रह्मचर्यवादलु ८ साधुसिणगारनइं सरीरंसंमणआचरणादिकस आगारनइं
आहारालवु नालवुनाजिमवु कइंरातदिनइमदा चर्येरिकसारी

जत्तत्थंपणिहाणवं नाइमत्तंतुभुंजिज्जा बंभचेररओसया ८ विभूसंपरिवज्जिज्जा सरीरंपरिमंडणं बंभ० सिंगारत्थंन

धरइ ९ जेसाधुसब्दरूपगंध रस स्पर्श तिमज एपांचाविधतोगनागुण नित्यतेपरिवर्जइ १० उपाश्रयस्त्रीजनासंयु

धारए ९ सद्देरूवेयगंधेय रसेफासेतहेवय पंचविहेकामगुणे निच्चसोपरिवज्जए १० आलओथीजणाइन्नो

अनइमनोग्यस्त्रीकथा परिचयस्त्रीतणो अनइंतवनाइंद्रीनुंजोवु ११ कजितरुदित गावु संघातइंजिमवुआसनिस्री सादिन
स्निग्ध

थीकहायमणोरमा संथवोचेवनारीणं तासिंइंदियदरिसणं ११ कूइयंरुइयंगीयं सहभुत्तासणाणिय पणीअं

लातपाणी आतिमात्राइंपाणीभोजन १२ गात्रतीविभूषाइंइष्ट एसकामभोगकामभोग नरसत्वनुंजोयाकारइं तालकूटविषसमान
नइंइच्छइयाविषइपोषइ

भत्तपाणंच अइमायंपाणभोयणं १२ गत्तभूसणमिट्ठंच कामभोगायदुज्जया नरस्सत्तगवेसिस्स विसंतालउडंजहा

१३ जीपवालीग्राग्रहच नित्यते वर्जीइं संकानांठामसघलाइं वर्जवांध्यानवंतसाधुए १४ साधुधर्मरूपीआरामनेविषे चा
लइ

१३ दुज्जएकामभोगेय निच्चसोपरिवज्जए संकट्ठाणाणिसव्वाणि वज्जिज्जापणिहाणवं १४ धम्मारामेचरेभिक्खू ४७

सांताधवंतधयतीधर्म धर्मतेवनेंआराम ब्रह्मचर्यनइंविषइ १५ देवविमानवासी जक्ष राक्षस किंनर ब्रह्मचर्य
नइंसारथीधइंसाधु धइंदमाइंद्रीधइं समाधिवंतवइ दानवगंधर्व पालइतेहनें

धिइमंधम्मसारही धम्मारामेरएदंते बंभचेरसमाहिए १५ देवदाणवगंधव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा बंभयारी

नमस्कारकरे एदुक्करकारइंतेहनइं १६ एहजधर्मनिश्चलनित्य सास्वतो जिनदेसाप्यु करइंतेसिद्धवा मोक्षगया अनइंसिद्धसइति
इणमार्ग

नमंसंति दुक्करंजेकरंतितं १६ एसधम्मेधुवेनिच्चे सासएजिणदेसिए सिद्धासिज्झंतिचाणेणं सिज्झिस्संतितहावरे

मपालेता १७ ब्रह्मचर्यनुंअध्ययनसंपूर्ण जेकोएदीक्षालइं निग्रंथ धर्मसांभलीनइं विनयसहीतहुंत दोहिलुंपामुं समकित
इमकहुं ग्रंथाग्रश्लोकसंख्या १६

त्तिबेमि १७ बंभचेरसमाहिठाणं १६ जेकेइपव्वइएनियंठे धम्मंसुणित्ताविणओववन्ने सुदुल्लहंलहिउंबो

नइ वालइ पछइंयथासुखवइं २ सिज्यानिर्वा ओढणइंछइं कपडइंअन्न तेपामुंप्रवइं अनइंरुडाणुंजेवर्तइते
नवइ मादरइंवइ खणइं

हिलाभं विहरिज्जपच्छायजहासुहंतु १ सिज्जादढापाउरणंमिअत्थि उप्पज्जइभोत्तुंतहेवपाउं जाणामिजंवट्टइआउ १

ह्आयुष्मानाधर्मीदिनगवनमइंयामसूत्रलीनइं ३ जेकोधीइअवृद्धा कंचलमीलइंइछइं जिमीनइं पछइसुखइंसुइं तेपापश्रमण
स्यंकरवुंछइते पापीसाधुजाणिवा

लईनइं

समोत्ति किंनामकाहामिसुएणभंते २ जेकेइपव्वइए निद्दासीलेपगामसो भुच्चापिच्चासुहंसुवइ पावसमणेत्ति

कहीइं ३ आचार्यउपाध्यायनइं साचइंमतितेकिनकारइं जाश्रूषानकरइं संतुष्टइं तेपापश्र० ४ आचार्यउपाध्याये साचइनइं
मणकहीइं

वुच्चइ ३ आयरियउवज्झायाणं नोसम्मंपरितप्पई अप्पडिपूयएथद्धे पावस० ४ आयरियउवज्झाएहिं सुयं

विनयसीषवुक्ताइं तेहनी निंद्याकरइं तेबाल तेपापश्च ५ मर्दइं वापद्रप्राणनइं बीजनइं हरियानइं इंद्रीगोपप्रमुविनामंत
मूर्ष मणकहीइं

उपदेश॥ विणयं चगाहिए तोवविविसइबाले पावए ५ सम्महमाणेपाणाणि बीआणि हरिआणि अ असंजमंजव
मीयसुंपां तेपापश्च ६ जेमाधु मोरामा नोनांमा सज्झाय विमयानुकां अपराप्रमार्जिंनिवइं तेपापश्च जेसाधुकुंउजनावः प्र
मीतइ मणकहीइं मंथाक टोको दीको हुमि बलवे ६ मणकहीइं लवंचालइं
मज्झमाणे पावए ६ संथारंफलगंपीढं निसिज्जपायकंबलं अपमज्जिअमारुहइ पाव ७ दवदवस्स चरइ प
माद सेवइ नित्य आचारमु इष्टावित्र तेपापश्रम जेमाधुप्रमादइंपकि गमइंतेहो पायकंबलुंगंउ अपडिलेहणइं
निक्रमइ व्हाइं णकहीइ ७ लेहणकरइ मुकइ
मात्तस्सअनिरकणे उत्तमगोअवंदेअ पावए ८ पडिलेहइपमत्ते अवउज्झइपायकंबलं पडिलेहणाअ
युक्तइं तपापश्च पडिलेहइ अमाद कांइएकविकथादेलमोस अनइउहनइनित्य तेपापश्च १४ जेमाधुपडीमायाकवती
मणकहीइ ८ पणइं लीनइं बानवइं मणकहीइं इंइंअनिवालकाइं
णाउत्ते पाव १० पडिलेहइपमत्ते सेकिंचिहुनिसामिआ गुरुंपरिभवइनिच्चं पाव १० बहुमाइपमुहरि
लक्ष जोना अजिते अनइसाधुगीमां ग्रीतनाणइं तेपापश्चम जिकाधीश्वरवचनइं अथवी पुत्पवंनानीनइं देखनाप्रकारकरे
काइं काइं दियजइ विलागनकरइ कोधालीलु णकहीइं ११ करीकोजमकरइ काइं धर्महणीनइं कलहनजाविषइ
थद्धेलुद्धेअणिग्गहे असंविभागी अचियत्ते पावए ११ विवायंचउदीरइ अधम्मे अत्तपन्नहा बुग्गहेकलहे
रत्ता तपाप ११ हालइएहबेवे तानचे जेशाकरजातिहाजइमइ वइमणइंअसावधान तेपोपश्च १३ साधुतेमलिंगरजइपर
क्तइः अमण कहीइ मणइंबडंमइ शाकरइ इंगुजइमइं मणकहीइं दइपणइंसइं
रते पाव १२ अथिरासणेकुक्कुइए जत्थतत्थनिसीअई आसणम्मिअणाउत्ते पावए १३ ससरक्खपाएसुअइ

४२

उपाश्रयपडिलेहंतनी संथारइ असावधानजेउ तेपापश्च दुधदहीआनतीविगइं आहारकरइ निरंतर तपकरवानुअरुचिकरइं तेपा
मणकप पश्च
सिज्जंनोपडिलेहइ संथारएअणाउत्ते पाव १४ दुद्धदहीविगईउ आहारेइअभिक्खणं अरएअतवोकम्मे पा
मणक १५ आथमनइंसूर्यइं आहारकरइं निरंतर सीषदेई तेमाहमीमीषदइं तेपापश्च १६ जेछूटाआचार्यत्रा अनेरापोपमी
होई मणकप चारीनइंत्यजीनइ नीमेवा
वए १५ अत्थंतमिअसूरंमि आहारेइअभिक्खणं चोईओपडिचोएइ पावए १६ आयरिअपरिच्चाई परपासंडसे
कर पोतानुगच्छगमनीवी तेपापश्रम जेपोतानुयरत्यजीनइं पारकुंघरकहीइ निमितइंकरीइ एक पाईइ तेपापश्रम जेसाधुअ
इ जइगच्छइ ताइ एकुहोइ, आपणवणीजकरइ णकहीइ १७ यणीमगो
वए गाणंगणिएदुब्भूए १७ पाव सयंगेहंपरिचज्ज परगेहंसिवावडे निमित्तेणयववहरई पाव १८ सन्नाइपि
नुदीक्षुआ समुदाईवलिहानवोबइं अनइंघरनीमिद्याहो तेपापश्रम १९ जेयतीएहवाचांवजीमीलनइं रूपधरइंअइं मुनि
हारडिमइं एकत्रकरिवइ लीआदिकनसेवइ णकहीइ आश्रयुक्तइं ताकहा = मुनिनउ यती
पिंडिमेइ निच्छइसामुदाणिअं गिहिनिसिज्जंववाहेइ पावए १९ एआरिसेपंचकुसीलसंवुडे रूवंधरमुणि
बीतेअधम श्रेइहलोकिविषनीपरइंनेहवायीपवइं तहनइंइहलोकनथीअनइं २० जेमहात्माएदोषवर्जीसदाइ तेसाधुमां
कहीइ परलोकनथी
गाणंहिमे अयंसिलोएविसमेवगरहिए नसेइहलोवपरम्मिलोए २० जेवज्जएएएसयाउदोसे सुसुव्वएहो
क्रियावंतक आलोकमांहइंअमृतनीपर अनइंआरायकथाइइहलोकिंपरलोक २१ पापश्रमणीअंसंपूर्णश्रयु १७
होइ इंइजाइ मांहइंइमकहइ ग्रंथाध्याय २४इंहीरइंइ
इमुणीणमज्झे अयंसिलोएअमयंवपूइए आराहएइहलोगमिणंतिबेमि २१ पावसमणिज्जयणंसम्मत्तं १७

पाठांतर
कुसीलु
कुसीलेडि
ससद्दा
अयाणा ९४
एहवाणवक
सीलकहीइं =

ALMEDABAD JAIN MEMORIAL

उत्राध्यय

कंपिल्लपुरनगरनु उदयमांमुस्ववडंबलजक नामइसंजयराजा मृगयांमइएकदानीम १ सावडंघोडा हाथीनीसा रथ राजाकल्लचुवडं तकयीपाला हाथीएकरीने पलबडं १ मानीमला सेनावड सेन

कंपिल्लेनयरेराया उदिन्नबलवाहणे नांमेणसंजएनांम मिगव्वंउवनिग्गए हयाणीएगयाणीए रहा

तिम पालानीयासेनाइंसमोटइ सघलइपरिवारइंपरवस्यो २ तेमृगलानइंक्षोभउपजावु कंपिल्लपुरनाकेसरीवनमांहे बीहनाऊ

तहेवय पायत्ताणीएमहया सव्वउपरिवारिए २ मिएछुभित्ताहयगउ कंपिल्लुज्जाणकेसरे भीएसंत

तिहां वधइराजाआमि ३ अथतेकेसरीवननइं विषइं एकअणगारतपधनसुधणी सज्झायनुंध्याननेतेयुक्त धर्मध्याननइंध्यायइ सइमूर्छितथिक ध्यानइं

तह्यवहेइरसमुछिए ३ अहकेसरंमिउज्जाणे अणगारतवोधणे सज्झायज्झाणसंजुत्ते धम्मज्झाणंझिय

४ तेअवलीनीमंमइकरीये कुयकीधांआश्रववायु तिसाधुनइंपासइं मारइं तेनराधिपराजा ५ एतलइंवचइंघोडइं आव्या सीतममंडपवत्तुवसि तेहसाधुनिकटवड आव्यातिमृगनइं वढ्यउराजा

४ अप्फोमंडवंमिसी झायईखविआसवे तस्सागएमिएपासं वहइसेनराहिवे ५ अहआसगउराया

आवइतिहां हण्यामृगदेखीनइं एकसाधुतिहांवइठुदीठु ६ तवइराजातिहांसंभ्रांतथयु कपिंसाधुमेंघोडेमुझरयु

सागमासोतहिं हएमिएउपासित्ता अणगारंतत्थपासई ६ अहरायातत्थसंभंतो अणगारोमणाहउ म

पुण्यइंकरी रसलोलपीथिकूलेवा ७ तराजाघोडामुकीनसो साधुनइंतसमेंपराजाइ विनयकरीवांदयापगेलागु हेस्वामि तकऊंबउ संप्रराध

दपुणेण रसगिद्धेणघत्तुणा ७ आसंविसज्जइत्ताणं अणगारस्ससोनिवो विणएवंदईपाए भगवंत

इंमक ८ एतलाउअनंतरमौनपक साधुजीध्यानइंआश्रयीरह्या राजाप्रतइंनबोलइसाधु तेमाटइंराजालयइं ९ राजाक हउ तिरस्याकइसत भगवन माटइ व्याकलबीहनु हुंसंयत

खमे ८ अहमोणेणसोभगवं अणगारोझाणमस्सिउ रायाणंनपडिमंतइ तउरायाभयदुउ ९ संजउ

बयंहे हेऋषिसुरमुझनेबोलावे वलीराजाकहइंसाधु कालइंमनुष्यकोडिनें १० वलतुसाधुकहइंबइं अनइंहु भगवन तिजइंकोप्या थिका अभयज राजातुझनइं दातनथइ

मम्मीति भयवंवाहराहिमे कुद्धेतेएणअणगार दहिइनरकोडिउ १० अभयपत्थिवातुज्झ अभयदाय

थाउ अनित्यएजीवलोकमांहे सुंहिंसाइंआशक्तथाइंछइं हेराजासुंजिवारइं उज्जनइंपरवसिहुंतां उअनित्यजीवलो ११ सर्वछांमीनइं परलोकिजातुपनमइ

हिअ अणिच्चेजीवलोगंमि किंहिंसाएपसज्जसी ११ जयासव्वंपरिच्चज्ज गंतव्वमवसस्सते अणिच्चेजीवलो

मा सुंराजइंआशक्तथइरह्यु हेराय जीवितअनेरूप वीजलीनाझबकासरीखुंछे जिहां तुंमूर्छेछइंराजा प्रेतलोकनी तेणे १२ एतलइंपरलोक

म किंरज्जंमिपसज्जसी १२ जीविअंचेवरूवंच विज्जुसंपायचंचलं जत्थतंमुज्झसीरायं पिच्चत्थंनावबुज्झ

हेराय स्त्रीअनइंबेटा मित्र तथा नाई जीवतांइतेचासइ पछि मृत्युपामेथकां १४ हेराय बापनइं पुत्र मइं आवइ जाइ केमडनमरइं दइ आपवडपुत्र

दाराणिअसुआचेव मित्तायतहबंधवा जीवंतमणुजीवंति मयंनाणुवयंतिअ १४ नीहरंतिमयंपुत्ता पि

उक्षइदुःखीया हुतापुत्रवडअनइंता तोइसनइंमराजा १५ तिवारपछइंतेणइं स्त्रीषडइंरक्षीधनइ तेस्त्रीअनेराप पतिमनेहानइंकारइं तिसरणीत्यपकतवृ वांमीगइंद्रव्यसंकीगइ तइंहाथिआवइ रमइंतेद्रव्यनेत

रमइपिरकया पिअरोविनहापुत्ते बंधुरायतवंचरे १५ तउतेणज्जिएदव्वे दारेअपरिरक्खिए कीलंतनेनर

द्रव्यमदितकइनतनर १९ देशांतनूतेणइजीवइजे सुखअथवादुखकइ कर्मातिमंयातइसंयुक्त गछइजाइपरभव २० तेहनु
अंतरणेमस्यावइ कर्म कीधउ नइ छिपइ

 दव्वहमलंकिता १९ तेणाविजंकयंकम्मं सुहंवाजइवादुहं कम्मुणातेणसंजुत्तो गछइउपरंभवं २० तस्स

सांभलीतेणइधर्म साधनइपासइ मोटुसंवेगमोक्षनुकपनु समापन्नकहीइसंवेग २१ तसंजयराजा निक्कमउ
अनइवैराग्यपामु वैराग्यथी सुराजा जीराइपनइ

सोऊणसांधम्मं अणगारस्सअंतिए महयासंवेगनिवेदं समावन्नोनराहिवो २१ संजउचइउंरज्जं निक्खंतो

जिननीमावी गर्दभालिभगवंतपासइ साधुनइपासइ २२ एजीदेसनइचरित्र लिद्धीक तेमार्ग्रिभिलु लाजिमतादृमं
दीक्षालीधी लीधउ थिइ संयमनेकर्ष्ण दीसइरूप

जिणसासणे गद्दभालिस्सभगवउ अणगारस्सअंतिए २२ चिच्चारट्ठंपव्वइउ खत्तिउपरिभासइ जहातेदीसइ

रूडुं तिमप्रसन्नमननुंतादृ २३ तकहइतादृसंपु कहइनइअर्थइनही किंमआचार्यादिकनीसे किंमविनीतकहीइ २४
सवनइ नामस्युगोत्र कुणाताआमणउ वाकीजइ

रूवं पसंनंतेतहामणो २३ किंनामेकिंगोत्ते कस्सट्ठाएवमाहणे कहंपडियरसीबुद्धे कहंविणीत्तिवुच्चइ २४

संयतकहइजुंनामइ तिमगोत्रते गोतम गर्दभालितेमाहरुआचार्य विद्यातइचारित्रइपार २५ क्रियाइमुनिकहइदेक्रिय
सम्यतकाथ गामीछइ क्रियाएआकिरियाए

संजउनामनामेणं तहागोत्तेणगोयमो गद्दभालिममायरिया विद्याचरणपारगा २५ किरियंअकिरियं

विनयए अज्ञानए एहेमहामुनि एणेच्यारिठांमेकरी प्रमाणनाजाण मुकहइछइ २६ एएपाठकस्युथीवीरे ज्ञातनइमोक्ष

विणयं अन्नाणंचमहामुणी एएहिंचउहिंठाणेहिं मेअन्नेकिंपभासइ २६ इइपाउकरेबुद्धे नायएपरिनि

गामी तावीरविद्याइचारि सांचुमांचापराक्रमनुधणी २७ तेकहइपडइनर जेनरपापकारीकइते देवनीगतिजाइ पालीनइध
इ कहइसदीतछइ कपिपारनइलिइ

व्वुए विद्याचरणसंपन्ने सच्चेसच्चपरक्कमे २७ पडंतिनरएघोरे जेनरापावकारिणो दिव्वंचगइंगछंति चरित्ताध

र्मसिध्धानइ २८ क्रियावादीनुमतमइ परवादीनीमृषामाया तेहणीआपणउंसमकरउ वसुं इर्यासमीपालइ २९ सघलाते
कहयइएहवउ जुवीजाणवी इउकइपणि मनइनइ

म्ममारियं २८ मायावुइयमेयंतु मुसाभासानिरत्थिया संजममाणोविअहं वसामिइरियामिय २९ सव्वेतेवि

जाणवइ तेकिदामिथ्यादृष्टीअनार्य छितउजं उपरलोक सम्यक्प्रकारइजाणुंजातिस्मरणइ ३० हुंअउअवनवइमहाप्राण कांतिव
वर्तइ पामुआ तादेवलोकइ तदवो

इआमज्झं मिच्छादिट्ठीअणारिया विज्जमाणेपरेलोए सम्मंजाणामिअप्पयं ३० अहमासीमहापाणे जुइमं

जिनइवोमोवरस तिमतिहांपालि आयुस्थिति तेदेवनइसुवरसनीउपमाकइ ३१ तेलोगवीचवुब्रह्मलोकथी इमाणसनेसविआयु आपणो
नीउपमाइसुआयु महापालिउत्कृष्टआयु

वरिससउवमे जासापालीमहापाली दिव्वावरिससउवमा ३१ सेचुएबंभलोगाउ माणुस्संभवमागए अप्पणो

अनेअनेरानु आयुजाणुंजिमछइतिम ३२ संयतयतीइमनानाविध वजीवोमिनइसंयत अनर्थाजसघलाइतेहतइ अनइवि
रूपनानाविधवदन इ तिस्यानइजाणइ द्याआश्र

आपरेसिंच आउंजाणेजहातहा ३२ नाणारुइंचछंदंच परिवज्जेज्जसंजए अणट्ठाजेअसव्वत्था इइवि

यीनइसंयममा ३३ हुंतिवर्तुंमिकुपाहउं अथउद्दस्यतात्रालो इमइआलिजाइसंयमनइवि इम्युजाणीनेतापीचालि ३४ जेमुझने
ग्रीइचालइ अथीएतलइवानथी वधी विजामातिवर्तु थइउद्यमकरीअहोरात्रइ

ज्जामणुसंचरे ३३ पडिक्कमामिपसिणाणं परमंतेहिंवापुणो अहोउट्ठिएअहोरायं इइविद्यातवंचरे ३४ जंचमे

पूर्वइं प्रस्तावइ सम्यक्त्वनिर्मलचित्तइं करी तेप्रकट करइं ज्ञान तेत्यान जिनमार्ग मनें विषे इवइं ३१ क्रियानइं विषइं प्रवर्त्तइं अक्रिया
.तद्बवे धीरपुरुष अज्ञानी
उपटबु॥ पुछमीकाले सम्मं सुद्धेण चेअसा ताइं पाउकरे बुद्धे तम्हाणं डिणसासणे ३२ किरिअं च रोअए धीरे अकिरि-
श्रेणिमइं ज्ञानरूप दृष्टइं सहीत धर्म करइं पालवा ३३ संयम श्रुतइं क्रियारुचि अर्थवाक्य धर्मीत्ता भरतचक्रवर्त्ति
कृतत्त्व ज्ञाकवइं ते धर्म कारिणसुवोधुण्यपद सांभलीनें निकलइं
अं परिवज्जए दिठीए दिठिसंपन्ने धम्मं चरसु दुच्चरं ३३ एअं पुण्णपयं सोच्चा अत्थधम्मोवसोहिअं भरहो वि भारह-
भरत कामभोग वामीनी दीक्षा लीधी ३४ सगरसागरांत पृथ्वी भरतक्षेत्र नराधिप ऐश्वर्य एकलु वामीनइं दयाइं करी मुक्ति पु-
वामी पृथ्वी कतोपल्लइं समय
वासं चिच्चा कामाइं पव्वए ३४ सगरो वि सागरंतं भरहवासं नराहिवो इस्सरिअं केवलं हिच्चा दयाए परिनिव्वु-
मइं ३५ छांडी भरतनु वास चक्रवर्त्ति महाऋद्धिनु धणी प्रव्रज्यानु उद्यम कर्यो मघवा नामइं महायशवंत ३६ वली सनत्कुमार नरेंद्र
डो ३५ चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ पव्वज्जमब्भुवगओ मघवं नाम महायसो ३६ सणंकुमारो मणुस्सिं-
चक्रवर्त्ति मोटी ऋद्धिनु धणी पुत्रनइं राज्य थापीनइं तिहांइं राजाइं तप सेव्यु ३७ वली छांडीनइं चक्रवर्त्ति शांतिनाथ शांतिनु करणहार
रसायन महाऋद्धिक लोकनइं
दो चक्कवट्टी महिड्ढिओ पुत्तं रज्जे ठवित्ताणं सो वि राया तवं चरे ३७ चइत्ता॰ चक्कव॰ संति संतिकरे लोए प-
मुक्तगतिने ३८ वली इक्ष्वाकु राजा वृषभ कुंथु इसइं नामइं विख्यातकीर्त्ति भगवंत पाम्या गति मोक्षनी ३९ समु-
हीन इंद्रियइं समान नराधिप राजा सहीत
त्तो गइमणुत्तरं ३८ इक्खागरायवसभो कुंथुनाम नराहिवो विक्खायकित्ती भगवं पत्तो गइमणुत्तरं ३९ सा-

४४

द्रांत इं छांडीनइं भरतवर्ष प्रतइं नारअ अरनाथ वइंनामइं पाम्या मुक्तगति मोक्षइं ४० वली छांडी भरतनइं चक्रवर्त्ति महाऋद्धिकइं छांडीनइं
रहीत कृतइं
गरंतं चइत्ताणं भरहवासं नरीसरो अरो वि अरयं पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं ४० चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ चइ-
उत्तम भोगनइं महापद्मइं तप आचर्यु ४१ एकछत्र साधीनइं पृथ्वीना वइरी नो मानतनइं हरिषेण मनुष्येंद्र मुक्तगति पामीइं
विलसामइं
त्ता उत्तमे भोए महापउमे तवं चरे ४१ एगछत्तं पसाहित्ता महिं माणनिसूरणो हरिसेणो मणुस्सिंदो पत्तो गइमणुत्त-
संसारअन्यत ज्ञानी राजा सहस्रइं कारी कुलीप्रवर्त्तलिइं तइंडी जयनामा चक्रवर्त्ति जिननु मुक्तगति पामीइं ४३ वली दसार्णदेशनु
४२ दमी साध्यात मधर्मपाली राज्य हर्षपमाइं
रं ४२ अन्निओ रायसहस्सेहिं सुपरिच्चाई दमं चरे जयनामो जिणक्खायं पत्तो गइमणुत्तरं ४३ दसण्णरज्जं मुइ-
वामीनइं मुनि वरतु दसार्णभद्रनी सरीनइं साक्षात इंद्रइं प्रेर्यु थिक ४४ नमि आत्मानइं नमाडु साक्षात इंद्रइं प्रेर्यो वामीनें
अं चइत्ताण मुणी चरे दसण्णभद्दो निक्खंतो सक्खं सक्केण चोइओ ४४ नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्केण चोइओ चइ-
देमनइं धारीनइं चारित्रनइं उपस्थानइं ४५ वली करकंडू कलिंग पंचाल देशे द्विमुख राजा हवु नमि राजा विदेह देशे हवु गंधार देशे निग्ग-
दिसि द्वव्र
ऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवठिओ ४५ करकंडु कलिंगेसु पंचालेसु अ दुम्मुहो नमी राया विदेहेसु गंधारेसु अ नि-
ई ४६ एतरांइ राजा समान जिनमार्ग सनइं विषइं पुत्रनइं राज्य थापीनइं चारित्रनइं विषइं उद्यमी हवा ४७ वली सोवीर रायदस
हवु नुराजाह श्रमनमान॥
ग्गई ४६ एए नरिंदवसभा निक्खंता जिणसासणे पुत्ते रज्जे ठवित्ताणं सामण्णे पज्जुवठिआ ४७ सोवीररायवस-

उ०८वृ॥ राज्य छांडीनइं मुनि थया उदायन राजर्षि लेईनइं प्रव्रज्या लीधी ४८ तिम काशी देसनु राजा सेतुप्राग्मा... कामभुग त्यजी

तो चइत्ताण मुणी चरे उदायणो पव्वइओ पत्तो गइमणुत्तरं ४८ तहेव कासीराया सेओसच्चपरक्कमे कामभोगे परि

नइं ढणुं कर्मनुं मोहुं वन ४७ तिम नंदा विजयराजा अणहीनी कीर्त्ति नइं वधुं गइ पुणइं करणु डांभीनइं महा...

च्चज्ज पहणे कम्ममहावणं ४९ तहेव विजओराया अणट्ठाकित्ति पव्वए रज्जं तु गुणसमिद्धं पयहित्तु महाजसो

५० तिम उग्र तप करीनइं व्याकुलचित्त रहीत महाबलराजा काय लेईनइं मस्तकनें विषइ केवल ... दइनइं कांधुं

नीलक्ष्मी ग्रहणइं ... परवादी ... करी

५० तहेवुग्गं तवं किच्चा अव्वक्खित्तेण चेयसा महब्बलो रायरिसी आदाय सिरसा सिरिं ५१ कहं धीरे अहेऊहिं उ

गहिलानी परिं ... एतला ... करीनइं ... दृढ पराक्रमी ... ५२ ... सांचीमइं ... बालइं अविवेकनी ... कहीवाणी

म्मत्तो व महिं चरे एए विसेसमादाय सूरा दढपरक्कमा ५२ अच्चंतनियाणखमा सच्चा मे भासिया वई अतरिं

धीरतस्या ... अनागतकालइं ५३ किम धीर ... सर्व संग परीत्याग करी सिद्धि जाइनि

... बिंदु ... नि ... करइ

सु तरिंतेगे तरिस्संति अणागया ५३ कहं धीरे अहेऊहिं अत्ताणं परियावसे सव्वसंगविणिम्मुक्के सिद्धे हवइ ४५

पापरहितनइं ५४ संजयराजानुं अध्ययन संपूर्ण सुग्रीवनइं नगरइं ... तिहां राजा बलिभद्रनामि ... मृगाने

... १८ ... नकरी नवइ

नीरए त्ति बेमि इति संजइज्जं सम्मत्तं १८ सुग्गीवे नयरे रम्मे काणणुज्जाणसोहिए राया बलभद्दि त्ति मिया

राजानइं अग्रमही १ तदनुं पुत्र बलनिलक्ष्मीइं करी मृगापुत्र विख्यात ... मातापितानइं वल्लभ युवराज ... नंदनाल

... ईं

तस्सग्गमाहिसी १ तेसिं पुत्ते बलसिरी मियापुत्ते त्ति विस्सुए अम्मापिऊण दइए जुवराया दमीसरे २ नंदणे

रायप्रासाद क्रीडा करइं स्त्रीसाथइं दोगंदक देवनी परइं नित्य हर्षित ... ३ ... घरे ... गोखि

... धीरइं ... बइठो एक दा

सो उ पासाए कीलए सह इत्थिहिं देवो दोगुंदगो चेव निच्चं मुइयमाणसो ३ मणिरयणकोट्टिमतले पासायालो

प्रस्तावि ... नगरनइं ... देखइ श्रमण ... तपनियमनइं संयम

नु धरणहार

यणट्ठिओ आलोएइ नगरस्स चउक्कत्तियचच्चरे ४ अह तत्थ अइच्छंतं पासई समणसंजयं तवनियमसंजमध

सील गुणनुं आगर ५ तदनइं देखि मृगापुत्र ... मृगापुत्र ... दीठुं ... ६ साधुनइं

... पक्षि दीपक

रं सीलड्ढं गुणआगरं ५ तं देहई मियापुत्ते दिट्ठीए अणिमिसाए उ कहिं मन्नेरिसं रूवं दिट्ठपुव्वं मए पुरा ६ साहु

दरिसणइं ते मृगापुत्रनि ... मूर्छा पामतो ... जातिस्मरण ... ७ देवलोकथकी ... मनुष्यनि

स्स दरिसणे तस्स अज्झवसाणंमि सोहणे मोहं गयस्स संतस्स जाईसरणं समुप्पन्नं ७ देवलोग चुओ संतो माणुसं

भवइं आव्यु संज्ञी ... जातिस्मरण ... ८ जातिस्मरण ... तेमृगापुत्र ... जातनइं

भवमागओ सन्निनाणे समुप्पन्ने जाइं सरइ पुराणयं ८ जाईसरणे समुप्पन्ने मियापुत्ते महिड्ढिए सरई पोराणियं र

वालिरहवर्तइं कीधुं दृष्टांत ९ विषयकरी अणराचतो रागद्वेषसंयमनिं विषइं रूडउ मातपितानइं आवीनइं एहवुं वचन कहइं कालागु

उ०८सु इं मा मं णं व्व्राकंडं ९ विसएहिं अरज्जंतो रज्जंतो संयमंमि य अम्मापियरं उवागम्म इमं वयणमब्बवी

१० सांभल्यां मइं पांच महाव्रत पालि अनइं नरकि तिर्यंचइं दुरक वर्तइं तेहथी निवर्त्युं हूं कामभोग मोटा थी आज्ञा द्यु मुझनइं दीक्षा लावि

१० सुयाणि मे पंच महव्वयाणि नरएसु दुरकं च तिरिरकजोणिसु निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ अणुजाणह पव्वइ

लेईस ११ हे मातपिता मइं भोग भोगव्या विषफल सरीषा भोगवइं पछइं कडूआ विपाक छइं ते दुखना देणहार निरंतर दुःखदायक छइं हे मात १२

स्सामि अम्मो ११ अम्मताय मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा पछाय कडुअविवागा अणुबंधदुहावहा १२ इमं स

तात आ सरीर अपवित्र छइं अपवित्र अनइं अशुचि उत्पन्न दुखनइं क्लेसनुं ठाम १३ एणइं असासतइं सरीर रतिनथी अनित्य छइं थीकयता

रीरं अणिचं असुइं असुइसंभवं असासयावासमिणं दुरककेसाण भायणं १३ असासए सरीरंमि रइं नोवल

पामउं हुं केहवुं छइं पछइं तेथा फीणना परपोटा सरीषुं छइं १४ एमनुष्यसरीर असार छइं व्याधिनइं रोगनुं आलय घर जराइं अनइं मर पद्धइं लेवुं वस्यइं मरस्यइं व्याधि ते मननी पीडा रोग ते देहना एणइं ग्रस्युं छइं

लामहं पछापुरा व चइअव्वे फेणबुब्बुअसंनिभे १४ माणुसत्ते असारंमि वाहीरोगाण आलए जरामरणघछंमि

तिमारइं हुं क्षणमात्र रहुं १५ जाणइं संसार इं जन्मनुं दुख रोगनुं मरणनुं दुख अहो दुखनुं समोह संसारि छइं तिहां जीव प्राणी किलइं समाधि नथी सु जरानुं दुख

मं खणंपि न रमामहं १५ जम्मं दुरकं जरा दुरकं रोगा य मरणाणि य अहो दुरको हु संसारो जत्थ कीसंति जंतवो ४८

१६ क्षेत्र घर हिरण्य नइं पुत्र स्त्रीनइं बांधवनइं त्यजीनइं एहदेह जामइं तेथी अवसइं मही १७ जिमा तत्काल किंपाक फल परिणामि

१६ खित्तं वत्थुं हिरण्णं च पुत्तदारं च बंधवा चइत्ताणं इमं देहं गंतव्वमवसस्स मे १७ जहा किंपागफलाणं प

णाम इं सुंदर नहीं इम भोगव्यां भोगइं निदान रूडा नहीं १८ दृष्टांत देषाडिं छइं जे अटवि संबल विना जाइं ते जातां अकाए कमा भ्रीपा रहइं जाउ

रिणामो न सुंदरो एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुंदरो १८ अद्धाणं जो महंतं तु अपाहेओ पवज्जई गछंतो सो

खी थाइ त्रषइं तरसइं किलामीइ १९ इम धर्म अणकरइं जे जीव जाइं परलोकि जातां ते दुखी थाइं व्याधिरोगइं पीडइं तु

दुही होइ छुहातण्हाए पीडिओ १९ एवं धम्मं अकाऊणं जो गछइ परं भवं गछंतो सो दुही होइ वाहीरोगेहिं पीडि

२० जिम कोइक माणस मार्गइं संबल सहीत जाइं तिमार्गइं जातो सुखी थाइ भूखतृषा रहीत छइं २१ इम धर्मनइं करीनइं

ए २० अद्धाणं जो महंतं तु सपाहेओ पवज्जई गछंतो सो सुही होइ छुहातण्हाविवज्जिए २१ एवं धम्मंपि काऊ

जे जाइं परलोकइं ते जाइ सुखी थाइं थोडइं कर्मइं थोडी वेदना २२ जिम घर लागतइं ते घर नु जे स्वामी छइं ते सार करीनइं

णं जो गछइ परं भवं गछंतो सो सुही होइ अप्पकम्मे अवेअणे २२ जहा गेहे पलित्तंमि तस्स गेहस्स जो पहू सा

वस्तु लेईनइं काढइं असारनइं मेहलीनइ २३ इम एसंसार बलतइं जरामरणइं करीनइं माहरा आत्मानइं संसारथी उधारीश × काढीस ×

रभंडाइ नीणेइ असारं अवउज्झई २३ एवं लोए पलित्तंमि जराए मरणेण य अप्पाणं तारइस्सामि तुब्भेहि

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

आइं करीनि २४ दवइ मातापिता मृगा । हे पुत्र चारित्र दोहिलुं छे गुणना सहस्र धरिवा साधुनइं २५ समतासवी
पुत्र नइ कहइ छइ

उपरवु॥ गुणमिउ २४ तं बिंतम्मापिअरो सामण्णं पुत्त दुच्चरं गुणाणं तु सहस्साइं धारेअव्वाइं भिक्खुणो २५ समया

प्राणीनइं विषइं शत्रुनइं मित्र निविषइ प्राणनइं मारिवुं तेह जावज्जीव दोहिलो २६ हे पुत्र नित्य प्रमाद रहित मृषावाद व
नाडीवनइं नीविरति हितकारी

सव्वभूएसु सत्तुमित्तेसु वा जगे पाणाइवायविरई जावज्जीवाइ दुक्करं २६ निच्चकालप्पमत्तेणं मुसावाय

र्जवुं खालिवुं हितकारी सर्व जेहजीव पुत्र दाहिलुं २७ दंतशोधन मात्र अणदीधा नजेवाइं पडइ नि:

विवज्जणं भासिअव्वं हिअं सच्चं निच्चाउत्तेण दुक्करं २७ दंतसोहणमाइस्स अदिन्नस्स विवज्जणं अणिव

पापरहित लेवुं ते दोहिलुं २८ विरमवुं अब्रह्मचर्य थी देव मनुष्य कामभोग नइं जाणवइ मोटुं महाव्रत ब्रह्मचर्य धरवुं

ज्जेसणिज्जस्स गिण्हणा अवि दुक्करं २८ विरई अबंभचेरस्स कामभोगरसन्नुणा उग्गं महव्वयं बंभं धारेअ

ते दोहिलुं २९ धनधान्य दास वर्ग नइं परिग्रह सहवर्जवुं सर्व आरंभ त्याग करिवउ ममता रहित ते दोहिलुं ३० चउव्विहा

व्वं सुदुक्करं २९ धणधन्नपेसवग्गेसु परिग्गहविवज्जणा सव्वारंभपरिच्चाओ निम्ममत्तं सुदुक्करं ३० चउव्वि

रइं आहार रात्रइं भोजन वर्जवुं वासी संचय न करवउ वर्जवुं ते दोहिलुं हे पुत्र ३१ भूख तृषा शीत ताप डांस मसा
बहुत करवा ते पालिवा

हे वि आहारे राईभोअणवज्जणा सन्निहीसंचओ चेव वज्जेअव्वो सुदुक्करं ३१ छुहा तण्हा य सीउण्हं दंसमसग ६७

वेदना आक्रोश दोहिली सेज्या तृणनुं मइलनापरी ३२ ताडना तर्जना वध बंधन परीसह दुःख
आक्रोश वचन सहवुं परीसह सहवी

वेअणा अक्कोसा दुक्खसेज्जा य तणफासा जल्लमेव य ३२ तालणा तज्जणा चेव वहबंधपरीसहा दुक्खं भि

गोचरीनुं याचवानुं पामइं तेहनुं ३३ जिम कापोतनी वृत्ति लोच वाल नउ दोहिलुं ब्रह्मव्रत मोटुं धरवुं
दोहिली तिम मुनिनी आहार

क्खायरिआ जायणा य अलाभया ३३ कावोआ जा इमा वित्ती केसलोओ अ दारुणो दुक्खं बंभवयं घोरं धारेउं

तिहइं दोहि ३४ हे वत्स तुं सुखयोग्य सुकुमाल शरीर स्नान योग्य नुकाइं समर्थ हे पुत्र चारित्र पालिवानइं ३५ हे पुत्र जाव
नुआस्नानइ मज्जनयोग्य

महप्पणो ३४ सुहोइओ तुमं पुत्ता सुकुमालो सुमज्जिओ न हु सी पभू तुमं पुत्ता सामण्णमणुपालिआ ३५ जावज्जी

जीववीसामा गुणनु मोटु भार मोटु लोहना भारनी परइं उपाडवुं दोहिलो ३६ आकाशइं गंगा नदी नाप्रवाह सामइं तरवउं
र हीन

वमविस्सामो गुणाणं तु महब्भरो गुरुओ लोहभारो व्व जो पुत्ता होइ दुव्वहो ३६ आगासे गंगसोउ व्व पडिसोउ व्व

दोहिलुं बेहु बाहइं समुद्र तरवुं तिम तरवा गुणनु समुद्र ३७ हे पुत्र वेलुना कोलिआ सरिखु नीरस संयम पालइं तरवारनी धार चालवउं

×ऋ× दुत्तरो बाहाहिं सागरो चेव तरिअव्वो गुणोयही ३७ वालुआकवले चेव निरस्साए उ संजमे असिधारागमणं चेव

तिम दोहिलुं चारित्र तप ३८ हे पुत्र जिम अग्निनी शिखा दिप्ती पीवा दोहिली छइं तथा तिम दोहिलुं करिवा तरुणपणइं चारित्र ३९

दुक्करं चरिउं तवो ३८ जहा अग्गिसिहा दित्ता पाउं होइ सुदुक्करं तह दुक्करं करेउं जे तारुण्णे समणत्तणं ३९ अ

×पावीह ता आहा रलइ हो ता वी द ताचलइ तिमात×

देषुत्रमपर्नीमरइ इहइंवालनांवाहिलुं जवलोहनानिवइ नाववाहोहिला ४० जिमहोहिलउंलरीसकाइ लेवायःनउं
एकइ

उपटबु॥ दीवेगंसिहीए चरित्ते पुत्त दुक्करं जवा लोहमया चेव चावेयव्वा सुदुक्करं ४० जहा दुक्खं भरेउं जे होइ वायस्स

कोथलो तिमहोहिलुंकरिसकाइ कीवनइंचारित्रपणुं ४१ जिमत्राजुइंतालिउं दोहिलुंमेरुपर्वत तिमाहषुत्रमंकारहीत

४०४ कोत्थलो तहा दुक्करं करेउं जे कीवेणं समणत्तणं ४१ जहा तुलाए तोलेउं दुक्करं मंदरो गिरी तहा निहुयनीसंकं

दोहिलुंचारित्रपणुं ४२ जिमहाथेकरीतारवुं दोहिलउंसमुद्रनउं तिमउपसमनउंकारवउं दोहिलुंदमवानुसमु ४३ लोग
इत रखवदोहिलउं

दुक्करं समणत्तणं ४२ जहा भुयाहिं तरिउं दुक्करं रयणायरो तहा अणुवसंतेणं दुक्करो दमसागरो ४३ भुंज
विमासमनोलोग पांचइंप्रकारइंकरीनइ भुक्तभोगीथयापछीदिक्षा धर्मनइंसमाचारजो ४४ तिहांमातापिताप्रतिं दिमातउ
आइ रूपरसअध्यायमधेप तानइंकाहइइ जाणांडं

माणुस्सए भोए पंचलक्खणए तुमं भुत्तभोगी तओ जाया पच्छा धम्मं चरिस्ससि ४४ सो बिंतम्मापियरो एवमेयं
सबोलउं पालिहइलोकनइंविषइ नथीकांइएदोहिलुं ४५ हिमातमानसमाणसनइ विदनाअनंत मइंपमाडी
साचउं तृष्णारहीतनइ सरीरनइ

जहाफुडं इह लोए निप्पिवासस्स नत्थि किंचि वि दुक्करं ४५ सारीरमाणसा चेव वेयणाओ अणंतसो मए सोढा
आकरी निरंतर दुखमइंभयसहीत ४६ हिमाततातजरामर च्यारिगतिलेनयना मइंसह्या रोइ जन्मनइंमरण
विदनासही आहुपणीअसहीमां भाग्र

ओ भीमाओ असइं दुक्खभयाणि य ४६ जरामरणकंतारे चाउरंते भयागरे मए सोढाणि भीमाणि जम्माणि म ४७

नांदुःरव ४७ जिमइणइंसंसारिआगिउन्हो तेहथीअनंतगुणोतिहां नरगमांवेदनाउसनामइउं असातांइंसहीमइंत ४८

रणाणि य ४७ जहा इहं अगणी उण्हो एत्तोणंतगुणो तहिं नरएसु वेयणा उण्हा असाया वेइया मए ४८
जिमइहांआसीतवइ एहथीअनंतगुणो नरगमांटाढिनीवेदनावेड असातांमतीसहीमइंत ४९ हिमाततातकुंभवानइ
माहि

जहा इहं इमं सीयं एत्तोणंतगुणो तहिं नरएसु वेयणा सीया असाया वेइया मए ४९ कंदंतो कंदुकुंभीसु
उंचापगहेठुमस्तक अग्निकरी बालता पचुंअनंतीवार ५० हेमाततातमोटोदवसरीषी मरुस्थितिकांइवज्र कलंब
नदीनीवेलुमांहइ

उड्ढपाओ अहोसिरो हुयासणे जलंतम्मि पक्कपुव्वो अणंतसो ५० महादवग्गिसंकासे मरुम्मि वइरवालुए कलं
नदीनीवेलुइं दाधुपूर्वइअनंतीवार ५१ हेमातपितांकुंभपाकइ उंचुबांधेको एनाइरहीतपन मोटेकोकरवतेकरी छेदुंअनंतीवा
कसीलाजनवेरीयमाह र ५२ लइकोरापतारनहीतेहा रवर्ग्इनरग

वालुयाए य दड्ढपुव्वो अणंतसो ५१ रसंतो कंदुकुंभीसु उड्ढं बद्धो अबंधवो करवत्तकरकयाईहिं छिन्नपुव्वो अ
माहइ ५२ अतितिखे कांटइंसमउउ उंचु सिंबलनइंटक्षनइं पाशुपामइंबांधीनइ आरजपरजेका दुखासुतां ५३ हेमातमो
एपउलेकांतम ५४ डाघणीइसे

णंतसो ५२ अइतिक्खकंटगाइण्णे तुंगे सिंबलिपायवे खेवियं पासबद्धेणं कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ५३ महाजंते
मांजनीनी आरूडउ शेडइम इंपीलुमाहरकीधकर्मे पापरूमीएअनेतीवार ५४ इंआर सुअरन स्वाननिं सामक्षा सबल
परइ हिमातानात मनउ इंडपइं रूपइ नइ एहवे

सु उच्छू वा आरसंतो सुभेरवं पीलिओ मि सकम्मेहिं पावकम्मो अणंतसो ५४ कूवंतो कोलसुणएहिं सामेहिं सबलेहि

३५८ख॥

परमाधा झेयाम्तु ह्रंगवित्युताण अरक्रापरक्ता अनेतवारलगबोप्तु देमाततात अबमीनांफल मालमीरबीडोह्स्वीआर बेद्युथं
मीए ५५ एद्देवेप फि तावकीमरीय्य नकम्यो

लोहितं पायितपालितखिन्ना विकरंतो अणेगसो ५५ अग्गीहिं अयसिंवलादिं सत्त्रीहिं पट्टीसेहिं अ भिन्ना
लेद्यत लिम्नाथडं वलीक पापकर्मडंकरीनडं ५६ वलीहिं लोहानडं ह्रात बलतीलक्समुलिअ वलीखुकडंबडंतालेप रोक
लोस्पत करीनडं पनतं अवकि रखडं रुत नडंधुमलेतणडं ससोअघवासबीआरतीदेत्तीप

भिन्ना अविसेहिं उववन्ना पावकम्मुणा ५६ अवसो लोहरहे जुत्तो जलंतेसमिलाजुए चोइज्जतनजुत्तेहिं तोत्ता
रिंडिमातिमपाम्तु ५७ हंहताससतवेश्मातरनी चिहिमादिमहिपनीपरि बाल्सुपदमुणकतु पापकर्मडंकरीजपाम्तुडम ५८ वली
ह्रव

वाजदपमिंत ५७ हुआसणजलंतंमि चिआसु महिसोविव दहोपक्को अ अवसो पावकम्मेहिंपाविउ ५८ बला
लडसांम्हसाना लोहानीचोवडंकरीपेरवीए चोम्पुकं विजायकरत्त डंकपं प्रेघुपं अनेती ५९ तसडंकिलतुधाउथक पुक्तो
मूषममान रवीए रवीए वारह

संडासतुंडेहिं लोहतुंडेहिं पक्खिहिं विलुत्तो विलवंतोहं ढंकगिद्धेहिंणंतसो ५९ तण्हाकिलंतो धावंता पत्तो वे
खितरणीनदीडं जलपासडंडमसीतवत्त कठिनधाराडंकरीनिपातु ६० देमातडंतउडंता असिपत्रमहावनिगयु गाथानिका
पडं त खिउ

अरणींनडं जलंपाहंडंतिचिंतंतो खुरधाराहिं विवाइओ ६० उण्हाभितत्तो संपत्तो असिपत्तं महावणं असिपत्ते
डिरातलडंअभि बेयुपुर्वडं अनेकवार ६१ वलीमोगरिडं बीडितथी असुजनडं मुसलेकरीनडं गदाडं गात्रलोझात पांम्तुडस्वअने
पत्रपत्रतह्रत आर वि ह्रापडं

हिंपडंतेहिं छिन्नपुव्वो अणेगसो ६१ मोग्गरेहिं मुसुंढीहिं सूलेहिं मुसलेहि य गयासंभग्गगत्तेहिं पत्तं दुक्खं

कपक्कार ६१ देमातडंपासेकरीजडं मृगतीपरडंवाध्योवेचित बांधीतिनुतीतिनंवधु मणीपरडं निपाम्तु ६२ स्वरकविनती
ओल्त करीनडं

अणेगसो ६२ खुरेहिं तिक्खधाराहिं छुरियाहिं कप्पणीहि य कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कित्तो य अणेगसो ६२ पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा अवसो अहं वाहिओ बद्धरुद्धो अ बहुसो चेव विवाइओ ६३ गलेहिं मगरजालेहिं मच्छोव
कणधाराहिं छुरीडकापुकातरणीडंकरी कामउफायु चामाल बेद्यु लेद्यु आनकवार ६४ तमातततडंगमुगमकरेजाले मच्छनीपरि

रवडाराहिं छुरीआहिं कप्पणीहि अ कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कित्तो अणेगसो ६४ गलेहिं मगरजालेहिं मच्छोव
अवसिंचपुडं उपलु पाम्पत अव्यत मासु अनंतीवार ६५ विमातततातमीचाणप्रमु लेपलगमीतिमाचीपरवी अव्यीजागी
रवपरवीनीपरइता लइ नीपरडं

अवसो अहं उल्लिओ फालिओ गहिओ मारिओ अ अणंतसो ६५ विदंसएहिं जालेहिं लिप्पाहिं सउणो विव गहिओ ल
नडबोधु मारपतं अनंतीवार ६६ वलीकुहाडेफरसीआदडं सुतारनीजलसडं कापुो पाम्पत बेद्यु नाचि
कनीपारडं

ग्गो अबद्धो अ मारिओ अ अणंतसो ६६ कुहाडफरसुमाईहिं वड्ढईहिं दुमो विव कुट्टिओ फालिओ छिन्नो तच्छि
उ अनंतीवार ६७ वपेटमुवीडंघणीवाथडं लोहारलोहतिंकरडंतिम ताम्पो कुट्टो लेद्यु हणीकीधउंअनंतीवार ६८ वलीताता

ओ अ अणंतसो ६७ चवेडमुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अयं पिव ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो चुन्निओ अ अणंतसो ६८ तत्ताइं
तांबा लोहा तरुआ सीसातरकमांहडं पायोमुकतडंकलकलतो तेणडंतुरवडंआरभु ६९ वलीमुकतडंपरमाधामीडंम कट
तिसम रोहडाइकास्पत कहिडेउकरतिवाल्हादतामीम का

तंबलोहाइं तउआइं सीसगाणि अ पाइओ कलकलंताइं आरसंतो सुभेरवं ६९ तुहं पिआइं मंसाइं खंडाइं

सूलमांसना इमकांदीपरमाधामीए तुंज्ञो अग्निवर्णघलीवार ७० वलीइमकहइतेपरमाधामी मद्यमधु इमकहीनइ
मांसमुकनइखवराव्या अकनइंवल्ही सुराइंती

उपटवुं सोलगाणिय खाविउमि समंसाइं अग्गिवन्नाइंणेगसो ७० तुहंपिआसुरासीहू मेरउअमहूणिअपाइउ
बलतो वसाकधीरपाइंविकिय देमाताताततिस्याबी इखइंकरीवधइंकरी उत्कृष्टदुखइंसहीत वेदनानोगवीमइं
७१ हतइंत्रासतइं

५।२।५ मिजलंतीउ वसाउरुहिराणि अ ७१ निच्चंभीएणतत्थेणं दुहिएणंवहिएणय परमाउदुहंबद्धा वेयणावेइआम
७२ हेमाताततीव्ररोद्रगाढी घणुंरोद्र अतिदुस्सह महाभयविक्रजीनस नरकइंनोगवीवेदनानइ ७३ जेहवीमनुष्यलोकमां

ए ७२ तिव्वचंडप्पगाढाउ घोराउअइदुस्सहा महब्भयाउभीमाउ नरएसुवेइआमए ७३ जारिसामाणुसेलोए
हेतात दीसइछइवेदना एहथीअनंतगुणी नरकतइंवेपइंदुखनी ७४ हेमातताततस्यलनवेइ वेदनीनोगवी मइं
विदनाछइ जाती

ताया दीसंति वेयणा इत्तोअणंतगुणीआ नरएसुदुक्खवेयणा ७४ सव्वभवेसुअस्साया वेयणावेइआमए
निमिषमात्रवेलालगइ जेस्यातानावइ मइं ७५ हवइतिकमरनइमाता ख्रेगाइंपुत्रदीक्षालइ पणिएणि चारित्रइ रोगऊपजे
पिताकहइछइ

निमिसंतरमित्तंपि जंसायानत्थिवेयणा ७५ तंबितम्मापियरो छंदेणपुत्तपव्वया नवरंपुणसामन्ने दुक्खंनि ५७
तइंपणीगणुदोहिलु ७६ तिवारमरमाबापनइकहिं एकसुतसाचुंउछे जोरोगऊपनइंपणीग पणिवनमांमृगपंखीया ७७ हेमातता
वली तेह ज्ञण करमइं नइं कुणपकीगइबइ तवनमा

प्पडिकम्मया ७६ सोबितम्मापियरो एवमेयंजहाफुडं पडिकम्मंकोकुणई अरण्णेमियपक्खिणं ७७ एगभूउ

हइएकलो जिम वालउ मृगलो इमहुंधर्मइंचालीसि संयमइंअनइंतपइंकरी ७८ जिममृगनइरोगआवइ माहावन
मइ नइ

अरण्णेवा जहाउचरईमिगो एवंधम्मंचरिस्सामि संजमेणतवेणय ७८ जहामिगस्सआयंको महारण्ण
मांहइ वसतइंहक्षनइमूलि कुंणतिहनइंविउंकरइंबइ ७९ कुंणतिहनइंउखव कुणतहनइंसुखपूछइं कुंणते
पूछइ

मिजायई अच्छंतंरुक्खमूलंमि कोणंताहेंतिगिच्छई ७९ कोवासेउसहंदेइ कोवासेपुच्छइसुहं कोवासे ५।२।५
हतइंतान आहारपाणीपरिणमइ ८० हेमाततातजिवारइं तिवारइंतेमृगगोचरी सातपाणीनइंअर्थइं वल्लरक्यारे
पाणीहइं तिमृग सुखीजइं इजाय

भत्तपाणंवा आहरित्तुपणामए ८० जयायसेसुहीहोइ तयागच्छइगोयरं भत्तपाणस्सअट्ठाए वल्लराणि
अथसरोवार ८१ तेवल्लरे सरोवरियां वालरकरी सरोवर मृगमृगचर्याइंचालिवा जाइंमृगनीरमवातीनइं ८२ एणेह
खाइनइ पीयीइनइं

सराणिअ ८१ खाइत्तापाणिअंपाउं वल्लरेहिंसरेहिवा मिगचारिअंचरित्ताणं गच्छइमिगचारिअं ८२ एवंस
मुठानइंसाधु एणीपरइंएवमाइं मृगचर्याइं चालीनइं ऊर्ध्वमुक्तिजाइ ८३ जिममृगतुएकलुअनेक अने
स्थानकवइस इ

मुट्ठिए भिक्खू एवमेवअणेगए मिगचारिअंचरित्ताणं उड्ढंपक्कमईदिसं ८३ जहामिएएगअणेगचारी अ
करइंगाइनाचरवानीपरिक्रइं इमसाधगोचरीइंपइंठउहुतउ कुंणनइंहीलिनहीवखाणइंपणिनहीं ८४ इमहुंमृगचर्याइं चालिस

णेगवासेधुवगोअरेअ एवंमुणीगोअरिअंपविट्ठो नोहीलएनोविअखिंसएज्जा ८४ मिगचारिअं चरिस्सामि

पवइं कवइं छिममनाथि मातापितांइं आज्ञा दीधी स्वइ जाउपधि उपगरण ८५ मृगनी चर्या इं चालीसि पापि सर्वदुःखमुंकावानइं
छांडतिम छतीइ उपगरण

उपटबु॥ एवं पुत्ता जहासुहं अम्मापिऊहिं अणुन्नाओ जहाइ उवहिं तओ ८४ मियचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमुक्खणिं

तुम्हारी आज्ञाइं दीधीछि जाउ पुत्र जिम सुख ऊपजइ तिम ८६ एणइं प्रकारइं मातापितानें घणइं प्रकारे मनावीनइं ममता मूंकइं मृगापुत्र

तुब्भेहिं अम्मणुन्नाओ गच्छ पुत्त जहासुहं ८६ एवं सो अम्मापियरं अणुमाणित्ताण बहुविहं ममत्तं छिंदई ताहे

मोटा सर्प ती कांचली तीणइं जिम ऋद्धिद्रव्य मित्र पुत्र स्त्री न्यातिनइं रेणुनी परइं पगे लागी तिम धोमीनइं नीसर्यो पर्छि
तेकांचली छांडइ तेम स्यापवी सर्व संसार मुं
रजनि मंत्री नइ

महानागो व्व कंचुयं ८७ इड्ढी वित्तं च मित्ते य पुत्तदारं च नायओ रेणुयं व पडे लग्गं निद्धुणित्ताण निग्गओ ८८

पांचमहाव्रत सहीत पांचसुमति तिणइं गुपइं करी अभ्यंतर नइं बाह्य तपनइं विधानइं उद्यम करइ ८९ के हवु हुउ मृगापुत्र मम
म हीत तारहीत अहंकार रहीत

पंचमहव्वयजुत्तो पंचहिं समिओ तिगुत्तिगुत्तो य सब्भिंतरबाहिरए तवोकम्मंमि उज्जुओ ८९ निम्ममो निरहंकारो

संगतासंगमूक्या गर्व सरिखुं मन सर्व प्राणी ऊपरि त्रस निं विषि थावरनें विषइं लाभइं अहइं अलाभइं जीवितव्य मरणइं तथा
त्यज्या उदइक खइ दुःखइ

निस्संगो चत्तगारवो समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ९० लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा

सरिखुं मन निंदा प्रसंसइं तथा मानइं अनइं अपमानइं गारवनइं विषय कषाय त्रिहुं त्रिहुं भयनइं निवर्त्तुं हास्यथु शोक थकी
कइ इ तेह ऊपरि नइ तेह ऊपरि सरिखुं मन यनइं विषइं दंड साल विषय

समो निंदापसंसासु तहा माणावमाणओ ९१ गारवेसु कसाएसु दंडसल्लभएसु य नियत्तो हाससोगाओ अ-

अनिनीया परिग्रह रहीत ९२ बंधन रहीत इहलोक नइं विषइं मृगापुत्र परलोकनी वांछा रहीत वांसलु छेदइं चंदन सरिखु आहार लाधइं तथा अण
णरहीत तेमृगापुत्र इहलोकनी वांछा रहीत लाधइ

नियाणो अबंधणो ९२ अणिस्सिओ इहं लोए परलोए अणिस्सिओ वासीचंदणकप्पो य असणे अणसणे तहा

९३ पापनां आश्रवद्वार सघलाई तीहां लगइं आश्रव अनइं अध्यात्मध्यानयो स्तुत उपसमसी सुखइं ९४ इम ज्ञानइं चारित्रइं
एहलइ निवर्त्या बड पापथी गइ करी

९३ अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवो अज्झप्पज्झाणजोगेहिं पसत्थदमसासणो ९४ एवं नाणेण चरणे-

दर्सनइं करी तपइं करी भावनाइं निर्मलइं करी भली आत्मा भावी करी ९५ इम घणां वरस लगइ चारित्र पालीनइं

णं दंसणेण तवेण य भावणाहिं य सुद्धाहिं सम्मं भावित्तु अप्पयं ९५ बहुयाणि उ वासाणि सामण्णमणुपालि-

मास दिवस लगइ पाली पचखीनें मोक्ष पुहुता मोटी गतइं ९६ एणइं प्रकारइं करितव्य पंडित विचक्षण भोगनें विषइं जे नइं
लाजाण

या मासिएण उ भत्तेणं सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ९६ एवं करंति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा विणियट्टंति भोगे-

मृगापुत्र ऋषि नी परइं ९७ हवइं तमोटा प्रतापनु धणी मोटा यसनु धणी मृगापुत्रनुं भाषित बोल्यु सांभलीनइं जे पुरुष उत्तम तप
नी

सु मियापुत्ते जहा मुणी ९७ महापभावस्स महाजसस्स मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं तवप्पहाणं चरि-
दर्शन पांमतइ छेदी जाणीनइं जाणिनइं

रइं उत्तम गतिं जाइं त्रिलोक नइं विषइं विख्यात ९८ तेणइं मृगापुत्रइं धन वनी वधारणी रत्न ममता नु लाव महा भय नु समोह

यं च उत्तमं गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ९८ वियाणिया दुक्खविवद्धणं धणं ममत्तबंधं च महब्भयावहं सु-

DR. BABASAHEB AMBEDKAR MEMORIAL

सुखदायिक श्रमधर्मनी धुरा तेधरी निर्वाणगुणनु समूह मोटो इति बोली ९९ मृगापुत्रनु अध्ययन संपूर्ण: १९ सि
गुणकारी ... नइ ...

उ०र०वृ॥ दावंधम्मधुरंअणुत्तरं धारेहिनिव्वाणगुणावहंमहंतिबेमि ९९ मियापुत्तिज्जंसम्मत्तं १९ सि

संयतनइ वलीभावथिक अर्थधर्मनी गति तत्त्व ... तेहनी सीख सांभलो मुझ १ घणां रत्ननु राजा श्रेणिक मगध
... सद्गुरुनइ ...

संजयाणंचभावओ अत्थधम्मगइंतच्चं अणुसट्ठिंसुणेहमे १ पभूयरयणोराया सेणिओमगह

क्रीडानी मंडितकुक्षि उद्यानमांहे ... नानाविधप्रकारनेपंखी नानाविधकुसुमइंकरी
... २ विविधवृक्ष ... इंसेव्युंइति ... ॥ ...

हिवो मंडिकुच्छिंसिचेइए २ नाणादुमलयाइण्णं नाणापक्खिनिसेवियं नाणाकुसुमसंछिन्नं

३ तिहांतेराजादेखइसाधु तेसाधुइंद्रीगोपव्याछइंते वइठुवृक्षनइमूलइं सुकुमालसुखइंपालितबइं ४
... समाधिवंतछइ ...

३ तत्थसोपासईसाहुं संजयंसुसमाहियं निसन्नंरुक्खमूलंमि सुकुमालंसुहोइअं ४ त

राजानातयतीनुरूपथी अत्यंतउत्कृष्टथयुं अतुलपणुरूपइंविस्मयपाम्यु श्रेणिकआश्चर्य आश्चर्य आश्चर्य
५ ...

राइणोतम्मिसंजए अच्चंतपरमोआसी अउलोरूवविम्हिओ ५ अहोवण्णोअहोरूवं अहो

निर्लोभ ... गुप्तिइंकरीभोगनइंविषइंअसंगपणउं ६ तेहनापगवांदीनइं प्रदक्षिणाप्रणदेइनइं विगजु
... आश्चर्य ... राजाश्रेणीकइं

सोमुत्ती अहोगुत्ती अहोभोगेअसंगया ६ तस्सपाएउवंदित्ता काऊणपयाहिणं नाइद

तोहीनइंअछइं ... योवनमइं ... भोगनाकालनइंविषइं उद्यमवंतथइंचारित्रइं ए अर्थसांभलवा
वइश्रेणिक ... दीक्षा ...

पडिपुच्छई ७ तरुणोसिअज्जोपव्वइओ भोगकालंमिसंजया उवट्ठिओसिसामण्णे एयमट्ठंसु

देमहाराय ... माहरइं नाथकोपनथी दयाकरइंअथवासुखदेइं कोइंप्रतकोनदीठिमाहइं ९ तिवारइं
नाथछइ ... एदीक्षालीधी

होमिमहाराय नाहोमज्झनविज्जई अणुकंपगंसुहंवावि किंचिनाभिसमेमहं ९ तओसोपह

मगधदेशनुअधिप ... किमनाथपणुनथी १० ... लोगलोगविदेस
... कारणइंछइं

मगहाहिवो एवंतेइड्ढिमंतस्स कहंनाहोनविज्जई १० होमिनाहोभयंताणं भोगेभुंजाहिसं

परिवार ... मनुष्यपणुंउदोहिलुंछइं ११ तिहांसाधुबोल्युंतुंआपणुं ... श्रेणिकमगधाधिप आपणुंअन
... दीक्षइंछइं

परिवुडो माणुस्संखुसुदुल्लहं ११ अप्पणाविअणाहोसि सेणियामगहाहिवा अप्पणा

... १२ इमकहतीइंकह्योपछीतेराजा संभ्रांतविस्मयपाम्युं ... तेसाधु
...

होनविस्ससि १२ एवंवुत्तोनरिंदोसो सुसंभंतोसुविम्हिओ वयणंअस्सुयपुव्वं साहु

राजाकहइंघोडाहाथी पुर अंत:पुरमाहरइं भोगवुंमनुष्यनाभोग माहरीआज्ञाठकुराईप्रवर्तइं १४
...

स्साहत्थीमणुस्सामे पुरंअंतेउरंचमे भुंजामिमाणुसेभोए आणाइस्सरियंचमे १४

सर्वांला मारेतवाव्युकर्इ किमश्रुनावकंउ सर्वांलिनगउनएश्रुयवन २५ क्रर्मीकदर्इरेश्रुनावत्नेदन एश्रुथं उत्पति द्यमिछि
बीलागत्र श्रुनङ

उपदवु॥ सर्वकाममनध्येर करेश्रुणदोलवर्इ माङ्मलतमुसंवए २५ तउमंजाणेश्रुणाद्समा श्रुडुडुंबणछिवा
डिमश्रुनावरुर्इनर्इ श्रुनर्इमनावक्रातवेन २६ सांललिङ्कंकर्इंतेमद्दाराय सावधानवर्इनर्इबयरदीत डिंमश्रुनावरुउकं डिमम
डाणर्इरात्ता

डदाश्रुणादोलवर्इ मेणादोचनगाछिवा २६ सुणेदमेमद्दाराये श्रुद्यरिकलेणवेश्रुमा डदाश्रुणादोलवर्इ डदा
इवारिवलीधुत २७ क्रर्थकदइवर्इसालाजि डुंनानगरनीडीप निदाश्रुत्र पितामाद्रक यणाधनतुधलीद्दवउ २८ देराजामुक्रनर्इ
कोसंबीनामर्इनगरे नारीएतलर्इहुमी

मेश्रुपवलिणे २७ कोसंबीनामनयरी पुगणपुरनेयणी तत्रश्रासी पिश्रामङ्ग मन्त्रुश्रयणसंचउ २८ यरमेवयम
पदरुलर्इ श्रुःउनायणीवदनाश्रो श्रुनर्इउपवुविपुलदायहार सवलर्इगातिदमासिंव २९ हेराजाजिमवक्रुश्रतीवुं सरीरविवर
यावनर्इ पिनीक्रयनी

दागये श्रुउलामेश्रुछिवेश्रुया श्रदोश्राविउलोदादो सवगतेसुपछिवा २९ सनडदापरमतिरकं सरीरवि
श्रुतरुर्इ कोणकपालर्इवर्इरीकोश्रुविक एदवीमुक्रनर्इश्रयर्इ ३० दिराजनविकक्रदीर्इक श्रुनर्इउमंगानश्र वक्रपानस
विदना क्रयनी हिमादर्इ मधव त्रि कपीमार्इ

श्ररंतर श्रावीलिछश्ररीकंधे एवंमश्रछिवेश्रुणा ३० तिश्रमेश्रुंतरिंछच उत्तमंगंचपीकर्इ इदासाणि
मानरीाज वेदनाउक्रुश्रीवीदामणीक्रयनी उद्यमवंतक्रश्रामुक्रश्र विद्यानाजाणमंत्रनाडाण सणावर्इसात्रनाकावर्इ
२ इष दित विद्यार्इ

समाघोरा नश्रुणापरमदारुणा ३१ उवविश्रामेश्रांरिश्रा विद्यामंततितिगिछिगा श्रधीयासवकत्तालां मं ५३

१७५

मंतमूलीनाडाणवर्इ ३२ तमुक्रनर्इविंडुकरुर्इ चिकिंत्सादवैद्यक्रधधरोगी: पणिडरवनमुकार्इ एदवीमारारीश्रनावताश्रनावी २ ३
उडपचारकधलिमदितक्रर्इतिमकरि:

तमूलविसारया ३२ तमितिगंळकवंति चाउप्पायजदादिश्र नयडरकाविमोश्रंति एसामश्रश्रणादया ३ ३
पितामाद्दरुर्इकाडर्इ दर्इमाद्दरीर्इडमनर्इकारणर्इ पणिडयवकीश्रुक्रनर्इनमूकावि एमाद्दरुंश्रनावयणउ ३४ मातामाद्दरादमदाराजा
सर्व सार इम

पियामेसववसारंपि दिज्जाहिममकारणा नयडरकाविमोयंति एसामश्रश्रणादया ३४ मायाविमेमद्दारा
विटानरुत्रोकिडमधीर्इर्इ पणिडवधी एमाद्दरुंश्र ३५ नार्इमाद्दरादमदाराज सगाकताउदराएकमनां पणितडव एमाद्दरुंश्र २६
नमूकावर्इ नावयणउ बीनमूकावर्इ नावयण

ये पुत्तसोगडदछिया नयडउ एसामय ३५ नायणमेमद्दाराय सगाजिठकणिठगा नयप एसाय ३६ स २
पवर्इविदिनिमादरी एकमातानीवमीतघाउद्री पणितडव एमाद्दरीश्र ३७ पवर्इमाद्दरीन्त्रीदमदाराय मुक्रउप सरीश्रुहय तेश्रामु
दमद्ा राय बीनमूकावि नावता दिराती मुक्रसरिश्रुं

यणीउमेमद्दाराय सगाजिठकणिठगा नयप एसामय ३७ नारिश्रामेमद्दारायए श्रणुरत्ताश्रणुव्वया श्रंसु
सरीलोचनेर्इकरी माद्दरुंदर्इउंसीवर्इ २८ तणीर्इश्रनपाणीक्रावुं गंधमाला विलयन माद्दरुर्इडस्वर्इजाणर्इन तमाद्दर्इ
२८ नरिएश्राचरिउवाद्द श्रीडिमर्इ

पुसेदिनयणेहिं उरंमेपरिसिंचर्इ श्रनंपाणंचण्हाणंच गंधमल्लविलेवणं मा एनाश्रमणायवा सावाल
नदीश्रनर्इए ३९ दुणमात्रमाद्दरुंदमहा पाश्रुनमुकर्इ उदर्इ तडरवनमुकावर्इ एमाद्दरुंश्रनावयतायणउ ३०
श्रालनावर्इ राय

नवरेंडर्इ ३९ खणंपिमेमद्दारायं पासाउविनफिट्टर्इ नयडरकाविमोएर्इ एसामश्रश्रणादया ३०

तिक्कारपवीकिंइम णवदत्ता वारर विइ त्मागवीमइं तसारम्हपघरमीहडं २२ म्हइंजुज्ञाडएकवारमूकावे एवेद
चितवते

उत्त०८बु तत्तं दंसणमादेसु उरकमाकुवणोए वेक्षणं अणुत्तविंतेके संसारं मिमहालए २२ सडं वसइ सुविक्का वेक्ष
नाविम्बीर्लविक उक्तिमावंतजितेंद्रियनि दीक्षालुमाधपणतेञा २३ इमचिंतवतांकं सुतुतिकारडंदेतगधिप क्षति
इमचींतवयते गरंतपणइं वकं
णाविरलाडते संवताहंताविरांला पवइस्अणगारिअं २३ एवं चवितडत्ताणं मसुत्तोमितराहिवा परि
कमी शविनिमर वेदनामाह रीक्यचंमी तत्र तिक्कारपवीजगतिविहाणइं पूवीनइंबांधवआदिम क्किमावंत जितेंद्रियञा
कनड संनर हीन
अनंतीडरयणीए वेक्षणामेरवयंगया २४ ततकल्हेपलायंमि आपविताणवंसवे संवतादंतोनिरारंने २
वाशिवली घरवामबांप्तु २४ तिक्कारपवीकिंनाव योतातुअनइंयारक्क मर्वेडीवत्तुरासीलह तमअनइंबावरनते
सते व यते जीव या निन
पवडंतअणगारिअं २४ तत्तंहंतादोडाउ अप्पणोअपरस्सय सव्वेसिंचेवजीवाणं तसाणंथावराणय
२५ वराजनिए आत्मावित एआत्मामांदरुात सिंह एआत्माजकांमधेनुदे एआत्मामाइरूमंद २६ वराजमएआ
स्त्रीनदीन रकनी दडापीनाहुत लि वता नीगाई नवनंदनवृ त्माकत्तीरअने
२५ अप्पानदीवेअरणी अप्पामेकूडसामली अप्पाकामदुहाधेणु अप्पामेनंदणंवणं २६ अप्पाकत्ता
पाजणहार दुखनइंसुखनइंकरडं एआत्मामित्रअनिराइंडा दुःखइंपाप्पुअनइसुपइं २५ वलीकहइंवतीआनरुंअनाथ
अन कहतह अमित्र रस्थते
विकत्ताय दुहाणयसुहाणय अप्पामित्तममित्तंच दुप्पट्ठिअसुपट्ठिअ २७ इमाहुअण्णाविअणाहया २

पणु डोकजतेएकचितडंसांभलिराजा तिग्रंथनुधर्म पांमीनइं जिम सीदाइंएक रांकनरएतलईवी कालइ २८ जडीकालइं
प्रमादकरइंतमीदाइ
वा तामकचित्तानिहुअसुणेहिं नियंठधम्मंलभिआणवीजहा सीदंतएकेबहुकायरानरा २८ जोपवइत्ता
पांचमहाव्रत मनस्सुफालड़ं प्रमादी अनिग्रहात्माएतलड़ं जिणडंआत्माए तेयतीमुलथिकाबंधनछेदिनथी २९ जेहनइंरुडआ
निग्रहनथी कम्मतेज रवारसइ २६ सावइंआत्मा
णमहव्वयाइं सम्मंनोफासयईपमाया अणिग्गहप्पायरसेसुगिद्धे नमूलओछिंदइबंधणंसे २९ आउत्तयाजा
कायानवीगोपवडंड इर्यासुमतिभाषासुमतिनवारणासु आदानलेवुंमुंकवुंतेसुमतित्र एहांमावधा ततीकेमनासननंमि ४१ तेयणुकाल
मति भारपरिह वचनीसुमति नवनाइज
१२के४ स्सयनत्थिकाइ इरिआएभासाइतहेसणाए आयाणनिक्खेवदुगंछणाए नधीरजायंअणुजाइमग्गं ४० चिरंपिसे
लावनइंविषइं विरडतनुदुइं तपनियमथीभ्रष्टकडं तेयणुकालआत्मानिकिलेसपमामीनइं पारगामीनुहडंसंसारथिका ४१ देगाय
आत्राकहीनते जिम
मुंडरुईभवित्ता अथिरव्वएतवनिअमाहिंतहे चिरंपिअप्पाणकिलेसइत्ता नपारएहोइहुसंपराए ४१ पुल्ले
पोलीमुंठि निष्फलकडंतिमते अथवाघाडइंकुडीमुद्रा बांधीअ कांचनम वैदुर्यरत्ननुंसेटाघरडपणि जाणिआगलि निमाक्रियाहीण ४२
दीहाजीधीअसार कडं सारनिमदीजातएदवी णिकडंत मुरुथीमुरुइमूल्यनपामइंते क्रियानाडोणआगलिनजोनि
अमुठीजहसेअसार अयंतिएकुडकहावणेवा राढामणीवेरुलीअप्पगासे महग्घएहोइहुजाणएसु ४२
हणाडतवलीमांनलिकसीली आजीविकानइंअर्थइंहपरुवइंकुत आनइंअसंयतडंतेसंयमपणुमानइं नजीवडःखपामइनरक
२७ तेथा रू पलिगधरीनइं
कुसीललिंगइहधारइत्ता इसिज्झयंजीविअवूहइत्ता असंजयंसंजयलप्पमाणे विणिहायमागच्छइसे

गाहड्प ४३ जिमकालहूटनवविषपीधुंकूंठेरहणिं वलीम जिमहसीआरशहूई निमएधर्मविषयिकउपत्नुहणइं जिमहणइवेताल
णकाल रइ कालकूटंतें मंत्रादिकअणसाधु

उपरत्नु॥ वियरंति ४३ विसंउयीअं जहकालकूडं हणाइसत्थं जहकुग्गहीअं एसोवधम्मो विसओववन्नो हणाइवेआलइ
विवन्नो ४४ वलीवेषधारीलक्षणनतामु अनइनिमित्रकोउहलसहन्नत अनइपापशास्त्रतेणइं आश्रव तिविद्यानिय
यिल्वउ अनइसुपन पजउजइ अतिदिष्टकामइं हारइंजीवइं नीतइमरण

वाविवन्नो ४४ जंलक्खणंसुमिणंपउंजमाणे निमित्तकोऊहलसंपगाढे कुहेडविज्जासवदारजीवी नगच्छईस
कालिसरणनदइ ४५ नमअधकारक्रियारहीतहुंत सदाउरवीत्रमिथ्यात्वप्रतइंवेइनिं जाइंनरकतिर्यंचनीयोनइं सेनपणं
अज्ञानपणाहूंउकमीलीउ

रणंतम्मिकाले ४५ तमतमेणवहउसेअसीले सयाउदेविप्परिआसुवेइ संधावइनिरयतिरिक्खजोणी मोणंवि
विराधीनइंअसाधुरूपिं ४६ देशाकूउवयेयती आधा निस्वपि नमूकइंकांडइंअसूरूकउनमूकइं आगिनीपरइंसर्वनरवीक्रइंनइं
अयतापण इ कहेसुआदारलइं कर्म मलइ

राहेउअसाहुरूवे ४६ उद्देसिअंकीयगडंनिआगं नमुंचईकिंचिअणेसणिज्जं अग्गीविवासव्वभक्खीभवि
इत्वासुमरीतइंडूर्थतइंजाइंपाप ४७ नकरइंवइंरीकंठनुबेदमारात जेकरइंपोणीआपणदुरात्मा तअसंवरीथइनइंमरणकाल
कर्म करीनइं पामइ

त्ता इओचुओगच्छइकट्टुपावं ४७ नतंअरीकंठछित्ताकरेइ जंसेकरेअप्पणिआदुरप्पा सेनाहिईमच्चुमुहंतुपत्ते
पश्चातापकरइंदयारहीतहुंत ४८ जोएवकुकारीअरइतनतहेनइं जेतनमअर्थनइंविपइवि तेहनइंहलोकनबा बीअनइप
एहवुंतानहेवुंजाइउत्तमार्थी × परियासुपा मइं र लो कयण न बी

पच्छाणुतावेणदयाविहूणो ४८ निरठ्ठयानिग्गरुईउतस्स जेउत्तमट्ठेविवज्जासमेइ इमेविसेनाविपराविलोए इ ५५
तेहनइंनिरर्थकवीहानीसाचिजाणवी ×

वइनवानवनाकोकयाइ ४९ एणीपरइस्वेछाचारीकुसीलरूपी मार्गविराधीनइं श्रीवितरागनुवचन तेपरविणीनीपरइंडूरथोत
× माइस्यकरनउनोगनार

दओविसकिलिस्सइतंबलोग ४९ एमेवहाछंदकुसीलरूवे मग्गंविराहित्तुजिणुत्तमाणं कुररीविवाभोगरसा
मनउलो कोकरउोकपरितापपामइं ५० हिंगपएमा प्रज्ञा हुतुंबोलिउंत एमीषामणंज्ञान०गुणेकरी सहीन सुगुमा
लीउ नलीनइं वन

णुगिद्धा निरठ्ठसोआपरितावमेइ ५० सुच्चाणमेहाविसुभासिआइं अणुसासणंनाणगुणोववेअं मग्गं
पुरूसीलीआनुवालीनिमथि सहातिप्रपक्रुमिनामार्गतइंविधिवालि ५१ एहवुनेणइंअनाधीकियिचारित्र मोटकंसयमपालीनइं
नउआचारपालीनइं

कुसीलाणजहायसव्वं महानिअंठाणवएपहेणं ५१ चरित्तमायारगुणन्निएतउ अणुत्तरंसंयमपालि
आश्रवरहीतथईकर्मखपीनइं यामुतंम विस्तीर्णउत्तम निस्थइं ५२ कर्मजीपि जितांद्रियवडमोटुंमए मोटुम
बाउधनइं नहनुधनउ इ

आणं निरासवेसंखविआणकम्मं उवेइठाणंविउलुत्तमंधुवं ५२ एवुग्गदंतेविमहातवोधणे महामु
नी मोटीप्रतिज्ञा मोटायसनु उकृष्टवइंमो महाश्रुनतवंतवइ तेकहवोहितकारीअमाउविस्तारइंकरी हवीपासुअपोकरा
नियमवइं धर्मीवइ तुनिग्रहश ५३

णीमहापइन्नेमहायसे महामुणीआंठिहमिणंमहासुयं सेकाहिएमहयाविठ्ठरेण ५३ उठ्ठीअसेणीअरा
ज्ञा कहइवालागुणावजोडीनिं देकृपिएनायपणुंमाद्धुं कहउएकपादस्यउ ५४ तइतजेइलाभुमोणमनुजन्म देकृपिद्धहे

या इणमाहुकयंजलो अणाहत्तंजहाभूयं सुठ्ठुमेउवदंसिअं ५४ उग्गंसुलठ्ठंखुमणुस्सजम्मं लाभासु

पंचवीसइ
हवीजिम
पंचीलीमा
इतिमकेह
वीबइपंची
नीआमिष
सहइनइ
तीनिआमे
नवीजाप
रवीएमडनी
उपमाइंते

लाभ रूडा लाधा   हे ऋषि तुम्हे नाथ अनइ बांधव सहीत छउ   स्वामी मार्गि श्री वितराग नइ उत्तम मार्गि ५५ हे ऋषि तुम्हे नाथ अनाथ जी
जिनभगवन्

उपदेशु॥ लद्धा य तुमे महेसी तुब्भे सणाहा य सबंधवा य जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ५५ तं सि णाहो अणाह २

व सर्वभूतप्राणीनु हे संयत खमावुं छुं तेहे महाभाग   वांछुं छउं तुम्हारी सीष प्रति ५६ म्हइ कांइ पूछी म्हइं उत्तम ते ध्यानमां अनं
तु

णं सव्वभूयाण संजया खामेमि ते महाभागा इच्छामि अणुसासिउं ५६ पुच्छिऊण मए तुब्भं झाणवि

विघ्न कीधउ ते अनइ तुम्ह नोतर्या भोगनइ विषइ तेह सर्व सहवउ खमउ मुझ ५७ इम स्तवना करीनइ श्रेणिक राजा माहे अनइ अनगा
मीहम रिषनइ
रसीह रिष नाथी

ग्घा उ जो कउ निमंतिया य भोगेहिं तं सव्वं मरिसेहि मे ५७ एवं थुणित्ताण स रायसीहो अणगारसी

तेहनइ उत्कृष्ट भक्ति अंतेउर सहित परिवार सहीत नाई भ्रात सहीत धर्मनुरागी निर्मल चित्तनु धणी पाधरो वलु ५८ उल्हस्या रोम कंप हरख्या
इ करीनइ

हं परमाइ भत्तिए सओरोहो सपरियणो सबंधवो धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ५८ ऊससियरोमकू

प्रदक्षणा करी तिहां त्रिण वार पगइ   वांदीनइ मस्तकइ   श्रेणिक पाछा वलीनइ राजधणी पाछउ वलउ ५९ बीजु इ किं अनाथी गुणे करीनइ त्रिगु
की
स्यउ
नइ

वो काऊण य पयाहिणं अभिवंदिऊण सिरसा अइयाओ नराहिवो ५९ इयरो वि गुणसमिद्धो तिगुत्ति ५६

गुप्त त्रिण्ह दंडे विरम्यउ   पंखीनी परिं विप्रमुक्त थई चालइ   पृथ्वीपीठनि विषइं मोह रहीत इम बोलउं ६० महानिर्ग्रंथीय अध्ययन संपूर्ण २०
नव विधा कार्यादेश
ग्रंथाग्र १९९६ हरिहर॥

गुत्तो तिदंडविरओ य विहग इव विप्पमुक्को विहरइ वसुहं विगयमोहो त्ति बेमि ६० महानियंठिज्जं सम्मत्तं २०

चंपा नगरी पालित एहवइ नामइ श्रावक हूंतउ वाणीउ   महावीर भगवंतनु शिष्य स्वामी श्री महावीर नउ ते हूंतउ १ तेह पालित श्रावक निग्रंथ प्रवचन जे धर्म तेहनइ
नगरी
ते हूंतउ

चंपाए पालिए नाम सावए आसि वाणिए महावीरस्स भगवउ सीसे सो उ महप्पणो १ निग्गंथे पावयणे सा

विषइ श्रावक जाण हूंतउ प्रवहणि व्यापार करतउ पिहुंड नगरि आव्यउ २ तेह पालित पिहुंड नगरि व्यापार करतउ तेहनइ एक वाणीइ आपी तेह पालित
बडाइ
करतउ
नीपटीटी बीजी वस्तु

वए से वि कोविए पोएण ववहरंते पिहुंडं नगरमागए २ पिहुंडे ववहरंतस्स वाणीउ देइ धूयरं तं ससत्तं

श्रावक ग्रहस्थ प्रताप दसमिवालु ३ हवइ पालितनी स्त्री   समुद्र मांहि प्रसवी   तिहां बेटा पुत्र जन्म हूउ   तेहनुं समुद्रपाल
स्त्री लेइनइ

पइगिज्झ सदेसं अह पत्थिए ३ अह पालियस्स घरणी समुद्दंमि पसवइ अह दारए तहिं जाए समुद्दपाल

नामदीधुं ४ क्षेमलइ आव्युं चंपाइं   श्रावक वाणिउ घरि   वाधइ घरि तेहनु   पुत्र सुखइ करीनइ ५ तेह पुत्र बहुत्तर
कला

त्ति नामए ४ खेमेण आगए चंपं सावए वाणिए घरं संवड्ढई घरे तस्स दारए से सुहोइए ५ बावत्तरी कल २

सीखु नीतुं प्रवीण पंडित थयु   यौवन पाम्यउ   स्वरूपवंत दर्शनीक थयु ६ तेहनइ रूपवती स्त्री पिता आणइ रूपवंत
कीजइ लेइ परणा

उ य सिक्खए नीइकोविए जोव्वणेण य संपन्ने सुरूवे पियदंसणे ६ तस्स रूववइं भज्जं पिया आणेइ रू

वंत तेह समुद्रपाल धवलगृह देव दोगुंदक जिम देवी संयुं ७ एकदा ते अन्य तरुणकदा गोखइ बइठउ नगरनी वध्य जातां
क्रीडा करइ   तिम ते श्री समुद्रपाल   प्रासादइ   बइसइ   मृत्युइ गारते

विणिं पासाए कीलए रम्मे देवो दोगुंदउ जहा ७ अह अन्नया कयाइ पासायालोयणे ठिउ वज्झमंडण

णिंकरी गहबुचोरवधपइंवधने ८ तादृपीनइंसंवेगऊपनु समुद्रपालतइंमनमांलि आश्चर्यरूपपाड्यांकर्मनु उदय
जाणित मिकांइमांगा आण्य ३

उत्तपटबु सोसाग वझयस्सइ वझरं ८ तं पासिऊण संवेगं समुद्दपालो इणमब्बवी अहो असुहाण कम्माणं निज्जा

पांम्पतेए ९ तेवारीप्रतिबोधपाम्यु उत्कृष्टसंवेगआव्यउ मातापितानइंपूछीनइं पडिवज्युंसाधुपणुं १० तणइं
जगवंतात् त्यजु

णं पावगं इमं ९ संबुद्धो सो तहिं भगवं परमं संवेगमागओ आपुच्छम्मापियरं पव्वइए अणगारियं १० जहि

इम्कूपआदमिथ्याल मोटु मोह संपूर्ण भयनइं परित्यागकरीधर्मरूचिआणी व्रत सीलआदरीपरीसहसह
रूपमोटउकिले स इवालागउ

उमयग्गमहाकिलेसं महंतमोहं कसिणं भयावहं परिआयधम्मं चरोअएज्जा वयाइंसीलाइंपरीसहे

११ हिंस्यानहीं सत्यवंत चोरीनहीं ब्रह्मचर्यपरिग्रहरहित एपांचिवडपांचमहाव्रत चालवालागुजिनवुनाआध
मीतणइंमार्गि विजा

अ ११ अहिंससच्चं च अतेणगं च तत्तो अबंभं अपरिग्गहं च पडिवज्जियांपंचमहव्वयइं चरेज्जधम्मंजिणदेसि × या ×

णेवाला १२ सर्वजीवनीदयाइंकरीपालइ क्षमाइ जितिंद्रियब्रह्मचारी सावद्ययोगपरिवर्जइ चालइतसमुद्रपा
ग उ रक्षमइ लसमाधिइंइंद्रि

अंविऊ १२ सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपा खंतिखमे संयबंभयारी सावज्जजोगं परिवज्जयंतो चरेज्जभिक्खु

सातप १३ तिकालिप्रस्तावइंक्रियानइंसम आपणुबलजाणीनइंलयकूपनइं सीहनीपरिंसोइनाशइआमनपामिइ आ ५७
यइदेशनइंविषइ चालइ

सुसमाहिइंदिए १३ कालेणकालं विहरेज्ज रठे बलाबलं जाणिअ अप्पणोत सीहोवसद्देणनसंतसेज्जा वइ

नइक्ष: स्वरूपवचनसांभलीवउ १४ तिस्यलीयरवासमउवेषीचाल्यु अनइंप्रियअनिअप्रियसर्वखमइ सयलोइंवस्तुसपछइ
ते अमलमवचननाबालि

जोगसोच्चाणअसब्भमाहु १४ उवेहमाणोउपरिव्वएज्जा पियमप्पियं सव्वतितिक्खएज्जा नसव्वसव्वत्थभिरोअ

रूचइ पूजानवांबइंनेदानकरइंतेयती १५ एसंसारिमनुष्यलविअनेकब्द जिनावचारिरूलइंविषइंनहीं लयइंकरीबीनजाति
नहीं कांबाक रइंजीव

एज्जा नयाविपूअंगरहंचसंजए १५ अणेयछंदामिहमाणवेहिं जेतावइंभयकाइभिक्खू भयभेरवातत्थउइं

कांकपजि दिवमनुष्यनाअथवातिर्यंचनातेषमे १६ अनेकपरीसहसहइवाअशक्यक्रइं तेसीदाइंजिहांघणाकातरपुरुष अनइं
परीसह काइत तिहांय

तिनीमा दिव्वामणुस्साअदुवातिरिक्खा १६ परीसहाउव्विसहाअणेगा सीअंतिजच्छाबहुकायरानरा सेतत्थ

रीसहसहइतोसंकलप्सी संग्रामांगणनइंविषिंजिमसू १७ टाढि तापनउडांससमसानानातृणस्पर्शना रोगनीपीडाविविधप्रकारनीप
त सा धात कूदाथीकायरनथाइंतिमतेसाध मइशरीर

पत्तेनविहिज्झभिक्खू संगामसीसेइवनागराया १७ सीउसिणादंसमसायफासा आतंकविविहाफुसंतिदेहं

अतइंवनपरीवहनकोकहइतेप तिखमतोथपइंपूर्वकृतकर्म १८ तेवारइं रागनइं द्वेष अनइंमोहकापीअरातिस्वरादि
रीसंहअहीयास इसाध

अकुक्कुउत्तहाहिआसएज्जा रआइंखवेज्जपुरकडाइं १८ पहायरागंचतहेवदोसं मोहंचभिक्खूसययंवि

वक्षण मेरुनीपरइंवाइंचालइंनहीएत तिमपरीसहआत्मागोपवीनेसहि १९ तेमापूर्गीवस्तीम तेमांरिषि पूजानवांछइंअनेइं
लइंपरीसहसहइतोलइंनहीं दीनपणास्होत नेदानुसंगकरइतसे

यक्खणो मेरुव्ववाएणअकंपमाणो परीसहेआयगुत्तेसहिज्जा १९ अणुण्णएणावणए महेसी नयाविपूअंगरहंचसं

× वि ×

MEMORIAL

उपरवृ॥

यत तसरलनवइं एमिवजइं चारित्र तमीह्रुमार्गि चालीनइं पामइ २० वलीतऊथिइरति नकरइं रइ तदवीविरसुआत्मानु
रतिसदइवाम मही सनापरिचय
इए सेउफस्सावंयडिवलसंजए निवाणमग्गं विरए उवेइ २० अरइरइसहे पहीणसंथवे विरए आयहिए पहा
हित परमार्थपदिरह्यतइंछेउ वेदइंशोकअनइ अनइंपरी २१ विविक्तप्रकारनुउपाश्रयनसेवइं संसारनासंगरहीतबीजऊ
कारी एतलइमुक्तइं जाइ ममतारहीत द्रव्यरहीत जीवरक्षणहार
णवं परमट्ठपएहिं चिट्ठइ छिन्नसोए अममे अकिंचणे २१ विवित्तलयणाइं भएज्ज ताई निरोवलेवाइं असंथ
लफल ऋषीश्वरएतवाउपाश्रयसेव्या कायाइंफरस्यातपरीसह २२ तऊषिज्ञानीइंउत्कृष्टज्ञाननइं उत्कृष्ट चारित्र धर्मसि
रहीत महायसवंतऋषि ज्ञाणवइ करीसहइ
डाइं इसीहिं चिन्नाइं महायसेहिं काएण फासिज्ज परीसहाइं २२ सन्नाणनाणोवगए महेसी अणुत्तरं चरिउं धम्म
आदरीनइं उत्कृष्टज्ञानधारीयईयसवंत सोलिसूर्यनीपरइं आकाशि २३ बेऊइंकर्मपुंइंरूपीनइं पुण्यनिपाप निरागीथईसही
समंचयं अणुत्तरे नाणधरे जसंसी ओभासई सूरिए वंतलिक्खे २३ दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं निरंगणे सव्व
संसारसमुद्रमोटा तरीनइंसमुद्रमोटउ एवनुउ॥ तसमुद्रपालवलीनइंहीअवतरइंएहवीगतिगयु २४ समुद्रपालितसंपूर्णअध्ययनइ
मुकाईनइ ३ एसमोह इमकहउ ३ ॥२१॥
उ विप्पमुक्के तरित्ता समुद्दं व महाभवोघं समुद्दपालो अपुणागमं गए त्ति बेमि २४ समुद्दपालिज्जं सम्मत्तं २१ ५५
सूरीपुरनगरनइविषइं हवुराजामोटीऋद्धिनुधणी वसुदेवएहवइंनामइ राजानेलक्षणेकरीयुक्त १ तदनइंस्त्रीबइंहुइ एकरोहि
सोरियपुरंमि नयरे आसि राया महिड्ढिए वसुदेवित्ति नामेणं रायलक्खणसंजुए १ तस्स भज्जा दुवे आसि रोहि

णीबीजीदेवकीतिम तदनइंबइपुत्रहुआ वाल्हा रामअनइंकृष्ण २ वलीसुरीपुरिनगरि हुउराजामोटीऋद्धिवंत समुद्रविज
णी देवकी तहा तासिं दोण्हंपि दो पुत्ता इट्ठा रामकेसवा २ सोरियपुरंमि नयरे आसि राया महिड्ढिए समुद्दवि
यनामइं तेराजानेलक्षणेकरीसहीत तेहनीभार्याशिवानामइं तेहनुपुत्रमहायशवंत भगवंतअरिष्टनेमि त्रिणिलोकनुनाथछ
राजा ३ नइंपांचइंद्रीनुदमण
जएनामं रायलक्खणसंजुए ३ तस्स भज्जा सिवा नाम तीसे पुत्ते महायसे भगवं अरिट्ठनेमि त्ति लोगनाहे दमीस
हारतेहमां तअरिष्टनेमिना सर्वतिलकस्वरगंभीर एकसहस्रअनइआठलक्षणधारी गौतमगोत्रीकृष्णवर्णदेहछवि वज्रऋषभसंघ
हिमूलगु॥ लक्षण र्यादिगुण
रे ४ सो रिट्ठनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ अट्ठसहस्सलक्खणधरो गोअमो कालगच्छवि ५ वज्जरिसहसंघ
यणी समचउरंससंस्थानअतिकृशोदरा तेहनेमिनिअर्थिराजीमतिकाजइंमागइंश्रीकृष्ण एतलाअनंतरराजा सीलसंयुक्तलावण्य
॥राजीमतीकन्या॥ कन्याप्रधानबइं
यणो समचउरंसो झसोदरो तस्स राइमइं कन्नं भज्जं जायइ केसवो ६ अह सा रायवरकन्ना सुसीला चारुपे
गुंणस सर्वलक्षणेकरीपूरी झलकतीसोदामिनीवीज ७ हवइंतेराजीमतीनुबाप वासुदेवमहर्द्धिकनिकहिं इहांआवुतेनेमि
हीत लीनीप्रभासरिषी उग्रसेनराय
हिणी सव्वलक्खणसंपन्ना विज्जुसोयामणिप्पभा ७ अहाह जणओ तीसे वासुदेवं महिड्ढिअं इहागच्छउ कुमा
कुमार जिमतकन्याहुंदेउं ८ श्रीनेमिकुमरसर्वऔषधीए अनइंकीधांकौतकमं दिव्यवस्त्रयुगलपहरइंसु आभरणेकरीशृंगा
रानइं तदनइं स्नानकरावुपाणीवडेपहिरावि गलतिलकप्रमुख रुउ
रो जा से कन्नं ददामहं ८ सव्वोसहीहिं ण्हविउ कयकोउअमंगलो दिव्वजुयलपरिहिउ भूसणेहिं विभूसि

x॥x

१० एवडं महर्द्धिकें गंधहस्ती वासुदेवनु वडु वडा पाटनु तेणइं चढी नइं श्रीनेमिकुमर जिम माथइं मुगट सोहइ तिम सोहइं ऊंचुं छत्र

उ०प०२२ ३ १० मत्तं च गंधहत्थिं च वासुदेवस्स जिट्ठगं आरूढो सोहइ कुमारो सिरे चूडामणी जहा १० अह ऊसिएण

छत्रस्य वडं चमर ढालता करी सोहइ समुद्रविजयनइं कटकिं सघलइ परिवरया ११ चातुरंगिणी सेनाइं करी रथी अनुक्रमइं साथी
स्वाकि … रइंपरवरयउ … पायदल घोडा रथ

छत्तेण चामराहि य सोहिए दसारचक्केण य सो सव्वओ परिवारिओ ११ चउरंगिणीए सेणाए रइयाए जहक्कमं

तूर्य वाजित्रनां नादइं करी तेनाद आकाशि सम्हलन इसउं थउं १२ एहवी ऋद्धइं करी कांति सम तेकांति उत्तमइं पोताना घरथकी नीस
दीठ

तुरियाण सन्निनाएण दिव्वेण गगणं फुसे १२ एयारिसीए इड्ढीए जुईए उत्तिमाइ य नियगाओ भवणाओ नि

स्यो श्रीनेमिकुमर १३ हवइं तेतिहां नीसरतइं दीठा प्राणी भयवंत वाडामांहइं पांजरइं करी बांध्या उत्पीडिया १४ ति
रीआ कु ला

ज्जाओ वण्हिपुंगवो १३ अह सो तत्थ निज्जंतो दिस्स पाणे भयद्दुए वाडेहिं पंजरेहिं च संनिरुद्धे सुदुक्खिए १४ जी

जीवतुं जीवतानउ मांसनइं कारणइं भखवा देखीनइं श्रीनेमि महा सार थीनइं पूछ्युं १५ कहइ किं अर्थि प्राणीआ एजीवसघ
अंत पाम्याछइ प्राज्ञ इवलउ लासुखवाछा

वियंतं तु संपत्ते मंसट्ठा भक्खियव्वए पासित्ता से महापन्ने सारहिं इणमब्बवी १५ कस्स अट्ठा इमे पाणा एए सव्वे

रीसुखनासा वाडइ पांजरइं करी बांध्या रुंध्या दीसइ छइ ति १६ हवइ सारथी तिवारइ बोलइ एरूडा जीव पाम्या तारा वि
गला र करी स्यइ कारण पाम्याछित स्वामि

सुहेसिणो वाडेहिं पंजरेहिं च संनिरुद्धा य अच्छहिं १६ अह सारही तओ भणइ एए भद्दा उ पाणिणो तुज्झं वि
१ए१

५५

वाहनइं काजइं घणा लोकनइं जिमाडवा १७ सांभलीनइं तेहनुं वचन घणा प्राणीनुं विणासण एहवउं चिंतवइं तेमहा सानुक्रोस
नइं काजइ राख्या छइं प्राज्ञ श्री नेमिजी करुणा

वाहकज्जंमि भुंजावेउं बहुं जणं १७ सोऊण तस्स सो वयणं बहुपाणिविणासणं चिंतेइ से महापन्ने साणुक्को

कारुण्य सहित १८ जु मारइ कारणइं करी हणाइं घणा जीव आं ए निश्चइं एम्हारइ परलोकिं न होइं १९ ति श्रीनेमिकु
त्रिकरणीतवइ सरवाइउ

से जिएहि उ १८ जइ मज्झ कारणेणं हम्मंति सुबहू जिआ न मे एअं तु निस्सेसं परलोगंमि होहिइ १९ सो कुंडला

मरइं तिहां कंदोरा प्रमुख महातइं आभरण सघलाइं सारथीनइं आपइं २० श्रीनेमिमनतुं अभिप्राय तिहां देवता
कुंडलयुगल दीक्षा नउ करयउ

ण जुयलं सुत्तगं च महायसो आभरणाणि अ सव्वाइं सारहिस्स पणामए २० मणपरिणामे अ कए देवा य जहो

योग्य आव्या घणा सर्वऋद्धइं परवरया दीक्षा महोत्सव नइं करवा २१ देवमनुष्ये परवरया पालखी उपरइं तिहां रथ थी च
ढीनइं॥

इअं समोइण्णा सव्विड्ढीए सपरिसा निक्खमणं तस्स काउं जे २१ देवमणुस्सपरिवुडो सिबिआरयणं तओ समारूढो

नीसरया द्वारिका थकी गिरनारि रहया भगवंत २२ हवइं वनमांहि जातां कलस्या उत्तम पालखी थकी एक सहस्र पुरुषस्यु

निक्खमिअ बारगाओ रेवययंमि ठिओ भयवं २२ अह उज्जाणं संपत्तो उइण्णो उत्तमाउ सीआओ साहस्सीए परिवुडो अ

चारित्र लीधुं चित्रानक्षत्रइं २३ हवइं ते श्रीनेमिकुमार सुगंधि सुकुमाल कांति पोतइं लुंचइं केस पांचमुष्टिए संतोषपा
गंधथकी सुगंध जे कवइ कुंचित कोमल करी मुक्त

भिनिक्खमई उ चित्ताहिं २३ अह सो सुगंधगंधिए तुरिअं मउअकुंचिए सयमेव लुंचई केसे पंचमुट्ठिहिं समाहि

२४ कृष्ण वासुदेव कहकहइ लुंच्याकेश जितेंद्रियप्रतइ तेहनइ मनोरथसीघ्र पांमे तुं दमीसर श्रीनेमि २५ ज्ञानइ दर्सनइ

३पटबु॥ ए २४ वासुदेवोकणंभणइ लुत्तकेसंजिइंदियं इछियमणोरहंतुरियं पावेसुतंदमीसरा २५ नाणेणंदंसणे

चारित्रइ तपइ करी क्षिमाइं नीरिहपणइं गुपइंकरी वृद्धवंत थाया २६ इणइं प्रकारइं राम दसारइ समुद्रविजयादिक घणा श्रीनेमि प्रतइ लोक [illegible] नइ

णं चरित्तेणतवेणय खंतीमुत्तीएयतीए वड्ढमाणोभवाहिय २६ एवंतेरामकेसवा दसारायबहूजणा अरिट्ठ

वांदीनइ द्वारिकानगरीइं गया २७ तिसांभली राजवरकन्याइ राजीमतीइ प्रव्रज्याश्रीनेमिनइ निरानंद हुई आणंदरहीत हुई तास्यइ

नेमिंवंदित्ता अइगयाबारगाउरिं २७ सोऊणरायवरकन्ना पव्वज्जंसाजिणस्सउ निहासायनिराणंदा सो

शोकसहितहुई २८ राजीमतीइं मनचिंतवइ धिग्पणुमाहराजीवि तव्यतेणइं त्यजी प्रव्रज्या[illegible] २९ तिवारइं तकालसमरसिरषा

गेणउसमुट्ठया २८ राईमईविचिंतेइ धिरत्थुममजीवियं जाहंतेणपरिच्चत्ता सेयंपव्वइउंमम २९ अहसाभम

केस नाकीकांकसीइंकरीसमारीउ पोतइंलुंचइ धीरपणइंनिश्चयपणइं संतोषवंतीतपस्विनी ३० वलीवासुदेवकृष्णकहइ लुंचितकेसजितेंद्रि

रसंनिभे कुच्चफणगपसाहिए सयमेवलुंचईकेसे धिइमंताववस्सिआ ३० वासुदेवोकणंभणइ लुत्तकेसिंजि

यप्रतइ हेराजीमतीसंसारसमुद्र घोरतरिकरि सीघ्र ३१ तिवारइं दीक्षा लेई घणी प्रवर्तावी स्वजनपरिवार दीक्षा लीधी सजनपरिजन दीक्षालीधी॥ ६५

इंदियं संसारसागरंघोरं तरकन्नेलहुंलहुं ३१ सापव्वइआसंती पव्वावेसीतहिंबहुं सयणंपरियणंचेव सी

सीलवंतीपणंबहुसूत्र ३२ तिराजीमतीगिरिनारि चडताअंतरालइवर्षाथीभींजी तेवर्षाभवतीअंधारा मांहे गुफाबइंतिहांत आवी

लवंताबहुस्सुआ ३२ गिरिरेवययंजंती वासेणोल्लाउअंतरा वासंतेअंधयारंमि अंतोलयणस्ससाठिआ

३३ तिराजीमतीवस्त्रविसारतीयथाजातदीठीतेणीदीठी रहनेमिप्रवितरहने पाछलिदीठतेतिणीइं ३४ बीहनी तिसाध्वीतिहांदेषी

३३ चीवराइंवीसारंती जहाजायत्तिपासिआ रहनेमिभग्गचित्तो पच्छादिट्ठोयतीइवि ३४ भीयायसातहिंद

नइ एकांतसंयत तिहां बाहेकरीअंगोपांगगोपवइ गोपवीनइबइसइतीहवी ३५ तिवारइंतराजपुत्रनेमि समुद्रविजयनु बीहतीपडतीदीठी

ट्ठुं एगंतसंजयंतयं बाहाहिंकाउंसंगोफं वेवमाणीनिसीअई ३५ अहसोविरायपुत्तो समुद्दविजयंगउ भी

तिकारइंतएहवुवचन ३६ हुंरहनेमिहुं हेकल्याणवती हेरूप हेमालानाथवती सुकोमल हेरूपवती जिलांगवि ३७ फरवी

यंपवेइयंदट्ठुं इमंवक्कमुदाहरे ३६ रहनेमीअहंभद्दे सुरूवेचारुभासिणि ममंभयाहिसुतणू नतेपीलाभ

नहीहुइ ३७ इसुसिताभोगभोगवि मनुष्यावतारदुर्लभइ भोगभोगवीनइ तिवार श्रीवीतरागनामार्गनइ ३८ दीठु रहनेमि वाली

विस्सई ३७ एहितांभुंजिमोभोए माणुस्संखुसुदुल्लहं भुत्तभोगीतउपच्छा जिणमग्गंचरिस्समो ३८ दट्ठूणरह

भागीइं नोगुप्योगथुमभवतलइ तिराजीमतीअसंभ्रांत आपणपुंसंवरतीहवइ ३९ तिवारइंतराजीमतीराजकन्या सुस्थितहुई

नेमिंतं भग्गुज्जोयपराजियं राइमंतअसंभंता अप्पाणंसंवारतहिं ३९ अहसारायवरकन्ना सुट्ठिआ

नियमव्रत नइं विषइ जाति कुल नइं सील राखतीहूती तिवारइं बोली ४० जुइं रूपइं वैश्रवणधनदकुबेर अनइं क्रीडाइं करी नलकूबर जिसउ

उपटखुदा निच्छयवाए जाईकुलंचसीलंच रक्खमाणीतयंवए ४० जइसिरूवेणवेसमणो ललिएणनलकूबरो तहावि

तेहि न वांछउं जो साक्षात इंद्रसरिखु ४१ बलतउ ज्योतिमइं धूमकेतु सरिखु दुराशय नवांछइं वम्यु तोजन करवा ।। जिम अगंधन एतलइं सूक्ष्म उविष यमेवता कुलनुमर्प

तेनइच्छामि जइसिसक्खंपुरंदरो ४१ पक्खंदेजलियंजोइं धूमकेउंदुरासयं नेच्छंतिवंतयंभोत्तुं कुलेजायाअ

देरवतें मिथ्याकारय मोतादरा तेहनुं असंयम जीवितव्यनुं कारणपक्कीनही उवम्या आचारनीयपिंडीका लेई तिवारी तो गवानइं वइं तेतोगपक्कीमरणथाम ४३ वचीमा अंगलकारीनहु बलीमा जीमति कहिंहिं अवे

गंधणे ४२ धिरत्थुतेजसोकामी जोतंजीवियकारणा वंतंइच्छसिआवेउं सेयंतेमरणंभवे ४३ अहंचभो

रहनेमि फिक्रो जन उग्रसेननी पुत्री तुं अंधकविष्णुनो समुद्रविजयनो सर्व माहि अगंधनकुलनाम निबाई मतें जिम विषपान वर्ते विषइ मनन करवाय तलामाहि निश्चल चित्त चारित्र पिरकालण वबु जोग नइं विषइ

गरायस्स तंचसिअंधगवण्हिणो माकुलेगंधणाहोमो संजमंनिहुओचर ४४ जइतंकाहिसिभावं जाजा

देखीसि नारी स्त्रीजन वायरइं अकृत समाहवुं तिम तुं स्त्री जाति देखी विषयविलासी आत्मा । जिम गोवाल गाइचउरुवालउ तिम ते गाइ रूपालादिक नु धणी

दिच्छसिनारिओ वायाविद्धुव्वहडो अट्ठिअप्पाभविस्ससि ४५ गोवालोभंडवालोवा जहातद्दव्वणिस्सरो एवं

अनीस्वर अवारनो श्रामण्य चारित्र नुं दइं इसि नि गनीईवाघकी तिका रपवी तेरहनेमि मनवच सयती साधवीनुं सुभ नाथुं नहु अंकुसइं करी जिम कं नाग वारित्र नो उत्तम फल ते हनाभ्र नो गपकी ४६ तेराजीमतिनाव वनरहनेमिमानलानो वैराग्य उपजावणहार वचन

अणिस्सरोतंपि सामण्णस्सभविस्ससि ४६ तीसेसोवयणंसोच्चा संजयाइसुभासियं अंकुसेणजहा

३२

नागदस्ताति तिमराजीमतिहूप कंतारथव तिकारपवीतेरहनेमिमनवच कायाअसयमधकीगोप सामान्य चारित्र निश्चलचि जावजीवलगिंदढव्रतदेवे

रूपदर्शी पंचमार्गिकां एणा चारित्र ध मीनि विधिया एव उलो १

नागो धम्मेसंपडिवाइओ ४६ मणगुत्तोवयगुत्तो कायगुत्तोजिइंदिओ सामन्नंनिच्चलंफासे जावज्जीवंदढव्वओ ४७

कर्मवयरी जीतिवाति घयांबिहूई एकवलीरहनेमि सर्वज्ञानावरणीयादिकर्म खेवेसुं मोक्षपाम्या तेमोक्षकेहवो छे इम करिं संबुद्ध बोधि पंडित कालिआकरातपकरिं अनिराजीमतिकेवलज्ञान पाम्या ननेरउकृति ५० पमर्वयपावी अनुत्तर प्रधान एहवो बीजोको नही ज्ञानालानथकी बुद्धवा बुद्धिना

उग्गंतवंचरित्ताणं जायादोन्निविकेवली सव्वंकम्मंखवित्ताणं सिद्धिंपत्ताअणुत्तरं ४८ एवंकरंतिसंबुद्धा पंडि-

= सर्व

ध आसुनइं जाण विषयविकारीनि कामभोग थकी चारित्र थकी पडीनिं वलीचारित्र एहवुं एरहनेमि अध्ययननउं अर्थ २२ परीसह उपसर्ग ली विकरीविचक्षण वासिं विषयादि की तेरहनेमि पु कूमादेउत्तमा कुधर्मस्वामि जंबुप्रतिं कहइ ४९ लेशमात्र कहिउं।।पूर्व संपूर्ण जिपी निंजिनथया चारित्रीसम

याप वियक्खणा विणियट्टंतिभोगेसु जहासेपुरिसुत्तमोत्तिबेमि ४९ रहनेमिज्जअज्झयणंसम्मत्तं २२ जिणेपासि-

लइं अध्ययन नित्यिनिधि यर्पण कहे तिधर्मक असंयमति टालवइं त्याइं तेसमय म पोतानुंरा खवुं तिम।

श्रीपार्श्वनाथ इस इंद्रादिकनिं पूजवा जो तत्वज्ञानजाणिवडं संसारसमुद्र जलतरिया ते , तेश्रीपार्श्वनाथ सावीरस्तुति नेहनो आसिरूतउ शिष्य इन्निनाम इ त्रिलोक पूजवा जो बुद्ध आत्मा जेहनो धर्मतीर्थनाकरणहार प्रकाम वइं लोकनिविषइ प्रदी महायशी महायशगुण वदीवास मान ।।

त्तिनामेणं अरहालोगपूइओ संबुद्धप्पासव्वन्नू धम्मतित्थयरेजिणे १ तस्सलोगपईवस्स आसीसीसेमहाय-

अनिराति प लिम देह उपकेइंते संदेह टाल

२ केशी एहवइं नामइं श्रमण विद्याज्ञान अनइं चरण चारित्र उदिअवधिज्ञानइं श्रुत ज्ञान ज्ञानइं करीसहित जी ग्रामानुग्राम एक ग्रामथी बी रखउइं कुमारपणिब्रह्मचारी ते विद्याउपारगामी ३ ते बुद्धतत्व तुं जाण मतिविना कृत मनिससहइं करी समा जाइं ग्राम बी जाथि त्री जाइं नेक यइते हनणा मति कुल परवस्तुते मविहारकरतउ ।।

से २ केसीकुमारसमणे विज्जाचरणपारगे २ ओहि-नाणसुए बुद्धे सीससंघसमाउले गामाणुगामंरीयंते

वी डिमके त्री गोतमइ एसंदेह टा लिउ तिणि त्रीसर्के त्रीगोतम या अध्ययन कहिउ उलो ३

श्रावस्ती नगरीइं आव्या ३ तिंदुक नामा रहइंसहितनगरतला तेसावथिनगरीनि फासुनिदेष उपना अनेरस्थानक तेवनपंड नइं विषइं वासउ मार्टि तिंदुक नामा उद्यानवनपंड मंडलयरिसरनिविषि यवी आव्या जेजीवते शिरही तदर ऱहिवो उवागए उतर्या ४ नइं विषइ ।। बीजव्यापस निसंथारु जिहा

सावत्थिंनगरमागए ३ तिंदुयंनामउज्जाणं तम्मीनगरमंडले फासुएसिज्जसंथारे तत्थवासमुवागए ४

तेतला तेहवाकालम धर्मतीर्थंकरनाकारनाजिन नगवंतवर्द्धमाननामदवर्द्ध सर्वलोकनिंविषइंविख्यात ५ तेमहावीरलोकमांदिदीवासमा
नतणि महानदुविषइ, नाञीणप लरवकरा थईधणी नामइ,चोवीसमुजाई करे विरव्यानवइ नवहो तनाक रणहार

अहतेणेवकालेणं धम्मतित्थयरजिणे भगवंवद्धमाणुत्ति सव्वलोगंमिविस्सुए ५ तस्सलोगपईवस्स आ
सि
हुउंशिष्यमहामोटा महिमा गोतमगोत्रनोउप ॥ विद्याज्ञानअनइंचारित्रचति छादशांगी१४पूर्वनोजाण शिष्यनेपरिवारइंसमु अनुक्रमिंग्रा
यसनत धणी वंत नाइंउतुतिणइविनोमि-नपंचमहाव्रतादिकतुणार ग्यारज्ञानेकरीतत्वनोजाण हाइंकरीपरिवर्यात माचुगामिंसम
सीसेमहायसे भयवंगोयमेनामं विज्जाचरणपारगे ६ बारसंगविऊबुद्धे सीसेसंघसमाउले गामाणुगाम
लइंविहा तणिसावत्थीइंनगरी ७ नसावत्थीनगरीनइंविषे तेश्रावस्ती परि फासुडीवरहितनिव्याप्राति तहउद्यानिंवि
रकरतउ आव्यउ कोष्टनामाउद्यानवाडी॥ नगरीनइं मरई वसतिसंथारतृणादिकजिहां वईवासउवाणउ
रीयंते सोविसावत्थिमागए ७ कोट्ठगंनामउज्जाणं तम्मिनगरमंडले फासुएसिज्जसंथारे तत्थवासमुवाग
वासो ८ केशीकुमारनामायति गोतमनामागणधरमोटा केशीगोतमतिहांविचरसाव मनवचनकायागुप्तसहितअथवा विहंकेशी
आवो तपनोकरण हार यशनो धरणहार स्तीनगरिइंविचरताविहार तत्त्वनीवाहितलीबुद्धि स्वभाव गोतमशि
करता आ वा समाधवतइअधीनोरोगना वधोज्ञानादिक:
ए ८ केसीकुमारसमणे गोयमेयमहायसे उभओविनत्थविहरिंसु अल्लीणासुसमाहिया ९ उभओसीस
ष्यनासंघ संजमवंत तपनाकरण तेश्रावस्तीनिंविषि आगलि मूलगुणइउत्तमगुणसहित केहवो वा विकल्पेउत्पन्नस अनइंगौतम
हेदनइस साधवत हारनइं॥ कहीसइंतेचिंताचिंतवउपनु छकायनाउतिपालक १० वंछीमहाव्रतादिकरूपधर्म
मूहनइ
संघाणं संजयाणंतवस्सिणं तत्थचिंतासमुप्पन्ना गुणवंताणताइणं १० केरिसोवाइमोधम्मो इमोधम्मो
गणधरनो वेषादिकआचारधर्मनां इमाएअमूसंतेधनीवाअथवा च्यारमहाव्रतरूपजेधर्मश्रीतु गंजापांचमहाव्रतरूपश्रीकाविनि
शिष्य प्रणीधानवस्थानक सोतेगौतमनाशिष्य संबंधनी॥ व्रतनेपरिग्रहतमांहिगिलाइ॥ हाएतावतापंचमहाव्रतरूपधर्म
वकेरिसो आयारधम्मपणिही इमावासावकेरिसी ११ चाउज्जामोयजोधम्मो जोईमोपंचसिक्खिओ दे
केहवीवज्ञसर्वज्ञनानाप्याधर्मनंउश्रुतकोई

गहणदिउवर्द्धमान अनइं-पार्श्वनाथइंदेशामित्र १२ प्रमाणीयेतथोलुंवस्त्रपहिरवुं पजेपांचमहाव्रतरूपशि एककार्यमोक्षमार्गकार्यसाधवानिंवेषे तेकंनि
महावीरदेव इ। वेकंतीर्थकरमहायसनाधणी पधर्ममहावीरनादेशाकि ३ कहीजिहांएतावता पं श्रवर्तापीपार्श्वनाथनिमका वीर पणिवि
सीओवद्धमाणेणं पासेणयमहामुणी १२ अचेलगोयजोधम्मो जोइमोसंतरुत्तरो एगकज्जपवन्नाणं विसेसे
शेषनिंविषयसुं १३ पतला तिहांश्रावस्तीनगरी शिष्यनुजाणीसनइंअतिशाय समागमिलवानीज्ञांषइंकरी वेहकेशीकुमारअनइं १४ हेगौतम
उवितकइंकारणि ततवि तिविषइंकेशीगौतमना सुंवितर्कविकल्पसं हद। धीमतिजामिलाइउतर्कुजिम गोतमगणधर स्वामीयश
शिष्यताम देहटलइ
किंनुकारणं १३ अहतेतत्थसीसाणं विन्नायपवितक्कियं समागमेकयमई उभओकेसिगोयमा १४ गोयमे
रव्यातविनयस्वरूप शिष्यनइंसमूहइंकरी ज्येष्टवाडउपरितउकुलतेमाटइं तिंडकनामावनप्रति १५ केशीकुमार श्रमणसा गौतमप
पनउजाणीं परवस्योपणपरिवारसुं कुलपार्श्वनाथनासंतानीयानइंदम पहोताहवउगौतमगणधार धुतयस्वी गणधरनेइं
अवि रकताकहता वेचारउ हतउ
पडिरूवन्नू सीससंघसमाउले जेट्ठकुलमविक्खंतो तिंदुयंवणमागओ १५ केसीकुमारसमणे गोयमं
आवतउदेषीतिं आव्याप्रीउचितयोग्यआ रूमीपरिकरनोकरउ १६ पराली-वारिजीवरहितनिर्दो शालिउव्रीहिरवोडवालधरने गौतम
गतास्वागतनउकार वउं वनेदनिंतिहकउद्याननिविषइं तरणाइंपणदर्भइधीजुसाथकनि गणधर
ग्याणकल्पउरंगणादि क
दिस्समागयं पडिरूवंपडिवत्तिं संमंसंपडिवज्जई १६ पलालंफासुयंतत्थ पंचमंकुसतणाणिय गोयम
निवइसवानिंअर्थि क्षिप्रशीघ्रकतावलुआपताहवा १७ केशीकुमारनामा साधु गौतमगणधरमोटायस वेहूंजणाबिहांबेसनइंवडीपइं
वइसवानइंसाहिउं यति नोधणी
स्सनिसिज्जाए खिप्पंपडिवज्जईणामए १७ केसीकुमारसमणे गोयमेयमहायसे उभओनिसन्नासोहंति चं
एकचउमासनिंवीजोसूर्यतद मिथ्यात्विघणातिहावन पाखंडीयाव्रतनाधणीयोगीसन्यासी गृहस्थघरनाधणीलोक साहस्सीसहस्रआव्या
सरीषीकातिनाधरणहार १८ मांहि कौतककुतूहलमृगनीपरिअज्ञानी तेहनाअनेक घणा विप्रा प्रविलि
दसूरसमप्पभा १८ समागयाबहूतत्थ पासंडाकोउगामिया गिहत्थाणअणेगाउ साहस्सीउसमागया १

MEMORIAL

उत्तरज्झ

ज्योतिषीविमानिकदेवनावा उ राक्षस किंनरा० कोईदृश्य नदीरूपादिकएहवा व्यंतरतेह नोहूत तिहांवन १७ एवकेड्रकबोल्याबोलिवालागा
नवनवनवतिगंधर्वदेवना हु नर जाति अदृष्टिककाकदेवल नृत मांहिमिलावउत्तरकवासिम्या बेहउत्तमपुरुषतिहांमहानामयव ता।

देवदाणवगंधव्वा जक्खरक्खसकिंनरा अदिस्साणयभूयाणं आसितत्थसमागमो २० पुछामितेमहाभागा के

केशीकुमारश्रमणगौतम तिहांरपवी केशीकुमार गौतमगणधरबोलतपूछुं २१ पूछतांपछेगवनजेहवुंतउ एहवुंकेशीकुमारश्रमणप्रश्न तिहारपवी
गणधरप्रतिबोलतकह्युंवे श्रमणबोलतापूछवुंकहिं डोंतउत्तमूर्तिनिविकारश्रावितेतिगौतमगणधरबोलताहुआ केशीकुमार

सीकुमारमब्बवी तउकेसिंबुवंतंतु गोयमोइणमब्बवी २१ पुछतेजहिछंने केसिंगोयममब्बवी तउकेसी

श्रमणअनुज्ञा गौतमगणधरपूछतइं २२ हिंमाम्हा पहतानपरिग्रहधर केहवापूछ्याकहिंमाम्हाएम पंचमहाव्रतरूपधर्मतिवर्द्ध वासमहाव्
पामीइवक्ति एहवुंबोलताहवा दृष्टीतेसरिवउतप्यारिमहाव्रतरूप दलावमेपुवतवति अहपतेहवुंवि मोनस्वामीइं देखाडितें तस्रूपतेधर्म
रमणएपमकाव्रतस्रूपधर्मकहिते

अणुन्नाए गोयमइणमब्बवी २२ चाउज्जामोयजोधम्मो जोइमोपंचसिक्खिउ देसिउवद्धमाणेणं पासेण

श्रीपार्श्वनाथिंदेषादितं मोहरूपएक कार्यमाधवा विसेषनिंविधिसुकारण एसाधनोधर्म विहुनेदेहे विहुंकरणहाराम वंडाइनेमनतेबरणमन
महामुनीश्वरपतिं २३ निषवर्गीबहनीर्थंकर एदेउ बुद्धिवंतगौतमगणधर मांहिविचारणविहुनेदेउमनिकांइनथी
२४

यमहामुणी २३ एगकज्जपवन्नाणं विसेसेकिंतुकारणं धम्मेदुविहेमेहावी कहंविप्पच्चउनते २४ त

तिहारपवीकेशीश्रम गौतमगणधरइम्बुवो प्रज्ञाबुद्धिमानतंदेखइंमुवे धर्मानापरमारथजीवादिकपदा पहिलाऋषभदेवनावाराना
णइमहोल्लति सकइ जना हवा देखइंधर्मनइ नत्व वंतुमानलवइं अर्थनिश्चलकरइ २५ ऋजुपणुबारलपणुपउजमपणु
ड्डइ समाजावायकापहिवउड्

उकेसिंबुवंतंतु गोयमोइणमब्बवी पन्नासमिरकएधम्मं तत्तंततविणिच्छयं २५ पुरिमाउज्जुजडाउ

पहिलामहावीरनावारानानेक मध्यमकिचला२२तीर्थंक तेलिकारणिविहुनेदे २६ पहिलातीर्थंकरनावारानाजीवाइ नेहलातीर्थंकरनावारा
हिउजुजकपायइविकल्पइंक एनावारनासाधुघणुसरलः धर्मकीधोथीपुहवेनाघनो रैवकरीनिर्मलपणंपमामीइंएहवाति जीवपालिवोदोहिलोयतो
नावाकराजोलिवा बीजाएपी नइं निममाकाव्यासुवसमके महाती ए नो।। नोमाग वाकनामाइ

वक्कजडायपछिमा मज्झिमाउज्जुपन्नाउ तेणधम्मेदुहाकए २६ पुरिमाणंदुविसुज्झोउ चरिमाणदुरणुपाल

ज्ञायस्याउसरजकल्प्यःकल्यनीय

६३

४२ उत्तरा दिवंधण

विकलपणा यतीनोमार्गमध्यमतीर्थंकरवा जीवतेहनेनिर्मलपणुंसोहिलुंपालवुं गौतमेएहवुंकह्यंन्यारेके वोतिभ्यारज्ञानवितेहनी संदेहटाल्यो
अजितनाथआदिदेइनिपार्श्वनाथ उलसोहिलुंएतलामाटि श्रीपार्श्वनाथि श्रीमहावीरदेवइतामतहरीवु मनदिहनेथीपरविणश्रोबीक नेरुपलिक्य
ज्ञाणतानकं २७ यतिरश्तीर्थंक वनावारनाचाधमादो व्रतकह्या।। २७ व्रतिन्नि नवीवढिती हिवनि सा दक

उकप्पो मज्झिमगाणतुसुविसुज्झसुपालउ २७ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमेसंसउइमो न्नोविस

तिकहोमे तेमटेहवुअर्थकहिंगौत २८ प्रमाणमदितधोलुंवस्त्रंवे डोरपवर्णीनरूस्वल्पप्रमा पहिलुंदेषाषितेनेधर्म बीजोदेषाडितेनमार्गी
तिविशेषादि मनामागणधर संरूपतेधर्मआचारजलाचु धारवितमाधनुवेत्राएदमार्ग वर्धमानइश्रीमहावीरि श्रीपार्श्वनाथिमोटाय
कनिवइ

सउमणं तंमेकहसुगोयमा २८ अचेलगोयजोधम्मो जोइमोसंतरुत्तरो देसीउवद्धमाणेणं पासेणयमहामुणी

२७ मोक्षरूपएककार्यसाध विशेषतेदनिविषइ विहुनेदेलिंगनिविषइ उफनिकांइमनमांवितेहवि केशीकुमारश्रमणएहवुं
वालिप्रवइणीविहुंतीर्थंकरि स्थ कारण अहोबुद्धिवंतगौतम।। स्वामनथीकपजतुतोविहुनेदेलिंगसुं बोलतापूछइं
२०

२७ एगकज्जपवन्नाणं विसेसोकिंतुकारणं लिंगेदुविहेमेहावी कहंविप्पच्चउनते ३० केसिमेवंबुवंतंतु गो

गौतमगणधरएह केवलज्ञानइंकरीजेह धर्मनुंसाधनवर्षाकालादिकक एतलजनीउपयइंएहवो नानाविधअनेकउपकारिकरप यात्रा
वुंबोलताहवा लिंगयोग्यजाणइंएहवुंजा मुमुक्षुपणडोआक्रजानियोग्य विश्वासकरपजाविवार गरणवर्षाकालादिकनुविकल्प मुनि
लीनइ।। ३१ लीकहिं लोकनिविषइ

यमोइणमब्बवी नाणेणसमागम्म धम्मसाहणमिच्छियं ३१ पच्चयच्चवलोगस्स नाणाविहविगप्पणं जत्त

वहितेहनि उपनउज्ञानितेतउसाधनुधरण एतलानंतरविषतेहा मोक्षमार्गसाधनजोलिमी ज्ञानमति दर्शनत। चारित्रसर्वसावद्यवि
अर्थइ हारएलोकनिविधियोजन ३२ श्रीपार्श्वनाथश्रीमहावीर हतीसाधनानलीएलि ज्ञानादिक तनीरुचि रितिस्रूपएहजनिश्चे
नइ।। कहइ निस्साधनावज्ञो व्यवहा रमित्र।

हणत्थंच लोगेलिंगप्पउयणं ३२ अहभवेपइन्नाउ मुरकसब्भूयसाहणे नाणंचदंसणंचेव चारित्तंचेवनिच्छए

३३ हेगौतमताहरीबुद्धिप्रज्ञा बेठीमाहरउसंसयसंदेहएह घणाएकतयरीनासवस्ततोह तेमांहिरहिहिअहोगौतमा तेवयरीउफनथीमाव
नली ३४ प्राइवइ मउपाइवइ

३३ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमेसंसउइमो ३४ अणेगाणसहस्साणं मज्झेचिट्ठसिगोयमा तेयतेअहिगछंति

किमतेवयरी तइंजी ३५ केसीइं एहवुं कह्युंगोतम पंचइंजीतइंजीनावयरी दसउकानावयरीजी सर्वअनेकगानुवयरीजीपवो
नाक्सिकी ध्य तद्दिजिएकिनीतोंपंचजीनाएकमनजीतइं दस पीन इं गानुजीपवानुजीजुसार ३६
उपरको कहंतेनिज्जियातुमे ३५ एगेजिएजियापंच पंचजिएजियादस दसहाउजिणित्ताणं सव्वसत्तुजिणामहं ३६ स
६४ कहइंकिंएणाव केशीगोतमप्रतिबोलतु तिवारपछी गौतमएहवुं ३७ एकआत्माजीतइंअणे तलिजीत्याकषायइंद्रीय तेवयरीजी
यरीनासदसवय इयत केसीप्रतिं कहतुहवु कग्राजीना जीत्या एवंएजीपीतइं पीतियथाजा
नीतकालकाहिउ॥
त्तूयइइकेवुत्ते केसीगोयममब्बवी तउकेस गोयमोय ३७ एगप्पाअजिएसत्तू कसायाइंदियाणिय तेजिणित्तु
तथोवीतराग विचरंउवउअपतिबद्ध ३८ अहोगोतमताहरीबुद्धि वेद्युसमस्त अनेक तमुजनिकहि ३९ दीसइंबइंयणा
नाउपदेसनेहमा विहारकरीनिडहोकेसी थली माहरूसंदेह समद्य। उहोगोतम लोकनइविषइं
जहानायं विहरामिअहंमुणी ३८ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमेय अन्नोविय तंमेकहय ३९ दीसंतिबहवेलो
यामइंकरीनिबंधाणाशरीर अनिपामबकीतुकाय इतिबंधरहितकिमतुंविचरइकिं गोतमकहइंबइंदेके बलीबांधाइंनहीइंमतु
वतजीव दहुतुंबगचामरनीपरि संयममार्गइंविचरंछइंगोतम ४१ सीतेपापसर्व निवारी पायकरीअतिजायमु
वि. णामी नइं।
पासबद्धासरीरीणो मुक्कपासोलहुब्भूउ कहंतंविहरसीमुणी ४० तेपासेसव्वसोछित्ता निहंतूणउवायउ
पामथकीमूकाइंद संयममार्गइंविचरंछउं ४२ पासयहवीतेकुण केशीश्रमणगोतम तिवारपछीके गोतमगण ४२ राग
तूउं थको कंइहो मुनीकेशी कहितजीव नि उतइंबोलउहवो शीएहवुंकहिं प्रशाल्या द्वेष
मुक्कपासोलहुब्भूउ विहरामिअहंमुणी ४१ पासायइइकेवुत्ते केसीगोयममब्बवी तउकेय गोयमोय ४२ रा
आदइपदइं द्विशइथकी उपस्त्रीमातापितादिकना तेछेदीनेनीवारीपासमध विचरुंछउं यथास्यात ४३ केशीकहिंछिआपागोत हेव
मोहादिकतेकहवानीअस्कराम्नेह पासतद्गाकरणहार लाईवीतरागनइउपदेसि साधनिआचारइं मताएहरीप्रज्ञाभली वते
गद्दोसादउतिव्वा नेहपासाभयंकरा तेछिंदित्तुजहानायं विहरामिजहक्कमं ४३ साहुगोयमपन्नाते छि
पवित्रसिकरीयामनीउपमापामी॥

माहरोसंसयसंदेह अनेरुपणिवलीमंसय तेमुजनिकहइंविगतिस्युं ४४ हीयामांहिंविचालिउदय लतावेल अहोगोतम फलबइंविष
पद मुज नइ आदागोतम गणधर ण मीउप नी मीरहिवइ गणधर
न्नोमेसंसउइमो अन्नोविसंसउमज्झ तंमेकहसुगोयमा ४४ अंतोहिययसंभूया लयाचिट्ठइगोयमा फलेइविस फ॥
नीपरिंएना तेवेलमीनिकिमउधरीमूलथ तेलतावेलमीसघलीपरि उपामीनोवीरागद्वेषा विचरंछउंवीतरागनि बीकलोकमीहूपविषय तुंदोगो
वताविषफल कीकाढी आहागोतम ४५ छेदीनिबंधमेमकरानिछेदीने दिकसूलसहीत न्यायमार्गइंआचसउपदेसे भलरसथकीमूकाणो तमा।
भक्खीणं साउद्धरियाकहं ४५ तंलयंसव्वसोछित्ता उद्धरित्तासमूलियं विहरामिजहानायं मुक्कोमेविसभक्खणं
४६ कउणकहितंलतावेलमी केशीगोतमप्रतिकहि तिवारपछीएहवउं गोतमएहवुंकहइ ४७ तवसंसारनिविषइंतेह
इतिएहवउंकउण कहीइं केशीप्रतिंकहि आलोलरूपणीवेलमीकहि
४६ लयायइइकावुत्ता केसीगोयममब्बवी तउकेसिंबुवंतउ गोयमोइणमब्बवी ४७ भवतण्हालयावुत्ता
दनुउ भीमाकहामणाइःरकना तलोनवेलमीउधरीने विचरउंगोतमरागनिमार्गइं केशीकहिछइंतोगो वेद्योतेमा अनेरुपणि तेमुजनिक
दयेत दिवाथकीफलकर्मरूपते भोयकरीनोवीवीतरा अहोमुनिकेशी ४८ तमताहरीबुद्धिनली हसमंदेह सावहवेमुज होअहोगोतम
नयदे गत इउपदेसइ॥ नइ मुल
णहारा भीमाभीमफलोदया तमुद्धिउजहानायं विहरामिमहामुणी ४८ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमेय अन्नोय तंमेकहय ४९
अतिसमयस्फवली पइठीअग्निदेखिगोतम जेबालिविशरीरमाहि तेअग्निकिमउल्हवीइगोतम महामाहामेहथकी मोटाप्रवाहथकी
हदीविशेषीअग्नि रहीथकी ५० ऊपनुएहवउंवोक्षी ग्रहीउपाणीते
उत उगोतमकहइ
संपज्जलियाघोरा अग्गीचिट्ठइगोयमा जेडहंतिसरीरत्था कहंविज्झावियातुमे ५० महामेहप्पसूयाउ गिज्झवारिजलु
पाणीकेह उधानसीचउंछउं सीचीउतितपीवालनी अग्निएहवीतकुणकहि केसीगोत तिवारपछीए गोतमएह ५२
वाविसर्व निमतनिरंतरनेह मुजनिआलूकेशी ५१ मप्रतिकहि हवुकहिं नाप्रति वुकहिछइं.
जलमाहि ह
त्तमं सिंचामिसययंतेउ सित्तानोमहंतिम ५१ अग्गीयइइकेवुत्ते केसीगोय तउकेसिंबुवंतउ गोयमोय ५२

उपदशे
६५

।।कषाय ते अग्निपरितापं क्रतमिथ्यात्वशीलमहाव्रत तेहरूपकी कषायनो मिथ्यात्व नेहीपकीका निश्रयईनही केसीकहिविअहोगौतम
ताकारिवा ही तीतरणाइंकरी तपश्रुतिदेशजलं श्रीडी तीर्थंकरा गाइंकरी श्रुतीछिदरीपकी बोलतीमुजनिउहो कंसी ५३ तादरी प्रज्ञा बुद्धि तली

कसाया अग्गिणो वुत्ता सुयसील तवो जलं सुयधाराभिहया संता भिन्ना हु न डहंति मे ५३ साहु गोयम पन्ना ते

छिन्नो मे संसओ इमो अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ५४ अयं साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई जंसि गो

यम आरूढो कहं तेण न हीरसी ५५ पहावंतं निगिण्हामि सुयरस्सी समाहियं न मे गच्छइ उम्मग्गं मग्गं च पडिव

ज्जइ ५६ अस्से य इइ के वुत्ते केसी गोयम तओ केसिं गोयमो इणमब्बवी ५७ मणो साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधा

वई तं सम्मं निगिण्हामि धम्मसिक्खाइ कंथगं ५८ साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु ५९ कुप्प

हा बहवो लोए जेहिं नासंति जंतवो अद्धाणे कह वट्टंतो तं न नस्ससि गोयमा ६० जे य मग्गेण गच्छंति जे य उम्मग्ग

विपरीत ते सर्वमइं जाण्याछइं हवइनही नाम उनही विनासपं जे सर्वधर्म वतमार्ग इंही अनितमार्ग राग वंतना तिवारपछी केसी कहइ छु
विप्रवर्त्या तेह कारणपकी मतोनही अहोमुनि केसी ६१ तरागतितवादमि पईत्तइंहिं उपादमबकी निवर्त्या कादइ तापनइं

पट्ठिया ते सव्वे वेइया मज्झ तो न नस्सामहं मुणी ६१ मग्गे य इइ के वुत्ते केसी गोयममब्बवी तओ केसिं बुवंतं तु

गोयमो इणमब्बवी ६२ कुप्पवयणपासंडी सव्वे उम्मग्गपट्ठिया सम्मग्गं तु जिणक्खायं एस मग्गे हि उत्तमे ६३ सा

हु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु ६४ महाउदगवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं सरणं ग

ई पइट्ठा य दीवं कं मन्नसी मुणी ६५ अत्थि एगो महादीवो वारिमज्झे महालओ महाउदगवेगस्स गई तत्थ न विज्ज

ई ६६ दीवे य इइ के वुत्ते केसी गोयम मब्बवी तओ केसिं गोयमो ६७ जरामरणवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं

धम्मो दीवो पइट्ठा य गई सरणमुत्तमं ६८ साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु ६९ अन्न

ज्ञानि देउवि वि की नइंतें अवतारण्य

६५

समुद्रनिविषिप्राणी निहांनावाप्रवहणइति जेहनावानिविषिगोतमतुं किंमपारजेमोटोसमुद्रना गोतमकहिविहीणिनावामाहिछिद्र
तुप्रवाहमोटोतेहनिविषि ग्रायसुतरहीपरहीधाइवि आरूढवइइउव इं पारउतरसिमलहीम इ ७१ करीपाणीआविनेहनावाअस्त्रवणीक दीयइजे

उपदेशो वसिमहोदहि नावाविपरीधावइ जंसिगोयममारूढो कहंपारंगमिस्ससि ७० जाउअस्साविणीनावा नसा रआवणी नावाः

तेनावासमुद्रनापारनि जेनावामाहिछिद्रनहीणाणी जेनिरआवणीनावातेसमुद्रनापा नावाप्रवहणतेकहउ केसीगोतमप्रति तिवारेगोतम
नपहोचाडवानहुराइ नतराइतहमि निरआविणीकहीइ रतिपहोचाडवातेणीनावाइइ कहितउएह वउ॥ बोलतो हुंतउ श्रीएहवुंकहितो प्रति

पारस्सगामिणी जानिरस्साविणीनावा साउपारस्सगामिणी ७१ नावायइइकेवुत्ता केसीगोयमव्व तउकेसिंव

जीवात नावानो खेवणहार तीर्थंकर कहइउ
गोतमएहवउं ७२ आत्माकिजीवशरीरनिनावा तेहइजतुइणानिकरी आरगतिरूपसंसारतेअर्णव जेहसंसारसमुद्रतरिमहाऋषी साधलत्ती
कहतउहुंतउ प्रवहणएहवउंकहीइ संसारसमुद्रतारइते समुद्रकहिउ अरतपसंयमवतलइनाकरणहार हेगोतम नादरीबुद्धि

गोयमोइ ७२ सरीरमाहुनाविति जीवोवुचइनाविउ संसारोअन्नवोवुत्तो जंतरंतिमहेसिणो ७३ साहुगोय तलीएहवुं

मोहरूमोहाहेसे अनेरुयणिसं तेमुझनिकहइ ७४ लोकनिअंधकारइएहवाघोर रहिहइप्राणीजीवघणा कहिगोतमकउणतेकरस्यइ सर्वलोकनिविषि किजीकादि
संदेहएक देह वइमुक अहोगौतमगण बीहामणातमअंधकारनिविषि उद्योतउ जूयालउं॥ प्राणीजीवनिअर्थ
हउ उ॥ नि ॥ घर

विन्नाण इमोविय तंमेकहय ७४ अंधयारतमेघोरे चिठंतेपाणिणोबहू कोकरिस्सइउज्जोयं सव्वलोगंमि

कारनासतु ७५ उगोछिविमलनिर्मलश्रीसूर्य सर्वलोकनि उद्योतनोक तेकरस्यइउद्योतअरआलु सर्वलोकनिविषिप्राणीजीवनि सावुक
धारकहइ रणाहार॥ उर्द हेतासूर्य
व रा॥

पाणिणं ७५ उग्गउविमलोभाणू सव्वलोगपभंकरो सोकरिस्सइउज्जोयं सव्वलोगंमिपाणिणं ७६ भाणू ६६

एहवोकउणकह्यो केशीगोतम तिवारइकेशी॥ गोतमबो ७७ उगोबइसंसारतुक्षयकीधो सर्वज्ञसर्वपदार्थनुजाण तेकरस्यइउद्योतअइ
प्रतिकहिवि एहवुंकहिपकि लताहवा विजोणएहवउकउणकहिउं सर्वाप्रकाशनउजीतलहार आलउं
तेवन रूपीउसूर्य॥

यइइकेवुत्ते केसीगोय तउकेय गोयमोइ ७७ उग्गउखीणसंसारो सव्वन्नूजिणभाकरो सोकरिस्सइउज्जो य

सर्वलोकनिविषिप्राणीजीवनइ ७८ हेगोतमताहरीबुद्धिभली तइंछेद्योमा अनेरुयणिसंदे तेमुझनिकहोअ ७९ सरीरसंबंधीयातनामनस
हेरूसाहद द इमुझनइवइं ॥हेगोतम संबंधीयाजेदुःखकतेणिदुःखे

यं सव्वलोगंमिपाणिणं ७८ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमेसंसओइमो अन्नोविसंसओमज्झं तंमेकहसु ७९ सारीरमाणसेदु

करी बंधाताजेप्राणीजीवतेहनि आधिरहीत सर्वकिस्थानी एहवउंस्थानकअश्रमसुं ८० वइएकस्थानकतेमा लोकनिविषेअतवेह
हिम बाधारहीत मानइवइउंहेमुनिगोतमा ध्रु ध्रुवनिश्चल॥ सिद्धरूकेवमोलमकोइए

क्खे बज्झमाणाणपाणिणं खेमंसिवंअणाबाहं ठाणंकिंमन्नसेमुणी ८० अत्थिएगंधुवंठाणं लोगग्गंमिदुरारुस

ह जिहांनथीजरा॥निमत्यु वाधिरोगजिहांनथीरुला ८१ स्थानकतउंतेकहउ केसीगोतमप्रतिबोल तिवारवली जनेहउत गोतमगण
वुं कहेतामरण॥ हिकवेदनाजिहांनथी॥ कहिउ उक्ततयउ केशीएहवुंबो धरएहवुंमंगबाल
उरू उम

हं जत्थनत्थिजरामच्चू वाहिणोवेयणातहा ८१ ठाणेयइइकेवुत्ते केसीगोयममब्बवी तउकेय गोयमोय ८२

जिहांजीवजीतजाणपुणतेमि सर्वलोकसर्वकार्यसाधीमि हेम शिव आबाधा जिहमोक्षप्रतिजाइवि ८३ तेहस्थानकजासतउंम लो
विवेमोक्षजिहांअबाधानथी इक्तयइतेजोकाइ॥ कारी कारी रहित मांहोत् ऋषीश्वर॥ हाकालवासवइजेहनु के

निव्वाणंतिअबाहंति सिद्धिलोगग्गमेवयं खेमंसिवंअणाबाहं जंचरंतिमहेसिणो ८३ तंठाणंसासयंवासं लो र

निअतिदुःखइतप जिणिपांनेकपुहताथका जइसंसारनाप्रवाहनाअंतनाक ८५गोतमता बेद्योतेमाहरा नमस्कारहउउ हुतेहुंके
सयमतिणेगइएहवु लोककरइनहीलोकरहित रणहारमुनीश्वर ८४ हरीबुद्धिभली मनतुंसांदेह॥ हवउवइसंदेहरहित॥

गग्गंमिदुरारुहं जंसंपत्तानसोयंति भवोहंतिकरामुणी ८४ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमेसंसओइमो नमोतेसंसयातीय

वजीउकेहवोसर्वसि ८५ इमसुर्वेलीपरिसंसय केशीसाधुतपसंयम अतिशयसुवादीनिमस्त गोतममोटायसनाधणीप्रति ८६
ज्ञातनुसमुद्रउवइ सर्वविद्याउधकउ ओकरापराक्रमनुधणी ।कइक रीनइ

सव्वसुत्तमहोयही ८५ एवंतुसंसएछिन्ने केसीघोरपरक्कमे अभिवंदित्तासिरसा गोयमंतुमहायसं ८६

चमहाव्रतनमा पहिलातीर्थंकरश्रुतनइं वारइंजीवने सामायिक तेधर्ममार्गीकहवो। ८७ तेकेसीश्रनिगौतमनि तेहनगरीनइं विषइं
धकतेधर्म वेहजातीर्थंकरनइं॥ नीपजि वत इधर्म॥ बहुसुखकारीजाणवो नित्यसदाकाललगी सुधर्मलावडमिलइं

पंचमहव्वयधम्मं पडिवज्जई भावउ पुरिमस्सपछिममि मग्गेतछसुहावए ८७ केसीगोयमोनिच्चं तम्मिआसिसमा

श्रुतन्यानश्रनिसीलचारित्रनु मोटरसाधवारूपमा ८८ सातापामीपरिषदादेवता॥ रुरुइंमार्गइंमोक्षपथरू रूडीपरिंतेस्तव्याथ
श्रुतिशयरूंतउरूयउ टाल्योतिहनोनिर्णय मनुष्यश्रसुरयाधर्मीथया प्रतहतिविधिमार्गइं कापसन्नथाउ

गमो सुयसीलसमुक्करिसो महत्थविणिच्छए ८८ तोसियापरिसासव्वा संमग्गंसमुवट्ठिया संथुयातेपसीयं

तिकउत्तनगवन्तज्ञानीकेसीकुमारश्रमणइति॥ ८९ एहाकेसीश्रनिगौतमसंवा श्राठप्रवचनसिद्धांतनीमा पांचसुमतिईर्यादिक
गौतमगणधरएहबुकहुंसुधर्म्मास्वामिजंबूप्रतिकहेदनामाध्ययनार्थलेशमात्र २३। तीनतीकहीकहेइंछइं श्रनि त्रिणगुप्ति

तु भगवंकेसीगोयमेत्तिबेमि ८९ इतिकेसीगोयमज्झयणं २३ अट्ठपवयणमायाउ समईगुत्तीतहेवय

पांचसुमतिकहीश्री श्रनित्रिणगुप्तिकहीकि ॥श्रावकहइंईर्यासुमति रहीनिलधुनीतिप्रमुख मननिप्रवर्त्तावानथकी काया
तीर्थंकार गणइंतीर्थंकारगणधर विचारीबोलीइंतेभाषासुमतिरमुहमान जयणाइंवरवावितणा निवर्त्तावीइतमनो निश्
श्राहारादिनीएषणासुमतनरूपा आदिक=रीतावरी त्या. सुमतिय गुप्ति दीयइवचन-श्रल

पंचेवयसमईउ तउगुत्तीउआहिया १ इरियाभासेसणादाणे उच्चारसमईइय मणगुत्तीवयगुत्ती काय

स्थानकथकीगोपवीइं एश्राठसुमतिगुप्ति समासकहतांसमस्तसिद्धांत द्वादशांगीजिनवीतरागनो मायउतिहांश्राठेविप्रवचनमि
निकायगुप्तिकहीइंएवं सिद्धांतविधिप्रवचनतीइ मिथ्यात्वइवइवइकरीनि व ताध्यवतहइ॥ झांतडीहश्राठप्रवचनमातानइंविषि
प्रसुमतिगुप्त एवंछइ तेमणसुमतिकहीइ॥

गुत्तीयअट्ठमा २ एयाउअट्ठसमईउ समासेणवियाहिया दुवालसंगंजिणक्खायं मायजत्थउपवयणं ३ आलं

श्रालंबनिकरीनि। मार्गइंकरीजयणाइं एणेचिहुंकारणेश्रति साधुईर्याइंचालिप्रवर्त्ति तिहांश्रालंबनादिकनि दर्शन चरणचारित्र
कालइंकरीनइं २ करी४ शुद्धथइंसुध्धिरहि॥ ४ विधिश्रालंबनिकहीइंछि सामायिका
जिश्रालंबनइं त्यकचि दिक्षितिणी

बणेणकालेण मग्गेणजयणाइय चउकारणपरिसुद्धं संजएइरियंरिए ४ तत्थआलंबणंनाणं दंसणंचरणंतहा

इशुज्ञानदर्शनश्रालंबनविनानरकगमननु तिमनिवर्त्ति ज्ञानादिकइथतांजे
ज्ञानथीतेणिश्रालंबनज्ञानसूत्रइथतइजयदे। दर्शनादिकइथवातां
नदर्शनचारित्रनिसइइगं

कालइंउईर्यानुदिवसनुते मार्गइउत्पथउन्मार्गतालि इव्यथकीजयणाक्षेत्र कालथकीजयणाभाव जयणाचिहुंप्रकारइंकहीती तेचिहुंप्र
कहिउतीर्थंकरादिकइं= वर्जितरहितउन्मार्गइंचालता थकी जयणा थकीजयणा र्थंकरगणधरे बहुज्ञानकही कहिं कह
सूक्ष्मनोविराधना ५

कालेयदिवसेवुत्ते मग्गेउप्पहवज्जिए ५ दव्वउखित्तउचेव कालउभावउतहा जयणाचउव्विहावुत्ता तम

ताथतइंसांभलिश्रहो ६ इव्यथकी क्षेत्रथकी इव्यथकीइ हेश्राकाशश्राश्रीयुगयुग्म कालथकीजिहां सावधानपणेजेहीनइं ७ इंद्रियपना
शिष्यएहगुरुनुवचन डायणा डायणा हिंजीइंहोइ गतेप्रमाणथारहाथलगीजोइ हीनइंताजगी तेहनावथकीजयणा शब्दादिक

कित्तयउसुण ६ दव्वउचक्खुसापेहे जुगमित्तंचखित्तउ कालउजावरीइज्जा उवउत्तेयभावउ ७ इंदियत्थे

विषयनी सज्झायवाणीवउतदनावते तेईर्यानिविषइरूहेतु उपयुक्तथकाईर्या क्रोधनिविषि मायानिविषि लोभेउपयुक्तकाथ
वारीनि वाचनापृच्छनापरीयट्टणाऽनु वर्त्तावीइजेहप्रधानपणिऽ सुमतिमोधइयती ८ श्रतिमाननिं परवंचनाविषि एणउ
धर्मकथा नीवा, रानइं॥ गीकार श्रागलिकरीप्रवर्त्ति एईयासुमति। चि यइ

विवज्जित्ता सज्झायंचेवपंचहा तम्मुत्तीतप्पुरक्कारे उवउत्तेइरियंरिए ८ कोहेमाणेयमायाए लोभेयउवउत्तया

हास्यनिविष वाक्पणा विकथाना तिमजउपहु एहदोषश्राठथानकवर्जि श्रतिशयस्तुवडी निरवद्य प्रमाणसहीत तापावांणीबोलि
उछेनिविषें नइविषइं रहनिविषइं क्रमए ए कह्याएतलेंक्रोधादिकयोग नइं संतसाधु पापरहीत कार्यनिविषि प्रज्ञावंतसाधु
इइइ.प्रस्ता वइं

हासेतयमोहरिए विगहासुतहेवय ९ एयाइंअट्ठठाणाइं परिवज्जित्तुसंजए असावज्जंमियंकाले भासंभासिज्ज

पइताथा श्राहारादिकनीगवेषणा श्राहारादिक परिभोगनो श्राहारश्रनिउपधिवस्त्रादिक एचिहुविसोधिगवेषणाग्रह श्राधाकर्मादिहदो
सुमति १० नइंविषइश्रंगीकारकरवि गम्यातिहांपरिभोगवणा श्रनिसिय्याउपाश्रयविषि तेघणीपरिलाघवणाविना थउदेगमनोदोषवि
धिनि मे ल करइ॥

न्नवं १० गवेसणाईगहणेय परिभोगेसणायजा आहारोवहिसिज्जाए एएतिन्निविसोहए ११ उग्गमुप्पायणं

क्रमपंथ बिइकहतांबीजीगृहणानइ परिभोगाभिकहतांनो वस्त्रपात्रश्रावासप उपधिकउपधिउप तेहउघगरणउपमुद्द थकारइंमुनि
तिहां तिविषइंसोधइंसंकितादिक गनइविधिएतावताश्चार श्रप्रमाणइगारथप्रमुख १२ ग्रहकउपधि यतिदोषीश्रा दिबिहं माधुग्रहउश्र
सो श्री व्यापरा वइसतएषणानुप. ति प्रकारइस्थानइपिंडविशेषा उकारण प इंगा ति=

पढमे बिइयसोहिज्जएसणं परिभोगमिचउक्कं विसोहिज्जजयंजई १२ ओहोवहोवग्गहियं भंडगंदुविहंमुणी गिण्हंति

श्रुत एमोहनीयकर्ममाहिमलइ=१

MEMORIAL

उपरद्यो

मुकवतोजनोको पडुंडइंएद विधिडोद १३ चरकुहस्टइंपडिलेही उंघादिकइंकरी।निंथजाय गृदउंघकोअनिमुकउंपिकउं अथिकअनि
ईघानुकनिविधि आगलिकहीम जाईनइं णाकरइंयती उवउहीक

रिकवंतोय पउंजिज्जइमंविहं १३ चरकुसायमिलेहित्ता पमज्जिज्जजयंजई आइएनिक्खि विद्योवा ऽदउवी

उपधिनइंविधिंघवा वडी लघुनीति मनुष्यनु नामिका मेलशरीरनु अन्नादि उपधिवस्त्रा उपधिवस्त्रादिकशरीरस्त्रनेक स्थंडिलपरपक्षसंबंधी
इत्यघकी।निनावघकी निति बलखो चुलेष्मा रजोइमुख कमआहार दिकशरीर पलिरावउमुस्वतहाविहा।पर १५ त्यालोकनुआविवन
म ताकालआरीन १४ नघी।निलेगलारवी

समियसया १४ उच्चारंपासवणं खेलंसंघाणजल्लियं आहारंउवहंदेहं अन्नवावितहाविहं १५ अणावायम

"नीनयोक दनीविद्या

घकाहीबि जिहांकलिकिदनुआवतुनहीदकानुन जिहांपरगजापिकोस्टिके लोकनुदेकदनुआवेतुविपुल तिहांमांडिलोकआपणा आनरानउंपधा
यलियदन पीआयणापारकालोकदृष्टिनुपलिपर हैनामलनीनपीएदनेलेद ऽनिवेसलोयकीदृष्टपलिजोक पारकानुंनावयनउनिवेस तलघीएतलिमे
लोकजिहांवेग ला एकी दे घडलिंगएदकीजतंल दे" नीवमिहि एची म जैतेरध १६ ज्ञायकीनादघिएडउ तमनेगउ।

संलोए अणावाएचेवहोइसंलोए आवायमसंलोए आवाएचेवसंलोए १६ अणावायमसंलोए परस्सणुवघा

"वानादि कनीदे लादिनजी झानुचीनी चीनमि:

यनि। अदयानकांकारनेविधिंकरी अग्निप्रमुषिकरीअचितघोमाई पोदनुंजघन्यहाथमात्रनेकुं जेदरवमुखनांघरमांहि बेडायादिकरहीत
आत्मा व्यापीनधीसमिकाजिहांएद काजनाकीअयधिलतेदनइंविधि १७ अंगुलघप्रमाणदेवालेअधि रहितनामवडंइं॥ नामगुजनारिघमुख
निंमि= वाघामिल नइविवरइं तर्यम चकीवाहिएकी वेगजी वलेडीया

इय समेअज्झुसिरआवि अचिरकालकयंमिए १७ विछिन्नोऽदूरमोगाढे नासन्नेबिलवज्जिए तसपाणबीय

दीक पणिइकारइंदहनुलिकरी १८ पूर्वइंकहीएजेपांचसुमति संक्षेपिंकरीनिकहीगणधरि एतलानं तउतिहारघकी बुलामि अनुक्रमिंपु
रहीत सहीतडोइमिलवर्नानीतिघमुख नोवित्रण त्रिणगुप्तिकहीले कहसु पसाकहना
लयमरइ पूर्वलापीति

रहिए उच्चाराईणिवोसिरे १८ एयाउपंचसमईउ समासेणवियाहिया इत्तोउतउगुत्तीउ वुछामिअणुपुव्व

१९ साचामननउं रूपिगुप्ति साचउंपलिमृ एदवोमननउ साचउंपलि पलिरामवहार एमनोगुप्तिचिंकप्रकार २० संरंभतिमक्रि
योगातदवा दिलीकही पाइमिजई योगातगुप्ति नहोक्लइउं मननोयोगगुप्ति नमवंतितीर्थंकरिगणधरिंकही॥ ध्यानस्यउजि
मए मरइएद

सो १९ सच्चातहेवमोसाय सच्चामोसातहेवय चउत्थीअसच्चमोसाय मणगुत्तीचउव्विहा २० संरंभसमा

६५

वीसे परजीवनिमार तेआरंतजी त्रिरूंतेदेमनपवर्त्ती निवर्त्तावइंजायणाइं २१ साचावचननुयोगतेहनीगुप्ति साचुंपलिरु तेहनीगुप्ति
कल्प बुंतदंनुंध्यान ववितानारूप नउंयती महीतयती पघमजुवचनयोगतेहनीगुप्तिर्वाजइमिजि वजीववा

रंभे आरंभयंतहेवय मणंपवत्तमाणंतु नियत्तिज्जजयंजई २१ सच्चा तहेवमोसाय सच्चामोसातहेवय

नाग्रास्नुपा

"कनुंगु णिबुंतेद नुमंकल्प पारडीव नइंयरि तायनम त्रादिकनु मणनउं उ.२

चावउनहीअवुनहीतेविच एवचनगुप्तिंचिरूनेदे २२ परजीवनिविणासि कोनेतुकारणमारिवा एदवाचिकनेदनिविधि निवर्त्ताविज
दारवचनयोगरूपगुप्तिचोथी जा यवी एहवीसुद्रविद्यादि रूपमंत्रादिकनुजाप वचनपवर्त्ततत्र कहुं। यणाइसहीत
तेआर तो"

चउत्थीअसच्चमोसाय वयगुत्तीचउव्विहा २२ संरंभसमारंभे आरंभयंतहेवय वयपवत्तमाणंतु नियत्तिज्जजयं

जतीमाधु ऊजइर वेसवेंकरा चेवकः।तिमनवलीसूइ कार्यउपलितंचासम्वानकनु इंदिय्यनिविषिंनि २४ मुविकरीमारंतेदनुं
चारी २३ दवइं १दपूर अतिक्रमणातदनिंविधिंसामा कायानिजो।मिंमेजवि कल्पघातनुपरितापरूप॥
जौ सघकार इगमनमात्र उजंघनेविवि

जई २३ ठाणेनिसीयणेचेव तहेवयतुयट्टणे उल्लंघणपल्लंघणे इंदियाणयजुंजणे २४ संरंभसमारंभे आरं

घातघुकीनोमारवुंते नहनिविधिपवर्त्तता निवर्त्ताविइजायणाइं २५ पूर्वइंकहीतेपांचसु चरणचारित्रतेदनापव गुप्तिपूर्वेकही
दधआरंतकहीइतिमज सहीतयती मतितेद नइंविषइं। र्त्तना तनिवर्त्तिपापवउ

भेयतहेवय कायंपवत्तमाणंतु नियत्तिज्जजयंजई २५ एयाउपंचसमईउ चरणस्सयपवत्तणे गुत्तीनियत्तणे

उमति पुरतेकहीइं।सुत्रपाइयाजे पूर्वइंकहीतेएपवचनमा जिकोईरूजइंपकारिआ एतमाथकन्तावजोच्यारगति विप्रापिकरीमुकी
तेहनिचि मनवचनकायोगतेहथकी ताआचपकारनी चर्तिआदरइमुलीसाधु रूप सर्वसंसारघकी योलकउणपंडित
षिकहीइ सर्व प्रकारइं २६ महीतजती

वुत्ता असुहत्थेसुसव्वसो २६ एयापवयणमाया जेसम्मंआयरमुणी सोखिप्पंसव्वसंसारो विप्पमुच्चइपंडिय

एहवुंमुधर्मस्वामि एवक्चनमातात्र जाल्पणानाकुलपकी जाल्पणजीतीबारकहुंते अवस्यइंडावनजीजऽहिंसा जयघोष
जाल्पतिकदि २७ धायन ऽर्दलेआमात्र२४ अपनो जातिश्रुहजाणवतिषाहिंमार दिकुपकारमंजमरूपयहा नामइ
टायस नोपली॥ निवि महा

तिबेमि २७ समईअझयणं२४ माहणकुलसंभूउ आसिविप्पोमहायसो जायाईजमजणंमि जयघोसि

ब्राह्मणना १ इंद्रीयग्रामनुं निग्रह करतो मोक्षमार्गनो प्रवर्त्तावणहार एकग्रामथी बीजे गामि गामि विचरता थका २ वाणारसी नगरी
णावउ ग्रहणहारवणिक रण रमोरतउयतीएकउविचरउ विचरि विंदीजागांइमथीर्जिनो वाणारसीनगरीइ

उपदसु

त्तिनामउ १ इंदियग्गामनिग्गाही मग्गगामी महामुणी गामाणुगामं रीयंतो पत्तो वाणारसिं पुरिं २ वाणारसीए

बाहरि उद्यान निर्विघ्निं तेवड्या फासुजीवरहित शिय्यावसति तिहांरहिवा तणी ३ एतला नंतरि तेहकालनिविधिं तेहपुरीनगरी
नकेहवउंमनोहरवइं ऽनिसंथाराथ पाटादिकउतेहतिवि आव्यउ डिणिकालजयघोषआवीया नइविषइ ब्राह्मण
घइ।

बहिया उज्जाणंमि मणोरमे फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ३ अह तेणेव कालेणं पुरीए तत्थ माहणे

विजयघोषइसिंनामइं यज्ञकरिविद्यारवेदजांणी अतिजयस्तुजयघोषश्रण मासखमणनापार विजयघोषप्रयज्ञनिविषइं
४ गारलिहालिवानिआवीतिहां णानिविषइं
आव्यउसउकइ॥

विजयघोसत्तिनामेणं जन्नं जयइ वेयवी ४ अह से तत्थ अणगारे मासक्खमणपारणे विजयघोसस्स जन्नंमि

तिहांभागवानिअर्थिआव्यो ५ अतिजायस्तुतिहांआ यज्ञनुकरणहारविप्र नहीदेउंउरुनितिहां आनइंगामिजिमनिहा ६
व्यउसउकइ॥ गोचरीप्रधउ छ यउ अदीनिहूयतीउंजा चरतिहायांमइंजिम

भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ५ समुवट्ठियं तहिं संतं जायगो पडिसेहए न हु दाहामि ते भिक्खं भिक्खू जायाहि अन्नउ ६

जावेदधनाजाण ब्राह्मं यज्ञनाकरवानुअर्थिविप्रहनिए ज्योतिनातघाअंगविद्या जेधर्मनाशास्त्रसमस्तवि वलीस्युकहिविवइंजेसमर्थवि परंअनेरा
ण जातिवंत हवाउतिइरियाएकविलतांधि कल्पादिकनाजांणजेविप्र पारनापामनकतेहनि १संसारसमुद्रथकीउतिजायस्तु निपलिआ
जेतिनेउइयहणनीदोउलेमाउदनइं पारनापाम णहार उद्धरिवा पणआत्मा

जेय वेयविऊ विप्पा जन्नट्ठा य जे दिया जोइसंगविऊ जे य जे य धम्माण पारगा ७ जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाण

निंप तेहनिअन्नादिकदेवु अहोभिक्षुतेअन्नकेहवुंवंसर्व ८ विजयघोषतेयज्ञनिविषिं विजयघोषप्रमोटोयती रुठोथकोरी तूठोसंता
ला कामियकहेतारसिकरीसहित निषेध्योथकइं जयघोष सालोनही षाणोनही

मेव य तेसिं अन्नमिणं देयं भो भिक्खू सव्वकामियं ८ सो तत्थ एवं पडिसिद्धो जायगेण महामुणी न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो ६५

समतानोवमोक्ष १० अन्नगइंअर्थइंपांणीनिं वस्त्रपात्रादिक तेहनिइ तेहविजयघोषब्राह्मणना एहवउंवचनजाणलि १० नथीजा
मार्गनो इछितथी अर्थइंतादतइनंदी मानोर्वाहिकरइहीतूम्यउ कर्मथकीमूकावइ वचारणी कहीसज्ञातकहतोहउ

उत्तमट्ठगवेसए ९ नन्नट्ठं पाणहेउं वा न वि निव्वाहणाय वा तेसिं विमोक्खणट्ठाए इमं वयणमब्बवी १० न वि जा

णतुंवेदनउंप्रधान नथीजाणतउयज्ञनउंमु नक्षत्रनुंमुखप्रधानपणुं धर्मनुंमुख दपालितउं ११ जेसमर्थछिसंसारनिवि परनेगानिंनइ
मुख यउ पाययरम थंइं नथीजा णतो. जेउपायते नथीजाणउ पिंमसारसमुद्रउद्धरिवा॥ आपणाआत्मानि

णासि वेयमुहं न वि जन्नाण जं मुहं नक्खत्ताण मुहं जं च जं च धम्माण वा मुहं ११ जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव

नथीउंहिजाणतउएहवुंजाय अनिजाणइंबितउंउकह १२ तेजयघोषनाउत्तरप्रते असमर्थ तेहयज्ञनिविषि। घणामनुष्यनीपरषदा
घोष क दहवइ॥ प्रश्नकनइ उत्तरदवान इ. थकउ विजयघोषब्राह्मण सहितद्वयविजोमीनि

य न ते तुमं वियाणासि अह जाणासि तो भण १२ तस्सक्खेवपमोक्खं च अचयंतो तहिं दिउ सपरिसो पंजली हो

थकोतेरु उतरहमादा १३ स्युकहइबिवेदनउं कहियज्ञनुंमुखकिस्युं नक्षत्रनउंमुखतेकिस्यइं कहिधर्मनउंमुखतेकेहउ १४ जेसम
कोटामुनीप्रश्नइं मुख्यकहइविन नेकहिइं॥ र्थ वि

पुच्छइ तं महामुणिं १३ वेयाणं च मुहं बूहि बूहि जन्नाण जं मुहं नक्खत्ताण मुहं बूहि बूहि धम्माण जं मुहं १४ जे स

संसारसमुद्र परंअनेरानइंविषइं एहमाहरासंदेहसघलु अदोयतीकहइंपूछिउ अग्निहोत्रअग्निकारिकातेइहांकर्म वेदीकाक
थकीनरवानि तथाआपणाआत्मानि थकउ। १५ रूपइंश्रमणनउमसावनातेआज्ञान दोइनावइ
धर्मआनमुइ अग्निकारिका कर्म वीयज्ञात

मत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य एयं मे संसयं सव्वं साहू कहसु पुच्छिउ १५ अग्गिहोत्तमुहा वेया जन्नट्ठी

संयमतेहनउंअर्थी नक्षत्रहकलेहतेहहुं ऋतधर्मचारित्रधर्मतेहनउंमुखवते डिमचंद्रमाप्रतइंग्रहरप चित्रनाआदरसहीत। वंदता स्तुति
विदतसंयोगयज्ञ मुखचंद्रमा॥ हकाश्यपगोत्रीश्रीऋषभदेव १६ आदिदेइसमस्तज्योतिचक उतारहइंहाथजोडीमानि थकी कर
नउंमुख॥ ताथको

वेयसा मुहं नक्खत्ताण मुहं चंदो धम्माणं कासवो मुहं १६ जहा चंदं गहाईया चिट्ठंति पंजलीउडा वंदमाणा

वीतदश
प्रश्नोनाउ
दनिनउ
विहोरमुख
उ २

उपदेशु

नमस्कार उवसमप्रधान हिंसक हइं तिमसमतो करतो। दरनितिथिंकरी मननादरलो। १७ अज्ञाणनत्वना अज्ञाणलइं आत्मणपुरमादिकविद्या मूहमोदवंतआज्ञानयणि तेकत्रविकेदवतेत्रअ

नमुमति उवसमणहारिणो १७ अन्नाणगाधम्मवाई विज्जामाहणसंपया महासज्झायतवसा भासच्छनाइवग्गि

सीतलपणु पवर्तइ ... जिमअग्नि छारि छाइउ ... सदाकालतत्वनाजाण तेहनिअम्हेकहिइ १८ जेब्राह्मणसज्जना॥ अनिस्वजना दिकनिक

...तीर्थंकरादिकनाकहिया ... तेब्राह्मण ... दिकतुआवी मगनकरि मिवालता

णो १८ जोलोएबंभणोवुत्तो अग्गीवामहिओजहा सयाकुसलसंदिट्ठं तंवयंबूममाहणं १९ जोनसज्जइआगंतुं पव्व

परगामिचालतभोगवि अनिमयआचार्यतीर्थं तेअम्हेकहउब्राह्मण ... माहमोजेसुवर्णजिम ... निर्मलसरिखुपापमलचुकुरूवंते रागद्वे

नहीजोतिविनाकिम करतइवचनइरमइ ... सुवर्णकेहवुंतेपावकअग्निकरी निर्दग्ध

करस्यते॥ ज्ञानाज्ञाति ... नधर्मी ... बहुमलजिहनेतेबइसुदाई तिं

यंतोनसोयई रमइअज्जवयणंमि तंवयंबूममाहणं २० जायरूवंजहामट्ठं निद्धंतमलपावगं रागद्दोस

नयअत्ताना तेहनिआलब्राह्मणकहिइ ... मोचवावइ ... तेहनिअम्हे २१

बकीविगलतं ... इवल्लुइंडीडालिदग्धावइ ... निर्लेदी ... पामीविसर्वसमाधि ब्राह्मणकहुं

भयातीत तंवयंबूममाहणं २१ तवस्सियंकिसंदंतं अविचीयमंससोणीयं सुव्वयंपत्तनिव्वाणं तंवयंबूमम्ह २२

तमप्राणीजीवनिविशेषइ संक्षेपइत ... थावर ... तेहनिअम्हे ... २३ कोपक्रोधइवा ... हास्य नलोभथकी

करीजाणइ ... मनवचनकायाइकरीनहणइ ब्राह्मणकहुं ... करीप्राणीजीवहणइनहीं ... भयथकी

तसपाणेवियाणित्ता संगहेणयथावरे जोनहिंसइतिविहेणं तंवयंबूमम्ह २३ कोहावाजईवाहासा लोहावाज

नयथकी मृषा ... तेहनइअम्हे २४ सचित्ततीर्थंचमनुष्यादिक अचित्त ... नल्यइ ... जेकोई तेहनिअम्हेब्राह्मण

... ब्राह्मणकहुं ... सुवर्णादिकरूपा दिक॥ ... कहउ॥ २५

ईवाभया मुसंनवईजोउ तंवयंबू २४ चित्तमंतमचित्तंवा अप्पंवाजईवाबहुं नगिण्हईअदत्तंजो तंवयंब २५

देवतासंबंधिया तिर्यंच जेकोई नसेवइ मनइक कायाइक वचनइ तेहनिअम्हे २६ जहापद्मकजलपांणी परंपाणीइंलि

मनुष्यसंबंधी॥ मैथुन ... सेवइ ... करीनइ ब्राह्मणकहुं ... जिम कमल॥ ... पाणीनहीं

दिव्वमाणुस्सतेरिच्छं जोनसेवईमेहुणं मणसाकायवक्केणं तंवयंब २६ जहापोमंजलेजायं नोवलि

... इमकामरूपकादमइ ... तेहनिअम्हे ... आहारादिकनउअलोलीतीउअण ... इव्यनोपरिग्रह असंसक्त गृहस्थन

... लागइजलपाणीइं ... ब्राह्मणकहुं २७ ... आहारइजीव ... ब्रह्मविषइ

प्पइवारिणा एवंअलित्तंकामेहिं तंवयंब २७ अलोलुयंमुहाजीवं अणगारंअकिंचणं असंसत्तंगिहत्थेसु

तेहनिअम्हेवा ... मातापितादि॥ तथा ... स्वजनादिक जेकोई ... तेहनइअम्हेब्राह्मणकहुं २९ ... बंधनादिकप

ब्राह्मणकहुं २८ ... स्वजनसुतादिकनुसंयोग ... रागनकरइ ... हेतुकारणविमर्श

तंवयंब २८ जहित्तापुव्वसंजोगं नाइसंगेयबंधवे जोनसज्जइएएसु तंवयंबूममाहणं २९ पसुबंधासव्व

वेदते ... नहीं ... जेलिकारलिइ ... २० नकहीइमांडेमुंडाइतेश्र नकहीइंकार

... कवचनथकी ... समाचार ... आचारना ... ब्राह्मण ... महासाधु दिकते ... वइ

... पापकर्म ... आचरस. ... तापस ...

वेया जट्ठंचपावकम्मुणा नतंतायंतिदुस्सील कम्माणिबलवंतिह ३० नविमुंडिएणसमणो नओंकारेणबं

... नकहीयइमुनिअरणवासि ... कुसचीर वाकलपहिरवु ३१ ... समतापरि ... नलहइ ज्ञानइमुनि

... वासवस्यामाटइं ... वाकलितावस्त्रपहिरवामा ... नाम ... साधुकहीइ॥ हिंसादिनिवारवइब्राह्मण विद्यानासमाचारज्ञान

भणो नमुणीरन्नवासेणं कुसचीरेणतावसो ३१ समयायसमणोहोई बंभचेरेणबंभणो नाणेणयमुणीहो

का ... क्षमादिकदानादिकथकीना पहिलोवर्ण ... दिकरवइतेहरूप

... तपवइंतापस ... ३२ दिककर्मइं ... करी ... करी ... वारूपकर्म ... ३३

... आपणक ... चारवर्ण हवासं ... विरूपजय ... शुद्र ...

ई तवेणहोईतावसो ३२ कम्मणाबंभणोहोई कम्मणाहोइखत्तिउ वइसोकम्मुणाहोइ सुद्दोहवईकम्मुणा ३३

"आत्मा निराधइ तद्रूप कर्म करी ... ३१

॥उ२५टबु

एएपाउकारबुद्धे जेहिं होइ सिणाए होइ सव्वकम्मविणिम्मुक्कं तं वयं बूम माहणं ३४ एवंगुणसमाउत्ता जेभ

वंति दिउत्तमा तेसमत्था उ उद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ३५ एवं तु संसए छिन्ने विजयघोसे य माहणे समादाय

तओ तं जयघोसं महामुणिं ३६ तुट्ठे य विजयघोसे इणमुदाहु कयंजली माहणत्तं जहाभूयं सुट्ठु मे उव

दंसियं ३७ तुब्भे जइया जन्नाणं तुब्भे वेयविऊ विऊ जोइसंगविऊ तुब्भे तुब्भे धम्माण पारगा ३८ तुब्भे सम

त्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य तमणुग्गहं करेह म्हं भिक्खेणं भिक्खुउत्तमा ३९ न कज्जं मज्झ भिक्खेणं

खिप्पं निक्खमसू दिया मा भमिहिसि भयावट्टे घोरे संसारसागरे ४० उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पइ ६ ९२

भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चई ४१ उल्लो सुक्को य दो छूढा गोलया मट्टियामया दोवि आवडिया कुड्डे जो उल्लो

सोत्थ लग्गई ४२ एवं लग्गंति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा विरत्ता उ न लग्गंति जहा से सुक्कगोलए ४३ एवं से विजय

घोसे जयघोसस्स अंतिए अणगारस्स निक्खंतो धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ४४ खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य ज

यघोसविजयघोसा सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं त्तिबेमि ४५ इति जयघोस विजयघोस अज्झयणं २५ सामायारिं पवक्खामि बीजी सामाचारी॥

सव्वदुक्खविमोक्खणिं जं चरित्ताण निग्गंथा तिण्णा संसारसागरं १ पढमा आवस्सिया नाम बिइया य निसीहिया आपु

च्छणा य तइया चउत्थी पडिपुच्छणा २ पंचमी छंदणा नाम इच्छाकारो य छट्ठओ सत्तमो मिच्छकारो य तहक्कारो य अट्ठ

।उत्तरा०

२ गुरुनुं आदेश तो तहत्ति उद्यम करं न थइ तिहां नि। ए दस प्रकारनी सामाचारी कही वि० हवि विधि करी मनमाहिं वाखाणि अथवा लेख
करवं कार्य जे उद्यम करं ए त्याग दिवस दाखवि ९ करीनी सामाचारी॥ तीर्थंकर गणधर प्रगट॥ ४ वसत करवा जे आपणि रातदिनि

णो ३ अब्भुट्ठाणनवमे दसमा उवसंपया एसा दसंगा साहूणं सामायारी पवेइया ४ गमणे आवस्सियं कुज्जा

स्थानक उपाश्रय मांहि पइसतां ए आपुछणा सर्वकार्य पोतेकरि परकार्य करइ तिवारि गु ५ अन्न पाणी इं अनेरा जतीनि इच्छाकारि नवनउ
निषेध प्रमाद थकी निवर्त्तवा निसीहि गुरुनि कहि एक करि नक सनु आदि सजहीनि करइ मंत्रीइ जे आप्हीइ विचारवा कार्य करवं

ठाणे कुज्जा निसीहियं आपुच्छणा सयंकरणे परकरणे पडिपुच्छणा ५ छंदणा दव्वजाएणं इच्छाकारो य सारणे

महत्तुं दुक्कीधु एह वि आपणु गुरु नियासइं वाचनादि मान मोटा आचार्यादिकनी ज्ञानादिक निर्मित्ते अनेरा गच्छ एमर्यादि सूत्रि गुणाशत सामा
आत्मा निंदइं तमिच्छामि दुक्कडं ली निरंतर तहत्ति कहवउ ६ पूजा भक्ति इ शुश्रूषणा मांहि आचार्यादिक कर्किश्र्दा लियउ प्रकारइं सहित चारित्र

मिच्छाकारो य निंदाए तहक्कारो य पडिस्सुए ६ अब्भुट्ठाणं गुरुपूया अच्छणे उवसंपया एवं दुपंचसंजुत्ता सामाया

चारित्रकही नि हवि उद्यम सामाचारी कहि छि आदित्य सूर्य जे चोथउ तदनाला तेजकारस उगे तिवारपछी पंचांग ६ पूछइ दाथि जोडीनि
ढीकरेगणधार ७ पहिला पुरुष नि उत्तरइं लागि पडिलेह्यउ ..... गुरुपाते वस्त्रादिक पडिलेहि नमाडी गुरुनि वंदइ

री पवेइया ७ पुव्विल्लंमि चउब्भागे आइच्चंमि समुट्ठिए भंडयं पडिलेहित्ता वंदित्ता य तओ गुरुं ८ पुच्छिज्जा पंजलिउ

स्तुकरवं मि प्रणि अवसरइं श्रीगु अंतरंग लाव सहीत करइ ज्ञानादिकनी वेयावच्च गुरुनइ वेयावच्चइ तिवारि आवश्यक करवउ आतिशा श्रीगुरुनि सज्झा
... इच्छउं नियोजि वइयावच्च वाचनादिक नियुक्त इं आदेशदीधइ वइयारीनु थके दुःखलेपवइ सन्निहित सज्झा

डो किं कायव्वं मए इह इच्छं निओइउं भंते वेयावच्चे व सज्झाए ९ वेयावच्चे निउत्तेणं कायव्वमगिलायओ सज्झाए वा नि

कंसज्झाय तेमज्झाय केहवो ..... १० दिवसना च्यार भाग करइ चारित्रीउ बुद्धि विचक्षण वीइ तिवारपछी च्यार भाग कल्याण दिवसना
..... करीनइ छइ॥ तो उत्तर तेणि निक्खउ उत्तरगुण सज्झायादिक रि च्यार भाग
करवं॥ दिवसनुं तेम कहिवउं

उत्तेणं सव्वदुक्खविमोक्खणे १० दिवसस्स चउरो भाए कुज्जा भिक्खू वियक्खणो तओ उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागे

च्यार पहर ११ पहिला पहरनि विषि वाच बीजा पहरनइ विषइं मनमां त्रीजा प्रहर निद्रावरी गोचरी वली चोथाप्र सज्झायादिक १२ जिमने
निविषइ नादिक सज्झा य करइ दिइ ध्यान ध्यावारूप ध्यानकरि रतिनि विषि तथा आहार करइ दरनि विषइं पडिलेहणा करि कातिम

सु चउसु वि ११ पढमं पोरिसि सज्झायं बिईयं झाणं झियायए तईयाए भिक्खायरियं पुणो चउत्थीए सज्झायं १२ आसा

ढोच मासनां पाय॥ पोसि मुदि पूनिमइं चिहुं चैत्र सुदि पूनिम अनि त्रिहुं पगे पोरसि हुइ १३ अंगुलाएकमात दिवस पखवाडि
वीइ आसाढ सुदि १५ पगे पोरसि जइं आसू सुदि पूनिम॥ रसि जाइ मानजालिवु कहवा रात्रि कहवा
मइं बि कुंपगे पोरसि ... जाए० तासमा नसो अत्रै

ढे मासे दुपया पोसे मासे चउप्पया चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी १३ अंगुलं सत्तरत्तेणं पक्खेणं च

बिअंगुल वाधि अनि घटइ निहा मास दिवसइं अंगुल ४ १४ आसाढ मासनि विषि लाइवाते कार्तिक पोस अधारइं फागुणनि वैशा
दहइ मास्यनि वधइ तव अधारइं पखवाडइ॥ अधारइ अधारि पखवाडइ पखवाडइ अधारइ
रायनइ घटइ॥ वपवाडइ पखवाडि पखवाडइ

दुअंगुलं वड्ढए हायए वावि मासेणं चउरंगुलं १४ आसाढबहुलपक्खे भद्दवए कत्तिए य पोसे य फग्गुणवइसा

अंधारि एवाड मासिइ केकअवमरात्रि दिवसइं पूणपोरसि तुमान करीइं बिजेष्ठ तद मांहि वअंगुल घालि बीजि त्रीक लाइव आसोकाती आजि क्रिके
पख्वा घटतां अहोरात्रि जालिवी एम आसाढ श्रावण एत्रिमासे पोरसि तुमान करि एतलइ पूणपोरसि थाइ रात्रि त्रिकाइं अंगुल घालीइं एतले माग सिरि पोस
हइ॥ तिवारस माहि बदिन घटइ १५ ... एतलइ पूणपोरसि ... सभाहि

हेसु य बोद्धव्वा ओमरत्ताओ १५ जिट्ठामूले आसाढसावणे छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा अट्ठहिं बीयतइयंमि तइए दस

कि अंगुल घालीइं १६ एतलि पूण नइ चिक्क माफ्ता करइ चिचक्षण ते निहारय बीजा उत्तरगुण रात्रिना च्यार भाग निविषि १७ पहि
पूणपोरसि थाइ पोरसिरात्रि भागइ करी जीनी हवं चउर सज्झायादिक रइ॥ जाणिवा

अट्ठहिं चउत्थे १६ रत्तिं पि चउरो भाए भिक्खू कुज्जा वियक्खणो तओ उत्तरगुणे कुज्जा राईभागेसु चउसु वि १७ प

ली पोरसिं सज्झाय करइ बीजी पोर तवइ मनमांहि धरि त्रीजी पोर निद्रानइं मोकरि चोथा प्रहर सज्झाय वाचना १८ जानकत सूर्य नि
मिंथ ध्येच मिंनिविषइं निद्रा आवतीजाइ = नइं विषइं दिक करइ मनि जोइइं एनक्षत्र
पूरी करइ॥

ढमं पोरिसि सज्झायं बीयं झाणं झियायए तइयाए निद्दमोक्खं तु चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं १८ जं नेइ जया रत्तिं

तानि जाथकी कर्म निर्धयमइं सिद्धांत मांहि वासिश निरवाह वीक ही बइं समय मात्र नकरवी उली१

७१

DR. MEMORIAL

॥तन क्व ते जोवइं लागइं आव्य उज्ञाति वंकाइं लज्ञायसकीतेसज्झायपाउसीकालयद तिणदीजनक्कतेगनसा वेरतीएवइं नामइं कालज्ञावित्रा एवकोआ
आ का जानइ॥ विरम इतिवर्त्त इ॥ तिक्कर्वुं प्रारंनीज्जइ रात्रे दष कीविचजंइ काजानइ विधिचो शिलाजि पाछिई समइं पाउसी सइरलापाला ईकाल

॥३पटवो नक्कं तेसिं पच्छाउ संपत्ते विरमिह सज्झायपढकालंमि १७ तामवय नक्कंते गंठपच्छाउ आगे सावसेसंमि वेर ईंजंति

पडिलेही एता पडिक्कमी दीन इं वेरती कालले ई चारिजी सामान्य पडिदिवसरात्रिनउ पडिलेहजोइं जंजी सर्व वस्त्रादिक श्री गुरुनि सज्झायकरि नेदसज्झा
वत्ताकाल ग्रह उक्रद्धा कदता सज्झायकरइं एतला आद्य कर्तव्यकदीन लीलाशावे तिस्या उपगरणपात्रासाधनउ वांदीनइं यकेदवो
लाक रइ॥ उग्घाडपोरसीमसज्झायओलिवउ २० इजकहिहिस चोदयवहिलाखुला बइ॥

तिदंमिकालं मगीले दीनासुरी आहा २१ पडिलेहिच उ आउ पडिलेहिदिताणलंसरां गुरुवंदिउसमआवं अंहा
सर्वइ रकककदतापाय ११ वोरसिची घइलामिशा कतइं वांदीउणाम करी लिं कालपालाई लतिणि पडिकमइं पोरिसिय लाजनपात्रादिकनेपडिलेहीइ
तनदउ सैकावणहार एतलिपउणापोरसि कदइ श्रीगुरु नइं॥ वालीसज्झायकरी कालपडिकमीय डावेंपडिलेहणविधिकदइबइ
बइ समा यन कीजइ॥ २२

उक्का विसीस्कंता २२ गोरिसी पच्छाउ आगे वंदित्ताणतउ गुरुं आयमिर्कम्मितो कालस्स ताणंतपडिलेहए २३

मुहपत्ती पात्रानुं उपगरण पः पडिलेहुं अननतं गोळउंते पडा उपगुजीतिविसइं लगाडि वावि वस्त्रपात्रालोज कोलीपसर्व २३ तेखावितापकराडा एनकइ तइ
पिलेहि रयपाकिलेहुणा॥ नपात्रानुं उपगरणात्त दवपिलेहि गोळउं पत्तिजिरइलाजीवीजाजइं पडिलेहणा २५ करी पडिलेहणाकरिनपात्राताराबउन यांइ
पडिलेहणा २५ करइ करसिं॥ गोळ उराणी॥

मुहपत्तिं पडिलेहित्ता पडिलेहिज्ज गोच्छगं गोच्छगं लइअंगुलिओ वत्थाइं पडिलेहए २४ उड्ढं थिरं अतुरियं पु

इमपडिलेहउ वस्त्रज्ञाति आघीलक तिकारपडी वीजीवारइ वीजीवारदाव पडिलेहीइ [illegible] जीवाइं वस्त्रपडिलेहतोरज्जपज्जनचावइ अनुवंधीएला
वचनकदिजेत धाकलयरुडिफ्फ एक परिहाय गाजद पेरेइ नेजदाणाइ प्रमाजइइ दवितेविधिकदिवि वजदेई सरसाइनदी तितेरतरपलि
जइइ॥ २४

वंताचक्खुसेवपडिलेहे तो विइयं पप्फोडे तइयं च पुणो पमज्जिज्जा २५ अणच्चावियं अवलियं अणाणुवंधिं

पडिजेहएनकरङनीचउ पडिलेहइ वारके रवीउपफोडा॥ दावनावनइ आकारइरावि कूरबादि विपरीतकरउं वस्त्रनाखूणामाडो॥ नषामी वजीउपारेनीच उ
अणकरउ पडिलेवि॥ करिइसदए काहहि वपनवउ॥ कडीवनइ सो प नदावउसारीउवार= पडिलेअमाइ मांहिमेलइउवाउ॥ वस्त्रलगीके ड्रुतजीजी=
वल्लिनव पफोडाति वारउइरि २५ पडि लेहण पखउवरिवेसीतेउप्रमाः

अमोसलिंचेव छप्पुरिमा नवखोडा पाणीपाणिविसोहणं २६ आरभडा सम्मदा वज्जेयव्वा य मोसली तइ

प्रमाजइंति वारस्रावितकरावि आसा शिरावे २५ = प्रमाद पडिलेहणा तेवरजवो वाम वीरज
अरहइ वस्त्र ३१

इस्फोटनाच उपडी पडिलेहणा पडिलेहणा पडिलेहित्ता ठाए वठ्ठी ९६ वालवं लेवजेविषम पलिअदवि एककाजवि॥ सामीसाकदीइं अनेकरूपवस्त्रवि
पडिलेदवं जेवस्त्र अपडिलेह्या उपरिमूंकवउं प्रमाद पडिलेहणा वस्त्रमादि वस्त्रनाखुणानुं ग्रहवउं पामाधकाव्यउं अध्यारदकी अधिक उवस्त्र फरो
विछिम्माद वजाइ उउपय के ले इइ मिठजअ • व स्त॥ नालि रतेतेपा कपावइ॥

या पप्फोमणा चउत्थी विक्खित्ता वेइया छट्ठा २६ पसिढलपलंबलोला एगामोसा अणेगरूवधुणा अरण

तथा विक्खेरवानिहां सेकाउ पडिपकइं वुधित घा आयुलीइंगलिवानु अंलीति अधीकीन विपरीत नकरवीपसंलिझु अप्रकारि पडिलेहणो पउास्थरु
प्रमाण प्रमाद करइं॥ वोगकरिरपुनि दोवलिचाद वइ पडिलेहणा करवी॥ करवी॥ सोगाप उपडइसांगासांहिवि क्रसुद लगउं मोडणितो
उसरापवि दी॰ वपण उकहिइ ६ किज अहइ

ई पमाण पमायं संकिय गणणोवगं कुज्जा २७ अणूणाइरित्तपडिलेहा अविवच्चासा तहेव य पढमपयं पसत्थं

गाथाथाकतालागाउ अप्रमस्यपाहृया पडिलेहणाकरतउपको माद्दामांहि कथावातकरे अपवाजनपदादि जनी किंगाडीनइं एवहरकाण अने
जातिवादवडपडिलेहणकरतो॥ २८ कथाकरि छाइंकाढतां करावइं रानि
जाप विरवउनावदाोदइ वि

सेसाणि उ अप्पसत्थाणि २८ पडिलेहणं कुणंतो मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा देइ व पच्चक्खाणं वा

वेवपिवाचनाद्यइ आपणपइंलणी पृथ्वीका आउकाय तेउका वाउ वनस्प त्रसका पडिकायकदी पडिलेहणाविषइ प्रमादी [illegible]
एतलावानी पडिलेहण २९ पसांदिग्गु पाणी २ पगनिउ ४ नी ५ पट्ट॥ अनुविराधक कहइं प्रमादी साधु अंसकार नीजान नाविधि
करतो न करइं रहित कोनापाणी इसत्य उप्र दास्रमादवमि

वाएइ सयं पडिच्छइ वा २९ पुढवी आउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं पडिलेहणापमत्तो छण्हंपि विराहओ

३० पृथ्वीकाय अपकाय २ तेज वाकाय वनस्पती त्रसका भाव छकायनउ आराधक कहइं ३१ छकारणांगुहि
काय ३ काय ४ काय ५ यद्दृ॥ लइं आहारकिकार
३॥ णी॥

होइ ३० पुढवी आउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं पडिलेहणआउत्तो छण्हं आराहओ होइ ३१ छण्हमन्नय

आयइ आहारल्यइं दवितउ ३२ नूष तिरस उपवासमांहवा ईर्यांनिविसिद्धि नागजानाधपाग विनयनिअराधिआ ५ धर्मचिंता
ओनइं कारणकहितइ॥ तणी आहारल्यइं पडिलेहए का रविनाई यासुमति नानरिसंयमनि दारल्यइं। नि धर्मचिंता
रणाव याव इ करवा नणीर ३ न पल इउग ३ अर विआदारल्यै बीवा नि॥

रगंमि कारणंमि समुट्ठिए ३२ वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ४ तह पाणवत्तियाए ५ छट्ठ

जीआे पारसिनिवि वइं नातपणे जीजागवगणकरि
× तईया पारिसीए नहपाणं गावसए॥ ४३ २

जीति नहीं	धि वीन दो॥	विष रील नहीं
ऽ	ऽ	ऽ
।	।	ऽ
ऽ	।	ऽ
।	।	।
ऽ	ऽ	।
।	।	।
ऽ	।	।
।	उधि	वि
उवी	वीी	प
		रत

तीजइ पडे पणि पाणी इसकमिना मुनि मुख्यपदिक लाइ जिवांछी तिको अवसइ कायकइं एतलि छकायनु विरा धक कहइ नेइ जीलनम्रवयां इतिवचनात ३।३॥

उ०टबु

धम्मचिंताय ३३ निग्गंथो धिइमंतो निग्गंथी वि न करिज्ज छहिं चेव ठाणेहिं कइमेहिं आयंकउवसग्गे
दाइ ३४ आयंकउवसग्गे तितिक्खया बंभचेरगुत्तीसु पाणिदयातवहेउं सरीरवुच्छेयणट्ठाए ३५
अवसेसमन्नयरं मिच्छा चरक्खायडिलेहण परमत्तजोगेणं विहारं विहरमुणी ३६ चउत्थीए पोरिसी
ए निक्खिवित्ताण भायणं सज्झायं च तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं ३७ पोरिसीए चउब्भाए वंदित्ताण तओ गुरुं
पडिक्कमित्ता कालस्स सिज्जं तु पडिलेहए ३८ पासवणुच्चारभूमिं च पडिलेहित्तु संजए काउसग्गं तओ कुज्जा
सव्वदुक्खविमुक्खणं ३९ देवसियं च अईयारं चिंतिज्ज अणुपुव्वसो नाणंमि दंसणे चेव चरित्तंमि तहेव य ४०

पारियकाउसग्गो वंदित्ताण तओ गुरुं देवसियं तु अईयारं आलोइज्ज जहक्कमं ४१ पडिक्कमित्ताण निस्
ल्लो वंदित्ताण तओ गुरुं काउसग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमुक्खणं ४२ पारियकाउसग्गो वंदित्ताण तओ गुरुं थु
इमंगलं च काउं कालं संपडिलेहए ४३ पढमं पोरिसिसज्झायं बीयं झाणं झियायइ तईयाए निद्दमुक्खं तु स
ज्झायं तु चउत्थिए ४४ पोरिसीए चउत्थीए कालं तु पडिलेहिया सज्झायं च तओ कुज्जा अबोहंतो असंजए ४५
पोरिसीए चउब्भाए वंदिऊण तओ गुरुं पडिक्कमित्ता कालस्स कालं तु पडिलेहए ४६ आगए कायवुस्सग्गे
सव्वदुक्खविमुक्खणे काउसग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमुक्खणं ४७ राईयं च अईयारं चिंतिज्ज अणुपुव्वसो

॥उ०अ०टबु

नाणंमिदंसणंमी चरित्तंमितवंमिय ४७ पारियकाउसग्गो वंदित्ताणतउगुरुं गईअउअईयारं आलोइज्जजह

क्कमं ४८ पडिक्कमित्तुनिस्सल्लो वंदित्ताणतउगुरुं काउसग्गंततउकुज्जा सव्वदुक्खविमुक्खणं ४९ किंतवंपडिवज्जामि

म एवंतत्थविचिंतए काउसग्गंतुपारित्ता करिज्जजिणसंथवं ५० पारियकाउसग्गो वंदित्ताणतउगुरुं तवंसंपडिव

ज्जित्ता करिज्जसिद्धाणसंथवं ५१ एसासामायारी समासेणवियाहिया जंचरित्ताबहूजीवा तिन्नासंसारसागरं

त्तिबेमि ५२ सामाचारीअज्झयणंसंमत्तं २६ थेरेगणहरेगग्गे मुणीआसिविसारए आइण्णेगणिभावंमि समाहिंप

डिसंधए १ वहणेवहमाणस्स कंतारंअइवत्तई जोएवहमाणस्स संसारोअइवत्तई २ खलुंकजोउजोएइ वि ७५

हम्माणोकिलिस्सई असमाहिंचवेएई तोत्तओयसेभज्जई ३ एगंडसइपुछंमि एगंविंधइअभिक्खणं एगो

भंजइसमिलं एगोउप्पहपट्ठिउ ४ एगोपडइपासेणं निवेसइनिवज्जई उक्कुद्दइउप्फिडई सढेबालगवीवए

५ माईमुद्धेणपडई कुद्धेगच्छइपडिपहं मयलक्खेणचिट्ठई वेगेणयपधावई ६ छिन्नालेछिंदइसेल्लिं

दुद्दंतेभंजएजुगं सेवियसुस्सुयाइत्ता उज्जहित्तापलायई ७ खलुंकाजारिसाजोज्जा दुस्सीसावितारिसा

जोइयाधम्मजाणंमि भज्जंतीधिइदुब्बला ८ इड्ढीगारविएएगे एगेत्थरसगारवे सायागारविएएगे एगेसुचिर

कोहणे ९ भिक्खालसीएएगे एगेओमाणभीरुए थद्धेएगमणुसासंमी हेऊहिंकारणेहिय १० सोवियंअंत

रभासिल्लो दोसमेवपकुव्वई आयरियाणं वयणं पडिकूलेइ अभिक्खणं ११ न सा ममं वियाणाइ न वि सा मज्झ दा

हिई निग्गया होहिती मन्ने साहू अन्नोत्थ वच्चउ १२ पेसिया पलिउंचंति ते परियंति समंतउ । रायवेट्ठिं व मन्नंता करि

ति भिउडिं मुहे १३ वाइया संगहिया चेव भत्तपाणेण पोसिया जायपक्खा जहा हंसा पक्कमंति दिसोदिसिं १४

अह सारही विचिंतेइ खलुंकेहिं समागउ किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं अप्पा मे अवसीयइ १५ जारिसा मम सीसा उ

तारिसा गलिगद्दहा गलिगद्दहे चइत्ताणं दढं पगिण्हइ तवं १६ मिउ मद्दवसंपन्ने गंभीरे सुसमाहिए विह

रइ महिं महप्पा सीलभूएण अप्पणो त्ति बेमि १७ खलुंकिज्जं सम्मत्तं २७ मोक्खमग्गगइं तच्चं सुणेहि

७६

जिणभासियं चउकारणसंजुत्तं नाणदंसणलक्खणं १ नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा एयमग्ग

पत्ता जीवा गच्छंति सुग्गइं ३ तत्थ पंचविहं नाणं सुयं आभिणिबोहियं ओहीनाणं तईयं मणनाणं च केव

लं ४ एयं पंचविहं नाणं दव्वाण य गुणाण य पज्जवाणं च सव्वेसिं नाणं नाणीहिं देसियं ५ गुणाण

मासओ दव्वं एगदव्वस्सिया गुणा लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ अस्सिया भवे ६ धम्मो अधम्मो आगासं कालो

पुग्गलजंतवो एस लोगु त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ७ धम्मो अधम्मो आगासं दव्वं इक्किक्कमाहियं अ

णंताणि य दव्वाणि कालो पुग्गलजंतवो ८ गइलक्खणो उ धम्मो अहम्मो ठाणलक्खणो भायणं स

१० जाणिवउं देखवउं ॥ जीवादिक ग्राहवी करवी ॥ सत्य में वीर्य ज्ञानादिक नि । यह वर्ण्ंश कर्ता
ति ज्ञान । दर्शन ॥ तिचारित्र नपरर नेटेत पोइतेनप । फोरवइ विषइ एकान्त । उपयोग । ति जीवनां

वदवाणं नवउंगणद्दलरकणं १० नाणंचदंसणंचेव चरित्तंचतवोतहा वीरियंउवउगोय एयंजीवस्स

लक्षण ११ शब्द तथा अंधकार उद्योत रत्नादिकनी प्रभा वृक्षादिकनी छाया तडको तथा वर्ण नीला सुगंधादिक गंध तथा रस फरस एह पुद्गलास्तिकायना लक्षण जाणिवां १२ एक पृथक्त्व
तिहां नेलक्षण जाणिवउं ॥

लरकणं ११ सद्दंधयारउज्जोउ पहाछायातवेइवा वन्नरसगंधफासा पुग्गलाणंतुलरकणं १२ एगत्तंच पु

जिम एक घटकलसे नाम पर्याय संख्या संठाण बुद्धि संयोग विभाग ए सर्व पर्यायनु लक्षण १३ जीवास्तिकाय जीवतत्त्व धर्मास्तिकायादिक अजीव तत्त्व नाम
पदार्थ ॥ नउ आकार एवरूप ए पृथक्त्व जाणिवउं
बंधतत्त्व

हत्तंच संखासंठाणमेवय संजोगायविभागाय पज्जवाणंतुलरकणं १३ जीवाजीवायबंधोय पु

प्रतिबंधात पुण्यतत्त्व मिथ्या ॥ युक्तिकरी आश्रव कर्म कारकी मोक्षतत्त्व तथा आश्रव संवर निर्जरा ॥ बंधन
प्राणातिपातादिक जे कर्मबंध आलगो करी इंद्रियादिक पदार्थ । १४ जीवादिक तत्त्व कह्या ते सद्भावइ उपदेस
दिकपाप कर्म तेह आश्रव । पाछिलां निर्जरा ते त्वा ॥ मुक्ति

न्नपावासवोतहा संवरोनिज्जरामुरको संतिएतहियानव १४ तहियाणंतुभावाणं सब्भावेउवएसणं भा

भिन्नमां दिठ्ठां तेहनी सम्यक्त्व साची सद्दहणा ॥ तेहनी रुचि सर्वज्ञनइ कहिं सिद्धांत जरू चि लिति सूत्ररुचि ज्ञानरुचि
करी पदिवज तउ । जीवादिक तत्त्वकह्या तीर्थंकरि १५ नाम निक्षेपा ॥ कहीइ तत्त्व वचनरुचि कहीइ धर्म कहइ करीने कांई तेह निगम
त त्यनइ निला मर्यादा रुचि ज्ञानरुचि कहीइ रुचिकहीइ

वेणसद्दहंतस्स सम्मत्तंतंवियाहियं १५ निसग्गुवएसरुई आणारुईसुत्तबीयरुइमेव अभिगमवि

विस्तार । धर्म निश्चय ज्ञान रुचि तत्त्वार्थरुचि सत्य साचा भला अर्थ जीव अजीव पुण्य पाप जाति तथा भली बुद्धि परनाउ परम
रुचि कहीइ कहीइ सहज रुचि धर्मरुचि क १६ पदार्थ जाणी जिणि धर्मास्तिकायादिक विना ते आश्रव परम
धर्मादिक रुचि

त्थाररुई किरियासंखेवधम्मरुई १६ भूअत्थेणाहिगया जीवाजीवायपुन्नपावंच सहसमुइयासवसं

गुरु नइ कहइ वड राजरू चि उपजिति उपदेसरुचि = ७८ · २

११

मोक्षपवाल आपणा मनइ रुचि लिकोई परनु गुरुनो भइ द्रव्य क्षेत्र काल ति द्रव्यथापना भाव नेदइ सद्दहइ आपण ॥ निसर्गरुचि
आवरायी ॥ आलि निसर्गरुचिक १७ दीवा जीव अजीवादिक पदार्थ नावइ चिकअक्का पर ना उपदेश विना सद्दहइ ने इस जे
रहत पाने मयावे साचउं आप पाण नहीं विपरीत नहीं ॥

वरोय रोएइउनिसग्गो १७ जोजिणदिट्ठेभावे चउव्विहेसद्दहाइसयमेव एमेयंनन्नहत्तिय सनिसग्गरुइ

जाणिवो १८ एए पूर्व कहिया जे उपदेशादि इं पुरुषादिक परसाक्षय प्रभु छद्मस्थ अथवा जिन दीठ ते उपदेश रुचि रुचि जा १९
भाव जीवाजीवादिक मायाजिको घनइं सद्दहइ साचा करीने रागइ रुचि पदवइ नाम ति जिवी
जीव पदार्थ ॥ मानि ॥

त्तिनायव्वो १८ एएचेवउभावे उवइट्ठेजोपरेणसद्दहइ छउमत्थेणजिणेणवा उवएसरुइत्तिनायव्वो १

राग कहीइ प्रीति स्नेह द्वेष ॥ अज्ञान मिथ्या तेहनइ दर्शन सहकीज ते सर्व तीर्थंकरनी आचार्य ते तिआइ करी आज्ञारुचि पदवइ जीवकोई सूत्र
तेह अप्रीति अभिमान मोह ध्यान अज्ञान ममकी जाणप उकातइ ॥ दिकनी आज्ञा इरोच वइइति ला षअ ता = नाम इरु चि जाणिवी २० सिद्धांत अध्य
नीय कषायादिक ॥

रागोदोसोमोहो अन्नाणंजस्सअवगयंहोइ आणाएरोयंतो सोखलुआणारुईनाम २० जोसुत्तम

ध्ययनकरउ सूत्र तणित धाम इसम्यक्त आचारांगादिक अंग इकरी तस्सूत्र रुचि पदवइ नाम इ २१ जो दाइ अभिगम नरुचि श्रुत
तणत उ इत अवगाहइ साचा तत्त्व ॥ तथा अंगबाहिर उत्तराध्ययन चिपद वइ रुचि जाणिवा ज्ञान
ता दिकइ करी ॥

हिज्जंतो सुएणओगाहईउसम्मत्तं अंगेणबाहिरेणव सोसुत्तरुइत्तिनायव्वो २१ सोहोइअभिगमरुई सु

तणिं अर्थ थिकउ अथवा आचारांगादिक ११ अंग अथवा उत्तराध्ययनादिक २२ धर्मास्तिकायादिक द्रव्य इनि वली प्रत्यक्ष अनुमान
अर्थ करी दीठ उंला दिउं अथवा दृष्टिवाद १४ पूर्व तथा उववाई प्र मु ख उपांग नासघ जा लाव वमान आगम इ लि मर्व
लिसमस्तवलि जे

त्तनाणंजस्सअत्थउदिट्ठं इक्कारसअंगाइं पइन्नगंदिट्ठिवाओय २३ दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणेहिंजस्स

लोकादिकं जा ॥ सर्व समस्त जे नगमादिक ते विस्तार रुचि पदवइ नामि रुचि २४ साची सद्दहणा मतिज्ञानादिक तप बारे भेद विनय नि विधिमा चौ मुनि
नयाव इ ॥ ॥ एती विधि लहइ ॥ जाणवी वइ कहणा दसण । ज्ञान नइ विषइ विषइ तथा सुमति नइ विषइ
ति विषइं । सर्व क्रिया रूप

उवलद्धा सव्वाहिंनयविहीहिं वित्थाररुइत्तिनायव्वो २४ दंसणनाणचरित्ते तवविणएसव्वसमीइगुत्तीसु

एकलउ हीआ नकनपलइ ति म ए कार पदइ चणी प दिक जाणिवां
रुइत्ति नायव्वा २२ ४ उली देवजी ३ ॥ ॥

MEMO...

उ०टबो।

जोकिरियाभावरुई सोखलुकिरियारुईनाम २५ अणभिग्गहीयकुदिट्ठी संखेवरुइत्तिहोइनायव्वो अविसा

रउपवयणे अणभिग्गहीउयसेसेसु २६ जोअत्थिकायधम्मं सुयधम्मंखलुचरित्तधम्मं च सद्दहइजिणाभि

हियं सोधम्मरुइत्तिनायव्वो २७ परमत्थसंथवोवा सुदिट्ठपरमत्थसेवणावावि वावन्नकुदंसणवज्जणाय स

म्मत्तसद्दहणा २८ नत्थिचरित्तंसम्मत्तविहूणं दंसणेउभइयव्वं सम्मत्तचरित्ताइं जुगवंपुव्वंवसम्मत्तं २९

नादंसणिस्सनाणं नाणेणविणानहुंतिचरणगुणा अगुणिस्सनत्थिमुक्खो नत्थिअमुक्खस्सनिव्वाणं ३० नि ३६

स्संकियनिक्कंखिय निव्वितिगिच्छाअमूढदिट्ठीय उववूहथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेअट्ठ ३१ सामाई

यत्थपढमं छेउवट्ठावणंभवेबीयं परिहारविसुद्धियं सुहुमंतहसंपरायंच ३२ अकसायअहक्खायं छउम

त्थस्सजिणस्सवा एयंचयरित्तकरं चारित्तंहोइआहियं ३३ तवोयदुविहोवुत्तो बाहिरब्भिंतरोतहा बाहिरोछव्विहो

वुत्तो एवमब्भिंतरोतवो ३४ नाणेणजाणईभावे दंसणेणयसद्दहे चरित्तेणनिगिण्हाई तवेणपरिसुज्झ

ई ३५ खवित्तापुव्वकम्माइं संजमेणतवेणय सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमंतिमहेसिणोत्तिबेमि ३६ मोक्ख

मग्गअज्झयणंसम्मत्तं २८ सुयंमेआउसंतेणं भगवयाएवमक्खायं इहखलुसम्मत्तपरक्कमेनामअज्झयणे

समणेणंभगवयामहावीरेणं कासवेणंपवेइया जंसम्मंसद्दहित्ता पत्तियाइत्ता रोइत्ता फासित्ता पालइत्ता २

उत्तरा०

तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वा

यंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ तं जहा संवेए १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मि

यसुस्सूसणया ४ आलोअणयाए ५ निंदणयाए ६ गरहणयाए ७ सामाइए ८ चउवीसत्थए ९ वंदणे १० पडिक्कमणे ११

काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमंगले १४ कालपडिलेहणयाए १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणयाए १७ सज्झा

ए १८ वायणयाए १९ पडिपुच्छणयाए २० परियट्टणयाए २१ अणुप्पेहाए २२ धम्मकहाए २३ सुयस्स आराहणयाए २४ ३८

एगग्गमणसंनिवेसणयाए २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडिबद्धयाए ३० विवित्तसय

णासणसेवणयाए ३१ विणियट्टणयाए ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसा

यपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहायपच्चक्खाणे ३९ भत्तपच्चक्खाणे ४० सब्भाव

पच्चक्खाणे ४१ पडिरूवणयाए ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपुण्णयाए ४४ वीयरागयाए ४५ खंती ४६ मुत्ती ४७ मद्दवे ३८

अज्जवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तयाए ५३ वयगुत्तयाए ५४ कायगुत्तयाए ५५ मणसमा

हारणयाए ५६ वयसमाहारणयाए ५७ कायसमाहारणयाए ५८ नाणसंपन्नयाए ५९ दंसणसंपन्नयाए ६० चरित्तसंपन्न

याए ६१ सोइंदियनिग्गहे ६२ चक्खिंदियनिग्गहे ६३ घाणिंदियनिग्गहे ६४ जिब्भिंदियनिग्गहे ६५ फासिंदियनि

६६ कोधरी मुक्तीपवुं ६७ अतिमाननुं छीपवउं ६८ मायामरलंसवउं ६९ लोभनादिकनउं ७० रागद्वेषअनइंमिथ्यात्वनइं जीपवि ७१
तहनि जीपवु जीप वउं

३०४८वो ए॥६६ कोहविजए॥६७ माणविजए॥६८ मायाविजए॥६९ लोहविजए॥७० पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं॥

चउदमइं गुणठाणि कर्मरहित ७३ संवेग मोक्षनउ अभिलाष तिणि करी अहो सावग श्रद्धानउ धर्मनी श्रद्धा करिवा तेणा उपजि उत्तरप्रधान
रहवउ तेम ७२ थाउं नगवान जीवसुं करराजइं॥ धर्मनी श्रद्धाइं
तेहना वेगमोक्षनो

सेलेसीए॥७२ अकम्मया॥७३ संवेगेणं भंते जीवे किं जणयइ संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ अणुत्तराए धम्म

अभिलाष संवेग उतावलउं आवि नरकादिकना कर्मप्रति क्रोध मान माया लोभ खपावइ नवा कर्म अनुबंधन कर्मनवा तत्कर्मउदय अनि
दशमा गुण नवहेतुइम अनुबंध थइंश्रीगीकार नकरइ॥ मिथ्यात्वनउदयटीजे
नावण अवा पुराउ
वडाउ

सद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ अणंताणुबंधि कोहमाणमायालोभे खवेइ नवं च कम्मं न बंधइ तप्पच्चइयं च णं

मिथ्यात्वनी शोधि करी निश्चय करी सम्यक्त्वतेहनउ सम्यक्त्वनी विशोधि अत्यंत निर्मलपणइ इसकर आगला जीव ए णी मस्तदेवा नी परइ तिणि
सर्व प्रकारइ अधिकार आराधक थाइ॥ थकइ। भवि सी कइ सिद्धि पामवइं
टाल्याति एइ।

मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ दंसणविसोहीए णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ

सम्यक्त्वनी विशोधि अत्यंतरा तीजउ उलवन उपजइ अतिक्रमइ नहीं एतलि सामान्य प्रकारइं संसारथकी वयरागइं उ एसमाननि विषयिकछीइं धाम
निर्मलतावि शुद्धतांइं करीनि उत्कृष्ट सम्यक्त्वनुं पणी तिणि भवमांहि मोक्षें जाइ १ द्वीजा भवनउ जीव एणी रूपइं उपराजइं॥ रूपउ देववउं तिर्यं दुरादवता
अनइं मनु ष्य

सोहीए णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ॥१॥ निव्वेएणं भंते जीवे किं जणयइ निव्वेएणं दिव्व ॥२ ८५

तीर्थंचसंबंधीया जे कामभोग तेहनइ विषइ निर्वेद नेउ सर्वजनविषय तेहनिविषि विर सर्वविषयविरक्त थकउ उपरनोयको
अर्थतो करणहारणि कारणि जाणइ वउ देवसी घ्य पामइ नहइं॥ माणा वा उम क्या

माणुस्सतेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्वमागच्छइ सव्वविसएसु विरज्जइ सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरंभ

आरंभकरसणादिक आरंभकरषणादिक आरंभपरिग्रह तेसंसारनुं मार्ग मिथ्यात्व अ सिद्धांतमार्ग मांहे मार्गि तिहनइं पडि य धर्मनी श्रद्धा करिवा
परित्यागकरइ धनादिकनुं प्रीतवीक नु परित्याग करइ॥ वरतिइ त्यादिकातह निछेद वडाणहारू थइ॥ नोताचेतेणि अहो
वउ नामकरइ

परिच्चायं करेइ आरंभपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिंदइ सिद्धिमग्गपडिवन्ने य भवइ॥२॥ धम्मसद्धाए णं

भगवान॥ गुरुकहइ हि अहो शिष्य धर्मनी श्रद्धाइं शातासुखविषयसुखतहनि विषइं जरागइ ष॥ आगार कहइ तो॥ पवइं अणगार साधु जीव एणी सरीर
जीव एणी धर तजवाकाविराग अणितएतलि विषय सुखउसरइ गृहस्थनो धर्म गृहीस्य छडवासतेवा गृहस्थनउ धर्म
सुखपात्रि

भंते जीवे किं जणयइ धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ आगारधम्मं च णं चयइ अणगारे णं जीवे सारीर

अनइ माणस मननां जे दुरक्षछेदवा। तेहवउं काइवउ तहना णी अनइं अ सुनवस्तुनो अव्याबाधसुख जे मोक्षनां मुखते ३ गुरुधर्माचार्य तेहनी सुश्रूषासे
तेहना आपवउ। मयोग अनिष्टनउं वियोग विछेद नाशकरइ दनी परइ ईहइ साधमीयनी वाइ स्वलगवन

माणुस्साणं दुक्खाणं छेयणभेयणसंजोगाईणं वोच्छेयं करेइ अव्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ॥३॥ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणा

जीव स्फउपराजइं गुरुकहिहि गुरु साधम्मि तीम सुश्रूषा सेवाइं सेवउपराजइं विनयप्रतिपत्ति कहीयइक पडिवज्यउं बइं विनयाजणि गहवो
रवानउ अंगीकार उपजावइ॥ कउं ए जीव

याए णं भंते जीवे किं जणयइ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए विणयपडिवत्तिं जणयइ विणयपडिवन्ने य णं जी

गुरुनी आज्ञा तनानुं स्थला वनशीलि नैरिका तिर्यंच तत योनि तेह रूप ए दुर्गति अनइं मनुष्यनी दुर्गति म्लेछादिका वर्णश्लाघा निर्गुणनउं ढांकवुं संज्वलनइ नि
द तिअवर्णवादादिकनइ परिहरइ नाअवतार अनेदेवतासंबंधि दुर्गति कल्याणवि विषय एणउं तेहनुं रूप स्थिर अतिशयमुनिकारि नक्तिदाघतुं जो अंतुबहु मान अतिरंगपणे
॥ एवेवउ॥

वे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवदुग्गईओ निरुंभइ वण्णसंजलणभत्तिबहुमाण

करी संसारमांहि उत्तमनुष्यनी सद्गति अनइं देव सिद्धिमोक्षरूप एणी सद्गति विशोध प्रशस्त भलां प्रशंसा कारीयां जे विनयमूल। कृतज्ञानादिकसंघना
तानी सद्गति अतिशयरूपइं बांधइ॥ इंकरी मोधइं निर्मलकरइ मोक्ष कार्य कामसाधइ मांह
रूपसद्गतिना कारण॥ जाइ॥

याए मणुस्सदेवसुग्गईओ निबंधइ सिद्धिसुग्गइं च विसोहेइ पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहे

आयणवइरूमैमार्यरहिवउंतउआनराधणा ः एक ४ गुरु आगलि आयणा आत्माने दोषनउं प्रकाशवउंत गुरु कहइ आलोअण आयणा
जीवनिविन त्यमार्यादयमिनइ आदरइविनयवंतकरइ आलोयणाइं भगवनजीवस्युंउपराजइ॥ पानी आलोयणाइमायास्वरूप

उ०ट०बो इ आलयवल्ह वेजीव विणइ झालवइ ४ आलोअणाएणं भंतेजीवे किंजणयइ आलोयणाएणं मा

निनियाणशूलप नउंवेचलवेतेदमत्यरूनइ केहवाजीक मोक्षनिविघ्नइ वलीकेहवाअनंतसंसारना उद्धरणइंकरीउद्धरइ ऋजु कहउंकहइवली
विपरीतमतिमिथ्यात्वरूपमल्यतसत्य॥ विघ्नअंतरायनाकरणहार इहनाकरणहारातदनउ तिआलोयणनालेसरलसरलभाव

यानियाणमिछादंसणसल्लाणं मुख्कमग्गविग्घाणं अणंतसंसारवद्धणाणं उद्धरणंकरेइ उज्जुभावंच

उपराजइ पडिवज्जउवउउजीराजपसरलभावप्रणउउवलवउ तेस्त्रीनउवेद उद्धरलीकरी नवंधइत्री॥पूर्वबद्धउपूर्वबंध्याते निर्जराइ॥
जीवप्रांथीमायारहीतजइ नपुंसकवेद कारनकरइ ॥उनिश्चयापावइ॥ ५

णंजणयइ उज्जुभावपडिवन्नेयणं जीवेअमाई इत्थीवेयंनपुंसगवेयंनबंधइ पुव्वबद्धंचणंनिज्जरेइ ५ निं

आपणपइंआपणा आत्मानादोषनउंदेखवउ तेमनपनिदाइंदहमइ लेहतउकीधउं पछतावउपश्चात्तापउपराजइ।तिपश्चात्तापइ॥ तेविराग्य
तिनिंदाइहेतगवनजीवस्युंउपराजइ जीवविराग्यपऱ्जचइ॥ पामउअपूर्वकरणनी

दणयाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ निंदणयाएणंपछाणुतावंजणयइ पछाणुतावेणंविरज्जमाणे करणगु

श्रेणितपडिवजिअदइपूर्वइनश्रीआव्यवतेद मोहनीयदर्शनमोहनीयादिकाजकमतदनि। अन्यलोकतदनि आगलिआपणादोषकहवानगरह॥ जिआ
नणीअपूर्वकरणअपकरणगुणिअपूर्वकरणा अतिज्ञायस्युंउपायावइमविमोहजाइ ६ गाइनगवनजीवस्युंउपराजइगुदकहइवइ॥ गरहे
दिक निमदा नइश्रेणिकहेतान्नकाश्रेणि॥

णसेढीपडिवज्जमाणेअणगारे मोहणिज्जंकम्मंउग्घाएइ ६ गरहणयाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ गरह

णाइंआपपरकामइ गर्वरहितपणुउपराजइ जिहारइंगर्वरहितहुउएहजीवनिकारइ कर्मबंधनाहेतुअप्रशस्तपापआमनवचन तलोजेमनवचनका
कायानायोगातहथकीनिवर्तविइजीव। यानाया गव्याया

णयाएणं अपुरक्कारंजणयइ अपुरक्कारंगएणंजीवे अप्पसत्थेहिंतोजोगेहिंतोनियत्तेइ पसत्थेयपव

८२

तप्रव पन वस्मानेपवमसमनवचनका चारित्रीयवउज्ञानावरणीयादिककर्मनापर्यायअनंतज्ञान ७ ममतापरिणामरहितसामायककरीनगवन समता
त्रीवि व्यानायोगजालिपवइवउ॥ दर्शनकेवलज्ञानदर्शनकेवलज्ञानदर्शननातिवारणहार जीव स्यउ.कउपराजइ परिणामइमा
तनया चउ।

त्तइ पसत्थजोगपडिवन्नेयणं अणगारेणंअणंतघाईपज्जवेखवेइ ७ सामाइएणंभंतेजीवेकिंजणयइ साम

मायकइ कर्मबंधनादिकनोकारणतेमपापमनवचन चउवीसतीर्थंकर॥ हेतग जीवस्युंउपराजइ॥ चउवीसतीर्थंकरस्तवलीगस्सउतातिदर्शन
कायानायोगविरतिपाव उउसमरिवउउपराजइ ८ गुरुवंदनलोगस्सतेणि।वना। सम्यक्त्वनीविशोधि. नीर्मलपणउ॥

इएणंसावज्जजोगविरइंजणयइ ८ चउवीसत्थएणंभंतेजीवेकिंजणयइ चउवीसत्थएणंदंसणविसोहिं

उपराजइ ९ श्रीगुरुनइंवादउ॥ हेतग। जीवस्युंउपराजइ॥ गुरुनिवांदविकरीनिनीचैर्गोत्रक्षलनइ॥ अनिउच्चैर्गोत्रसेवईओ॥ अंगीकरइ
आवर्जवांदलिकरा॥ वना। विपइकर्मजीवउतनीचैर्गोत्रकर्मखपावइ। उजकर्मऽतिन्नाउयस्युंउवाधइ तसौभाग्य

जणयइ ९ वंदणएणंभंतेजीवेकिंजणयइ वंदणएणंनीयागोयंकम्मंखवेइ उच्चागोयंनिबंधइ सोहग्गं

पणउसमस्तलोकनिवादउपरामइ तकेहवउअ॥ अतिमसमस्तलोकनुइअनुकूलपणउ १० पापथकीपाछउनिवर्तवउतपडिकमणेंकहीइं। पडि
रंवरन आज्ञामारनीपजावइं अंगीकारकरइ॥ तदक्षणनावकहियइंतउपराजइ॥ नेपडिकमणिहइसगवनजीवस्युंउपराजइ॥ कम
णउ

चअप्पडिहयं आणाफलंनिव्वत्तेइ दाहिणभावंचणंजणयइ १० पडिक्कमणेणंभंतेजीवेकिंजणयइ प

करीव्रतपश्चरकाणनानेअतीचारनइंढांकइंअ॥ तकिछिद्रव्रतनाविद तवलीजीवनिरुद्धसुद्धहिंमा॥ मवजकांवउचारित्र सुमतिपगुप्तिस्वरूपजे
अादइ। दिकआश्रवाजणइ॥ तहीजहतइ लिआवप्रवचनसिद्धांत

डिक्कमणेणंवयछिद्दाइंपिहेइ पिहियवयछिद्दे पुणजीवेनिरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसुपवयणमा

नइंविषइंमाताबोलीवइ॥ संयमजोगथकीअलगुमहा ११ आलोचारअनुक्रमणीकायानउंत्यजवउतसकाउसग्ग काउसग्गइंकरीनिअतीतका
तदनइंविषइसावधानतत्पर। समइसंयमनिविषइसमाधि कदीइंतकाउसगइंकरीनगवनजीवस्युंउपराजइ॥ लनावर्तमानकालनागगत
एहवोधुक विचरइ॥

यासुउवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिएविहरइ ११ काउस्सग्गेणंभंतेजीवेकिंजणयइ काउस्सग्गेणंतीयपडुप

उपदेश

पायछित्तश्रतीचारविमोध विशेष करइ॥ विसुद्धपायछित्ततेहनो एहवउ जीवनिवृत्तिहृदय तेउ करीनइ कहतो भार एहवउ भारवाहनी परइ॥ प्रशस्तध्यानधर्मध्यान लगि करी सहित

णं पायछित्तंविसोहेइ विसुद्धपायछित्तेय जीवनिव्वुयहियए उहरियभरुव्वभारवहे पसत्थज्झाणोवगए

सुखेइं सुखइं सुखनी परंपराइं विचरइ १२ । मूलगुणस्त्र्य प्राण महाव्रतादिक उत्तरगुणपच्च खाणविधि यचरवादिकनेहपच्चखाणिकरीसुं आश्रवद्वारादिक तेहवाबारणानी परइ रूंधिशांकइ १३ नमोत्थुणं दिक

सुहंसुहेणविहरइ १२ पच्चक्खाणेणंभंतेजीवेकिंजणयइ पच्चक्खाणेणंआसवदाराइंनिरुंभइ १३ थ

स्तुति तनाजयुत्तहीय देवताकहइ तेहरूप मंगलीक॥ स्तवनथुईमंगल नमोत्थुणादिक पाप नाआवलिबोधिलाभ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र १ २ तेहरूपलाभ कहइ॥ विरति रूप चारित्र॥ प्राप्ति तेहनो उपराजतो करि॥

यथुइमंगलेणंभंतेजीवेकिंजणयइ थयथुइमंगलेणंनाणदंसणचरित्तबोहिलाभंजणयइ नाणदंसणच

रित्र जिनधर्मनी प्राप्ति सहित जीव कर्मना अंतक्रीया प्रते नइं पामिवउं कल्प देवलोकनो सौधर्मादिक ग्रैवेयक १४ अनुत्तरविमान तेह तेविषि उपराज वउं तेह आराधवउं॥ ४ निजाने नउं आराधइ। १४ कालप्रतिलेखनीया वाधाइ कालादिकते

रित्तबोहिलाभसंपन्नेयणं जीवे अंतकिरियंकप्पविमाणोववत्तियं आराहणंआराहेइ १४ कालपडिलेह

णीय पडिलेहण कहतां सिद्धांत नइं विधिइं सत्र गुरु कहि छइ ते शिष्य तेवाचाइ ज्ञा। ज्ञानावरणइ अनइ आवरण जइ तेह ज्ञान ५ कर्म वज्जि निरंजन आव रिते काल प दिककाल पडिलेहण करी॥ वरणी यक र्मवधाइं ज्ञान मुलक करइ १५ जीवनि पाप नी शुद्धि कारइ ते प्रायश्चित्त काल इं आलो

णयाणंभंतेजीवेकिंजणयइ कालपडिलेहणयाएणं नाणावरणिज्जंकम्मंखवेइ १५ पायछित्तकरणे

यणादिक तपप्रायश्चित्त करवइ गुरु कहिउ छि शिष्य प्रायश्चित्तकरि जीव पाप ते अमुक जीव पाप जे अमुक अतिचार तेहनो विशुद्धि विधि वावं तेह उपराज करी जीव सम्यग् उपराजइ। निरतिचार आचाररहित थाइ रूडी परइ॥

णंभंतेजीवेकिंजणयइ पायछित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिंजणयइ निरइयारेआवियभवइ सम्मंचणं

५३

पायच्छितप्रति पडिवजउ अंगीकारकरउ मार्ग कहितां सम्यक्त्व अनइ मार्ग। चरित्र तेहनउं फल आचार नइं आचारनउं फल तेउफल कहितां ज्ञान निर्मल करि ॥ ज्ञानादिक आराधइं सेवइ १६ यउअपराध माहरउ खमो आज पछी ईम न कीजइ इत्यादिवचन कहि करी

पायछित्तंपडिवज्जमाणे मग्गंचमग्गफलंचविसोहेइ आयारंचआयारफलंआराहेइ १६ खमावणयाएणंभंतेजीवे

सगवन जीवसुं तेथ मावणा करी सावक हितो चित्तनइं प्रीति उपराजइ॥ आगल्या निश्चय प्राप्ति सदित विक मनोरथ उपजावइ॥ प्रसाद भली भावना ॥ सघलाइं प्राणादिक॥ आदिकर दइ सत्वा तेह नइं विषइ॥ परलवइ॥

किंजणयइ खमावणयाएणं पल्हायणभावंजणयइ पल्हायणभावमुवगएय सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु मित्तीभा

हितनी चिंता परजीवनि विषइं मैत्रीभावइ॥ गत रागद्वेष कउ जीव रागद्वेष नउ तेनि वारवउ करी १७ य उकार नी सज्झाय तेसज्झाय करीनइ जीवनइ उपजावइ ईहलोकादिक सात भय थी रहित निर्भय रहित ॥ जीवस्युं उपराजइ

वमुप्पायइ मित्तीभावमुवगएयावि जीवेभावविसोहिंकाऊणनिब्भएभवइ १७ सज्झाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ

सज्झायकरी ज्ञानावरणी ज्ञानना आवरणना १८ वाचनाइं लणा विवइ सावन जीवस्युं उपराजइ चाचनाइं करी कर्म निर्ज्जरा कर्म करणहार कर्म षपावइ ज्ञानने मोकलो करइ॥ तेहनउं कारक वउं उपराजइ॥

इ सज्झाएणंनाणावरणिज्जंकम्मंखवेइ १८ वायणाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ वायणाएणंनिज्जरंजणयइ

श्रुत सिद्धांतनी आशातना तेनि विषि प्रवर्त्त श्रुतसिद्धांतनी आशातना निवारतउ धर्मसज्झाय अवलंबइ सेवि तीर्थंकरधर्म निअवलंबतो आश्रय लेतउ जीव तीर्थंकर गणधर तेहनउं प्रकाश्यउ ॥ तउ॥

सुयस्सआसायणायाएवट्टइ सुयस्सअणासायणाएवट्टमाणे तित्थधम्मंअवलंबइ तित्थधम्मंअवलंबमाणे

मोटी कर्मनि॥ मोटउं कर्म नउ तपासमार॥ १९ सूत्रादिक नउ पाना वली सांहदह पूछइ तेह निप्रति पूछणाइं सूत्र सिद्धांत अनइ तेहना ज्ञान तेहनइ ठउ प्रश्न पूछवानउ लागइ छउ बणाकदीय इ पडिपुछवणाइं करी नगवन जीवसुं उपराजि॥ ॥करीनइ॥ अर्थ एवेहु नउ संसयरूप

महानिज्जरेमहापज्जवसाणेभवइ १९ पडिपुच्छणयाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ पडिपुच्छणयाएणंसुत्तत्थतदुभयाइं

॥ उपदेश

८३

मलचारीनिं विज्ञायइं करीनिसोधइं शुद्धकरइ कोकामंदे सूत्रपाठगुणवंतातपरियाइणाकहीइंतपरि परियदृनाइंकरीव्यंजनअक्षरनइंउप
कल्याणइंमवइकइंनदोतेमोहनीकर्मछेदें २० वर्त्तनाइंकरीभगवन्तजीवस्युंउपराजइंम जवइंगुणनोवीसरतोअक्षरसंसारइंक

खिसोदइं करवामोहणिज्जकम्मंवुच्छिदइ ॥२०॥ परियट्टणाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ परियट्टणाएणंवंजणाइंजणय

मिता अरसमयकोयवानुसारणो २१ सूत्रनाअर्थनइंचिंतविवउं तेहनइंअनु अनुप्रेक्षाइंकरीनइंआउषावरजीकर्मवर्जीनटालइंबी
हुइ अक्षरनीलब्धिऊपजइ। वेक्षाइंकरीभगवनजीवस्युंउपराजइ। ज्ञानावरणादिककर्मनीप्रकृति

यइ वंजणलद्धिंचउप्पाएइ २१ अणुप्पेहाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ अणुप्पेहाएणंआउयवज्जाउं सत्तकम्मपग

अत्यंतआकरीबांधीनिकाचितबांधी प्रकृतिनइंशिथिलढीलीबंधनकरि॥ दीर्घकालघणाका॥ समनइंअपदरवइंकरीथोडाकालनीस्थिति
थीतहुनइं॥ तेअलअध्यवसायतइपरिणामइंकरीनि लनीस्थितिकर्म॥ बिइजहुनिणदवीकरइंकालइंजाणगवी॥

डीउ धणियबंधणबद्धाउ सिढिलबंधणबद्धाउपकरेइ दीहकालट्ठिइयाउ हस्सकालट्ठिइयाउपकरेइ ति

अशुभपापरूपाकर्मनीप्रकृतिनीप्रआकरा॥ बहुघणाकर्मना अल्पथोडाप्रदेशाकर्मकुहलइ॥ आउषारूपीउकर्मकरिमिवयकदाचित॥ कदाचित
अनुभावरसजेहनातेमंदनइंबलअनुभावजेह॥ प्रदेशापुद्गलस्कंध हनाएहवाअतिनाव्यस्यउं॥ बांधिसारमाहिअनुतअकथानुबंधकरि नबांधइए
नुएहवाअतिशय . स्फकरइ॥ जेहनातेह

व्वाणुभावाउमंदाणुभावाउपकरेइ बहुपएसग्गाउ अप्पपएसग्गाउपकरेइ आउयंचणंकम्मंसियबंधइ सियनोब

नतलिमुक्तिजाइतिहारइबीनबांधइं॥ धवाआयुकर्मआऊखानइंदीजिनागादिकइजबांधइ॥ जेहसंसारनीआदिपुर 'खिहमोनथीएतलि॥ मार्थिजेहनोनारकीतीर्थंचर
आपआकोतिकालनबांधइंआसाता 'असुखतेहनतेवेदवउंतेहरूपकर्मएदवइअसुरउं॥ कहितनजाइचवलजे अनेतकालइंदीर्घका मनुष्यदेवगतिरूपच्यारनीवा
कतिहवअसातावदनीवार, वारउपउनकरइनबांधइंवारवार कादेउतेसंसारलिजिलो॥ संसारनउ आगति॥ लनाबइ उ धानमतानु चउवडउतेसंसाररूपीउकं

धइ असायावेयणिज्जंचणंकम्मनोभुज्जोभुज्जो उवचिणइ अणाइयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतार खिप्पामेव वीइव

यहमिआगलीसे धर्मकथाइंउ भग. जीवस्युंउपराजइ धर्मकथाइंकरीप्रवचनश्रीसिद्धांतनइं॥ प्रभावइपकासतइसिद्धांतनइंदी आगमीयाकालनि
हुनगरीइजाइ पादसिकरी वन पानिश्रीसिद्धांतनउप्रभावकजीवजेणी विषइंआस्वनीनिरंतर
सिद्धमास्वर २२

यइ २२ धम्मकहाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ धम्मकहाएणंपवयणंपभावेइ पवयणपभावएणंजीवे आगमेसस्सभद्द

॥ कारणिव
तीरमाद
घानकर
वर्तत
कोइकम्म
मारसेवइ
तिकारइ
धाइ ॥ २३ २

लाभजीवा॥
विहिज्जतो॥
बालजम्।
ति कर्म।

८३

तइकल्याणतेहपणिसहीत श्रुतसिद्धांतनी आराधनासम्यक्सेवनाइंकरी भगवन॥ श्रुतसिद्धांतनीआराधनाइंकरी॥ अज्ञानपणावी रागद्वेषरूपक्ले
एतलइअनकर्मबांधइ २३ जीवस्युंउपराजि ज्ञानपणुंमइ॥ ज्ञानाइंनाशकोस

त्ताएकम्मंनिबंधइ ॥२३॥ सुयस्सआराहणयाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ सुयस्सआराहणयाएणं अन्नाणंखवेइ नयसंकि

स्यकप्रकारि एकाग्रलउंआलंबनाजेहनिंतएका अविप्रायचित्तनइंस्थापनाइं एकाग्रमननइंचित्तनइंसन्निवेसनाइं अंतःकरणतेहनउंरं २४
क्लेशनपामिं २४ अकदीयइंएदवउंमननुतावलावचित्तनु भगवनजीवस्युंउपराजि उरूंपरकूतनाथइंजाइतेहचित्त॥ धिवउंकरइ

लिस्सइ २४ एगग्गमणसंनिवेसणयाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ एगग्गमणसंनिवेसणयाएणं चित्तनिरोहंकरेइ २५

हिंसादिकपंचआश्रवनीविरतिरूपसंजम संजमइंकरीपापनोआश्रवरहित॥ बारभेदेतपइंकरीभगवन॥ तपइंकरीवोदाणकहतांपूर्वलांजे पूर्वल्याक
मइंकरीभगवनजीवस्युंउपराजइ॥ पणउंउपराजइंएतलिनवाकर्मनबांधइ जीवस्युंउपराजइ॥ कर्मबांधातेहनिसप्रावइतपपावी मेलइंनिक
निसलुंनि मेलपणुंउपराजइ २६ रवइ

संजमेणंभंतेजीवेकिंफल संजमेणंअणण्हयत्तंजणयइ तवेणंभंतेकिंफले तवेणंवोदाणंजणयइ २६ वोदाणे

भगवनजीवस्युंउपराजइ कर्मनिर्जराइंकरीअक्रियकहेताचुपरति क्रियारहित॥ अर्थमाश्रितिक्रारप ज्ञानदर्शनइंकरी संसारमा अतिशय
क्रियानामयोगसंबंधानतेचोशलतउपराजइ पइतिक्रार॥ मोक्षपद बीजीवसंसारथीमुकाइ॥ सघामुकाइं सुशीतल
पबीसमस्त॥ चइ ॥ थाइ

णंभंतेजीवेकिंजणयइ वोदाणेणंअकिरियंजणयइ अकिरियाएभवित्ता तउपच्छासिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनि

कर्मरहित समस्तदुःखजन्मजरामर २७ सुखइच्छारअसुकतिघाश्वकानिवर्त्ता उत्सुकरहितपणि आगल्यानइंइच्छीउ अविमानर इहलोकादि
पणाथि णादिकनउंअतकरइ॥ वइनिराकुलपणिरहिवउंतेसुखसा टपीनसकइ॥ हितअंगारा ककार्यनिवि
अइवइ तातलिजीवभगवनस्युंउप राजइ टिकपमाना॥ वइ शोकनकरि

व्वाइ सव्वदुक्खाणमंतंकरेइ २७ सुहसाएणंअणुस्सुयत्तंजणयइ अणुस्सुएणंजीवे अणुकंपए अणुब्भडे विगयसो

समाअध्यवसायनोथलीकषायरहत २८ अप्रतिबद्धतानीरागपणि करीभगवनजीवस्युं नीरागपणिबाहिरल्याजसंगतेह उपरिरागर
चारित्रमोहनीयकर्मखपावइ॥ ॥उपराजइं॥ ॥हितपणउंउपराजइं॥

गे चरित्तमोहणिज्जंकम्मंखवेइ २८ अप्पडिबद्धयाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ अप्पडिबद्धयाएणंनिस्संगत्तंजणयइ

उतराध्ययनो ८४

तसंसारसंगरहितजीव एकलोरागरहित वलि धर्मकरवि ॥ एकाग्रपणि । अथवा बाह्यसंगरे अप्रतिबंधरहित नवकल्पीविहारइं करतो ॥ विचक्र चित्तकालइं मननाजडनि । परिमनअ शुलकरतउ विविक्त स्त्रीपसुपंडकरहितस्थानकसेवइ रव

विसंभगनगएणं जीवे एगग्गचित्ते दियाय राउ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ३१ विवि

विक्त करवीनउ आयतनआस नगवनजीवस्युं उपराजइ विविक्त सयनासनसेवनाइं करी चारित्रनागुप्तिकहतां जीवयुपबइं चारित्रनो रक्षा उपराजइ नतघातउपाअपसेवनाइ ॥

त्तसयणासणयाएणं भंते जीवे किं जणयइ विवित्तसयणासणयाएणं चरित्तगुत्तिं जणयइ चरित्तगुत्ते य णं जीवे वि

यहवउइंदचारित्र संयमनि विविक्तकांतरागीमोहनालावनि ॥ मोक्षनुअभिलाषइमइपणिपडिवजीनि विनिवर्तनाइं विषयथकी काया निवि विचिंचितातहनत्रपज्ञचरइ आग्रहि एतलि अष्टकर्मग्रंथी पणि निर्जरइ कहइ ३२ इइ निवर्तवइ देनगवनजीवस्युं

वित्ताहारे दढचरित्ते एगंतरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविहकम्मगंठिं निज्जरेइ ३२ विणियट्टणयाएणं भंते जीव

उपराजिं विषयथकी आत्मानिनिव निरुपणकरवापणि एतजइ इमजाणिजोमइंपाप पूर्वल्या बांध्या जइं कर्मतिहनी निर्जराइं तक्कहइतो निवारवनो जीवइस्याव इजेपाप कर्मतिहा । सर्वघातनिकिंकरवउं इम अप्रभु छेतिक ० धर्मध्यान तातपापकर्म नियतेइं कहतां वियसइ ॥

किं जणयइ विणियट्टणयाएणं पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ तओ प

तहचाउगतिसंसार अरवीतेह्नोपार ३३ एकमंडलइं साधुआहारादिकालवोतेसंसोगकहीइं तेमांतो संनोगपच्चक्खाणिकरी जेमांदते गपच्चक्खाणइ गीतार्थपणिं जिनकल्पादिकउधिंविहारपद असक्त तेतववउं ववां आलंबनकं उतरइं तेसंसारनी उतरइं ॥ वर्जितालिन ग व नजी वेस्युउं उपराजइ ॥ हिवतेकाहेव रा वइं ॥

च्छाचाउरंतं संसारकंतारं वीइवयइ ३३ संभोगपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ संभोगपच्चक्खाणेणं आलं

तरवापवि आजेबनमाखिव आयस्थितिकहतांमोह नइ अर्थइ थयो पोतानिपामइ आहारपाणीयादिकें जेसंतोषाइ । इहइनही । पार्थइनही निर्जरइं । जनिंपदकाजेबनामन वचन कायाना योग जइं ॥ परनालाननइंनकहइनहीं वस्तुमुफनि होंकांबइनहीं इहुं होतेवस्तु । एवस्क मुक्त नोसूहा । नइ छति

बणाइं खवेइ निरालंबणस्स य आययट्ठिया जोगा भवंति सएणं लाभेणं संतुस्सइ परलाभं नो आसाएइ नो पीहेइ नो पच्छेइ

अभिलाषपणिन करइइसिलाषते वस्कनेंजेदौमनउंचें परनालाननि आसाविषय नउ । तर्कनइंअण करतउ ॥ इहानिअण करतउ ॥ अभिलाषनिअणकरतउ बी जी

नोअभिलसइ परस्सलाभं अणासाएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसमाणे दु

जेसुषनिस्यातेह ॥ विचरइउवर्त्तइ जेहवीवाणगमा उपधिमुहपत्ती विनाजेउपधि नगवनजीवस्युं उपराजइ उपधिनइंपच्चक्खाणइकरी तेपलिमंथ अंगीकारकरानि ॥ हिवोजी इ तेहवी । ३४ तिहनइपच्चक्खाणइंकरी सज्झायकरवानउवाघात ॥ [illegible]

च्चसुहसिज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ३४ उवहिपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमं

रहिततेअपलि उपधिरहितथिकउ जीववस्त्रादिक ॥ उपधिविनातपाणी कहीइ इक्केसनपांमिं सदोषआहारनइं पच्चक्खाणिकरी नगवनजीवस्युं उप मंथउपराजइं ॥ नीइवांइरहीतथिको जीव ॥ ३५ राजइ ।

थंजणयइ निरुवहिएणं जीवे निक्कंखे उवहिमंतरेण य न संकिलिस्सइ ३५ आहारपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं ज

सदोषआसनादिकच्यारप्रकारना । जीवतव्यनी आस्याइ निजाणी तेहनो जे प्रयोग जीवतव्यनाअभिलाषनतउं करिवउं ॥ जीवआहारादिक दोषइनम ॥ हारनइ पच्चक्खाणइं करी जीव ॥ नकरिवउंतेहछेदइनिवारइ एतलि जीव तिवेदीनइंनिवारीनइ त्यजउ आहारविनाअति आर्त्तध्यानइं ॥ तव्यनउअभिलाषनिनिवारइ ॥

णयइ आहारपच्चक्खाणेणं जीवियासंसप्पओगं वोच्छिंदइ जीवियासंसप्पओगं वोच्छिंदित्ता जीवे आहारमंतरेणं न कि

लेशमन ३६ कषायनातेहधातहनइंपच्चक्खाणइकरी नगवनजीव कषायनइपच्चक्खाणइंकरी वीतरागदेषरहित तपणउवीत रागदेषर पामइं ॥ ॥स्युंउपराजइ॥ ॥रागपणउंउपराजइं॥ हितपणउं वी तरा

लिस्सइ ३६ कसायपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ कसायपच्चक्खाणेणं वीयरागभावं जणयइ वीयरा

गपणउं पडवज्योलइजीव जीववीतरागपणउं लावाजणइ ३७ योगपच्चक्खाणइं कहेतां मनवचनकायानाव्यापार योगतिपचरवाणेकरीनि यहवउजीवसमसमानवइसुष तिहनइपच्चक्खाणइं करी नगवनजीवस्युं उपराजइं इ दुःखसमानजेहनइं एहवउंजइ

गभावपडिवन्नेविय णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ ३७ जोगपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ जोगपच्चक्खाणेणं

८४

उपटबु
५५

अजोगी पणं भंते उपराजे अजोगी चउदमइ गुणठाणे वर्त्ते जीव नवा कर्म ज्ञानावरणी आदिक न बांधइ नवा पूर्वइं बांध्या ते क्षय करइ वेदनी आयुकर्म नामकर्म तेह पावइ ७२ सरीरनिपच्चक्खाणइं करी शरीरत्यागइ समोल्ले त्रपानइ विषइ

अजोगत्तं जणयइ अजोगी य णं जीवे नवं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं निज्जरेइ ७२ सरीरपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जण

सरीर निपच्चक्खाणइं करी सिद्धना अतिशय गुण ॥ सिद्धनो एकत्रीसगुण ॥ तत्र जीव लोकनइ अग्रि ते लोकाग्र पद प्रति पोहता मोक्ष करी सुखी थाइ

यइ सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तं निव्वत्तेइ सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही

सहायपच्चक्खाणइं करी एकलो थाइ एकीभावे रहे जीव

भवइ ७३ सहायपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ सहायपच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ एगीभावभूए य जी

अल्पकषायादि अल्पकलह अल्पतुमंतुमे संजम संवर आश्रवनिरोध समाधि

वे एगग्गं भावेमाणे अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्पकसाए अप्पकलहे अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समा २

ज्ञानदर्शनचारित्रनी समाधिवंत हुइ ७४ भत्तपच्चक्खाणइं करी भवनइ प्रच्चक्खाणइं करी

हिए यावि भवइ ७४ भत्तपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ भत्तपच्चक्खाणेणं अणेगाइं भवसयाइं निरुंभइ ७५ स

सद्भावपच्चक्खाणइं करी अणियट्टि शुक्लध्याननो चोथो पायो अणगार साधु

ब्भावपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ सब्भावपच्चक्खाणेणं अणियट्टिं जणयइ अणियट्टिपडिवन्ने य अणगारे ५५

केवलीनइ कर्मनाअंश खपावइ तेह कहइं वेदनीकर्म आउखुंकर्म नामकर्म गोत्रकर्म तिवारपछी सिद्ध थाइ बुझइ कर्मथी मुकाइ

चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ तं जहा वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ स

७६ प्रति कहतां स्थिवरकल्पीनइं सरिखुं रूप करतां लाघव हलवापणुं उपराजइ

व्वदुक्खाणमंतं करेइ ७६ पडिरूवयाए णं भंते जीवे किं जणयइ पडिरूवयाए णं लाघवियं जणयइ लहुभूए

स्थिवरकल्पादिकना वेषनी लिंगइ सहित जीव सुमति सहित पृथ्वीकायादिक सर्वप्राणी जीवनइं विषइ विश्वास योग्य

णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्ज

रूप जे मोटा अल्प पडिलेहणा जीत्यां इंद्रिय घणा प्रकारना तप सहित ७७ आहारादिकनी वेयावच्च देवगुरुनी वेयावच्च करी जीव उपराजइ

रूवे अप्पडिलेहे जिइंदिए विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ ७७ वेयावच्चेणं भंते जीवे किं जणयइ

७८ ज्ञानादिक सर्वगुण संपूर्ण

वेयावच्चेणं तित्थयरनामगोयं कम्मं निबंधइ ७८ सव्वगुणसंपन्नयाए णं भंते जीवे किं जणयइ सव्वगुणसंपन्न

पणइं वलीपाछो आवितव्यनथी मोक्षस्थान पामइ जीव शरीरादिकना दुःख भागी न थाइ पणइं

याए णं अपुणरावत्तिं जणयइ अपुणरावत्तिपत्तए य णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ७९ वीय

त वीतरागपणं ते त वीतरागपणं ते नेह॥ वीतरागपणि करी स्नेहरागनो कर्मनुं बंधवुं द्रव्यादिकनी तृष्णा वांछा ते तृष्णा॥ मनोज्ञ ला व
करी लगवन जीव स्युं उपराजइं॥ शब्दादिकनइ विषि मन ते बंध व ते ते वि छेदइ॥ तेलामननइ
उयरझो॥ रागयाएणं भंते जीवे किं जणयइ वीयरागयाएणं नेहाणुबंधणाणि य तण्हाणुबंधणाणि य वोछिंदइ मणुन्नामणु
५६ रूचलो वाजिआदिक। रसती धारूप सुंदरादि इमाई करी लगवन जीव स्युं उपराजइं इमाइं करी कदर्थ चित्त कोई मारे ४६ मुक्तिक
ज्ञेताष्ट फरिसडमुक कर्णसुगंधादिक ४५ तेहआवइतु हरी मद्गलजाणइ दंतानि
मा ल तेहनिति षइ राग आणि अ. ण या सइ जो स
न्नेसु सद्द फरिस रूव गंधसु विरज्जइ ४५ खंतीएणं भंते जीवे किं जणयइ खंतीएणं परीसहे जिणइ ४६ मुत्तीए
पणि करी लगवन जीव स्युं उपराजे निर्लोभपणि अकिंचनकह्यो द्रव्यरहित अपरिग्रह अर्थ कहेता द्रव्यते हना लोभीया अप्रार्थनीय कइं
इ व्यरहितपणं ते कमराजइ॥ पणो ते करव ते जीव॥ ते रूप चोरी जूआरी प्रमुख ते हनइं पनलइनिद्रव्यनि
तह चोरा दिक
णं भंते जीवे किं जणयइ मुत्तीएणं अकिंचणं जणयइ अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाणं पुरिसाणं अपत्थणि
पणि मन वचन काया सरलपणइ मायानइ लगवन जीव स्युं ते सरलपणइं करी कायाशरीर नुं सरल॥ लावविकारादिक अणचिंतवे व उमन
इ करी प्राईइ नहीं यो निवारइ अवसरपणइं ॥ ऊपराजइ॥ पणि कलमादिक रहीत पणेइ समनमां॥ तुंसरलपणें ते लावइ करी लावइ लाषा
वइ नहीं ४७ हिं॥ नइचार . उत्पात उ॥
ज्जे भवई ४७ अज्जवयाएणं भंते जीवे किं जणयइ अज्जवयाएणं काउज्जुययं लावुज्जुययं लासुज्जुययं अ
सरलपणं ते परजीवनइ वेतरवुं कायाइं अनावनं ते ला ष वं ते लोगव जीव आगलि निर्मल हीयानउ धर्मनी वीतराग मार्दवपणि करी अतिमानरा जविन
यणाइं करवी ते लिकरीरहित व बांनुं अविसंवाद सरलपणं कंपि नाधर्म नो आराधक थाइ इहो तथा आगलि ४८ मणत्ह लावकरइ करवइ लग वन
एहनइ अविसं. वादनइ उपराजइ पनि ह थकउ॥ इलवइ धर्म नउ सुलल करइ
विसंवायणं जणयइ अविसंवायणसंपन्नेयणं जीवे धम्मस्स आराहए हवइ ४८ मद्दवयाएणं भंते जीवे किं
जीव स्युं मार्दवपलि सुकमालपणि अनुसुकपणं ते आणउक अनुसुकपणि जीव ८ इ इ द्रव्य लाव थकी मन वचन नुं मार्दव कोमल
उपराजइ। जीव कारपणं ते उपराजइ वसुकमालपणं ते थको जा
ति कुल
जणयइ मद्दवयाएणं जीवे अणुस्सियत्तं जणयइ अणुस्सियत्तेणं जीवे मद्दवयाएणं मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठम ५६

रूप बल श्रुत लाभ ऐश्वर्य अठवइं अभ्यंतर आत्मा अमत्यपणा रहितपणे लावनी विसोधि वर्त्ते प्रवर्त्तते जीव लावं ना विसोधइं
गईमद स्थानक तेहनो ने पानक विलावसा चिकरी लगवन जीव स्युं ऊपराजइ।
वकीव डा यत्न
याण्णाइं निट्ठवेइ ४९ लावसच्चेणं भंते जीवे किं जणयइ लावसच्चेणं लावविसोहिं जणयइ लावविसोहीए
प्रवर्त्तते जीव अरिहंतनउं लाष्यो जे धर्म आराध आराधवानइ अभ्युठइ उवइं अरिहंतनाषित आ श्रुतधर्म चारित्र तहनि आराधवानइं
वानइ अर्थइं प्रवर्त्तइ॥ अर्थइ उ प्रवर्त्तीनइ
वट्टमाणे जीवे अरिहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठइ अरिहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाएणं
अभ्युठिताउ इम लोकना परलाव मा धर्मनउ आराधक थाइ करण सत्य कहतां पडिलेहणादिक जीव क्रिया सत्य इ करी क्रिया करवानो समर्थ
हे ऊठीनइ परलव रूमी गति पुद च इ धर्मसो हिलो पांमे ५० क्रियानि विधि सत्य तेणि लगवन जीव स्युं उपराजे ईपणं ते उपराजइ॥
अब्भुट्ठित्ता परलोगधम्मस्स आराहए हवइ ५० करणसच्चेणं भंते जीवे किं जणयइ करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ
क्रीया सत्य इ ॥ जिहवं मुखि वदइ बोलि ते हवउ जकाया इं करी क्रीयानु मन वचन काया ना योग निं साचवं ते करी॥ जिहवउ योग सत्य इ
प्रवर्त्तउ जीव ज्ञानादिक निं विधिं प्रवर्त्तते उ जीव यद्दव व ज करइ ५१ लगवन जीव स्युं ऊपराजइ मन वचन काया नो जोग
करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि हवइ ५१ जोगसच्चेणं भंते जीवे किं जणयइ जोगसच्चेणं जो
निं विधिं निर्मल ५२ अशुलपदार्थ थकी मन निं गोपवइ सं वरइ लगा मनोगुप्त मन गोपवइ करी जीव एकाग्रपणं ते कहेता धर्मनइ विषइं एकाग्रपणुं
पणं ते करइ॥ ॥ वन जीव स्युं ऊपराजि॥ उपराजि धर्म निं विधिं पवन उ चित्ति जीव पाहूया
गं विसोहेइ ५२ मणगुत्तयाएणं भंते जीवे किं जणयइ मणगुत्तयाएणं जीवे एगग्गं जणयइ एगग्गचित्तेणं जीवे
ऽ धर्म साधक॥ सतरले दसं यमनु आरा ५३ अशुल वचन गोपवि इ लगवन जीव स्युं उपराजइ। ... अशुल थकी वचननइ गोपवइ विक
की गोपवउ मन धक प्रतिपालक जाणइ थानक थारूपविकार ते णि करी रहितपणं ते उपराजइ।
नजोलिंग हवउं थको॥
मणगुत्ते संजमआराहए हवइ ५३ वइगुत्तयाएणं भंते जीवे किं जणयइ वइगुत्तयाएणं भंते जीवे किं जणयाइ

॥उपटबु
८१

विकषादिकविकाररहित जीव गोपवत्र वइ वचनाजलिएद वर्त्तइ कं अध्यात्मजमनयोग ध्यानादिकतेहनाजेसा धन एकाग्रपणांते त्यिं करी सहित जयइ ५४ अश्रवक र्मबंधकी

ई वइगुत्तयाएणं निव्विकारं जणयइ निव्विकारेणं जीवे वईगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि भवइ ५४ कायगु

कायाशरीरनिगोपविसंवरइ आदा॥ अश्रवकी कायानाजोगप्रवृत्तिरूप आमन॥ संवरइं करी गुप्त वइ कायाजदनीवर्त्त बंधकतेवलीरंदिसा नगवनजीवस्यतंउपराजइ॥ वचनकायानाजोगरूधवारूपसंवरउपराजेंद्रिकजेपापआविवानांमतेद्वनुनिरोधकरइंसंधिवजंसमां चारि

त्तयाएणं भंते जीवे किं जणयइ कायगुत्तयाएणं संवरं जणयइ संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ५५

मननइसम्यकप्रकारइंमर्यादासहीत कहीयइंतमनसमाधारणाइं जिनमार्गइमर्यादाइं धर्मनइविषइएका चपलचपलनइमतिज्ञानादिकअंत सिद्धातनिमार्गइथापीनेमनसमाधारण करीजीवस्यंउपराजइ मिध्यांतो मनथापवाइकरी। प्रयगुंउपराजइ॥ ज्ञानादिकनापर्यायजोंलिंउपराजि

मणसमाहारणयाएणं भंते जीवे किं जणयइ मणसमाहारणयाएणं एगग्गं जणयइ नाणदंसणपज्जवे जणय

ग्रहवंउज्ञाननापर्यायउपराजीनि निर्मलजेवचनती। अतत्त्वरुचिजमिथ्यात्व ५६ सिद्धांतनामार्गइमर्यादासहीतरूपिपरिवचनथापाइं रुचिरूपसम्यक्तनि तेहनइ निर्जरइ खपावइ तवचनसमाधारणकहीअइंतिवचनसमाधारणि नगवनजीवस्यं उपराजइ॥ त्वाधक रइ

इ नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ ५६ वइसमाहारणयाएणं भंते जीवे किं जणय

वचननीसमाधारणाइवचन दर्दर्शनसम्यक्तनाजेपर्यायतेहातहनइं॥ वचननइसाधारणिपलावलावचनिकद्धवायोग॥ पर्यायवि साधारणि वचनेनिकद्धवायो विशोधइ निर्मलकरइ रहवानजपदार्थतवचनसमाधारणअनइदर्शनसम्यक्ता सोधइ ग्यपदाईंजनइ॥ ना निर्मल

इ वइसमाहारणयाएणं वइसमाहारदंसणपज्जवे विसोहेइ वइसमाहारदंसणपज्जवे विसोहेइ सुलहबो

करइ करीनइ अर्थइदिकनइं असारिंसंसारकाटालिवा सुलनपणाकव संयमयोगनिविषिरूपपरिकायानिप्रवर्त्ताववुंतेकायानं॥ संयमयोगनि परनवइधर्मलाभिलुपामितमुलनबोधपणंउपराजइंधर्मनुनै ५७ समाधारणकहीयइतिनगवनजीवस्यंउपराजइ विषइं॥

बोहियत्तं निव्वत्तेइ दुल्लहबोहियत्तं निज्जरेइ ५७ कायसमाहारणयाएणं भंते जीवे किं जणयइ कायसमाहा र

=दोहिलुंपामिवुंतेह लहबोधकहीयइतेनखपावइं=३१

कायाप्र॰ चारित्रजपर्यायतेदकायोपशमि चारित्रनापर्यायतेदसर्वविशो यथाख्यातचारित्रनिर्मलकरइइहांसंकायो आरजेकेवलीसंबधीआक वर्त्तावइं कादिकतेविशोधिनिर्मलकरइ धीतइंनिर्मलिकरइकरीनइ॥ यथाख्यातचारित्रअगकेतोनिर्मलकरितेहा मनाअणावदनीय आयु उत्तमसर्वघाउज्ञातनो उन प नि नथा= रना मक म

रणयाए जीवे चरित्तपज्जवे विसोहेइ चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खायचरित्तं विसोहित्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे

मधुतेथ तत्वनोज्ञान कर्मथकी तत्वनो कर्मथ कषायनिवारीनि सर्वजाइरवपावइकर्मतेहनइ ५८ अनतज्ञाननइसंयमसहितपणिनगवनजीवस्यं पावइं॥ साइनिकारव= सुकावइ जाणा कामू। रादउमाइं॥ अनकरइंमोक्षइंजाइ॥ जीसीश्चइंसक थाइ्। काइ।

खवेइ तओपच्छा सिज्झई बुज्झइ मुच्चई परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमंतं करेति ५८ नाणसंपन्नयाएणं भंते जीवे किं

उपराजइ अनतज्ञाननइंसहितपणिजीवसर्वनावजीवाजीवातत्वतेहनुइलि ज्ञाननइंकरीसहितजीवआरयणि। विणसइनहीविनासनपामइंविशेषइं गमजाणपणांतंउपराजइ रूपाजासंसारकंतारइटवीतेहमांहि। मोक्षथकी विगजउपाइंतेदअपरिसइतह॥ ॥ जतक दइव श

जणयइ नाणसंपन्नयाएणं जीवे सव्वभावाहिगमं जणइ नाणसंपन्नेणं जीवे चाउरंतसंसारकंतारे न विणस्सई

जिमसूईसूत्रइंसहितदोरसहितअनइंकचरा। तिमजीवापणिसूत्रइंसहि संसारनेविषइविणसइ ज्ञानअवधिज्ञानादिकअनइविनयतपचारि दिकमांहिपडिनहींविणसइंनहीजाइनहीं तअनतज्ञाननइंकरीसहित॥ नहीकिस्याइकइनीक त्रजेयोगव्यापारतेहसम्यक्प्रकारिसवमइम जीम्मा सजाइ॥

जहा सूई ससुत्ता पडियावि न विणस्सई तहा जीवो ससुत्तो संसारे न विणस्सइ नाणविणयतवचरित्तजोगे संप

पामिम परसमयइ परशास्त्रनां वात्रतिदं विज्ञ संघातपणाकहेंतामिल पत्य ज्ञायोपज्ञमसम्यक्तसहितपणिनगवनजीवस्यंउपराजइं ज्ञायोपशमसम्य मयाश्री रहजोलितहमांहिप्रधानपुरुषपणि वादीमयकइंपतलिवंमित क्तसहितपणिन सिद्धात मांहिंगणिवाटी पजाइ संसारनउछेद

उणई ससमयपरसमयविसारए असंघायणिज्जे भवइ ५९ दंसणसंपन्नयाएणं भंते जीवे किं जणयइ दंसणसं

कारणजुमिथ्यात्वतहनउछेदनकरइएतलिं। ज्ञानदर्शनचारित्रनाप्रकाशनिनोविशेषकरतो। ज्ञायकप्रधानजोज्ञानदर्शनतेह जोपनउपसमयउपसंतल ज्ञायोपज्ञमपामइंपरंकहतांनिस्चयबी नउल्हवइंतेज्ञानदर्शनचारित्रादिकप्रकाशनइअ नउसंघातिआपणुआत्मासंयोजइ उपयोगउवज्ञावइसंयुत लतेज्ञावत जो प्रकारइंआ आपइं

ण्णयाएणं भवमिच्छत्तछेयणं करेइ परं न विज्झाइ परं अविज्झायमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमा

॥लाईमा धइ=३२

“वचनसम स्तारइउस आवकरइ मज्ञायकर उइवलोपो गत्रुअनाम करइंने कनयनइ जीणवइस कादिकादा घालिवांसिम मज्ञकिजो धइ=३३

८१

“यथाख्या तचारित्रमो हनीयकरी मरइउत्तन थाइ=३१

MEMORIAL

उत्तरा० ८८

आत्मावसिकरउविचरिकेवलीथको ६० यथाख्यातचारित्रि भगवनजीवस्यउंऊपराजाइं चारित्रइंसंपन्नमहितप्रणि ओलपर्वततेहवुदृढइवा ऊरामरूपर्वतलीह ना कीर्त्ति निश्चलपणेहवुसेलेसीभाव
संयन्तमहितपणि

णो सम्मंभावेमाणेविहरइ ६० चरित्तसंपन्नयाएणं भंतेजीवेकिंजणयइ चरित्तसंपन्नयाएणं सेलेसीभावंजणयइ
उपराजिं। सेलेसीकरणेपुहचउअणगारसाधुथ्या तिहारपछीसघलोइकर्मयपाविमयाबोनि तिहारपछीसिझइ कर्मथीमुकाइं कषायअग्नितउहवइ
सिद्धनीप। राजाकेवलीसंबंधीयाकर्मनाअंशनावि शीतलथाइं
रिनिजलो इना१२यारनाम इगोत्रकर्मधनेषपावइ॥

६१. सेलेसीपडिवन्नेयअणगारे चत्तारिकेवलिकम्मंसाखवेइ तउपच्छासिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ स
सघलोंदुखयापतेहनोअंतकरइं॥ आश्रादिकनाविषयनिंविशिष्टवर्त्ततावकालेदखवनि श्रोतेंद्रीयकानतइनिग्रहइंक। रागद्वेषतेनिग्रहनिवा पाहूया
६१ केतोरावइएतहतइंश्रोतेंद्रीयनुनिग्रहकरीइंतेश्रोतेंद्री रीमनोज्ञतलाशब्दादिकअमनो। रवउंअपराजइएतलि उपरि
निग्रहइकरोवि भगवनजीवस्यउंउ पराजइ॥ अमनाहूउंशब्द रानविषइं॥ रूजीउपररागन धरइं।

वइस्काणमंतंकरेइ ६२ सोइंदियनिग्गहेणंभंतेजीवेकिंजणयइ सोइंदियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु
द्वेषनधरइरागद्वेषजीपीनइ तरागद्वेषनइनिमित्तजेकर्मतेहनबांधि पूर्वइजेरागद्वेषनइंयोगे ६२ रूपथकीचक्षुरिंद्रीयनइनिग्रहेनगवनजीवस्युंउंउप
कर्मबांधिउंतेनेनिर्झरिइं॥

रागदोसनिग्गहंजणयइ तप्पच्चइयंकम्मंनिबंधइ पुव्वबद्धंचनिज्जरइ ६३ चक्खिंदियनिग्गहेणंभंतेजीवेकिंज
राजइ चक्षुरिंद्रीयनइनिग्रहइंसुरूपाअरूपाहूयानि एतलिसुरूपकुरूपउपरिरागनइद्वेषहूयाउपरिद्वेषनकरी तेरागद्वेषनिमित्तजेकर्मातनबांधि पुर्वइबांध्याकर्मइंत
विविधरागद्वेषनोनिग्रहइजजीपवउंकरइ।

णयइ चक्खिंदियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसुरूवेसु रागदोसनिग्गहंजणयइ तप्पच्चइयंकम्मंनिबंधइ पुव्वबद्धंचनिज्ज
निर्झरइ॥ गंधथकीघ्राणेंद्रीयनासिकानिनिग्रहिंभगवनजीवस्युंउंउपराजिं घ्राणेंद्रीयनिग्रहिजीवपवइ सुगंधाहूयागंधनइविषइ जेरागद्वेषतेहउपरिनिग्रह
६३ जीवपवउंएतलिसुरुगंधउपरिरागनकरइं दुगन्धयागंधउपरिद्वेषनकरइ॥

रइ ६४ घाणिंदियनिग्गहेणंभंतेजीवेकिंजणयइ घाणिंदियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसुगंधेसु रागदोसनिग्गहंजणय

९९

तरागद्वेषनिमित्तजेकर्मतेनबांधि पूर्वइंजेरागद्वेषनिंयोगइं ६४ रसथकीजिह्वेंद्रीयनइनिग्रहिंकरीभगवनजीवस्युंउपराजिं जीह्वेंद्रीयनइनिग्र
कर्मबांधिउवइतेनिर्झरइ हइजीवपवइसुरुपाहू

इ तप्पच्चइयंकम्मंनबंधइ पुव्वबद्धंचनिज्जरइ ६५ जिब्भिंदियनिग्गहेणंभंतेजीवेकिंजणयइ जिब्भिंदियनिग्ग
यारसनिंविषिंरागद्वेषनिजीपिवउंउपराजइएतलिसुरूरसउपरि तेरागद्वेषनिमित्तवत्ययजेकर्मते पूर्वइंरागद्वेषनिंयोगइकर्म ६५ स्पर्शेंद्री
रागनकरइं दुहूयारसनइविषइद्वेषनकरइं॥ नबांधइं॥ बांधिउंतेनिर्जरइसपावइं

हेणंमणुन्नामणुन्नेसुरसेसु रागदोसंनिग्गहंजणयइ तप्पच्चइयंकम्मंनिबंधइ पुव्वबद्धंचनिज्जरइ ६५ फासिंदि
यनिग्रहइभगवनजीवस्युंउंउपराजइकर्म सुकमाअहूयाफरसनिविषिरागद्वेषनुनिग्रहजीपवुंकरइएतलइ। दुहूयाफरसउपरिद्वेषनकरि तराग
स्पर्शेंद्रीयनिनिग्रहइजीव प्राणी॥ सुरूपफरिफरसनिविषइरागनधरइ रागद्वेषनइंजीपीनइंपवउइ द्वेषनि

यनिग्गहेणंभंतेजीवेकिंजणयइ फासिंदियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसुफासेसु रागदोसनिग्गहंजणयइ तप्प
मित्तवउवयजेकर्मतेनबांधि पूर्वइंबांध्यांतकर्म ६६ क्रोधरीसनिविषइजीपविभगवनजीवस्युंउपराजि क्रोधनिजीपविक्षमाऊपार्जइं॥
निर्झरइंसपावइ

च्चइयंकम्मंनिबंधइ पुव्वबद्धंचनिज्जरइ ६६ कोहविजएणंभंतेजीवेकिंजणयइ कोहविजएणंखंतिंजणयइ
क्रोधनिउदयइंवेदनीयातक्रोधवेदनीय पूर्वइंजकर्मक्रोधइकरीकर्म॥ अभिमाननइंजीपविं जीवस्युंउपराजइं॥ अभिमाननिंजीपवि
कर्मनउनवउंबंधनपामइ बांध्याजइंतेनिर्जरइंसपावि ६७ वसिकरवइंभगवन॥ मार्दवसंक
मालपणउऊपराजइं

त्ति कोहवेयणिज्जंकम्मंनबंधइ पुव्वबद्धंचनिज्जरइ ६७ माणविजएणंभंते जीवेकिंजणयइ माणविजएणं
एतलिअभिमानिजीप॥अभिमानइकरीजेकर्मवेदनीइंतेवेद जेकर्मपूर्वइंबांधिउजइ। मायानिजीपवइभगवनजीवस्युंऊपराजइ॥
वइनमाणिसावउ॥ नीयकर्मनवोनबांधिंअभिमाननिंयोगि तनिर्झरइंसपावइं॥ ६८
दरइ॥

मद्दवंजणयइ माणवेयणिज्जंकम्मंनिबंधइ पुव्वबद्धंचनिज्जरइ ६८ मायाविजएणंभंतेजीवेकिंजणयइ

॥उत्तराध्य
२५५

परवेचना जीवइ रूजु भाव आरलपणउं ५॥ मायानि यो गइ करी वेदनीयइते माया पूर्वइं मायानइं योगइं कर्म ७० लोभ हणइं जीव नइं व सि
नडाइ कहि ज भाव परिहरइ॥ वेदनीयकर्म नु बांधन करइ॥ बांधिउं तनि झरइं षपावइ करइ भगवन

मायाविजएणं उज्जुभावं जणयइ मायावेयणिज्जं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ७० लोभविजएणं भंते

जीव स्यउं उपराजइ लोभइं निजीप विसंतोषनउं भाव उपराजइं लोभइ करी कर्मनउं वेदिव उं ते लोभ वेद पूर्वइं बांधिउं जे लोभक कर्म षपावइ
संतोष आणइ असंतोष परिहरइ। नीयकर्म न बांधइ कर्मनउं बंधन पामइं॥ ७१

जीवे किं जणयइ लोभविजएणं संतोसीभावं जणयइ लोभवेयणिज्जं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ७१ पि

प्रेमराग द्वेषरीस मिथ्यात्व सत्यतत्त्व समस्यादिक विपरीत मति रागद्वेष मिथ्यात्व दर्शन इ जीव इ तेप्रमाद नइं निमित्त इं विराधना करइ तेन
पइनि जीवइं भगवन जीव स्यउं उपराजइ॥ ते मिथ्यात्वादिक ज्ञान दर्शन सम्यक्त्व विरति
रूप चारित्र॥

ज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भंते जीवे किं जणयइ पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं नाणदंसणचरित्ताराहणयाए

तेह आराधनानि अर्थइं उद्यम सावधान कर्मगांठि घातीया कर्मनु जाल॥ तेह मा दइ प्रथम पहिलुं जिम आनुपूर्व्वी १६ कषाय नव नोकषाय त्रमोहनी दर्शन चारि
जइ आठ प्रकारनां जे कर्म तेह मांहिं॥ मुकाविवानि कारणिमा वधानपणइं॥ वीइं अनुक्रमइ॥ २८ प्रकार मोहनीय कर्म उग्घाइय

अब्भुट्ठेइ अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगंठीविमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं क

क्षयकरइ॥ पांच प्रकार ज्ञान नउं आवरण मति नव प्रकार दर्शनावरणीय पांच प्रकार अंतराय॥ ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय अंतराय
च तोघणकी॥ श्रुत अवधि मन पर्यव केवल दर्शनादिक दानांतराया दिक॥ ए त्रण्य समकालइं क्षयक

म्मं उग्घाएइ पंचविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दंसणावरणिज्जं पंचविहमंतरायं एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खव

करि॥ तिवार पछी तेह थकी अनुत्तर अनंत नहीं जेहनउ अंत सकल वस्तु नउ ग्राहक आवरण रहित लोकनां स्वरूप नउं प्रकाश केवल ज्ञान
चढ्यो॥ अनंत रूपनां जेह अवधानादिक अनावरण नाम इं॥ तेह समस्त आलोक करतउं लोकालोक प्रकाशक धारइ तायक वरप्रधान
बकउ कालिमा॥ ते ज्ञानी अपरइ

इ तओ पच्छा अणुत्तरं अणंतं कसिणं पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावगं केवलवरनाण ८८

एह वडं केवल ज्ञान नइं॥ जिहां लगि सयोगी कहइ तिहां लगि इरियावहीया क्रीयानुं बंधपणिं परे॥ आत्मानि प्रदेशि सुखकारी स्पर्श॥ पहिलइ समइं बांधि उ फरस्या
केवल दर्शन उपराजइं॥ नवचन काया ना योग सहित तेह निमात्र अव कर्म बांधवा नो संपराय क्रियानु॥ उदइ आवइं बे समय नी थितइं देनीत ॥ तणी॥
उत्पन्न थकी जइ पामइ प्रवर्त्तइं बंधन थइ इरीयावहि ना लेहक मैं बंधइ ॥ कहीयइ छइ॥

दंसणं समुप्पाडेइ जाव सजोगी भवइ ताव इरियावहियं कम्मं बंधइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं तं पढमसमए बद्धं

बीजइ समयइ वेद्युं करहि बीजइं समय ते कर्म जरि उ बध्यो तेजीव प्रदेस इं बांधि उं फरस्युं उ आ काल अवलु उदी आगामिक कालि व उ बीसमयादिक नि ७२ एतला
उ कालि ते निर्वेद्य अत्मा॥ अतएतला उ प्ररांतक काष्ठ वेतालें रि उं उदय आवणउं ते परं उदीरणा नहीं वेद्युं ते फल निर्जिउं कर्म रहित ते द्वीतीय भाग इं॥ उमेतरि
अबकाय इक री॥ बंधकइ पर के केवली तिन उदय हि॥ अनुभवउं सुकमालस्वर उप लिउं॥ केवली

बिइयसमए वेइयं तइयसमए निज्जिण्णं तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयाले य अकम्मं चावि भवइ ७२ अ

ज्ञान पाम्या अनंतर अंतर्म वेदन रहित ते मरु हुतई विशेष॥ मन वचन काया ना योग तेह सूक्ष्म क्रीया निरोध लेगइ बइ ठ वजी जिहां पडिवाउ न थी तेह ध्यान करतउ की
हूर्तआदि देयि कूकोहि थाकतो थिं आउषं जेदनउ तेहवो नो निरोध रुंधवुं करउ थकी पावउं वलवउं न थी ते अप्रतिपाती उं एह बीउं सुक्ल ध्यान नो त्रीजो भेद
पूर्वआउ षउं पालीन इ॥ लो॥

हाउयं पालइत्ता अंतोमुहुत्तावसेसाउए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्झाणं झायमाणे त

तेह ध्यान ध्याता थको ति हां प्रथम पहिलउं तेने॥ मन तु योग व्यापार रुंधी सब पर्याप्ता बेंद्री या नीजा घन्य योग॥ काय योग थकी थोडइ कां तेकाया तु योग व्यापार
मन नु योग व्यापार विस्तार वउं तेह रुंधि सुं वरि॥ ॥ रीनइ॥ थी थो डउ वचन तु योग व्यापार ते॥ या तु योग व्यापार रुंधइ॥ अति मंद सू सर्वथा सव
हउं रुंधवउं करइ ते वचन योग व्यापा ॥ रीनइं॥

प्पढमयाए मणजोगं निरुंभइ मणजोगं निरुंभित्ता वइजोगं निरुंभित्ता कायजोगं निरुंभइ कायजोगं निरुंभि

पछि आण पाण क हतां सासोस्वा तेसासोस्वास नउं रुंधिवउं सर्वथा वाणि॥ ईषत थोडउ प्रयास करि उ पच हस्व अक्षर अणगार अतिशय सुं छेदाणी
सन उं रुंधिवउं संवरवउं करइ॥ करी न इं एतलि सर्वथा काया इं रुंधी नि वाचंच स्वाक्षर अ इ उ ऋ लृ एवच चारीत्रउं जइ क्रीया जेहनी॥
रे तोजा तली व लाणइं॥

त्ता आणपाणनिरोहं करेइ आणपाणनिरोहं करित्ता ईसिं पंचरहस्सक्खरुच्चारद्धाए य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरियं

उडइ ध्यान कंप की पाछउं वलिवउं न थी ते अनि॥ वेदनीय आयुकर्म २ नामं गोत्र का एच्यार इं कर्म ना जा अस कि वलि समबंधीया॥ ७३ ते वेदनीया
याहि शुक्ल ध्यान क हो इ थलेद तेह ध्याय तो थ कां॥ या कर्म १ कर्म ३ कर्म ४ एह घातीया धक र्मकहीइं ते युगपत सा थें षपावि दिकं ४ कर्म

अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ७३ तओ ओरा

तेहरीया वहीकदा इ: ७१

रसर्वथा रुंधी नइं

॥उ०टबो ९७

रूपपाछ्याअनंतरकर्मवारिकातेजसरू कार्मणशरीरछांडइसघजाइंछ॥ विशेषइंकरीबांधिवा नापकारातणीछइ॥ विशेषपकीबांधनिं समीनेआकाशनी श्रेणिपंक्तिनिलागु ऊर्ध्व थइ ॥ मोक्षिजातांतेजे आकाशा अदेशनीअवगाहनाथि गतिनइंअणकरतइ उद्ग्रहकहतांवांको तेह मोक्ष

लियकम्माइं च सव्वाणि वि विप्पजहणाइं विप्पजहइत्ता उड्ढं मेहीयंते अप्पसमाणगई उदयागमपयणं अ

नइविषिं सागरोपमउक्तिकहतांज्ञानी॥ तत्वनो वनिवो कमेवी कमायहूवलाप्रवता सर्वेदुःखकपापकर्मतेहनोअंतकरिं ३७ एहनिश्चिसमाक्त ऊर्ध्वछइ॥ नित्रपयोगइंकरीसहितथका॥ ज्ञान धर्पामि मुंकाइ॥ पसमाधीतादंतुथाइं

विग्गहाणं तओ गंता सागरोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमंतं करइ ३७ एस खलु सम्मत्त

पराक्रमनामा अध्ययननउअर्थसंक्षेपे तपस्वीऐश्वर्यवकराईवंतमहावीरनामा चउवीसमइतीर्थंकरइंकहिउं॥ सामान्यविशेषइंपलिख्या॥ स्वरूपनइंकहइंदेखा अनेकाविदनइ हेतुदृष्टांतफलादिकप्ररूप्यइं॥ आविवइ॥ हेतुनइंकहइवि

परक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पण्णविए परूविए दंसिए निदंसिए उव

उपदेश्यउंपहवेउं॥ ३७ सम्यक्त्वपराक्रमनामाध्ययन २९ जिमज्ञानावरणीयादिक रागद्वेषदेषरोसतिणिक तपस्याविनिर्जरइंतपरइ तेह स्वधर्मोस्वामिकहइंउं नउअर्थिलज्ञामाउक्कहिउं॥ पापकर्म॥ रीविकइउपराजइंउंबांधिउं बारेलेदेकरीयतीसाधु निक हिं॥

दंसिए त्ति बेमि ३७ सम्मत्तपरक्कमिज्झयणं सम्मत्तं २९ जहा उ पावगं कम्मं रागदोससमज्जियं खवेइ तवसा भिक्खू त

एकाग्रचित्तथकउं॥ १ पाणीजीवनुं॥ मृषाजूठउं अणदीधो स्त्रीसुखं लोभबुद्धिआणी अनमनादिकअनजानपांनथा जीवथांणीजयइनिराश्रव सांभलिअकोशिष्य हणिवउं १ बोलिवउं २ वस्तुलेवउं ३, वउं ४, परिग्रहमेलवउं, एकोऽप गुणथउं हिमस्वादिमच्यारिआहारच्यार प्रकारनाराश्रीजेवनथकीविरम पापआश्रवतेथिंरहित २

मेगग्गमणो सुण १ पाणिवहमुसावाया अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ राईभोयणविरओ जीवो हवइ अणासवो २

पांचेसुमति त्रिणिगुप्ति कषायरहितइंदीयप गर्वत्रणिप्रकारतेतेणि पहवउंजीवजयइथाइनिराश्र ३ प्राणातिपातविरतिप्रमु रागद्वेषइं सुमतउं॥ लोभक्रमाधु जीत्याछइजणाइं॥ ज्ञाल्यत्रिणकरीरहित॥ वनिःपापपापइंकरीरहित॥ षडेबोलपूर्वइंकह्यातेह करीनिजे नइवि.थइ ॥ पाप

पंचसमिओ तिगुत्तो अकसाओ जिइंदिओ अगारवो य निस्सल्लो जीवो हवइ अणासवो ३ एएसिं तु विवच्चासे रागदोस ९७

कर्मउपा॥ तेरवपावइअलेगोकरइ॥ अलोशिष्यतेपकाग्रमन जिमभोटातलावनो पालिंकरीनिरुंधइंसवरिणे अरहटादिकइंउलीची ज्ञितवजइ जिमसिद्धचारित्रीउं॥ एकोग्रकचित्तसांभलि ४ पांणीतेहनुआश्रय पालि नि वारि॥ जीमिअविवानोगमएतजे कादवइंकराउसूर्यनाकिर

समज्जियं खवेइ उ जहा भिक्खू तं मे एगमणो सुण ४ जहा महातलागस्स संनिरुद्धे जलागमे उस्सिंचणाए तवणाए

णिं अनुक्रमइंसर्वपांणीनी ता शोषणसासोस्वासर्सोर पई थाइ ५ एवंएणिंप्रकारइंउनिश्चिं संयतचारित्रीआतदनइ ज्ञानावरणीयादिकपाप कर्मनउनिराश्रवपापर हितएहवउ साधु तवकोडीअवतारनीकोडिकरा कर्म निसिचउंएकवउंकाधुंजेपाप लाभारनेदेतपइंकरी निनिर्जरइंषपावइं॥ ६

कमेणं सोसणा भवे ५ एवं तु संजयस्सावि पावकम्मनिरासवे भवकोडीसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ ६

तेतपद्विविधउप्रकारेकहा॥ एकबाह्यतपबीजउंअभ्यं तीर्थंकर गणधर तरतप बाह्यतपछप्रकार तरतप अनिबउप्रकार अभ्यं ७ उपवासआदिदेइछम्मासीपर्यं तनेअ॥ ऊणमणउ ३२ कवलमांनते हथीऊणउ आहार रूपइ तेणि॥

सो तवो दुविहो वुत्तो बाहिरब्भिंतरो तहा बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भिंतरो तवो ७ अणसणमूणोयरिया

अनेकदरीगोचरीइंविचरवउंविरयइ॥ लाहितापादिक॥ संलेषनासं॥ एहउप्रकारबाह्य ८ नोपरिहारकरिवउंतेरसपरित्याग॥ सहिवातेकायक्लेश॥ गारादिष्पा तपजांणिवउं॥ इत्वरथोडीकालजावहनोऊइइल मरणकालअवसरजेहउंते मरण काल इत्वरकालजेते इम अणसण बिसइंतेहमांहि

भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ कायकिलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ ८ इत्तरिय मरणकाला य अणसणा दु

साकांछकह॥ पत्नीआहारादिकनीवांछातेनथीसहितअनशनादिकनीवांछाजिहां ९ जांणतईतरघोरउका रतमंछेइयईउछएप्रकार॥ श्रेणितप तांश्राकांक्षाजे तेनिरवकंषाकहीयइं९ बीजउअनंतरजांणिवउं लनउंतप॥ कहिंविस्तारपणिघणानेद प्रथमर वइषम्श्रादिक॥ क हिवइ॥

विहा भवे इत्तरिय सावकंखा निरवकंखा उ बिइज्जिया ९ जो सो इत्तरियतवो सो समासेण छव्विहो सेढि

प्रतरतपबीजउ२ घनतपत्रीजउ३ तथावलीवर्गतप॥ चउथुघनसुत्रु र्णइतिवर्गु॥ निष्कारवबावनावर्गिकहीयइं॥ १० प्रकारेएहनासर्वतेप्रतरतपनाय॥ वलीवर्गवतअणानोंजइनेव॥ बतोश्कारप्रकीर्णतपजेश्रेणादिकरचनो इरदितानपीकोंमनतनइप्रीतवाछित॥ चित्रअनेकप्रकारनाअर्थादिकनेजो॥ लेश्याादिकेजेदथकी पहजांणिवउंजांणइ इत्वर क पतलइ॥

तवो पयरतवो घणो य तह होइ वग्गो य १० तत्तो य वग्गवग्गो पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो मणइच्छियचित्तत्थो नायव्वो होइ इत्त

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	२	२
४	१	२	३

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३
१	२	३	४
३	४	१	२
४	१	२	३
१	२	३	४
२	३	४	१
४	१	२	३
१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२

श्रेणिकही इपंक्तिनेते णीइजपन्तज घनतपन्न णितपगुणा चउपर्यंत श्रेणिप्रम चउश्रेपव इवर्गपदि श्रेणीमधि दछामरह चकवाग्नि उगुणीइंक रीइतिवा इइतर कइं॥

प्रतरतप जिअ पी॥ पत्रो लिवाचउं॥ वतवर्गइं धनपद ताउपवास ऊइनेहनि विषइ॥

इत्वरिक। उत्तात अनशन मरण बिहुं प्रकारे तेकहियें तीर्थंकर सहित तत्रप्रत्याख्यानादिक उका हि वतंसपयारिवउं १२ अथवावली बिहुंने देखे॥ परिक्रम
अनशन॥ निविर्ति मरणनइसमइ॥ गच्छवइ एकसविचार चेष्टाइं॥ बीजउअविचार अविचार चे पासातकिकरवउंएकार्य त्याएकमप परिकर्मवि आमला इतेलि
हारदिनपादपोगम नकायइ कायानी चेष्टा अभिमइं दिकवेयावच्चकरिवउं तेनके मर्दन

उतरज्झो॥ १५२ रितं ११ जासाअणसणमरणे दुविहासावियाहिया सावियारा अवियारा कायचेठंपईभवे १२ अहवासपरिकम्मा अप

बीजउं अपरिकर्मी उत्पक अणसणकारनइद्वाउइं। आहारनउछेदवउंतले १३ द्वाविंउणोदरीकहीयइं। संक्षेपइकीकहिवउं द्रव्यथकी क्षेत्रथकी
दीया तीर्थंकर गणधरगो चालइनेनीहारिमकहइ। बउंवेहुसपरिकर्मइं बइंतेउणोदरी पंचप्रकार तीर्थंकरइंगणधरि
मागरथीकाढीयइ ते तेअनीहारिकहीयइ॥ अपरिकर्म इं कहीयइ

रिकम्माय आहिया नीहारिमनीहारि आहारछेदोसुवि १३ उमोयरियंपंचविहं समासेणवियाहिया दव्वउखित्त

कालथकी भावथकी पर्यायथकी १४ जजहुंजीवनइंजेतलउ तेतलामांहिथकी उणउं॥ जोकरइ तउ एककवलीया॥ इमद्रव्यथकी उणो १५ कारंगसहित
कहीया॥ आहारस्तुथकहीयइं करिवउं उकरइ उबोलइं दिक॥ दरीकहावी तेगामकिहांक
रनही तेनगरक

कालेणं भावेणंपज्जवेहिया १४ जोजस्सउआहारो ततोउमंउजोकरे जहन्नेणेगसित्थाइ एवंदव्वेणउभवे १५ गामेनग कीइं॥

राजाननउवासनेवंम। जिहांबोणीया सोनारूपानी। इत्यादि धुलिनो सामान्य समुद्रवीवे विचंबने मघलेअढीरकोसे १६ तापसादिकघ। देहराघ व्यापादि
तुकासालने उत्पत्तितेग्रा आसते जिहांते नगरस्त लिआवइंने पाटण गामिजिहांतेमंडव णारहितेआश्रम। गालेवि कोअरथ
नेअधानीकहीइं॥ गाम॥ गरकहीयइ पालि। खेड॥ कब्बड। द्रोणमुख यवर्णीकुवमिना ॥हार॥ इलोकग्रा

रतहरायहाणि निगमेय आगरे पल्ली खेडे कब्बड दोणमुहे पट्टणमंडवसंबाहे १६ आसमपएविहारे सन्नि

वातेहनु घणागूर्जरलो त्वमिकानुइंतव चउरंगसे क्रियाणादिकइलस्थानेमाहतजे वरमीइंवीहांनेघरने घरनेविषिणलेइकारिं कल्पइआहारादिकअर्थि
वासानम रुकतेघोस॥ प्रदेमानस्थल॥ नातनाम एकवामिलेतेसंवट्टी गछइं १७॥ वाडउ अथवाकउघरनी एतलइं हेतेउचूमि पडअदि घरनी मालपर
निवास। ग्रगण॥ तेखंधार॥ करीसाहितगा मतेकोट काहुतानीमेरी तेरथ्या॥ ॥ काडीवर्त॥ मालकोमि

वेसेसमायघोसेय थलिसेणाखंधारे सत्थेसंवट्टकोट्टेय १७ वाडेसुवरच्छासुव घरेसुवाएवमित्तियंखित्तं कप्पइउए

चोर यणिप्रकारिं क्षेत्रथकी १८ पेटानिआकारिंगोचरी इयतादिक दीननोभारउकरइंवाके। नापनाआवइंनाघरिमाहि। संरपकरिघरकी बेहकाज
मीइ उणोदरीकहइ॥ तेअर्धपेटानिआकार वलिमउंकरइंतेलिपरिगोचरी वपतगी। एकीआहिरलगइ वारंघरिथकी गीजाइपाछोवलेतेगंखप
गोचरीतेउतेवटा २। यानीअकवानीपरइंपुरइघरिगोचरी था॥ लिहाआवइंतडपछीगोचरी। ५॥ त्यागतना इस दीगोचरीइं

वमाई एवंखित्तेणउभवे १८ पेडायअद्धपेडा गोमुत्तिपयंगवीहियाचेव संबुक्कावट्टायय गंतुपच्चागयाछट्ठा १९ १५२

दिवसनी चेपोरसिप्रहरच्यार जितलइंजअडकालगतजइजो यणिप्रकारि विचरइं कालथकीतेउणोदरीपणं २० अथवात्रीजी पोरसित्रीजि
कालमइंगोचरी इंकरवउंएहवउं दीनइंरवलुनिश्चइंकरी जाणिवउं

दिवसस्सपोरिसीणं चउण्हंपिउजित्तियोभवेकालो एवंचरमाणोखलु कालोमाणंमुणेयव्वो २० अहवातईयाएपो

प्रहरइं काइंयकउणउंथकइग्रा। तेपोरसिनो चिलागि एणिप्रकारिंकाल २१ स्त्रीजातिऽथवापुरुष अथवाआभरणादिकइरहीत आनेरा
मिउआहारपाणीगवेषउ उणोइवामिकांपंच थकी उणादरी। आभरणसहित॥ कालक
मिलागिउणिथकइ वयस्थ

रिसीए ऊणाएघासमेसंतो चउभागूणाएवा एवंकालेणउभवे २१ इत्थिवापुरिसोवा अलंकिउवाणलंकिउवावि अ

वायौवनवय अथवा। अथवाआनराईवस्त्रसहित २२ पीसततरि अथवाद्धतिप्र तेदिकालागोरादिकइवर्णसहित। एणीपरिविचरतोप्रव तेनाःव
गरहयणिएतलाभा पटोलीसामीवेयाकोपाघडी वईत्यादिकअवस्थाएह अलंकारादिकभावमुकउथक्त इंनातइखलुनिश्चइं थकी॥
हिकोइकवडप्रवर्तिनउ मांहिलइइनेरइकांइविशेषि डाईहानादस्यइउकंजेम्ह नलो॥

न्नयरवयत्थोवा अन्नयरेणंचवत्थेणं २२ अन्नेणविसेसेणं वण्णेणंभावमणुमुयंतेउ एवंचरमाणोखलु भावो

उणोदरीपणउ २३ द्रव्यथकी अनवानादि॥ भावथकी स्त्रीपुरुषादिकविषइ। पर्यायएणिद्रव्यकेउ पर्यवकहीइंभावउणोदरीतिहांचरउचारउ पेटादि
जाणिवउं॥ कमिविषिं क्षेत्रथकी ग्रामा। डोजेभावएकसोकवलादिकउ कालनिविषिमघालि जइतिहरुसाधइदांपर्यायनीप्रधानपलि कइश्का
दिकनिविषि कालादिक बोसेमे णाभावेदविवे वामक सा उणोदरीपणिबालउ॥ विवक्षाजंणवीघ इइयादिकप्राणाभा मेषना
रइवर्ज

माणंमुणेयव्वं २३ दव्वेखित्तेकाले भावंमिउआहियाउजेभावा एएहिउमचरउ पज्जवचरउभवेभिक्खु २४ अट्ठ

प्रकारमांहिलोवाहिरगो तिमावनइएषणासप्तआअभिग्रहा। द्रव्यक्षेत्रइकालरनावइ तेहनिभिक्षाचरीकहाइतीर्थंकरइं। दूध२ दहि२ घृत३ एआदिस
आवइउकहागनिनइ आहिनेहससउनसनआउउइइनाइल्पतदनइजितेअनेराई गणधरइंसुथउत्तीभिक्षाचरीतप॥ २५
एअआवगोचरीनोभेद॥ यजेतिगाथउएहिवाषयपृहाया इ। इतिग्रहइतेकरइ॥ विगय
उआथलमायपमउ मिक्षा॥

विहगोयरग्गंउ तहासत्तेवएसणा अभिग्गहायजेअन्ने भिक्खायरियमाहिया २५ खीरंदहिंसप्पिमाइ पणी

सरसउकृष्टउकरणहारसनउंपरिहरवउंवर्जवउं तेहनइरसविवर्जनरसपरि २६ कायानी चितिवांमिराश्रवी॥ उतकेहाजीवनइंमोक्ष उग्रआकरा
रजोरांणीअंनिलोतजिण त्यागतोमातायसलितेकहि वीरास+ननउकरिवउंआदि सुखनाआपणहार अतिदुःखनिमरधरीयइ
सरसघणउंजेकोमदविव उतीर्थंक २६ जाईथीदेहासनगोदोहाकासनप्रमुखा

यंपाणभोयणं परिवज्जणंरसाणंउ भणियंरसविवज्जणं २६ ठाणावीरासणाइया जीवस्सउसुहावहा उग्गाजहा

कायाइं से तं कायकिलेस नामा तपक २७ एकांत मुंहुं जन लोके स्त्री नइं पशु रहित स्थानक संथारा पाटपाटला आसनादिक ते विवक्त सयनासन
वीइ ह्तिं श्रीतीर्थंकरइं॥ ... ॥
धरिछंति कायकिलेसं वियाहियं २७ एगंतमणावाए इत्थीपसुविवज्जिए सयणासणसेवणया विवित्तसयणास
..... एबाह्यतपभाग कह्यो तिवार पछी कहिइ अभ्यंतर तप छ प्रकार ते बतलांनतर कहुं अनुक्रमइं २९ पाप आलोइवउं तं आचार्यादिक
२८ .... विनय करवो
ण २८ एसो बाहिरतवो समासेण वियाहिओ अभिंतरतवं एत्तो वुच्छामि अणुपुव्वसो २९ पायच्छित्तं विणओ वेया
वच्चकरवो सूत्रादि ... तप ... ॥ ३० पाप नउं आलोइवउं गुरु नइं प्रायच्छित्त १० प्रकार जे कोई चारित्री
... आलोयणारिहं ते आदि॥ तेह वहइ रूडी
वच्चं तहेव सज्झाओ झाणं च विउस्सग्गो एसो अभिंतरो तवो ३० आलोयणारिहाईयं पायच्छित्तं तु दसविहं जे भिक्खू
... प्रायच्छित्त नाम अभ्यंतर ३१ ... गुरु परिनाव सहित ... विनय
... तीर्थंकर गणधरे ... आसन ... गुरु नो आदेश प्रमाल कर ... तप
वहई सम्मं पायच्छित्तं तमाहियं ३१ अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेवासणदायणं गुरुभत्तिभावसुस्सूसा विण
कह्यो तीर्थंकरइं ३२ आचार्यादिक ... धर्मसाधु ... वेयावच्च दसे आसेवना तद वेयावच्च संबंधी ... पराक्रम सरि
गणधरइं ... प्रकाशातद ... वेयावच्च ... तीर्थंकर गणधरइं
ओ एस वियाहिओ ३२ आयरियमाइयंमि य वेयावच्चंमि दसविहे आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ३३ ८९
गुरु ... धर्मना उपदेस ... प्रकार ... ध्यान ...
... ॥ ... ॥
। वायणा पुच्छणा चेव तहेव परियट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा सज्झाओ पंचहा भवे ३४ अट्टरोद्दाणि वज्जित्ता

सुसमाहित थिरइ ... धर्मनउं ध्यान ... धर्म कर्मना॥ ... आसन नि॥ ... कायानइं को
... तीर्थंकरादिक कहइ ३५ ... करइ॥ ...
... कहइ॥ ... साधु॥
झाइज्जा सुसमाहिए धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहा वए ३५ सयणासणठाणे वा जे उ भिक्खू न वावरे काय
... अभ्यंतर तप संबंधी ते ३६ एतप अभ्यंतर बाह्य जे कोई रूडी परि आचरइं ते सिघ्र कहता सर्वसंसार ... चार गति
निवर्त्तवि वउ॥ कह्यउ तीर्थंकरइं ॥ ... मुनीश्वर॥ नरक तिर्यंच मनुष्य ... चारित्रे
स्स विउस्सग्गो छट्ठो सो परिकित्तिओ ३६ एयं तवं तु दुविहं जे सम्मं आयरे मुणी से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ
... ३७ एतप ... ३४ चारित्र ... जीवनइं सुखनउं आपणहार ... करी
... कहतु ... घणा ... जीव ...
पंडिए त्ति बेमि ३७ तवमग्गिज्जं सम्मत्तं ३० चरणविहिं पवक्खामि जीवस्स उ सुहावहं जं चरित्ता बहू जीवा तिण्णा
संसार समुद्र॥ १ एक ... एकस्थानक असंजम हिंसादिकनि संयम ... २ राग अनइं द्वेष ... आ
... विरति निवर्त्तवउं ... प्रवर्त्तवउं करइ॥ ... पाप ...
... ६ ... करिवउं॥
संसारसागरं १ एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं असंजमे नियत्तिं च संजमे य पवत्तणं २ रागद्दोसे य दो पावे
पापकर्म मिथ्यात्वादि। ... मनोदंडादिक ... माया शल्य आदि सल्य जे भिक्षु साधु
... परिहरइ नित्य सदाकाल च्यारगति रूप संसार मांहि ... नउं ... परिहरि॥
पावकम्मपवत्तणे जे भिक्खू रुंभई निच्चं से न अच्छइ मंडले ३ दंडाणं गारवाणं च सल्लाणं च तियं तियं जे भिक्खू चय
नित्य सं। ... संसार रूप ४ देवताना क्रोधा उपसर्ग ... तिर्यंचना ... मनुष्यना॥ जे भिक्षु साधु ... संसार रूप ५ विकथा
... मंडल मां ... क्रोधा उपसर्ग ... नित्य॥ मंडल मांहि॥ ४ प्रकारे
ई निच्चं से न अच्छइ मंडले ४ दिव्वे य जे उवसग्गे तहा तेरिच्छमाणुसे जे भिक्खू सहई निच्चं से न अच्छइ मंडले ५ विग

उ॰टबो
१०३

कषायध प्रकारसंज्ञा ४ ध्यानरएकआर्त्त ध्यान॥ जेसाधुचारित्रीउपरिहरइनित्य तेनतमइसंसारमांहिं ६ पंचमहाव्रतदिउपराउर्ष॥ सुमतिपांचविधि प्रकारतेहनि॥ तथावलीरौद्रध्यान ।सदाकाल। मंडलचारगतिरूप॥ व्रतलिधि झाहारादिकनिविधि कायाइंजीवा ॥ ९ड॥

दाकमायसन्नाणं झाणाणं च दुयं तहा जे भिक्खू वज्जई निच्चं से न अच्छइ मंडले ६ वएसु इंदियत्थेसु समिइसु किरि

आदिकि जेचारित्रीउ जयइकरतोय तनरहितलिभ लक्षणनि॥ छकायप्रथवीयादिका वेदनादिकछेआहारहते जेसाधुसाव तेतनमइ ६ यावनि तनकरिव्रतसुमतिनइपाल मंडलचारगति विषइ॥ नइविषइं दनाकारणथकथाबहत धानघाइंय संसारमांहि विषइ॥ वइ। रूपसंसारमांहे ॥दनइविषइ॥ तन करइ

यासुयो जे भिक्खू जयइ निच्चं से न अच्छ ७ लेसासु छक्कसु कसायसु छक्के आहारकारणे जे भिक्खू से न अच्छ ८

संमहादिकआहारशुद्धवानि इहलोकलयादिक॥ जेभिक्षुयतन॥ तेनतमि जातिमा ब्रह्मचर्यनि भिक्षुयतीधर्मक्षमादिक जेयती॥ छकायादिकछेआदारशुद्ध समार ८ दादिक८ नववाडिनें दसप्रकारेतेहनिविषइं भयस्थानक॥ करियचार्योपा॥ गुप्तनिविधि अविग्रहनिग्रहप्रमाणबोल्यावि बोल्याविनेहनिविधि आहारपरिहार माहि

पडिमासु पडिमासु भयठाणेसु सत्तसु जे भिक्खू से न अ ९ मएसु बंभगुत्तीसु भिक्खुधम्मम्मि दसविहे जे भिक्खू से न अ १०

श्रावकनी इग्यारप्रतिमा॥ यतीनीजेमासादिकनीप्रतिमा जेसाधुयतन तेसंसारमां ११ अर्थदंडादिकक्रियानिविषइं अवआरीमीयादिक चारित्रीयत विशेषदसप्रकारनयादिक॥ अभिग्रहविशेषबार प्रकारना करइश्रावकपरि दिनतमइ लतग्रामकहता जीवनि १५तेदपरमाधामीना नकरइ॥ प्रकारतेहनइविषइ॥ तेहनइविषइं महदइनित्य सदाकाल विषइ तेहनइविषइ

उवसमाणं पडिमासु भिक्खूणं पडिमासु य जे भिक्खू स मंडले ११ किरियासु भूयगामेसु परमाहम्मिएसु य जे भिक्खू

तेसंसारमां १२ गाथानामसोलमुअध्ययनतेहनि॥ तिमवलीसत्तरीअसंयम जेसाधुयतनकरि॥ तेतनमइरहइ॥ १३ चारित्रनिविषइंकांजरकरि हक दिनतमइ तेनाथाकेहसत्र कृतांगप्रथमश्रुत॥ विक १७ प्रकार।संयम अन्यसवइपरिहरइ संसारमंडलमांहि तेएकवीससबलातेहनिविषि विक तस्कंधनासोलअध्ययनतेहनिविषि नइ विषइ॥ नित्य सदाकाल॥ २२

स मंडले १२ गाहासोलसएहिं तहा असंजमम्मि य जे भिक्खू जय स मंडले १३ एक्कवीसाए सबलेसु बा

परीसहतेहनिविधि जेभिक्षुचारित्रीउयतन तेतनमइ १४ ब्रह्मचर्य॥ ज्ञाताना अध्ययन असमाधिस्थानक२०॥ जेसाधुयतनकरइ परीषहजी नकरइसमइनित्य॥ संसारमांहि १९तेहनिविषइ॥ १५तेहनिविषइ तेहनिविषइ॥ पिवइंपरिहरइनित्यसदाकाल चर्यनइविषइ

वीसाए परीसहे जे भिक्खू जयइ से न अ १४ बंभमि नायज्झयणेसु ठाणेसु य समाहिए जे भिक्खू जयइ निच्चं

तेतनमइसंसारमांहइ॥ १५ सूयगडांगनांअध्ययन२३ भवनपतिव्यंतरज्योतिषीवैमा जेभिक्षुसाधु तेतनमिसंमडलथकी पंचमहाव्रतनी२५भावना दशाकल्प नइविषइ॥ निकएहदेवतानिविषइं यतनकरेसदा रूपसंसारमांहि १६ तेहनइविषइ। स्कंधक

स मंडले १५ तेवीसइ सूयगडे रूवाहिएसु सुरेसु य जे भिक्खू स मंडले १६ पणवीस भावणाहिं उद्देसेसु

व्यवहारव२६ जेसाधुयतन सदाकालतेतनमइं॥ वक्कादिकजेअणगारसा यतीनुउत्तरकल्पआचारां जेभिक्षुचारित्रीउयत। तेतनमइंमंडलच्यार पापश्रुतविवाना उद्देसाकाल करइनेत्यसदा मंडलच्यारगति १७ धना२७गुणात तेनइविषि गनाअध्ययन२८तेहनिविषि नकरइपाजिवानइप गतिरूपसंसार १८ कनशास्त्रनि निविषइ॥ कालगइ॥ रूपसंसारमांहि रूपविकरीनित्यसदा॥ मांहइ॥ मिथ्यादिकतेहे

दसाइणं जे भिक्खू स मंडले १७ अणगारगुणेहिं च पकप्पंमि तहेव य जे भिक्खू स मंडले १८ पावसुय

२९प्रकार मोहनीयतिवारहिंनिमित्तप्रणितवर्ह इ जेसाधुचारित्रीउ॥ तेतनमइमंडल १९ सिद्धपदपामइ आदिप्रसिद्धइसमय॥ अरिहंतादिकनीआशातनातइ जेभिक्षु चारि तेहनइवि तमोहथानका नइविषइ य जतनकरइनित्य॥ ।संसारमांहिं शुद्धसिद्धादिगुणयोगविधिमनवचनका तेहनिविधि अथवा आचार्य त्रीयतनकरइ ॥ ड्ड॥ सदा कालगइ यानारूपा गुणआपारइरतेहआलोय नीआशातनानइवतेहनिविषइ सदाकाल॥ हि कनइ विधि

संगसु मोहठाणेसु चेव य जे भिक्खू स मंडले १९ सिद्धाइगुणजोगेसु तेत्तीसासायणासु य जे भिक्खू

तेतनमइमंडल॥ २० एणिप्रकारिएहपूर्वइकह जेसाधुयतनकरइयथा जेभिक्षुसाधुसदाकालनि सीघ्रउतावलोसर्वथाच्यारइगति विप्रमुकाइ पंडि च्यारगतिनिविधि ह्यास्थानकातेहनिविषिसाधु योगइसहदवइकरीपरि ॥ यतनकरइ॥ ॥ रूपसंसारथका॥ मूकाइअलगुथाइ तवचन हरवइ ह्या॥

स मंडले २० इइ एएसु ठाणेसु जे भिक्खू जयइ सया खिप्पं से सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पं

तउजाणएहवउ २१ एचरणविधिअध्ययननउ३१लिगमातकह्यो ३१ अनादिकालनउ तेकहवउअनंतरति सर्वदुखकमय जेहसंसार दुखनउमूकाइवउ सुधर्मास्वामिजंबू रूपमूलइ हित तेहनउरूक्षप्रमोक्षमुंकाइ प्रतइ कहइछइ ॥नउ॥

डिए त्ति बेमि २१ चरणविहि अज्झयणं सम्मत्तं ३१ अच्चंतकालस्स समूलयस्स सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो

तेभाषनांकहताभुकनइविषइपणि॥ एकाउगलवि कजीवसांभलउनेके॥ मतिज्ञानादिकसर्वज्ञाननइप्रकाश मतिज्ञानादिक नथीरहमाप उपरिपूर्णचित्तजेहनउ हवउएकांतहितकारी मोक्षनुअर्थीजेकं नाइनिर्मलकरवइकरी॥ अज्ञानअनइं

तं भासउ मे पडिपुण्णचित्तो सुणेह एगंतहियं हियत्थं सुणेह एगंतहियं तवं १ नाणस्स सव्वस्स पगासणाए अन्नाणमो

निविषइं
सावधान
थयइसदा

१०३

।उत्तरा०।
२५४

दर्शनमोहनीयनइ। चारित्रनाघातनाकरणहारराग एकांतनिराबाध तत्सम्यक्प्रकारिं २ तेहनुइं मोक्षनुउपायकहिइंतेमार्ग एकांतिकनोमेवा विनोसिवर्क
विनोविनाशिदरवइ वारणा कहइ नइ संक्षयसम्यक्क्षय अक्षय सुख वयं यामइमोक्षमुक्तिप्रतिं पामइ। गुरुधर्माचार्यादिवृद्धानुं सेवा ताएरिहरणा बालअज्ञानपासत्था

हस्स विवज्जणाए रागस्स दोसस्स संखएणं एगंतसोक्खं समुवेइ मुक्खं २ तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा विवज्जणा बालजणस्स

दिकनी। सज्झायपंचप्रकारनीएकांत सूत्रनिसूत्रनाअर्थनुंचिंतविवउं ३ डोमाकएहवउं आहारवांछइ गबवासिरहितएकउपहवाविविनि नेमाधुए
दूरि।
वेगली। निष्पवणाकरवी। तेहनिविषइएकाग्रपणउंचलि माणेपेतएषणीयधरदोषरहित। वांछइसहायसूत्रअर्थकानादिकनवतत्वनि हृवउंने
एकाग्रचित्तनाज्ञाननीशांति करइ विषइबुद्धि किजनी केतना।

दूरा सज्झायएगंतनिसेवणाय सुत्तत्थसंचिंतणाधिई य ३ आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं निकेय

उपाश्रयवांछिवउंतेम॥ तेहदीतज्ञानदर्शनचारित्रनीसमाधिनुवांछक कदाचितनलहीइनपामीइनिपुण॥ तेकेहवउंज्ञानी। छ्यवगाज्ञानादिक अधिकगुणेकरीमाहरेतोला
इविवेकयोग्यंपंकक तपदारश्यमणाष्टप्रवमादितपनुकरण ४ बुद्धिगुणेकरीसाहितसहाईअधिक दिकगुणेकरी गुणेकरीसमान एणिकहतापापनी
।।४।। ४ अधिक ९॥ ।।सरिखउ॥ एगाकी नुष्टानवर्जन

मिच्छेज्ज विवेगजोग्गं समाहिकामे समणे तवस्सी ४ न या लभिज्जा निउणं सहायं गुणाहियं वा गुणओ समं वा एक्को वि पावाइं

वर्जतोविचरतउ। विचरतुं विचरइ असंयमअणकरतो ५ हवइमोहनीउत्पत्तिकहीइविं जिम अंडइमोनेबलागपंखीयावकी इममोहथीतृष्णा
संयममार्गइ॥ पांचइंद्रीयनाकाम पुष्टसुखकरतु। इंडउबकीउपनोंबालपंखीयाना॥ ॥उपनउजिम नउंआयतनउपजवा
स्थाननइविषइ॥ नउ।

विवज्जयंतो विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो ५ जहा य अंडप्पभवा बलागा अंडं बलागप्पभवं जहा य एमेव मोहाय

यामखुनिश्चइं। अनइमोहइसाकान्तुयानकीवदइ ६॥ रागतेमायानइलोभाद्यवतेक्रोधमान। अनिआठप्रकारकर्मनिबीजकाति॥ अनिआठप्रकारकर्मनि
करीकमाना कहइतीर्थंकरगणधरादिकएसर्वरागद्वेषनुं एसर्वआठकर्म आठप्रकारनेनु अनुजन्मअनइमरणनुमूलकारणकहइ। मोहनीकीउपनुंएहवुंकहइ
॥कहुं॥ मानकइत लि ग गहिएबकीउपजइ ३ कर्मइजन्म मरणकामोहइ उपहइ कहइ

यणं खु तण्हा मोहं च तण्हाययणं वयंति ६ रागो य दोसो वि य कम्मबीयं कम्मं च मोहप्पभवं वयंति कम्मं च जाईमरणस्स

तीर्थंकर। अनइजन्ममरणतेदुःखकनवक ७ दुःखहणाणउंएहकउएहुजेहनिनथाइ मोहमोहनीयहणाणउंएहजएहुजेहनइ अनइतृष्णावांछाहणीएहजेह
गणधर। गणधरकहइतीर्थंकरगणधर॥ मोहनीयकर्मकदाचिक॥ नइतेहनइविषइनजाइएहवाळावाळा लोभहणाणउंएहनइनजाएइ॥

मूलं दुक्खं च जाईमरणं वयंति ७ दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा तण्हा हया जस्स न होइ

अनइलोभहणाणउ जेहनइनजाएइकिंचि ८ रागत्वाद्वेष अनिमोहनीयकर्मतेहनइं उद्धरवानीइच्छाइं प्राणीइंकिंमसमूलजालसहीं जेजेउपायकहतां रागद्वेषमोह
नताइवएतनइइच्छानइ केकइलोभवइ टालिवानाकारणमहिकवायानीका

लोहो लोहो हओ जस्स न किंचिणाइं ८ रागं च दोसं च तहेव मोहं उद्धत्तुकामेण समूलजालं जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा

रक। तेउपायप्रतिंकहइं हुं कीर्तिस्यउं ९ रसइंद्रवदूध घृतादिकविगयइंनत आहितरसासवाषकीदुतिधातुदीप्तिदिकनी दीप्तवीर्यादिकवंतमनुष्यनइं
रवा। आनुपूर्वीइंअनुक्रमइं अतिशयसुंसेववानइं॥ कारणहारवधारहार जाइनरमनुष्यनइ। कामकंदर्पअतिशयसमवमादइ
आवइएतलइक दर्पवल तेते

वा तं कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ९ रसा पकामं न निसेवियव्वा पायं रसा दित्तिकरा नराणं दित्तं च कामा समभिद्दवंति

कहनी पविकिंमदुमवृक्षस्वादवंतफल १० जिमदावानलवनअग्निघणाईंधण समाकतवायरइंकरीसहितवि एणिदृष्टांतइंइंद्रीयपछूरअग्निपइ॥ बंभ
नइपरवीयासन्मुखआवइ॥ जिहांघदावचनअटवीनइविषइं कोउपशांतपमुनपामइ।जो॥ अनइसरसघणाआहारनाजेणहारनइ करी
तवउ जांघि कहइ वी॥ जकि १२॥

दुमं जहा साउफलं व पक्खी १० जहा दवग्गी पउरिंधणे वणे समारुओ नोवसमं उवेइ एवेंदियग्गी वि पकामभोइणो न

कोईइनिहितसुखनथीनजाइ ११ स्त्रीपसुनपुंसकइंरहितवायनउपाश्रय उपाश्रयनिदेषा उणोदरीतपनाकर। रागरूपीशत्रुवयरीदूर्षइंनही
तिहां आसनकहतांरहवउं इंसेवणाहारनइ। एहारनिंइंद्रीयनाद पराभवइनहीसाधुनामननइं
मण हा रनइ ॥

बंभयारिस्स हियाय कस्सइ ११ विवित्तसयणासणजंतियाणं ओमासणाणं दमिइंदियाणं न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं

जिमव्याधिकाज्वरादिकरोगपूर्वइ जिमबिलाडामोंजारवसतिनामूल मूसगउंदिरनीक्षातिनइंवसति एणिदृष्टांतइंस्त्रीतथानपुंसकनानि वसच
दिकनिऔषधइंकरीनिंपराजय लकहतांघरनासमीपनइविषइं रहवउंप्रशस्तभलुनही जयकहतांरहनानिषानकघरमांहि बनाय
परासव्यादेहनिंपीडानकरइ १२ रणहार

पराइओ वाहिरिवोसहेहिं १२ जहा बिरालावसहस्स मूले न मूसगाणं वसही पसत्था एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे न बंभय २

नइनिवासरहवउंयुक्त १३ स्त्रीनउं बोलवानी वस्त्रादिकनीसो॥ अंगउपांग वांकीआंखिइंजोइवुं स्त्रीजातिमनथीतेअदोलजउ एहवातलीनत
नहीतेसगनिषकीवल्ल रूप चतुराई। लाहासतेमर्मवचन नुंमीठवउं दीसइधिंइएहवउंचित्तनइविषइ समिकहतांधर
चर्यनर दइ कल्पना घानीनइ। वसायश्रमणसाधु

रिस्स खमो निवासो १३ न रूवलावण्णविलासहासं न जंपियं इंगियपेहियं वा इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता दट्ठुं ववस्से समणे

तवेपक्षीउप १४ दर्शनइ जोइवउं दृष्टिकरीनिरक्षा रूपवेषसिंगारादिकनुंचिंतनकरवुं॥ स्त्रीजा तिणाआचार्यलंछुधर्म्म तलक्षितनउंकरणहारसदा
कामादिकरणहार इअभिलाषवाचनकरइं॥ निरखइनाभिकरीगुणिकरीकीर्त्तिकरी तिनउं दिकतलदनइध्यानइए सर्वदाब्रह्मचर्यनिविषइरता

उत्तरा तवस्सी १४ अदंसणं चेव अपत्थणं च अचिंतणं चेव अकित्तणं च इत्थीजणस्सारियझाणजुग्गं हियं सया बंभवए रयाणं

कारणाभि १५ अतिजायरूपउंमनुष्यनीनुपरिरहितदे॥ संयमपक्षीजोगनिकिंगुप्ति तउपणिएकांतनेहितलिनउं करहितउंध्यानकतेहचुनाव
इंद्द। देवांगनाइतलदेवांगनाकेदवीइजेकारसहित गोपववीनसक्यायुक्त कारणइमझांणीनइस्त्रीयपुपिष्ट तेहमुनीश्वरइंनइप्रशस्तसम

१५५ रक्खाणं १५ कामं तु देवीहिं विभूसियाहिं न चाइया खोभइउं तिगुत्ता तहा वि एगंतहियं ति नच्चा विवित्तवासो मुणिए

मनीककहितउं १६ मोक्षनीअभिलाषावाचनाकरणहार च्यारगतिरूपसमारथकीडरकोइडी रह्योचितलहजैनधीतेहवउंअनेर्द जेहवीस्त्रीजातिबाल
तीर्थकरइं मनुष्य। दिहितेहनइअतधर्मादिकनिविषइं कोईइस्तरदोहिलउलोकनिविषइं अज्ञानीमननीहरण

णंपसत्थो १६ मुरकोभिकंखिस्स विमाणवस्स संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे नेतारिसं दुत्तरमत्थि लोए जहित्थिओ बाल

हारि १७ एहपूर्वइंकह्यासंगसंबंधीस्त्रीजाति वारीनिपक्षिमुखिउचरीनिपवड्वा तलक्षपरिहरितकहइनइसुखि गंगासमानजेमोटीनदीतमुख
संबंधीआ अतिक्रमंजुअतिक्रमानि पछीजाणकतानइपादिकनासंगक्रइं समोहउसमुद्रनइउतरीनइं इंतरीइएहवीकइउनाकिउसुं

मणोहराउ १७ एएय संगा समइक्कमेत्ता सुहुत्तरा चेव भवंति सेसा जहा महासागरमुत्तरित्ता नई भवे अवि गंगासमा

कइ १८ कामभोगनाडेअत्तउपवतानदबकी सर्वलोकप्राणीनामनइनिते॥ जेकायानुंदुःखराणादिकमाननसिवाइ तलदुःखअआतानु
वउ॥ उपनउंदारवसुनिश्चिकरीदुःखअआता लोककेहवउदेवताइंसहितएतलइं स्त्रीवस्तुनायोगथकीउपनुंपीमउपले अंतछेदकोपारपामि
देवताभि पणिकामथीप लिड्वा जइ

णा १८ कामाणुगीद्धिप्पभवं खु दुक्खं सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स जं काइयं माणसियं च किंचि तस्संतगं गच्छइ वी

वीतरागकाम॥ जिमकिंपाकफलनां फलमनउं रसिकरीनइवर्णिकि पणिसाइंता॥ तलहिइकइतानुबलमोपक्रमएहवाजी एहवउपमाएहवाकामभोगनोभोगवा
भोगइनाइध्यान
करणहार १९ रमणीकमनचिनाकरणहार॥ रीनइंगंधिकरीनइं चेकाएहनउंजो वनइविषइंपचमाणाकहतांविपाक नोफलजाणवउंपवेलानइविषइंजीव
कमाहिपसीहवइं वलउ पामता मरणदुखदायी क्रइ॥ वाएनलिंकामभोगनोगण्याअनंतं २१

यरागो १९ जहाय किंपागफला मणोरमा रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ते खुड्डए जीविय पच्चमाणा एउवकामगुणा विवागे अथ
जन्ममरणआपे

॥जेइंद्रियनइविषइ शब्दादिकमनंगंधफरि तलदनिइंद्रीयनिहि चितनुपनिश्रायनिसरिकरि वाम्रूपाइंद्रीयनाविषयनइविषइं चित्तनउएकाग्रपणउंरागपक्षवउदेवा
समनोज्ञमनोहरमननागमता इच्छनइविषइभाव पवर्त्तविइनहीगुणनेसाधा मनःअतःकरणकरइंइंद्रीयप नाममाधिकामीश्रमणचारित्रीउत्तम २१
नइं दीयनुंसुक दवउ म उतइनउ वर्त्तविइं इमादिकनेप नउ करणहार

जे इंदियाणं विसया मणुन्ना न तेसु भावं निसिरे कयावि न यामणुन्नेसु मणं पि कुज्जा समाहिकामे समणे तवस्सी २१

चक्षुनइंआदिकइंवली कहितीर्थकरादिकें तलरूपजमनोज्ञमनोहरतेराग तलदजरूपअमनोज्ञपाहृतेद्वेष। समोरागद्वेषरहीतजेतेहनउपाहूया रूपइ
सद्भनादिकजेरूपने रूपइदीवइनेतेय तेमनुंउपजावणहारकहतादेवा इपीतनुंहेतकारणकहतादेवातीर्थकरादि रूपनिविषइंतेवीतरागजाणिवउ २२ चक्षु
गुहेणकहताकरणहार रव सिषाइ वीतराग

चरकस्स रूवं गहणं वयंति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो २२ रूव

नेरकहतांग्रहणएहतउं अनइंचक्षुनेअनइंरूपइहलोकग्राह्यएतलि॥ अमनोज्ञकहतांमनोज्ञजग्राह्यरूपलि पणिअमनोज्ञरूपनिविषिरहितजेचक्षुतेहपइ
कहइतीर्थकरादिक॥ रूपनेअतिग्रहवायोग्यएहवुंकहितीर्थकरादिक सहितएहवउचक्षुतहरागनुंहेतकार संतोषनउकारणहेतुकहतादेवातीर्थंकर २३
॥णकहउ॥

स्स चक्खुं गहणं वयंति चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु २३ रूवे

रूपनिविषइजेकोईगृध्रमूर्छी पथयिनीआउखानातेहथकीउरकने जिमरागातुरलोलनउवादितेह आलोक कलीनिविषइलोल २४ जेकोई
इमिलापनीवृद्धाकरउपतिक। अकालिकहीयइतस्कालिविनाश पतंगीउचउरिंद्रीजीवकउ उमणउ दीवाइ ज्योतथकउमरणपामइं
हतो धरइतल पामइं केहनी परइं॥ जिपाइ

सु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं रागाउरे से जह वा पयंगे आलोयलोले समुवेइ मच्चुं २४ जेया

पाहूयाअप्रीतिनतहनि तलहुपणिअवसरनिविषइंतेहदुःखचि दुःखइहनीसकीइंएहनउंइहीनितेवहू॥ परंतेहनिपाहूउरूपकाईयइपलथपाहूं एकांतप
तिषइपहपच्यवीनइतिनान तनइउसंतोषउपतिकहतापामइं नेत्रनेहनिर्दोषइतहवलीपोतानिकोधइ नथीकरतउपतलइरागहेषतेहवेह २५ लिपणउं
स्मि श्री लाइती अंशाकरउ परलइंकोधइनहीजेउदुःखलहइ पा रूपा वइ॥

वि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसिक्खणे से उ उवेइ दुक्खं दुद्दंतदोसेण सएण जंतू न किंचि रूवं अवरज्झइ से २५ एगंतर

रातउरागी।विरमलारूप तलहुतालिदिकहतांतेहएहवउ। दुःखसंबंधीअतिक्रायस्पुणी मं॥ तलीपाइंनरवरकाइतेहिपरूपइदुःखइं २६ मनोहररूपनि
मनोहरनइविषइ नहीएतलिपारूपरूपनइंविषि नउसमूहपामइबालअज्ञानी करीनइतलकउणमुनीसाधुरोगरहित। इवगुणकेमइ
तेहदोषकहतांप्रीलक रइ॥ अवर्त्तइएहवा

त्तो रुइरंसि रूवे अतालिसे से कुणई पओसं दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पइ तेण मुणी विरागो २६ रूवाणुगा

१३५ रबो
९८

ऋआनइं ऽऽ वुंगकेकइ ।। चरजवोलता उमश्रवरथावरएघवी ।। चित्रविचित्र आनकारऽ आकुइकरी दुखउपजावइं आत्मानइं पोतानि अर्थइंऽऽ मनोहररूपनिविषइ
प्रवर्तिउं एतलइ रूपनिं प्रमुखनइ ऽऽ ऽनेकजातिविविधप्रका निहरव उपजावइ बाल अज्ञानी । ऽवतताज्ञी इरागादिकपरिणामइंपीडाइं २७ अनुरागपकइपरिग्र
ज्ञानइ पवर्ते इप्र णी ।। ॥२॥ ह

माणुगयणुगए य जीवे चराचरेहिंसइणेगरूवे चित्तेहि ते परियावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे २७ रूवाणुवाएण प

मूर्छामयातणि उत्पनवा चोरादिकथकीराखवा ।। विनाशविषइ विरहनइंविषइ । तेहनासंजोगविनाकालनिं विषइ हसिसंतोष रूपनिविषइअहेरउ
करीनइं । उपराज । नइंविषइ श्रीपण पारका किहांथकीसुखतेहनइं हुयइं तेहनालालनकरतइ किहांथकीसुख हुइं २८ ।। अतोषीथकउतहा
वानिविषि प्रयोजनतणी पवहविइ । तणापरिग्रहनइविषि

रिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे वए विओगे य कहं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे २८ रूवे अतित्ते य प

सकताना उवसह्कीकहती माहर आरूपवइ यविघुलेउइ । पारकीवीरूप लोभइंकरीनिरवलुखवइ चिहपचिप्रथकोग्रहनइं । लोभइंकरीपरानाउ
त्यपकारइ पणउआराक्ता वाअसंतोषनइदोष संतोषनपामइ वंतवस्तादिषी ।। अदत्तपारकीऽऽणदीधीएतलिचोरीपणिकरीनिं २७ अइंतहनइं
आमक्त ।। नइउधीउथक उ ।।

रिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं २९ तण्हाभिभूयस्स

तहनिअदत्तनालेण ।। रुपनिविषइंऽसंतोषीतहनइं । मायाइंसहितमृषाजूठवउंबालवउंतेणे ।। पणिप्रथालोभइथकइदुहीकतइपणि अप मृषावचरूपनो
हारचौरीनाकरणहार परिग्रहमेलवानिंऽसंतोषीतहनइं । प्रवर्तइंलोभनादोषथकीलोभथकीचोरीकं दुखथकीनमुंकाइ रूपे कोईजीणीएह लोभमोसमृषानिवलि
रवीलीथायवलीप्रजउमायामृषाकेलिनिमि वउंजीणइइतिविषयी रूपनोलोभीजूवउ

अदत्तहारिणो रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ३० मोसस्स

बोलीनिपछिपश्चाताप ।। पयोगकालइ बोलवानइंप्रस्ताव ।। जिमदुखउं बोलइतिमअदत्तलेउ मनोहररूपनिविषिऽऽतो अनिश्चरहितते मनोहररूपनिऽऽउर
नउंदुखपरिहरवइपणि ।। निविधि दुःखे न्यचउजीणिआगलिउ । परके अणदीधउंग्रहतउथकउ । पीथकोइरकीयउअन्यायमा दनिकापीमउ उ क्तरागीतेहनइनर
आइंलोकनश्वरलोकपणि । तेणिजीहदो दुखी दुख पुणनणहार = नकर इ ।।

पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरंते एवं अदत्ताणि समाययंतो रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ३१ रूवाणुरत्तस्स

मनुष्यनइ । किहांथकीसुखजयइअपित्रनजयइ निहांरूपनाभोगविवानइविषइपणिक्लेश । जेहमतोहमनोहररूपनाभोगविवानइ पणीपरइजिमसलाह
लिप्रकारइ । कदीकइपणितउसदाउरक जयइ ।। दुखपामइदमिनजयइतहांलगी काजिंदुरकआपणआत्मानइकइ ३२ पउपरिरागजयवइ ।।

नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्खं ३२ एमेव रूवंमि ग

९८

तिमकदाचितअ पामइदुरकनासमोहनीयरं द्वेषइंकरीसहितक्लिष्टकारइंचित्तःअंतकरण । जेहकर्मतेहनिवलीजयइदुःखनउंका ३३ मनोहररूप नइविषइं ।।
तिजायरूपद्वेष पराश्रणि हवउतिहारइचित्तइं वो धिकर्मग्रहणा रणविपाकइ अनुलविकानाकालनइविवि विरक्तरागअ णुधरतउमनु
गयउउ कउ ।। इह लोकनइप र लोक पणि

ओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ, पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ३३ रूवे विरत्तो मणु

ष्य शोकरहि ।। एहप्रवर्तइंकहीदुरकपापनीपरंपरा ।। नलीपाइंनथरमाइंसंसारमाहिं जिमकमलीइकरीनउ ऋकरणीकमलिनीपुंपा पनेरण अनेंद्रियनिग्रहणविषइ
तथकउ । आलिप्तलिकरीनइं वसतोथकोपाणीनदउपरिह नउंगीपाईनदी तिमविरक्तमनुष्यपणिनेउपाउ पानिं ग्राह्यकहितीर्थकरगण
रहतकहइऽऽ काय लागइ एपहिलउउ वामिउ ३४ कारहौ

ओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण न लिप्पई भवमज्झे वि संतो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ३४ १३ सोयस्स सद्दं गहणं

षरादिक तमनोज्ञमानाहरआइगीतादिकने तअमनोज्ञपारूप्याग्राह्यतेहअसंतो । तेहूमायारूप्याग्राह्यनिविषइ ३४ ग्राह्यनउंग्रहणग्राह्यश्रोत्रकोन
रागप्रेमनुकारणकहइंवीतराग । अतुहउकारणकहिवीतरागादिका समताइतेवीतरागजाणिवउ पहलउंकहिवीतराग ।।

वयंति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ३५ सद्दस्स सोयं गहणं वयंति

श्रवणेंद्रियकाननउग्रहणग्राही दर्षनउंहउकारणमानोज्ञआहि अमनोज्ञग्राह्यइंरहितश्रोतेहोतेहवे ३६ ग्राह्यनिविषइंजेकोईगृध्नस्र तहअका
ग्राह्यपहवउवलीतीर्थकरकहि सहितश्रोत्रकहिजिन पअसातापनुंकारणकहइसगवंत जीपामइतीव्रअत्यंत ।। लिअवसरे
, विनापामि

सोयस्स सद्दं गहणं वयंति रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ३६ सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अका

जहइविनाशमरणरागइं ।। हरिणमृगातहनीपरइंमुग्धभोलउ तहरिणरूपाकेश्रगपश्रग्राह्यनइं ३७ जेकोईपाहूप्याग्राह्यनइविषइ तलिहंलक्षणिका
पीमउजिम इहांशृगराह्यसामान्यपणिपशुवाचीवइ विषइऽऽरमउअसातापपामइल द्वेषयणउ आणइआकरु ।। लइतेहकालिनेहे
हरमरण ।। मइ

लियं पावइ से विणासं रागाउरे हरिणमिगे व मुद्धे सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ३७ जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे

पामइदुरकजेउ दुर्दांतश्रोतेप्रायनइविषइपोता पंरपाहूउग्राह्यनइऽऽपराधकरतउ ३८ पकांतपणउछपणइगतउरागधर पाहूउग्राह्यनिविषिते
नइजंतुप्राणीदुषीथाइ नथीरागद्वेषजकरइवइ अमचिरमतोहरग्राह्यनइविषइं दजीवकरइपामइऽति

से उ उवेइ दुक्खं दुद्दंतदोसेण सएण जंतू न किंचि सद्दं अवरज्झई से ३८ एगंतरत्तो रुइरंसि सद्दे अतालिसे से

कुणइ पउसं दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥३९॥ सद्दाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥४०॥ सद्दाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खण सन्निओगे वए विओगे य कहिं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥४१॥ सद्दे अतित्ते य परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥४२॥ तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे यमायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥४३॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरंते एवं अदत्ताणि समाययंतो सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥४४॥ सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ

किंचि तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं ॥४५॥ एमेव सद्दंमि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥४६॥ सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण न लिप्पई भवमज्झे वि संतो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥४७॥ घाणस्स गंधं गहणं वयंति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ॥४८॥ गंधस्स घाणं गहणं वयंति घाणस्स गंधं गहणं वयंति रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥४९॥ गंधेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं रागाउरे ओसहिगंधगिद्धे सप्पे बिलाओ विव निक्खमंते ॥५०॥ जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं दुद्दंतदोसेण सएण जंतू न किंचि गंधं अवरज्झई से ॥५१॥ एगं

॥उ०ट०बु
१५५

नजाम नोहर गंधक स्पृह्याद्रिक निरेषः ... पाम्हूयाग यनि विषइ तद जीवक दुरक संबंधी अतिआयम्पतेयीमा ... नलीयाडं नरवरमाडं तातो हिषरूप दुरवइंकरी सुगंध गंध ॥२५ अझ्यात्मारूप॥ पामइ बाल अज्ञानी॥ लिं ते कउरामा पुण्यगरादित एतलिं राग द्वेष न देत तद मवध

तरत्तो रुइरंमि गंधे अतालिसे से कुणइं पओसं दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पइ तेण मुणी विरागो ५२ गंधाणुगा-

जी आज्ञान डाक कडइ॥ चर अचर त्रस थावर जीव हणइ अनेकरूपे अनेक जाति नामइ॥ चित्रविचित्र स्वकीय परकायादिक शस्त्रइं करी ते जीव नइ परताप उपजावइ बाल अज्ञानी॥ पीडइ पीडा उपजावइ आपणइ अरथइ गुरु मोटउ तद्या॥ कीधउ रागादिक परिणाम इणि॥ ५३ गंध कस्तूरी आदिक नइ राग इं करी नइं॥

साणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे चित्तेहि ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ५३ गंधाणुवाएण प-

परिग्रह करीनि उपाजवा गंध द्रव्यनि राषवानि विषइ व्ययइ वियोगइ कहइ किंहां सुख॥ नइ विषइं परनिं आपवा नइ विषइ तत्र जीवनइ सुख॥ गंधना विषयना भोगवा काल नइ विषइ तृप्ति संतोष न लहइ॥ न इज्यात ऽण कतइ सु॥ कहिं कहिं सुख जइ॥ ५४ गंध नइ विषइ अनइं दुःख सहीत पामइ परि

रिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे वए विओगे य कहिं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ५४ गंधे अतित्ते य

ग्रहनइ विषइ अतृप्ति उपजाइ आसक्त हुउ॥ तद्जीव संतोष गंधनइ असंतो॥ दुःखी थकउ पारका लोभइ कलुष अणदीधुं ५५ गंधनइ लोभइ परना लावा नइ अ तोषी सामान्य परि॥ तात्पर्य सुखानुं आसक्त न लइ दुःख अदीधउ इणि नइ करइ गंध द्रव्यादिक

परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययइ अदत्तं ५५ तण्हाभिभूयस्स अ-

तृष्णा ए हण्या गंधनइ विषइ असंतोषवंत नइ परिग्रहनइ विषइ असंतोषी नइ दत्ता पहिरणा माया मृषावाद वधारइ लोभनादोषथकी किहां अदत्त लेवानइ विषइ दुःखथकी नेहा मूकानइ जीवनइ मुंकाइं करवेगं धनालेवा वार मुंकइ किं कोई जालिं प्रक्षिपणि ५६

दत्तहारिणो गंधे अतित्तस्स परिग्गहे य मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चइ से ५६ मोसस्स पच्छा य पुर-

पछिलउ पूठइ॥ मृषा नायना अवसरनि विषइ कइवेक कोई इणि पछि पुकारि अदत्त परणइ जीणो तदुरकी दुस्यइ इम पाम अइंतइ दुर्गत इहरत बइ जत नइ॥ पारकउ ग्रहणउ गंधनि विषइ अदत्त नइ ई हरकी तद्भइ निश्चरि हित ५७ गंधना राग मनुष्यनइ प लि

त्थओ य पओगकाले य दुही दुरंते एवं अदत्ताणि समाययंतो गंधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ५७ गंधाणुरत्तस्स नर- १५५

पलिं प्र किहां थकी सुख कदाचइ कहि किं कोई थोडउ तेगंधना भोग वि वानइ विषइ किलेश कारइ दुःखनुं हेतु नीपजावइ जेह गंधभोग व वानइ काजि दुःख स्यात्मा नइ कष्ट ५८ इणि प्रकारइ जिम गंधनइ विषइ द्वेष उ

स्सएवं कत्तो सुहं हुज्ज कयाइ किंचि तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तइ जस्स कएण दुक्खं ५८ एमेव गंधम्मि ग-

लिमहिष पामइ दुःखनी समूहनी परंपरा श्रेणि अतिव्याप्त दुष्ट चित्त संचित नव करइ॥ जे कर्म तेहनइ इहलोक परलोकइ दुःखना तं कारण विपाक दुःख व ताना कालनि वि॥ ५९ मनोहर गंधनइ विषि विरक्त राग द्वेष रहित मनुष्य पामइ

ओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ५९ गंधे विरत्तो मणु-

शोक रहित कउ डाइ॥ ए इष्ट पूर्वइ कहि उत दुःखना समूहनी परंपरा श्रेणिइ करानइ॥ नलीपाइ न रवरमाइ संसारमां हि वसतउ पणि॥ जल कर परिहरइ शीतल कंदइ पाणी मा॥ तिम कर्म नइ लेप न लागइ कमलनुं पत्र हूं आधिकारइ ६० तिम वीतराग नइ॥ जीभ नि लीजी मइ रसादिक रसनइ विषइ

ओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण न लिप्पए भवमज्झे वि संतो जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ६० जीहाए रसंग-

तीर्थंकरादिक तेरसना रागनिं संतोषनुं हेतु कारण॥ मनोज्ञ रसनिं कहइ तीर्थंकरादिक॥ तेरसद्वेष नउ असंतोष नउं हेतु कारण अमनोज्ञ पाहु उत्तद कहइ तीर्थंकर॥ अथवा नली पाहु मारस नइ विषइ समो मध्य कहइ॥ एहवा राग नही पामइ द्वेष नही ते वीतराग कहीइ ६१ विषइ जिह्वानी

हणं वयंति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ६१ रसस्स जीहं ग-

ग्रहण ग्राहक कहइ॥ जीभ नइ रसनो पाहु ग्राहरस तेहनु॥ ग्रहण ग्राह्य कहइ तीर्थंकरादिक॥ रागसंतोषनउं हेतु कारण अमनोज्ञ प्रत्ये कहइ तादवातीर्थंकरादिक॥ एहवा असंतोष नुं कारण अमनोज्ञ प्रत्ये कहइ वातीर्थंकरादिक॥ ६२ सम्यारस नि विषइ जे कोई थई लोलीउ थको

हणं वयंति जीहाए रसं गहणं वयंति रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ६२ रसेसु जो गि-

मरणयामइ जीवतां त अकालि अकस्मात मरण रागइ थी मुत्त तण मड्डातिनि नाश॥ लोहनि काबइ करीनि सरायाउ वीध्याउ काया जाणी रागत हुनी॥ जिम मच्छ निगुमास भिं जीली उद्यक तं मरण पामइ दुःख पामइ ६३ जे कोई पक्षादिकनी

द्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं रागाउरबडिसविभिन्नकाए मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ६३ जे आ-

॥उत्तरा॰ ध्य॰

विदोसंसमुवेइ तिव्वं तंसिक्खणे से उ उवेइ दुक्खं दुद्दंतदोसेण सएण जंतू न किंचि रसं अवरज्झई से ८४

एगंतरत्तो रुइरे रसंमि अतालिसे से कुणई पओसं दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ८५

रसाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइणेगरूवे चित्तेहि ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ८६

रसाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसंनिओगे वए विओगे य कहिं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ८७

रसे अतित्ते य परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ८८

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो रसे अतित्तस्स परिग्गहे य मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ८९

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरंते एवं अदत्ताणि समाययंतो रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ९०

रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ९१

एमेव रसंमि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ९२

रसे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण न लिप्पई भवमज्झे वि संतो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ९३

कायस्स फासं गहणं वयंति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ९४

फासस्स कायं गहणं वयंति कायस्स फासं गहणं वयंति रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ९५

कमल फरस नइ विषइ जीको ईद्रधुनो वृष्णवंत तद अकाल अकस्मात कहइ पामइ जिम रागस्तो। शादउपाणी मादइं जिमयाह कहइ जलचर जीवे प्रहिउं म
लहइ विनाश मरण इहधी मिउ॥ यइठ उ सकउ दीसमणी अरधी मादिमरणपामि ७६

॥उत्तरज्झ॥ फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं रागाउरे सीयजलावसन्ने गाहग्गहीए महिसे वरन्ने ७६
१५५

जो कोई प्रसयादिक फरसनि विषइं। तेहते णि क्षणइ उवसरनि विषइ॥ दुर्दांतसमनिंदी थर्निदो सइं पोतनइ परंते दुस्य आहं तं करसते दुःख कउ ७७
तीव्र आकर उ पामइ दुक्ख क्लेस घणउं लहइ जीव आपणा लहइ अपराध कोई नथी करउ॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं दुद्दंतदोसेण सएण जंतू न किंचि फासं अवरज्झई से ७७

एकांत रूपउं रातउ जलवा सुंआला फरसनइ विषइ पाहइ आफरसनइ विषइं तेकरइ अति द्वेष उपइ दुःख संबंधनी पीका घणी पां मिबा लइ अज्ञानी पइ नलीपाइं ते विराग द्वेषइ करी मुनि साधु रागरहीत थको ७८

एगंतरत्ते रुइरंसि फासे अतालिसे से कुणई पओसं दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ७८

कमपामवासंबंधी सबनानी कोइ। चराचर त्रस थावर जीव अनेक प्रकारना हिंसइं सो मलोगनइ विषइ चित्त अनेक प्रकार मनवकाय परिताप दिका आइ इकरी परिताप पमाडइ बाल अज्ञानी पीलइ जीवनइ आत्मानइ पोतानइ अर्थ ७९
प्रवर्त्ततउ जीव॥ गुरुमोह तउ किलिष्ट रागादिक परिणाम पामउ॥

फासाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे चित्तेहि ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ७९

फासकमल फरिसादिक फरसनानो गनइ विषइ इहमनं तोष न लहइ॥ मवउं उपराजइ बानइ विषइ राखवा निविषइ आपणा परनइ प्रयोजनि ग्रुंजवानइ विषइ वक्तइ विपइ। गयइ नवनइ॥ विरहनि किहां थकी सुख फरसनानो गवतीना कालनि वइ इससंतोषने इनिलाभ राजानइ प्रकार कि हां सुख जइइ। ८०

फासाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे वए विओगे य कहिं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ८० १५५

फरिसमनि विषइ॥ अतृप्ती थीयकउ फरसनापरि ग्रहविषइ॥ पामउ तलवा पराव आसक्त लोग प्रवर्त्तिउ संतोष न लहइं अतृप्ता थनि दोष इकरी। नइं इख्री थयाइं लोभइ करी कलुष थउ अन्यनी रवस्त्रादिक ८१
अणदी धउं उ लेवियइ गृहण करइ॥

फासे अतित्ते य परिग्गहे य सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ८१

फरिसमनइ लोभइ पराभव्यानइ अदत्तव स्तुनी ग्रहणहारनइ फरसनि विषइ अतृप्ती थीयकउ विषइ परिग्रहनइ॥ मायामृषा वादित वर्ततइ लोभनइ दोष इकी अदत्ता लेइ मायामृषावादा लइ॥ तिहां थकी निर्मुकाइं आविस्यास विकल्पा दिकलहइ ८२

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो फासे अतित्तस्स परिग्गहे य मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ८२

मृषानइ पछिवलि पहिलुं पणि॥ मृषा बोलि वानाकाल अवसरिक्रवे॥ इंम गणि वकारइ अदत्त लेतो थको॥ फरसमी अतृप्त थयो कोइ थी उंइंने आरादित ८३ फरसना
॥ कोइ निरखी उ कइइ इ पामइ अनिश्रय॥
॥ वसाव नइइ दजीक परलोक गइ नइ॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरंते एवं अदत्ताणि समाययंतो फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ८३

रागि नरमनुष्यनइ एणि प्रकारइ किहां थकी सुख कइ। कदीयइ पणि कांई इहलोकि ते पणि तेफरिसनानो गवि वानइ विषइ॥ किलेश नउ दुक्ख पामइं। निपजावइ इकरइ इइ तेफरिसनो गविवाका। ८४ जिम फरिसनइ कारइं ज्जेह कइ आत्मानिक

फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ८४

नइ विषइ रागवइ। तिम द्वेषपणि वि किं पामइ दुक्खनी परंपरा श्रेणि उतरो त्तरं चमती चरती फरिसमनइ विषइ द्वेषवंते चित्तइ कर्तं पापकर्म उपार्जइ॥ पाइइ पापकर्म ते वनइ पणि वली जे प्रकारइ दुखनु कारण विपाक अनुभवि ८५ मनोज्ञ फरसादिकनइ विषइ मनुष्य विरक्त

एमेव फासम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ८५

राग अधरउ॥ शोक रहित हुइ पवहनो पूर्व इकहस्या तेदुक्खनी परंपरानी समूहनी परंपरा श्रेणि करीनइ नलीपाइ संसारमादिरह अपणि नवरमाइं॥ सरतव अवर्तिनी पाइं तिहां उपरइइ तदविंइ जिहां जिम पाणीइं कमलनिक मजिणी नु पानुं लीपाइ नही तिम नीरागी मनुष्य पणि रागद्वेष करी न लीपाइ ८६ तेरणवाए अधिकार रुप मननइ लावकहनो दीयातणुं आ उवरत्निणमात

फासे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण न लिप्पई भवमज्झे वि संतो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ८६ १५५ मणस्स भावं

ग्रहण ग्राह्य कहइ तीर्थंकरादिक॥ तमनोहर लावइ जोगनुंते हेकारण॥ कहइ तीर्थंकरादिक॥ तिहां रागनाव द्वेषनुं कारण अमनोहर प्राह्य भाव कहइ॥ निरूपइ तीर्थंकरादिक तेहमां जे मनस्थ नइ अमनोहर विषइ राग द्वेष नहीं धर्मध्यानि शुक्लध्यान इकरी निवर्त्त ८७ रागरहित मनमो ग्रहण ग्राह्य दिक्षाना आश्रय अनेक शुभचिंतन तिंक लहइ

गहणं वयंति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ८७ मणस्स भावं गहणं

॥उत्तरज्झ
१५२

यं वयंति भावस्स भावं गहणं वयंति रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ८४ भावेसु जो गि

द्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे करेणुमग्गावहिए व नागे ८५ जे

यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं दुद्दंतदोसेण सएण जंतू न किंचि भावं अवरज्झई से ८६

एगंतरत्तो रुइरंसि भावे अतालिसे से कुणई पओसं दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे ८७

भावाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइणेगरूवे चित्तेहि ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे १५२

८८ भावाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसंनिओगे वए विओगे य कहिं सुहं से संभोगकाले य अतित्ति

लाभे ८९ भावे अतित्ते य परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आयय

इ अदत्तं ९० तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो भावे अतित्तस्स परिग्गहे य मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्था

वि दुक्खा न विमुच्चई से ९१ मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरंते एवं अदत्ताणि समाययंतो भावे अतित्तो

दुहिओ अणिस्सो ९२ भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि तत्थोवभोगेवि किलेसदुक्खं ९३ एमेव भा

वंमि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ९४ भा

वे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण न लिप्पई भवमज्झेवि संतो जलेण वा पुक्खरिणीपला

उ०ट०वृ
१०९

से १०० १२६ एवंदियत्था य मणस्स अत्था दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ते चेव थोवंपि कयाइ दुक्खं न

वीयरागस्स करंति किंचि १०१ न कामभोगा समयं उवंति न यावि भोगा विगइं उविंति जे तप्पओसी य प

रिग्गही य सो तेसु मोहा विगइं उवेइ १०२ कोहं माणं च मायं लोहं दुगुंछं अरइं रइं च हासं भयं सोग पुं इत्थिवेयं न ×२६×

पुंसवेयं विविहे य भावे १०३ आवज्जई एवमणेगरूवे एवंविहे कामगुणेसु सत्तो अन्ने य एयप्पभवे विसे

से कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से १०४ कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू पच्छाणुतावेण तवप्पभावं एवं वियारे

अमियप्पगारे आवज्जई इंदियचोरवस्से १०५ तओ से जायंति पओयणाइं निमज्जिउं मोहमहण्णवंमि सुहेसिणो दुक्ख १०९

विणोयणट्ठा तप्पच्चयं उज्जमए य रागी १०६ विरज्जमाणस्स य इंदियत्था सद्दाइया तावईयप्पगारा न तस्स स

व्वेवि मणुन्नयं वा निव्वत्तयंती अमणुन्नयं वा १०७ एवं ससंकप्पविकप्पणासु संजायइ समयमुवट्ठियस्स अत्थे य

संकप्पयओ तओ से पहीयए कामगुणेसु तण्हा १०८ स वीयरागो कयसव्वकिच्चो खवेइ नाणावरणं खणेणं

तहेव जं दंसणमावरेइ जं चंतरायं पकरेइ कम्मं १०९ सव्वं तओ जाणइ पासए य अमोहणे होइ निरंतराए

अणासवे झाणसमाहिजुत्ते आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ११० सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को जं बाहई सययं

जंतुमेयं दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो तो होइ अच्चंतसुही कयत्थो १११ अणाइकालप्पभवस्स ए

MEMORIAL

उ०ट बु
१५३

सोसवदुक्खस्सपमोक्खमग्गो वियाहिउ जं समुविच्च सत्ता कमेण अच्चंतसुही भवंति त्तिबेमि ॥३२॥ प्रमादस्था
नं अज्झयणं सम्मत्तं ३२ अट्ठकम्माइं वुच्छामि आणुपुव्विं जहक्कमं जेहिं बद्धो अयं जीवो संसारे परि
वत्तए १ नाणावरणं चेव दंसणावरणं तहा वेयणिज्जं तहा मोहं आउकम्मं तहेव य २ नामकम्मं च
गोयं च अंतरायं तहेव य एवमेयाइं कम्माइं अट्ठेव उ समासउ ३ नाणावरणं पंचविहं सुयं आभिणि
बोहियं उहिनाणं तइयं मणनाणं च केवलं ४ निद्दा तहेव पयला निद्दानिद्दा य पयलपयला य तत्तो य ॥१५३
थीणद्धि उ पंचमा होइ नायव्वा ५ चक्खुमचक्खुउहिस्स दंसणे केवले य आवरणे एवं तु नवविग

प्पं नायव्वं दरिसणावरणं ६ वेयणियं पि य दुविहं सायमसायं च आहियं सायस्स उ बहू भेया ए
मेवासायस्सवी ७ मोहणिज्जं पि दुविहं दंसणे चरणे तहा दंसणे तिविहं वुत्तं चरणे दुविहं भवे ८ स
मत्तं चेव मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तमेव य एयाउ तिन्नि पयडीउ मोहणिज्जस्स दंसणे ९ चरित्तमोहणं कम्मं
दुविहं तु वियाहियं कसायमोहणिज्जं नोकसायं तहेव य १० सोलसविहभेएणं कम्मं तु कसायजं
सत्तविहं नवविहं वा कम्मं नोकसायजं ११ नेरइयतिरिक्खाउ मणुस्साउ तहेव य देवाउयं चउत्थं तु
आउकम्मं चउव्विहं १२ नामकम्मं च दुविहं सुहं असुहं च आहियं सुहस्स उ बहू भेया एमेव असुह

॥७५२५

सवी १३ गोयकम्मं दुविहं उच्चं नीयं च आहियं उच्चं अट्ठविहं होइ एवं नीयंपि आहियं १४ दाणे लाभे य भोगे
य उवभोगे वीरिए तहा पंचविहमंतरायं समासेण वियाहियं १५ एयाउ मूलपयडीउ उत्तराउ य आहिया
पएसग्गं खित्तकाले य भावं चउत्तरं सुण १६ सव्वेसिं चेव कम्माणं पएसग्गमणंतगं गंठियसत्ताईयं अंतो
सिद्धाण आहियं १७ सव्वजीवाण कम्मं तु संगहे छद्दिसागयं सव्वेसुवि पएसेसु सव्वं सव्वेण बद्धगं १८
उदहीसरिनामाणं तीसई कोडिकोडीउ उक्कोसिया ठिई होइ अंतोमुहुत्तं जहन्निया १९ आवरणिज्जाण १०५
दुण्हंपि वेयणिज्जे तहेव य अंतराए य कम्मंमि ठिई एसा वियाहिया २० उदहीसरिनामाणं सत्तरिं को

डीकोडीउ मोहणिज्जस्स उक्कोसा अंतोमुहुत्तं जहन्निया २१ तित्तीससागरोवम उक्कोसेण वियाहिया
ठिई उ आउकम्मस्स अंतोमुहुत्तं जहन्निया २२ उदहीसरिनामाणं वीसई कोडिकोडीउ नामगोयाण
उक्कोसा अट्ठमुहुत्तं जहन्निया २३ सिद्धाणणंतभागो अणुभागा हवंति उ सव्वेसुवि पएसग्गं सव्वजी
वेसु इच्छियं २४ तम्हा एएसि कम्माणं अणुभागे वियाणिया एएसिं संवरे चेव खवणे य जए बुहे त्ति
बेमि २५ कम्मपयडीअज्झयणं सम्मत्तं ३३ लेसज्झयणं पवक्खामि आणुपुव्विं जहक्कमं छण्हंपि कम्म
लेसाणं अणुभावे सुणेह मे १ नामाइं वण्णरसगंध फासपरिणामलक्खणं ठाणं ठिइं गइं चाउं लेसाणं तु सुणे

उ०प०ट०बु
१५५

२॥ नामकहइ। छियलिंजी कृष्णलेश्या १ बीजी नीललेश्या २ त्रीजी कापोतलेश्या ३ तेजोले श्या ते ४ तथा पंचमी पद्मलेश्या ५ शुक्लेश्या नाम छठी कहीइ ६ एलेश्याना नाम यथाक्रमइं जाणिवां ३ लेश्यानो वर्ण कहि छिइ प्रथम कृष्णलेश्या

दुमे ३ किण्हा नीला य काऊ य तेउ पम्हा य तहेव य सुक्कलेसा य छट्ठी उ नामाइं तु जहक्कमं ३ जीमूतनि

मेघसरीखुं पाकानुं सिंगडुं तेह सरिखी कृष्णलेश्या वर्ण कहीइ ४ नीलो अशोक वृक्ष तेह चाषपंखी तेह सरिखी नीललेश्या वर्णइ

द्धसंकासा गवलरिट्ठगसन्निभा खंजणनयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ४ नीलासोगसंकासा चासपि

तेहसरीखी वेडूर्यरत्न तेह सरिखी नीललेश्या वर्णइ ५ अलसीनां फूल सरीखी ॥ कोइलपांख तेह पारेवानी

च्छसमप्पभा वेरुलियनिद्धसंकासा नीललेसा उ वण्णओ ५ अयसीपुप्फसंकासा कोइलच्छदसन्निभा पारेव

कोटि सरीखी ॥ कापोतलेश्या वर्णइ ६ हिंगुलो धातु सरीखी जाणवी ॥ उगतासूर्यसरीखी सूडानी चांच दीवा सरीखी तेजोलेश्या

यगीवनिभा काउलेसा उ वण्णओ ६ हिंगुलयधाउसंकासा तरुणाइच्चसन्निभा सुयतुंडपईवनिभा तेउले

सरीखी जाणवी ७ हरियालना वर्ण सरिखा हलदीना वर्ण सरीखा सणना फूल सरिखा पद्मलेश्या वर्णइ ८ सं

सा उ वण्णओ ७ हरियालभेयसंकासा हलिद्दाभेयसमप्पभा सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ वण्णओ ८ सं १५५

ख मचकुंद सरिखी दूध सरीखी रूपाना हार सरीखी शुक्ललेश्या वर्णइ ९ जिम कडवा तुंबडानो रस लिंबडानो रस स्वाद जाणवो

खंकुंदसंकासा खीरपूरसमप्पभा रययहारसंकासा सुक्कलेसा उ वण्णओ ९ जह कडुयतुंबगरसो निंबरसो

कडुई रोहिणीवनस्पति ॥ एहथकी अनंतगुणउ कृष्णलेश्या रसस्वाद जाणिवो १० जिम त्रिगडुनुं रसस्वाद तीखो गजपीपरि स्वाद

कडुयरोहिणीरसो वा इत्तो वि अणंतगुणो रसो उ किण्हाए नायव्वो १० जह तिकडुयस्स य रसो तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा

इत्तो वि एहथकी अनंतगुणो तेहवु रसस्वाद कापोतलेश्या ११ जिम काचा आंबानो रस कषायलो एहथकी अनंतगुणउ

इत्तो वि अनंतगुणो रसो उ नीलाए नायव्वो ११ जह तरुणअंबगरसो तुवरकविट्ठस्स वा वि जारिसओ इत्तो वि अणंत

तेहवु रसस्वाद कापोत लेश्यानो जाणिवउ ॥ १२ जिम पाका आंबानो रस स्वाद कांई खाटो कांई मधुरो एहथकी अनंतगुणो तेहवु रस

गुणो रसो उ काऊए नायव्वो १२ जह परिणयंबगरसो पक्ककविट्ठस्स वा वि जारिसओ इत्तो वि अनंतगुणो रसो उ ते

लेश्यानु जाणिवउ ॥ १३ वरप्रधान वारुणीमदिरा विविध प्रकारना आसव मधु मद्य सरीखो एहथकी पद्मलेश्यानुं रस

ऊए नायव्वो १३ वरवारुणीए व रसो विविहाण व आसवाण जारिसओ महुमेरगस्स व रसो इत्तो पम्हाए परएण

१४ जिम खजुर दूध स्वाद खांड साकर एहथकी अनंतगुण शुक्ललेश्यानु रस अतिमीठउ मधुर जाणिवउ १५ लेश्यानउ गंध कहि छि

१४ खज्जूरमुद्दियरसो खीररसो खंडसक्कररसो वा इत्तो वि अनंतगुणो रसो उ सुक्काए नायव्वो १५ जह गोमडस्स

गंध कृति गायनुं मडुं जेहवुं गंधइ जिम सर्पनुं मडुं गंध एहथकी अनंतगुणि अधिको अप्रशस्त कृष्णलेश्या नीललेश्या कापोतलेश्यानु जाणिवउ ॥ १६ जिम सुरभि गंध

गंधो सुणगमडगस्स व जहा अहिमडस्स मारणं इत्तो वि अणंतगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणं १६ जह सुरहि

॥उत्तराध्ये
१५६

केतकीमोतिआदि अनेकवलीत्रमजोर्गेविवस्वासना एहथकी अनंतगुणि भली ॥ प्रसस्तलेश्याशुक्ललेश्यापद्मलेश्यातेजोलेश्या नतलेश्योनी गंध जाणवो ॥ १७ निकरवतकेकरीफरसफरसक तथा वलीगवळी
फललगंध॥ गंधद्रव्यनिरात केवल वासनावासीता ले लेश्या तेजोलेश्यापद्मलेश्याशुक्ल नतलेश्याना गंध जाणवो १७ निकरवत ककडीनहनुफरसकाकडी नुं फरस जाणवो ॥

कुसुमगंधो गंधवासाणपिस्समाणाणं इत्तोअणंतगुणो पसत्थलेसाणतिण्हंपि १७ जहकरगयस्सफासो गोजिब्भा

वकवतिनफरिसदवा एहथकी अनंतगुणइ लेश्या अप्रसस्तानो पोहइत्रिण कृष्णनीलक १८ जिमबूरवनस्पतीनो फूलमो तथा वलीनवनीमाखणनुंफरिसमणीमनोह्मल सीहवासुकमालफरिस
सागपत्रनोमांनज्जेहा कापोतप्रहनउ तिमखरदरउं जाणिवउं फरिसअतिसुकमाल छउ॥
वोफरिसखरखरउ॥

एवसागपत्ताणं इत्तोविअणंतगुणो लेसाणंअप्पसत्थाणं १८ जहबूरस्सवफासो नवनीयस्सवसिरीसकुसुमा

एहथकी अनंतगुणउं सहततइ प्रसस्त नलीतेजोलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्यानुं फरिसजाणवु १९ त्रणप्रकारे जिस्या नोपरिणामकहिवउं जघन्य मध्यम उत्कृष्ट सत्तावीसप्रकारे तेहनां एकेकाइत्रण जघन्य मध्यम उत्कृष्ट इम त्रणने त्रणेगुणतां नवप्रकार थाय एकासीप्रकारे इत्यादि
कमालउ॥

णं इत्तोविअणंतगुणो पसत्थलेसाणतिण्हंपि १९ तिविहोवनवविहोवा सत्तावीसइविहक्कसीउवा दुसउ

इकेकाघनुमध्य लेश्याननापरिणामजाणिवा तेह २० ब्रविंलेश्यानवेलकहइकाकिहिं पंचआश्रवप्रमादीमनवचनकायात्रिकंगुप्ति तीव्रकठिनआरंभकठिनप्र सर्वजीवनि
मउतकष्टतेहवाइ नमतोगइ परिणामनीसंख्याकहीनस किसाम्रुषारः२ हनइमैथुनअप रुप्तिमोकलउवकी वकायनीरक्षाथकी ३ विरमणसहकोः सवासूक्ष्म अहितका
कहिंअनंतपणा छकी॥ रिग्रहपञ्चवामिथ्यात्वादि आ सनइ छकायनुं विराधकउ जिव ३॥ आरंभनितइ सहित॥ रीउद्वा॥

तेयालोवा लेसाणंहोइपरिणामो २० पंचासवप्पमत्तो तीहिंअगुत्तोछसुअविरउय तिव्वारंभपरिणउ खुद्दोसा २

हणणइअणविमासणकारी॥ इहलोकपरलोकनोनिःशंक॥ वोमइइंद्रियाननिग्रही ऐसीपुरुषपज्ञीत एहवाव्यापारजोगइ आदिकइ कृष्णलेश्यानइ परिणामइ परिणमइ २२
चोरीप्रमुखनुंकरवावालनरमनु स्वनीसंकाइरहितपरिणामजे नबीजाणि सहितवर्तइ
॥ प्रवर्त्तिया २१ इनउत्तीकाहिइ नइइ ॥

हस्सीउनरो २१ निद्धंधसपरिणामो निस्संसोअजिइंदिउ एयजोगसमाउत्तो किण्हलेसंतुपरिणमे २२

परनागुणअ घणाउंकहा अहितनव॥ कदाग्रह ५ वनइवचेना अनाचारइ विषय लुब्धबोलवउमहित आवमदनु सरसनिःशिथिलपरस किमशुकनिसुखअस्पइं
दुःखमांवउं १२लनैंनुसावमनि नीलकरणुं जेपद करणहार॥ दीवइसयत्॥ रत्न गहवीनुंविपरउसातानु
नही॥ गवेषी॥

इस्साअमरिसअतवो अविज्जमायाअहीरिया गिद्धीपउसेयसढे पमत्तेरसलोलुए सायगवेसएय

१५६

जे आदिकआरंभथकी सर्वजीवनिःहितकारी अणविमा एहवाव्यापारजोगइसहित नीललेश्यानु परिणामइ परिणमइ २४ वचनकवो वांकइका मनवांकरुउं किमइक
पाणीनाउपद्रवथकाउं स्यउ चोरीआदिककार्यकरइमनुष्य करणोजइ एहवानइ रीमनवां कउंटाली॥
सत्व॰ तेन घी॥

आरंभाअविरउ खुद्दोसाहस्सीउनरो एयजोगसमाउत्तो नीललेसंतुपरिणमे २४ वंकेवंकसमायारे नियडिल्ले अ

नसकोइं पोतानादोष॥ कपटरेखव॥ विपरीतसहृदइणाविकेक २५ परनइ आक्रोसइसहित॥ चोरीकरिवारवीवस्तलइने एहवाव्यापारसहीत
दोषकिं उलांवउ प्रवर्त्तइवउ नइआर्यतजोलहणरहीता रागादिसनुद्वविरुद्धवोलइ परनीसंपदादेखीनसकइं॥

णुज्जुए पलिउंचगउवहिए मिच्छदिट्ठीअणारिए २५ उप्फालगदुट्ठवाईय तेणेयाविय मच्छरी एयजोगसमाउत्तो २

कापोतलेश्यानइपरिणामइ २६ नीचावृत्तिकहतांमनवचनका मायारहीतकजवीजाकतू अत्यसहगुरुनउविनयतेह मज्जयादिकव्यापारवेतउपधानवंतमि
परिणमइ याइकरीमानरहितचपलाई॥ हलादिकरहितविनीतविनय नउ जाणइइंद्रियदमइ पिंडिजो॥ दांतसहितलहणवानउवंर्ध जोगनु॥ २७
पणि रहीत प्रवर्तइ॥ कहकासलउ वहणारा॥

काउलेसंतुपरिणमे २६ नीयावित्तीअचवले अमाईअकुउहले विणीयविणएदंते जोगवंउवहाणवं २७

धर्मानुष्ठानतनीः वतयत्नका पापथकीबीहइ हितकि एहवइंद्रवलिउयोगसहित तेजोलेश्यानइपरिणामइपरिणमइ पातलीक्रोधाति क्रोधनइमान अनइ
रुचिविजे हनि ललनुनिवहि वोचणहारमाहातिजाबी तद॥ २८ मायाप
णकार॥ रवचना

पियधम्मेदढधम्मे वज्जभीरुहिएसए एयजोगसमाउत्तो तेउलेसंतुपरिणमे २८ पयणुकोहमाणेय माया

इंलोभवांमनउपातला रागद्वेष प्रवितकहनउदमु॥ मनवचनकायानुयो २९ इनिशेष्यावचननउबोलणहार उवकरकानवीउमन्युउ॥ एहवाव्यापारजोगइ
श्रामावइ झाकउनउ॥ कोउपसमु जिंद्रआतमाकेहनउ॥ गवइविसकेहनइ॥ वइइंद्रिय केणिजीत्यांछि॥ सहितवइतह

लोभेयपयणुए पसंतचित्तेदंतप्पा जोगवंउवहाणवं २९ तहापयणुवाईय उवसंतेजिइंदिए एयजोगसमा

पद्मलेश्यानइपरिणामइपरिणमइ ३० आर्तध्याननइरौद्रध्यान धर्मध्याननइशुक्लध्याननध्यावइ रागादिकउपशम्युउवइ सुमतिसुमतिवंतगुप्तित्रिण
वर्जीनइपरिहरीनइ॥ ध्याइचित्तमांधरइ चित्तजिहनउदम्योवइ करीगुप्तउछइआत्म॥ ३१

उत्तो पम्हलेसंतुपरिणमे ३० अट्टरुद्दाणिवज्जित्ता धम्मसुक्काणिझायए पसंतचित्तेदंतप्पा समिएगुत्तेयगुत्तिसु २

[illegible] २५७

सरागी संयम सुधवी उपशम्या रागद्वेष उपशम्या छे इंद्रिय जेणे एकाग्र ... शुक्ललेश्यानइ परिणामइ परिणमे ३२ असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणीना समय ... लोकाकाशना प्रदेश जेटला ...

सरागवीयरागो वा उवसंतजिइंदिए एयजोगसमाउत्तो सुक्कलेसाउ परिणामो ३२ असंखिज्जाणोसप्पिणीणं उस

... असंख्याता लोकाकाशना ... लेश्याना स्थानक छे ३३ अंतर्मुहूर्त्त जघन्य स्थिति दस सागरोपम पल्योपमनइ असंख्यातमइ भागइ अधिक ...

सप्पिणीणा जे समया संखाईया लोगा लेसाण हवंति ठाणाइं ३३ मुहुत्तद्धं तु जहन्ना दसउदहीपलियमसंखभागम

... उत्कृष्टी कृष्णलेश्यानी ३४ अंतर्मुहूर्त्त जघन्य स्थिति त्रिण सागरोपम नइ असंख्यातमइ भागि अधिक उत्कृष्टी ... थिति

ब्भहिया उक्कोसा होइ ठिई नीललेसाए ३५ मुहुत्तद्धं तु जहन्ना तिन्नुदहीपलियमसंखभागमब्भहिया उक्कोसा होइ ठिई

जाणवी कापोतलेश्यानी ३६ अंतर्मुहूर्त्त जघन्य स्थिति बि सागरोपम पल्योपमनइ असंख्यातमइ भागि अधिक उत्कृष्टी जाणवी तेजोलेश्यानी ...

नायव्वा काऊलेसाए ३६ मुहुत्तद्धं तु जहन्ना दोउदहीपलियमसंखभागमब्भहिया उक्कोसा य नायव्वा तेउलेसाए ३७

अंतर्मुहूर्त्त दस सागरोपम अंतर्मुहूर्त्त अधिक पद्मलेश्या उत्कृष्टी स्थिति ... जाणवी पद्मलेश्यानी ३८ अंतर्मुहूर्त्त तेत्रीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त्त अधिक ... [illegible]

मुहुत्तद्धं दसउदही होंति मुहुत्तमब्भहिया उक्कोसा य नायव्वा पम्हलेसाए ३८ मुहुत्तद्धं तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहि

उत्कृष्टी स्थिति ... जाणवी शुक्ललेश्यानी ३९ ए लेश्यानी सामान्य प्रकारइ स्थिति जाणवी ... लेश्यानी ... [illegible]

या उक्कोसा य नायव्वा सुक्कलेसाए ३९ एसा खलु लेसाणं ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ चउसु वि गईसु एत्तो लेसाणं

२५७

स्थिति कहुं छुं ४० दस सहस्र वरस ... कापोतलेश्यानी स्थिति जघन्य ... त्रिण सागरोपम असंख्यातमो भाग अधिक उत्कृष्टी ... कापोतलेश्यानी ... [illegible]

ठिइं तु वोच्छामि ४० दसवाससहस्साइं काऊए ठिई जहन्निया होइ तिन्नुदहीपलियमसंखभागं च उक्कोसा ४१ तिन्नु

त्रिण सागरोपम अनइ असंख्यातमइ भागि अधिक नीललेश्यानी स्थिति ... दस सागरोपम पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक उत्कृष्ट ... ४२ ... [illegible]

दहीपलिओवम असंखभागो जहन्न नीलठिई दसउदहीपलियमसंखभागं च उक्कोसा ४२ दसउदहीपलियम

... जघन्य स्थिति कृष्णलेश्यानी ... तेत्रीस सागरोपमनी उत्कृष्टी कृष्णलेश्यानी ... ४३ ए नारकीमध्ये लेश्यानी स्थिति वर्णवी ... [illegible]

संखभागं जहन्निया होइ तेत्तीससागराइं उक्कोसा होइ किण्हाए ४३ एसा नेरइयाणं लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ

... तिर्यंचनी मनुष्यनी देवतानी ... ४४ अंतर्मुहूर्त्तनो काल ... लेश्यानी स्थिति ... तिर्यंच ... [illegible]

तेण परं वोच्छामि तिरियमणुस्साण देवाणं ४४ अंतोमुहुत्तमद्धं लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ तिरियाण नराणं वा

... केवल शुक्ललेश्या ... अंतर्मुहूर्त्त जघन्य स्थिति ... उत्कृष्टी ... पूर्वकोडी ... नव वरसे करी ओछी ... [illegible]

वज्जित्ता केवलं लेसं ४५ मुहुत्तद्धं तु जहन्ना उक्कोसा होइ पुव्वकोडीउ नवहि वरिसेहि ऊणा नायव्वा सुक्कलेसाए

४६ ए तिर्यंच मनुष्यनी लेश्यानी स्थिति विस्तारपणि वर्णवी ... लेश्यानी स्थिति देवतानी ... ४७ दस ... [illegible]

४६ एसा तिरियनराणं लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ तेण परं वोच्छामि लेसाण ठिई उ देवाणं ४७ दसवाससह

[illegible]

[illegible] MEMORIAL

॥उयरझु १५५

कृष्णलेस्यानी थिति जघन्य वीतो नरक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी लेस्यानी थिति जांणवी ४८ जे कृष्णलेस्यानी थिति निश्चै समित उत्कृष्टी
भवनपतिनी आयु कहइ॥

दस्साइं किण्हाइ ठिइ जहन्निया होइ पलियमसंखेज्जइमो उक्कोसा होइ किण्हाए ४८ जा किण्हाए ठिई खलु उक्को-

थिति वली समय एक करीनइ अधिक एतली जघन्यथी नीलनी लेस्यानी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग नीललेस्यानु जे नीललेस्यानी थिति निश्चै उत्कृष्टी वली समय एक
स्यानी थिति जांणवी। पहिलानी पेठइं उत्कृष्टी जांणवी ४९ खलु।

सा सा उ समयमब्भहिया जहन्नेणं नीलाए पलियमसंखं च उक्कोसा ४९ जा नीलाए ठिई खलु उक्कोसा सा उ सम-

करी अधिक॥ जघन्यथी सी नीत काऊ कापोत इनि पल्योपमनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी का ॥ ५० एतला अनंतर कहिस्युं जेह तेजोलेस्या जिम असुर देवता नागगणसमूह
लेस्यानी थिति जांणवी पोताल लेस्यानी थिति जांणवी पूर्व लाभ कीधला ॥ कहइ छइ तिम तेह कहइ छइ
नरक लोकनी जइ एतलि तेजोलेस्या भवनपति निकायक कहीइ नइ॥

यमब्भहिया जहन्नेणं काऊए पलियमसंखं च उक्कोसा ५० तेण परं वुच्छामि तेऊलेसा जहा सुरगणाणं

भवनपतिन व्यंतर ज्योतिषी नि वि ॥ भवनपतिनइ उत्कृष्टी का केरो सागरो पल्योपम जघन्यथी सी तउ ते उत्कृष्टी सागरोपम विस्मे ए तेजोलेस्यानी बइं सागरोपम
मानिक नि भवनपति व्यंतर नि जघन्य थी ॥ पल्योपम तीन जघन्य पल्योपम असंख्या जोतल लेस्यानी थिति जांणवी जांणवी विमानिक आश्री जघन्य पल्य देव कासे रोत केत
समस्त वर्त उत्कृष्ट व्यंतर निषध्यो ॥ तमउसागर तउ ॥ ५१ लोकइ उत्कृष्टी जइ लोक लिप ल्या पमनइ

भवणवइवाणमंतर जोइसवेमाणियाणं च ५१ पलिओवमं जहन्ना उक्कोसा सागरा उ दुन्नहिया पलियम-

असंख्यातमइ॥ अधिक कहइं इम जांणवी ५२ दससहस्र वरसइं। तेजोलेस्यानी जघन्य थी तउ कहइ छइ। जइ सागरोपम असंख्य पल्यो। उत्कृष्टी
भाग करीनइ ताला लेस्यानी भवनपति व्यंतर आश्री जांणवी॥ पमनइ असंख्यातमइ भाग॥ । तेजोलेस्या नी थिति।

संखिज्जेणं होइ भागेण तेऊए ५२ दसवाससहस्साइं तेऊए ठिइ जहन्निया होइ दोन्नुदही पलिओवम अ-

जांणवी जीवादि देवलोकनी अपेक्षाइं ५३ तेजोलेस्यानी थिति खलु उत्कृष्टी समय एक करीनइ अधिक। जघन्य थिति पद्मलेस्यानी दससागरोपम मुहूर्त अधिक
निश्चय करीनइ जांणवी पर्याय देवलोक कहइ उत्कृष्टी पद्मलेस्यानी
नीरज पहचाइं॥ थिति पंचमा ब्रह्म देवलोक

संखभागं च उक्कोसा ५३ जा तेऊए ठिई खलु उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया जहन्नेणं पम्हाए दसमुहुत्ताहिया- १५५

नीरये काइं जा ५४ पद्मलेस्यानी थिति निश्चइं। उत्कृष्टी समय एक करीनइ अधिक॥ जघन्यथी शुक्ललेस्यानी थि तेत्रीस सागरोपम एक मुहूर्त अधिक उत
णिवी करीनइ जांणिवी॥ ति जांणवी देवलोकनी॥ कृष्टी शुक्ललेस्यानी थिति जांणवी विमाननी
पेक्षाइं॥ अपेक्षाइं॥ ५५

इं उक्कोसा ५४ जा पम्हाए ठिई खलु उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया जहन्नेणं सुक्काए तेत्तीसं मुहुत्तमब्भहिया ५५

हवइ लेस्यानी गति कारक॥ ए त्रिण लेस्या अधर्म पाप हइ जांणवी तेहनी॥ ए त्रिण लेस्यानी जीव प्राणी दुर्गति नरक तीर्यंच गति उपजइं ५६ तेजोलेस्या पद्मले ए त्रि
दि वलि कृष्ण नील कापोत लेस्या पाप आववानो कारण तिण अधर्म कहीइं स्या शुक्ललेस्या। एले
स्या

किण्हा नीला काऊ तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ एयाहि तिहि वि जीवो दुग्गइं उववज्जई ५६ तेऊ पम्हा सुक्का ति-

धर्म लेस्या कहीइ निर्मल धर्मना को। ए त्रिणि लेस्याइं जीव प्राणी सुगति देवलोक मनुष्य ५७ लेस्या सघलीइ कृष्ण नील का। पहिलइ जीवा आश्री पहिला समय
रण तिण धर्म कहीइं॥ गति उपजइ। पोत तेजो पद्म शुक्ल लेस्या ते इनि विषि परिणमाइ आत्मा परिणइ

न्नि वि एयाओ धम्मलेसाओ एयाहि तिहि वि जीवो सुगइं उववज्जइ ५७ लेसाहिं सव्वाहिं पढमे समयंमि परिणयाहिं

तिणी। नहीं कोई जीव नइ उपजवुं परभवे रानि विषइ तलि पहिलइ लेस्या सघलीइ॥ ।चरिम छेहलि समय तेहनी विषइ परिणमी॥ नहीं कोई संसारी जीवने
इइ। अवतरवुं॥ मनइ लेस्या आवइं उपजवुं नहीं कृष्ण आदि देई। जीव परि कहइ तणि यइ॥ उपपात उपजवुं अवतरवुं
५८

उ न वि कस्सवि उववाओ परभवे अत्थि जीवस्स ५८ लेसाहिं सव्वाहिं चरिमे समयंमि परिणयाहिं उ न वि कस्सवि उववा-

परलवि अनेरा भव नि विषइ तत ५९ जे स्यानइ अंतमुहूर्त गइ अनइ अंतमुहूर्त बाकी लइ थकइं लेस्याहिं इं परिणमइ जेहवी जीव प्राणी जाइं परभव
लि विषइ लइ लेस्या आव्या उपजवुं नहीं थणमइ थकइ कहतइ लेस्या रूपी पाछइ आवइं॥ र लोक नरक तीर्यंच मनुष्य
देव गति

ओ परभवे अत्थि जीवस्स ५९ अंतमुहुत्तंमि गए अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव लेसाहिं परिणयाहिं जीवा गच्छंति परलोए

हए ते कारणइ वकी ए त्रणि लेस्या॥ अनुभाग रस स्वरूप विचारक की॥ अप्रशस्त माठी कृष्णलेस्या। प्रशस्त भली तेजो लेस्या पद्म लेस्या स्वरूप तेणि ६१ एह लेस्यानुं अध्य
पकी दुर्गति प्रशस्त भला॥ जांणदी जीवनइ विचारी नइ॥ नील कापोत ए त्रिणि लेस्या॥ अधिष्ठइ लाव सादि तउ आश्रयइ चारी चारी थायते नन उ अर्थ ला
मइ निति ए वदस्वतं॥ जीवनइ परिहरी नइ॥ ए ह वद्ध सुधर्मा स्वामि जंबूप्रतइ कहइ॥ कहिउ छइ

६० तम्हा एयाण लेसाणं अणुभावे वियाणिया अप्पसत्थाओ वज्जेत्ता पसत्थाओ अहिट्ठिए मुणि त्ति बेमि ६१ लेसऽ

अज्झयणं सम्मत्तं ३४ सुणेह मे एगमणा मग्गं बुद्धेहिं देसियं जमायरंतो भिक्खू दुक्खाणंतकरो भवे १ गिहवासं परिच्च
ज्ज पवज्जामस्सिए मुणी इमे संगे वियाणिज्जा जेहिं सज्जंति माणवा २ तहेव हिंसं अलियं चोरियं अबंभसेवणं इ
च्छाकामं च लोभं च संजओ परिवज्जए ३ मणोहरं चित्तघरं मल्लधूवेण वासियं सकवाडं पंडरुल्लोयं मणसा वि न पत्थए ४
इंदियाणि उ भिक्खुस्स तारिसंमि उवस्सए दुक्कराइं निवारेउं कामरागविवड्ढणे ५ सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमू
ले व एगओ पइरिक्के परकडे वा वासं तत्थाभिरोयए ६ फासुयंमि अणाबाहे इत्थीहिं अणभिद्दुए तत्थ संकप्पए वासं
भिक्खू परमसंजए ७ न सयं गिहाइं कुव्विज्जा नेव अन्नेहिं कारए गिहकम्मसमारंभे भूयाणं दिस्सए वहो ८ तसा

णं थावराणं च सुहुमाणं बायराण य तम्हा गिहसमारंभं संजओ परिवज्जए ९ तहेव भत्तपाणेसु पयणे पयाव
णेसु य पाणभूयदयट्ठाए न पए न पयावए १० जलधन्ननिस्सिया जीवा पुढवीकट्ठनिस्सिया हम्मंति भत्तपाणे
सु तम्हा भिक्खू न पयावए ११ विसप्पे सव्वओधारे बहुपाणविणासणे नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइं न दीवए १२
हिरण्णं जायरूवं च मणसा वि न पत्थए समलेट्ठुकंचणे भिक्खू विरए कयविक्कए १३ किणंतो कइओ होइ विक्किणंतो
य वाणिओ कयविक्कयंमि वट्टंतो भिक्खू न हवइ तारिसो १४ भिक्खियव्वं न केयव्वं भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा कय
विक्कओ महादोसो भिक्खावित्ती सुहावहा १५ समुयाणं उंछमेसिज्जा जहासुत्तमणिंदियं लाभालाभंमि संत

ल लोलुए रसगिद्धे जिब्भादंते अमुच्छिए न रसट्ठाए भुंजिज्जा जवणट्ठाए महामुणी १७

अच्चणं रयणं चेव वंदणं पूयणं तहा इड्ढीसक्कारसम्माणं मणसा वि न पत्थए १८ सुक्कज्झाणं झियाएज्जा अनियाणे

अकिंचणे वोसट्ठकाए विहरेज्जा जाव कालस्स पज्जओ १९ निज्जूहिऊण आहारं कालधम्मे उवट्ठिए चइऊण

माणुसं बोंदिं पहू दुक्खा विमुच्चई २० निम्ममो निरहंकारो वीयरागो अणासवो संपत्तो केवलं नाणं सासयं परिनि

व्वुए २१ त्ति बेमि ३५ जीवाजीवविभत्तिं सुणेह मे एगमणा इओ जं जाणिऊण समणे

सम्मं जयइ संजमे १ जीवा चेव अजीवा य एस लोए वियाहिए अजीवदेसे आगासे अलोगे से वियाहिए

ए २ दव्वओ खित्तओ चेव कालओ भावओ तहा परूवणा तेसिं भवे जीवाणम् अजीवाण य ३ रूविणो य अरूवि

य अजीवा दुविहा भवे अरूवी दसहा वुत्ता रूविणो वि चउव्विहा ४ धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पएसे य आहिए

अहम्मे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए ५ आगासे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए अद्धासमए चेव अरूवी

दसहा भवे ६ धम्माधम्मे य दो चेव लोगमित्ता वियाहिया लोगालोगे य आगासे समए समयखित्तिए ७ ध

म्माधम्मागासा तिन्नि वि एए अणाइया अपज्जवसिया चेव सव्वद्धं तु वियाहिया ८ समए वि संतइं पप्प एवमेव वि

याहिए आएसं पप्प साईए सपज्जवसिए वि य ९ खंधा य खंधदेसा य तप्पएसा तहेव य परमाणुणो य बो

॥उपरवो
११२

हा रूविणो वि चउव्विहा १० एगत्तेणपुहुत्तेण खंधा य परमाणुया लोएगदेसे लोए य भइयव्वा ते उ खेत्तओ ११ इत्तो

कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं संतइं पप्प तेणाई अपज्जवसियावि य १२ संतइं पप्प तेणाई अपज्जवसिया

वि य ठिइं पडुच्च साइया सपज्जवसिया वि य १३ असंखकालमुक्कोसं इक्कं समयं जहन्निया अजीवाण

य रूवीणं ठिई एसा वियाहिया १४ अणंतकालमुक्कोसं इक्कं समयं जहन्निया अजीवाण य रूवीणं अंतर

मेयं वियाहियं १५ वण्णओ गंधओ चेव रसओ फासओ तहा संठाणओ य विन्नेओ परिणामो तेसिं पंचहा १६ वण्णओ परि

णया जे उ पंचहा ते पकित्तिया किण्हा नीला य लोहिया हालिद्दा सुक्किला तहा १७ गंधओ परिणया जे उ दु ११२

विहा ते वियाहिया सुब्भिगंधपरिणामा दुब्भिगंधा तहेव य १८ रसओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया तित्त

कडुयकसाया अंबिला महुरा तहा १९ फासओ परिणया जे उ अट्ठहा ते पकित्तिया कक्खडा मउया चेव गरुया

लहुया तहा २० सीया उण्हा य निद्धा य तहा लुक्खा य आहिया इइ फासपरिणया एए पुग्गला समुदाहिया २१

संठाणपरिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया परिमंडला य वट्टा य तंसा चउरंसमायया २२ वण्णओ जे भवे किण्हे

भइए से उ गंधओ रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य २३ वण्णओ जे भवे नीले भइए से उ गंधओ रसओ फासओ चे

व भइए संठाणओ वि य २४ वण्णओ लोहिए जे उ भइए से उ गंधओ रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य २५ व

११२ ण्णओ पीयए जे उ भइए से उ रसओ फास० भइए संठा० २६ वण्णओ सुक्किले जे उ भइए से उ गंधओ रसओ फासओ चेव भइ

ए संठाणओ वि य २७ गंधओ जे भवे सुब्भी भइए से उ वण्णओ रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य २८ गंधओ जे भवे दु

ब्भी भइए से उ वण्णओ रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य २९ रसओ तित्तए जे उ भइए से उ वण्णओ गंधओ फास

ओ चेव भइए संठाणओ वि य ३० रसओ कडुए जे उ भइए से उ वण्णओ गंधओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ३१

रसओ कसाए जे उ भइए से उ वण्णओ गंधओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ३२ रसओ अंबिले जे उ भइए से ११२

उ वण्णओ गंधओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ३३ रसओ महुरए जे उ भइए से उ वण्णओ गंधओ फासओ चेव भइ

ए संठाणओ वि य ३४ फासओ कक्खडे जे उ भइए से उ वण्णओ गंधओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ३५ फासओ मउए जे

उ भइए से उ वण्णओ गंधओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ३६ फासओ गुरुए जे उ भइए से उ वण्णओ गंधओ रस

ओ चेव भइए संठाणओ वि य ३७ फासओ लहुए जे उ भइए से उ वण्णओ गंधओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ३८ फा

सओ सीयए जे उ भइए से उ वण्णओ गंधओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ३९ फासओ उण्हए जे उ भइए से उ वण्णओ

गंधओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ४० फासओ निद्धए जे उ भइए से उ वण्णओ गंधओ रसओ चेव भइए संठाणओ

वि य ४१ फासओ लुक्खए जे उ भइए से उ वण्णओ गंधओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ४२ परिमंडलसंठाणे

उ०टबो
११३

तेहवर्णथी भाजिउ कहीइ न गंधरसथी भाजिउ कहीइ। फरसथी भाजिउ कहीइ॥ लाडूयानी परि संस्थान वाटलो ते वर्णथी भाजिउ कहीइ गंधरसथी भाजिउ कहीइ॥
कहीइ तिवर्णथी कीजइ ते गंधरसथी कीजइ वउ॥ वलीफरसथी कीजइ ४३ त्रिकूण संस्थानवालो जे॥ तिवर्णथी कीजइ वइ कहीइ ते गंधरसथी कीजइ

नइए से उ वण्णउ गंधउ रसउ चेव भइए फासउ विय ४३ संठाणउ भवे वट्टे भइए से उ वण्णउ गंधउ रसउ चेव भइए

फरसथी भाजिउ कहीइ सिंघोडानी परइ त्रिकूण वली गंधरसथी भाजिउ। गंधरसथी भाजिउ कहीइ। फरिसथी भाजिउ कहीइ ४५ चउरस आकार
कहीइ तिणि फरस ४४ वउ कहीइ कहीइ ते कहीइ कहीइ ते गंधरसथी कीजइ वउ कहीइ ते फरस थकी कीजइ संस्थान थकी तिवर्ण
थकी कहीइ वउ।

फासउ विय ४४ संठाणउ भवे तंसे भइए से उ वण्णउ गंधउ रसउ चेव भइए फासउ विय ४५ संठाणउ य चउ

तिवर्णथी भाजिउ कहीइ तिवर्ण गंधरसथी भाजिउ कहीइ फरसथी भाजिउ कहीइ॥ ४६ जाडउ फलजोवो दीरघ तिहवर्णथी भाजिउ कहीइ। वली गंधरस
थकी कहीइ वउ ते कहीइ ते रसथकी कहीइ वउ ते कहीइ ते फरस थकी कहीइ वउ॥ कालाकमी कहीइ आकार ॥ कहीइ तिणि वर्णथकी॥ सपए भाजि।
आयत संस्थान इपरिणम्यो वि कहीइ वउ ते॥ कोई कहीइ कहीइ तिणि

रंसे भइए से उ वण्णउ गंधउ रसउ चेव भइए फासउ विय ४६ जे आययसंठाणे भइए से उ वण्णउ गंधउ रस

४७॥ ए धातु अर्थ लिखीइ छइ॥ गंधरसफरिस संस्थान ५ एवं २० कालानारूप नीलानारूप पीलानारूप धउलानारूप रातानारूप एवं १०० वर्णनारस फर
रिस संस्थान ५ वर्ण ५ एवं २३ दुर्गंधनारूप सुगंधनार २३ एवं ४६ गंधना वर्ण ५ गंधर फरिस संस्थान ५ एवं २० तीखानारूप कडूयानारूप कसाइलानारूप मा
टानारूप मधुरानारूप एवं १०० रसनावर्ण ५ गंधर रस फरिस संस्थान ५ एवं २३ फरिसनार २३ सुहालार २३ लागानार २३ ताढानार २३ उनानार २३ चोपडार २३
लूखानार २३ एवं १८४ फरिसना इ गणपात ढलणी त्रिगणिकार णिधरखरउ गणीइ तिक्षार ढं सुंदालउ गणीइ त्रियक उ गणीइ तिक्षार इ लूखउ गणीइ
१८४ फरिसना सर्व इक ठ्यावर्ण गंधर रस फरिस एवं २० परिमंडल संस्थाननार २० वाटलानार २० त्रिकूणनार २० चोरसनार २० आयतननार २०
एवं १०० संस्थाननार एवं १०० वर्णना १०० गंधना ४६ रसना १०० फरिसना १८४ संस्थान ना १०० एवं ५३० लद्द पुद्गलना श्री पन्नवणा सूत्र सिना शा
षइ जोणिवी छनिवली उत्तराध्ययननी टीका ५३० कह्या तिवनी विगति लिखीइ छिं वर्णना १०० गंधना ४६ रसना १०० फरिसना १८४ एवं
५३० जिणि कारणि वर्ण गंधर रस संस्थान ५ एवं १३ आव फरस स्पर्श गणता १८४ थाइ एवं जाणवो एह निमकिए वीढवी तिणि एम कह्या श्री वीतरागनां
वचन प्रमाण सही करवउ आपणा पोतानां जीवनी वोड़ें न पडइ तसदीड जाणवो इद्दो विचार पोतानी मति कल्पना न करवी श्री वीरवचन सत्य॥
गंधरसथकी फरिसथी भाजिउ कहीइ कोडि कहीइ एहअजीव पूर्वइं कहीनेहअ जीवनी ४ विचार विचर वउ ॥ एहअ जीवनी विभक्ति कहवानें न कहिसुं अनुक्रमइं
नहीइ वउ ॥ तिणि फरसथकी कहीइ वउ ४७ संक्षिका या उत्पर्यंतनी विभक्ति॥ संक्षेपइ करीनें कही॥ विस्तार भेदि विचार॥

उ चेव भइए फासउ विय ४७ एसा अजीवविभत्ती समासेण वियाहिया इत्तो जीवविभत्तिं वुच्छामि अणुपुव्वसो ११३

४८ संसारत्थनें सिद्धादिक जीवभेदि ए विहुं प्रकारइं जीव कह्या ते सिद्ध अनेक प्रकारइं उपधिनइं भेदि करी ते सिद्धनां भेद मुझ कहतां थकां तुं सांभलि॥ ४९ स्त्री थकी मरी सिद्ध थया ते सिद्ध
सिद्ध सिद्धि पहुता = तीर्थंकर इगहग थइ॥ पुरुष थकी मरी सिद्ध थाइ ते पुरुष सिद्ध

४८ संसारत्था य सिद्धा य दुविहा जीवा वियाहिया सिद्धा अणेगविहा वुत्ता तं मे कित्तयओ सुण ४९ इत्थीपुरिससिद्धा य

तथा नपुंसक थकी सिद्ध स्वलिंगइ अनेरइ लिंगइं सिद्ध। गृहस्थनि लिंगइ सिद्ध थाइ ५० उत्कृष्टी अवगाहनाइ पांचसइ धनुष ५०० जघन्य अवगाहना ते बि हाथ उर्ध्व जो
थाइ ते नपुंसक सिद्ध। तीनइ वाठ भाइ तेह अन्यलिंग॥ तिणि गृहस्थलिंग सिद्ध कहीइं केतलाक सीझइं सिद्ध थाइ तिमवली। तिवारि सिद्ध थाइ मध्यम कि केत
जन्म न पुंसक नहीं। थइ॥ सिद्ध कहीइ॥ एप्रकार कह्या। बेहा थकी। केतलाक सीझइ। केतला सी कइ मेरु। तासीकइ

तहेव य नपुंसगा सलिंगे अन्नलिंगे य गिहिलिंगे तहेव य ५० उक्कोसोगाहणाए य जहन्नमज्झिमाइ य उड्ढं अ

आधा लोक इक॥ समुद्रनि विषइं केतला सीझइं दस नपुंसक एकि। वीसस्त्रीनि विषइं पुरुषनि विषइं १०८ एक समइं सीझइ उत्कृष्ट। ५२ गृहस्थनालिंगनि विषइं
तलासीझिं हाथ॥ नदी सरोवर पाणीनइ विषइ ५१ समइ सीझइ अपणि सीझता जाणिवा च्यार॥
तरी इइ केतला सीझिं। केतला सीझइ

हे तिरियं च समुद्दंमि जलंमि य ५१ दस य नपुंसएसु वीसं इत्थियासु य पुरिसेसु य अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झइ ५२ चत्तारि य गिहिलिं

विवादिक अनेरा लिंगवेश जैनयतीनि लिंगिं एक समइ एकइ समइं सीझइ थाइ मुक्तिं जाइ ५३ उत्कृष्टी पांचसइं धनुषनी युगपत सा थइ सीझइ॥ जघन्य अ
नइ विषइ १० दस॥ १०८। अवगाहनासरीरनि मानि विषइं उसम थइ सीझीझी थाइं वगाहना
वेहत्ती॥ इकसमइं

गे अन्नलिंगे दसेव य सलिंगेण य अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झइ ५३ उक्कोसोगाहणाए उ सिज्झंते जुगवं दुवे चत्तारि य

च्यार सीझइं जवमाध्यनी परइ मध्य अवगाहना। मेरु चूला दिक उर्ध्व लवणसमुद्रनि विषइ नत्रीव आधा लोक अधो एकसमइ॥ आवे तिर्यग इइ जो कइ एकिं समइं
सिद्ध थाइं। नाइ वर्जत एक समइं १०८ सीझइ। लोक इक एक समइ। इइ कालोदधि समुद्र नइ वि गामादिक निविषिं त्रनइ विषि अढाई द्वीपमांहइं॥
५४ च्यार सीझइ सिद्ध॥ इणिं विधिं एम बवोला थइ॥ वीस ति मवली॥

जहन्नाए जवमज्झे उत्तरं सयं ५४ चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे तओ जले वीसमहे तहेव य सयं च अट्ठुत्तर तिरियलोए समएण

कवनिश्चइ सीझइं॥ ५५ किहां सिद्ध प्रतिहलना। किहां सिद्ध प्रतिष्ठा रह्या थाइ अनइ शरीरनि सिद्ध बोदी शरीर अनित्य सिद्ध किहां जाइ नइ अलोकके
खलना पामइ विं॥ पीला व्रत निश्चलपणी माहि किहां तजीनें नइ सीझइ सिद्ध थाइ ५६ लोका कांठि
इनेते काल जे गी

एगेण उ सिज्झई धुवं ५५ कहिं पडिहया सिद्धा कहिं सिद्धा पइट्ठिया कहिं बोंदिं चइत्ताणं कत्थ गंतूण सिज्झई ५६ अलोए पडि

सिद्धना भेद लिखीइ छइ तीर्थंकर सिद्ध। अतीर्थ सिद्ध पुंडरीकादिक २ तीर्थसिद्ध गणधर ३ अतीर्थसिद्ध मरुदेव्या ४ गृहस्थलिंग सिद्ध भरत ५ अन्यलिंगसिद्ध
वल्कलचीरी ६ स्वलिंग सिद्ध साधु ७ स्त्रीलिंग सिद्ध चंदनबाला ८ नरसिद्ध गौतमादिक ९ नपुंसक सिद्ध गांगेय प्रभृ १० प्रत्येक बुद्ध करकंडू ११ स्वयं बु
द्ध सिद्ध कपिलादिक १२ बुद्धिबोधित सिद्ध १३ एकइं समइं १ सिद्ध १४ एकइ समइ अनेक सिद्ध १५ ए १५ भेद सिद्धना जाणिवा॥

धर्मास्तिकाय। लोकनि:थिर धरा जलोकनि। इहांतिरीछालोकनइविषिं तिहांलोकनइ अग्रिजइनि॥ बारजोयननेयोजननेष सर्वार्थसिद्धविमानथकी ऊंचपणा
नीसिद्धि॥ मनुष्यकिं रह्याछि आवितिक्षेत्र। नइ दिसरीरत्यजीनिकीनइ सीझइसिद्धथाइमात्रउंसुष माणपुत्त्लइजाणिवा ॥ उपरिछि सिद्धसिला॥ पृथ्वीसाद
जगइंसिद्ध॥ जागाविपउ

।।जयपरबो ११४ हृयासिद्धा लोयग्गयपयट्ठिया इहिंबोदिंचइत्ताणं तत्थगंतूणसिझइ ५७ बारसहिंजोयणेहिं सव्वट्ठस्सुवरिंहोइ ईसीपब्भा

वइनामइ पृथ्वीयाछत्रसयउताण ५८ पचतालीसलाखसहस्रमुषण॥ योजननआयतलांबीजांणवी अनइतेतलीजविस्तीर्नउक्त तदत्रिगुणाअधिकदीइ
सिद्धसिला वउलीमंस्थानइस्थित करीइएततउइपसतालीसलाख लीयतलियसलाजीमजायद्यो एतलिएककोसिधरजा
जानवुकजी पडीसमकदस्यविमइएगुण

रनामाउ पुढवीछत्तसंठिया ५८ पणयालसयसहस्सा जोअणाणंतुआहिया नावईयांचववित्थिन्ना तिउणामाहियपरि

पचासयो लसिद्धसिलाआवयीयन तदजामपणतेमध्यदेसिं पवइमीकइरस्यानियं॥ माखीनीपांषथकीतणुयरीकइ अर्जुननामाधोलतेसुवर्णमयते
जानकांइए नीबाहल्यजाडीछइ। कहितेतीर्थंकरइगणधरइ मतीघरतिघटतीचरम लोकंतपालजीकांणिवी हए हवनिईयत्वपागसारात्रिकात्रिका
कजाणेरो। तकेद. कइ॥

रउ ५९ अट्ठजोयणबाहल्ला मज्झंमिवियाहिया परिहायंतीचरमंते मच्छियपत्ताउतणुयरी ६० अज्जुणसुवण्णगमई सापुढ

निर्मलिछाखीस्वभावइकइजपरे। उत्ताणछत्रनइसंस्थानइ कहीछिणधरतीर्थंकरइं ६१ तदसिद्धसिलासंषनिअंकरत्न धोली निर्मलआदीअत्तलती विं
उथीनिकिणहीकी धीनथी॥ आकारइंसंस्थि ता॥ अनइकुंदनुंफूलजातदसरीषी एकि

वीनिम्मलासहावेणं उत्ताणयछत्तसंठियाय भणियाउजिणवरेहिं ६१ संखंककुंदसंकासा पंडुरानिम्मलासुहा सी

योजनइतिहांथकीएतला लोकन उअंतछेदम्हो ६२ तदयोजननउजेहतिहां एककोसतउपरिल्यइछवड तेहएककोसनावछठाभागनिं सिद्धनीअवगाहनाजाइ
तिसिद्धसिलाथकीएक। कहितेतीर्थंकरइ॥ विषइलतलइहत्ततधनुषकाः ६३
त्याज नो।

याएजोयणतेजो लोयंतातउवियाहिउ ६२ जोयणस्सउजोतस्स कोसोउवरिमोभवे तस्सकोसस्सछब्भाए सिद्धाणोगाहणाभवे ६३

तसिद्धनिविषसिद्धलगावंत लोकनाअग्रनिंवि नारकीआदिकनालावअवतार॥ सिद्धमोक्षरूपपणालली तेचपणतेजसिद्धतुंमनुष्यलवन॥ चरमकेहजाने
अच्युतत्राकिनामवालाप्पवंत षइहत्याछइं नाप्रपंचविचारथकीमूकालाइहवा गतिगयापरूजातालीर्ध ६४ ग्रतिनिविविंछलदवडंजतलिश्मा बनइविसइमो
करकेदइ॥ लइई कू

तत्थसिद्धामहाभागा लोयग्गंमिपइट्ठिया सव्वपवंचउम्मुक्का सिद्धिंवरगइंगया ६४ अत्थिवोज्झस्सजोगाइ नवंमिचरमं

।।जेरानि विचारः ११४

जाबानाः त्रीजउभागउदोणीतस्वइ सिद्धनीअवगाहनाजाइ॥ ६५ कोइककालनइविषइएककोईतु॥ यणिसोइत्यथकीइलोनंदीसा कोहताघणासमसादिअनादीजोई इनइजे
कुमरनि। वइलवनानेचयणाथकी नाम लेइकहीइजेसमुक्तसाधाने यइतिणअपर्यवसिअनंता॥ ते आदिरहीतअनादिकालजाणिवुं इवते
तिवइ। धारइमाहकहतोआ तिसलातकहीइ। पर्यव

मिय तिभागहीणातत्तो सिद्धाणोगाहणाभवे ६५ एगाजलद्धसोइया अपज्जवसियाविय पुहुत्तेणअणाहिया अपज्जव

मानाविकहोनथी तदसिद्धअरूपीअरूपस्म॥ ज्ञानाकेवलज्ञानदर्शनकेवल। अतुलछेदनउपमानथी॥ जेहनासुषनीउपमानथी ६७ लोकचउदरज्जुनाएकदेस
एतलइअनंत॥ ६६ गंधस्पर्शनथीजोवमांहिले॥ ज्ञानदर्शननेरजेसलाआइजे। एहवउछएणातेसुषपाम्याछे। अनंतासुषलोगविचि विलागनइविषइतेसर्वसिद्ध
अपारहीनघनपणिंरहाइजीवा .इनइ॥ एहवउतीर्थंकरकहइ

सियाविय ६६ अरूविणोजीवघणा नाणदंसणसन्निया अउलंसुहंसंपत्ता उवमाजस्सनत्थिउ ६७ लोएगदेसातसाव

केवलज्ञानकेवलदर्शन॥ कारगति पारनिवार्थोछइ। सिद्धरूपगीतलीगलिग ६८ संसारसंबंधीआछेजीव बिजेप्रकारेतेहकह्यातीर्थंकरे तस्केवाएकत्र
तदजासंज्ञाजाइंजेहनइ संसारनो छेहउतबइछेतिं याप्रकनाचक्रमंकियाकरी संसारी सत्रनिबीजाथाव
रा॥

नाणदंसणसन्निया संसारपारनिच्छिन्ना सिद्धिंवरगइंगया ६८ संसारत्थायजेजीवा दुविहातेवियाहिया तसायथावरा

तजीवथावरत्रिणप्रकारे ६९ तत्रिणकहा पृथ्वीकाय। तेजवायजीवनस्पतीना एहथावरजीवत्रिणप्रकारे तेहनाभेदसांभलोमुझक। बिजंप्रका
बिजेप्रकारत्रसथावर। बीजीअपकाय॥ जीव हनाप्रनइविस्तारपणइ। पृथ्वीना
:ति: एहतीर्थंकरनुवचन ७०

च्चेवथावरातिविहातहिं ६९ पुढवीआउजीवाय तहेववणस्सइ इच्चेएथावरातिविहा तेसिंभेएसुणेहमे ७० दुविहापुढ

जीव एकस्फाअनतानाकेवलीगम्य वलीतातकथापछी असकह्याबिजंप्रकारे ७१ बादरजेपर्याप्तापृथ्वीकाय बिजंप्रकारेकह्यातीर्थंकरइं
बीजाबोटाबादरदेषीता ॥ साधनिबीजाअपर्याप्ता तीर्थंकरइ

वीजीवाउ सुहमाबायरातहा पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेवदुहापुणो ७१ बायराजेउपज्जत्ता दुविहातेवियाहिया

एकस्फाअनंतानाकेवलीगम्य तदबिजंप्रकारसंभलोमांहिं कालीइ नीलीइ सतीइपृथ्वीइ पीलीइपृथ्वीइ धोलीइपृथ्वीध घोळीइकथो स्वरूपइइ
बीजारवरकठिनआकरातेह सीक्ष्णानासातप्रकारजाणिवा॥ ७२ पदी१ पदी२ जीइपृथ्वीई बीजआका
जाणिवा॥ सवकइनप

सण्हाखरायबोधव्वा सण्हासत्तविहाहिया ७२ किण्हानीलायलोहियाय हालिद्दासुक्किलातहा पंडुपणगमट्टी

पणमट्टी।

बरकविनपृथ्वीकायवउ सप्तकारेकह्या तीर्थंकरइं। ७३ कंलीपृथ्वीजीवपृथ्वीमाटीमरम दिककाकरायुधरनदीनीवलुउ पाषाण मोलीसि समुद्रादिका लोह तरूउ त्रांबुं सीसउं रूपउ १२ सुवर्णादवइं धातुविशेष १३
वा खराछत्तीसइविहा ७३ पुढवीसक्करावालुयायउवले सिलायलोणोसे अयतउयतंबसीसग रुप्पसुवन्नेयवइरे
हीरा १४ ७४ हरीयाल १५ हीगुलो १६ मणसील १७ सासगरत्न सरम प्रवालउं १९ आभ्रख २० आभ्रवालुपडल बहबादरपृथ्वीकायनाभेदकह्या॥ गोमि विशेष १८ ३१७ कुसर १९॥ रूत २१ मिश्रितधूलि २२ मणिनाभेद तेहनानामकहीइ छइ ७५
यरुय ७४ हरियालेहिंगुलए मणसिलासासगंजणपवाले अब्भपडलब्भवालुय बायरकायमणिविहाणा ७५ गोमि
ह्वकर रुचक अंकर स्फटिकरत्नरत्न लोहिताक्षरत्न मरकत ससारगल्ल भुजमोचकरत्न इंद्रनीलरत्न ७६ चंदप्रभ गेरुक हंसगर्भ रत्न२३ रत्न२४ रत्न२५ रत्न२६ रत्न २७ रत्न३२॥ रत्न३३ रत्न३४
ज्जएयरुयए अंकफलिहेयलोहियक्खेय मरगयमसारगल्ले भुयमोयगइंदनीलेय ७६ चंदणगेरुयहंसग
पुलकरत्न ३५ सौगंधिकरत्न३६ जो चंद्रप्रभ विडूर्यरत्न ३७ जलकांत सूर्यकांत ७७ एहसर्व खरपृथ्वीना भेदकह्यातीर्थंकरइं एक शिलाधरत्न३६ रत्न३७ रत्न३९ रत्न ४०
ब्भ पुलएसोगंधियएबोधव्वे चंदप्पहवेरुलिए जलकंतेसूरकंतेय ७७ एएखरपुढवीए भेयाछत्तीसमाहिया एग
प्रकारपरंपरा सूक्ष्मपृथ्वीनाजीव तेह सूक्ष्म बादर सूक्ष्मपृथ्वीकायनाभेद अनइ लोकनिदशिलागइ एतलाकालनइ अंतर तेहनउं प्रकारनही। मोरइंकहियातीर्थंकरइं ७८ तेहसर्वलोकइं भरायामा बइंबादरपृथ्वीकायनाजीव विभागभेद हिंव्या पीस्याबइ॥
विहमणाणत्ता सुहुमातत्थवियाहिया ७८ सुहुमासव्वलोयंमि लोयदेसेयबायरा इत्तोकालविभागंतु तेसिं
कहिसुं४ प्रकारेमाहिरसय सतत प्रवाह मार्गआश्रीजो नथीएहपृथ्वीकायनाजीव॥ नवस्थितिलइइसइ अनिमपर्यवसतिसोंतजाण ७९ बावीसर वर्षसेतर अनादिरस्य = इतिकारइ एसूक्ष्म बादर पृथ्वीकायवंसेतरवर्त मइ पुजैलणीकहीइएह नहीं उइ। कायस्थितकायारहवउं कहीइएहवुंतीर्थंकरेकहिउं कोइ॥ एसआदि जाणवइ॥
वुच्छंचउविहं ७९ संतइंपप्पणाईया अपज्जवसियाविय ठिइंपडुच्चसाईया सपज्जवसियाविय ८० बावीसा

११५

वसितष
एच्यारष
कार १

महस्रात वरसउतकृष्टीतउइहय आउखानीस्थितपृथ्वीकायनी जघन्यअंतमुहूर्तथितथोमी ८१ असंख्याताकालनुअंतरपछिउतकृष्टो अंतर्मुहूर्त थाउ
सयसहस्सा वासाणुक्कोसीयाभवे आउठिईपुढवीणं अंतोमुहुत्तंजहन्नं ८१ असंखकालमुक्कोसं अंतोमु
जघन्यथोडीउअंतरपछि एकायस्थितपृथ्वीनीकहीइं एतावतां एत पृथ्वीजीवमरी। वनस्पतीमांहिंउतकृष्टउं अंतमुहूर्तजघन्यजाण वनस्पतीम पोतानीपृथ्वी लाद्वनमुकइतउ॥ तिहांकायमांहिकाय पजइवारक रहइउ अनंतउकालरहइ। तेरीकायाइ हइतत्काजआवइ कायनिसरीरि थइउ। सम्या उकाल ८२ विकुंठे मि
हुत्तंजहन्नियं कायठिईपुढवीणं तंकायंतुअमुंचओ ८२ अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तंजहन्नयं विजढंमिसए
वांकि पृथ्वीकायनाजीवनिपृथ्वीपणिअंतर एहपृथ्वीकायना गंध रस। फरिस संस्थाननाआदसपणाथकी विधाननाभेदसहस्रगमे कइसंख्यात थकइ रयमिउइ कृष्ण इ इपूर्वइकह्युतेतउ इउ वर्णथकी॥ थकी थकी थकी॥ नेतपणिजइंयद्यपिवर्णपरसप गंधरफरसथ तथा विस्तरतमातागेनेहबणाजइ ८४
एकाए पुढवीजीवाणअंतरं ८३ एएसिंवन्नओचेव गंधओरसफासओ संठाणादेसओवावि विहाणाइंसहस्ससो ८४
बिहुंप्रकारेअपकायनीजीवकह्या। एकसूक्ष्मअपकाय॥ तिहवलीएकपर्याप्ता इमएहवलीबिहुंप्रकारपणिकहीइ॥ बादरअपकायतपर्याप्ता पंचप्रकार बीजउबादरअपकाय बीजाअपर्याप्ता। ८५
दुविहाआउजीवाउ सुहुमाबायरातहा पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेवएदुहापुणो ८५ बायराजेउपज्जत्ता पंचहाते
कह्यातीर्थंकरे मेघनुंपाणी समुद्रनुंपाणी॥ हरीयां उ महियाप्रधरिध ८६ एकजइप्रकारइपरं॥ सूक्ष्मइ एकायनाजीवतिहां सूक्ष्मअपकायनाजीवबइ उसनउंपाणीउ पलापाणी नाहिइया। हिमप नानाप्रकारइनही तीर्थंकरकह्या॥ तेहसर्वलोकवउदराज मोदइव्यापीरहाछइ॥
पकित्तिया सुद्धोदएयउस्से हरतणूमहियाहिमे ८६ एगविहमणाणत्ता सुहुमातत्थवियाहिया सुहुमासव्वलोयंमि
लोकचउदराजनाएकदे ८७ संततकालप्रवाहमार्गी अनइ अपर्यवसितअनंत स्थितकहतांसवस्थितकाय॥ अनइसपर्यवसित ८८ शमाराव रादिकविषइबा संसारनुंतेहआश्रीअप पणइं॥ बीजाआश्रीसादिआदिसहितजाणवी अंतसहीतपणइ दरअपकायजांणिवा कायनीजीवअनादिबइ।
लोयदेसेयबायरा ८७ संतइंपप्पणाईया अपज्जवसियाविय ठिइंपडुच्चसाईया सपज्जवसियाविय ८८

॥जयटबु
११६

सातव सहस्र वरसनी उत्कृष्टी जघन्य आउषानी स्थित अपकाय जीवनी अंतर्मुहूर्तनी जघन्य थीतीजु ७० असंख्यात उत्सर्पणी कालनी उत्कृष्टी अंत

सत्तवसहस्साइं वासाइ गुक्कोसियानाव आउठिई आउएणं अंतोमुहुत्तजहन्नेणं ७० असंखकालमुक्कोसं अंता

मुहूर्तनी जघन्य थीतीजु॥ कायस्थिति अपकाय करइ नहीं तेहकाय पणुं नमुंकितु एतलुकाल रहइ ७१ अनंतकालनुं उत्कृष्ट उत्कृष्टतउ अंतमुहूर्तनी जघन्य उत्कृष्टनी स्थितिनउ पनइ

मुहुत्तं जहन्निया कायठिई आउजीवाणं ते कायं अमुंचंतेउ ७१ असंखकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहन्निया वि

तेहनइ छिकइ अपकाय अपकाय जीवनि अंतरकाल ७२ वनस्पतिविषि जाईवली आवितउ वरणादिकनाजीवनो निमगंधरसस्पर्श वर्णादिकस्पर्शादिक वइकी॥ तिमसंस्थान नामादिकनइ वइकी पणि आदेसकरवतीनामकरीइ। विशेषननामसम्यक पोतानी कायाइं गमेषाइ संख्याता

नदंमिसएकाए आउजीवाण अंतरं ७२ एएसिं वन्नउ व्विव गंधउ रसफासउ संठाणदेसिउ वावि विहाणाइं

असंख्याताअनंते ७३ बिहुं प्रकारवनस्पतीनाजीव एक सूक्ष्म हरि निगोदिया वइ तेहएकेकानी विविध इसप्रकार बिहुं प्रकार ७३ बादरजी ता पणि बाइ॥ तेकेहा॥ बीजा बादर प्रत्येक हरी सइं। कारण प्राणी सारप्राणी छा॥ वनी जाणवा

सहस्ससो ७३ दुविहावणस्सई जीवा सुहुमा य बायरा तहा पत्तेयसाहारणा एवमेव दुहा पुणो ७३ बायरा

पर्याप्तावनस्पती विहुं प्रकारके ख्याती थे करइ अनंताजीवनइ साधारण नामा प्रत्येक जुजुआ शरीरजे ७४ तेहमांहि प्रत्येक शरीरना। तेहअनेकप्रकारना सीकाया॥ अनंतकायक छिइ॥ दणी ते प्रत्येक कहीइ। पणी वनस्पतीनाजीव बइं बारप्रकारे कहाती थे करइ

दाउयहुत्ता दुविहा तवियाहिया साहारणसरीराय पत्तेयायतहेवय ७४ पत्तेयसरीराउ णेगहातेयकि

नणव सहकार तेगडी नवमालती चंपादिक विसुंका जूहीयादि ७५ नालेरीप्रमुख सेलडी सूखडीयादि कमलादिक सालिप्रमुख लड जेयकादिक रइं॥ दिकहरका प्रमुख सुरवनेगुछा कलता प्रमुख कहता॥ वलयाकार प्रमुख प्रमुखकउ जलरुह उप उषधी ११ हरिकाय॥ गुच्छा गुल्मइ व बेलिय तेवलय उ॥ पर्व ८ ७५

तिया रुरकागुच्छागुम्मा य लया वल्लीतणातहा ७५ वयालयपव्वाकुहणा जलरुहाउसहीतहा हरिकाया

११६

[Second leaf]

डणीवार आत्यकवनस्पतीकायना ७६ अनंताजीवनइ साधारणनामा अनेक प्रत्येक नीर्थंक॥ आदुजा। सूरणउ प्रसिद्ध। सिंगबेरकंदतं आदु ७७ जीवइ कहताती थे करइ। र अनंतकाय कहीइ तेह॥ रइंकरता॥ तिकंद १ कंदविशाष २ तसावली उ

बीयाधवा पत्तेया इविया हिया ७६ साहस्सीरसीसरीराउ णेगहा तयकित्तिया आलूयमूलयाच्चेव सिंगबेरयतहेवय ७७

हरिली नामा ४ सिरीली नामा ५ सस्सरिलिना मा ६ एवनीक इनी जाति जावइ केयाकंदलीए॥ पणि कंदनी जाति॥ पलंक लसणकंद एवपणि कंदनी जाति ७८ लोहीणीय हवडी॥ जपडगणि नामइ कंदजाति॥ उदगाय एवइ नामइ कंदनी जाति कुंआरदउ नामइ कंद छ

हिरिली सिरिली सिसिली कीवइ केसव कंदली पलंड लसणकंदय ७८ लोहिणी हूयथीहूय उरगाय तहेवय कुणेव

वडीकंदए ७ एव कंदनी जाति सूरणकंद ८ पतसा कंदनीजाति वली॥ ७९ अशुकर्णनामा कंदइ नीजाति वलीजाणवी सीदकणीनामाते पणि कंदनी जाति ७

यवहाकंदेय कंदसूरणेतहा ७९ अस्सकन्नीयबोधवा सीहकन्नीतहेवय मुसढीयद लिहाय णेगहाएवमा

८० एकइ प्रकारपरंय एवकारे सूक्ष्म वनस्पतीकायनी जाति। सूक्ष्म जोवनस्पति निगोद छेतेह लोकध्वराजनइ एक॥ इवादमार्गीआश्री आदिन नही॥ नाजी वतिदोकख्यातीर्थंकरइ। सर्वलोकउ उदराजनिविविधामइ पहावि सागनि विविधा १ बीअनादिकालना वडा दरवनस्पतीकाय पामइं

यउ ८० एगविहमणाणत्ता सुहमा तह विया हिया सुहमा सव्वलोगंमि लोगदेसेयबायरा १ संतइ प्पय णाइया

अनइ अपर्यवसित अनंता। थितसवकाय थितआ। अनइ सपर्यवसति य दसमदल्ससंख्या वरसनी उत्कृष्टी थितकउइ वनस्पती कायतेआ पणाइ बइ॥ श्री विचारीइ उवादिबइ अतम थित पणबइ

अपज्जवसिया विय विइपडुच्च साइया सपज्जवसिया विय २ दसचेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे वणस्सईआ

उषु अंतर्मुहूर्त जघन्य वनस्पतीतुं आउ मुंकीण वउ॥ २ अनंताकालनीउ उत्कृष्टी थीतीउ अंतर्मुहूर्तनी जघन्यथी मी तउ विधमी माहेरी एहकाय स्थित निगोदनी तदकाय स्थितअनंतकाय निगोद मुंकइ तां। पाछा जनता नि

यउ अंतोमुहुत्तं जहन्निया २ अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहन्नयं कायठिई पणगाणं ते कायं तु अमुंच

४ असंख्यातकालनीउतकृष्टी अंतर्मुहूर्तजघन्यथोमीतउ पोतानीकायाअनंतकायनी ऽनिर्षब्रिक्राव३ उपणगजीवनिस्तं। एहवीवनस्पतीना ॥ गंध
थलीतउ वइयमीमावेरी बामइमुकइऽनइबीजाथइ ' तकायमिएतउअंतरमनइ ५ ॥ हमवादरादिकनावर्णथकी थकी
ती माहि कमाहिजाइ॥

॥सुयटबु ११७ उ ४ असंखकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहन्नयं विजढंमि सएकाए पणगजीवाणअंतरं ५ एएसिंवन्नओचेव गंधओ

रसथकीफरस संस्थानआदेशथकीपणि विधानप्रकारइसहस्रगमेथाइएत एहपूर्वइकह्यातेस्थावर। संक्षेपथकीकह्यातीर्थंकरइं एतलाकहियाअनंतर
थकी लिसंख्याता असंख्याताअनंतापणि ६ पृथवीयंणीवनस्पतीभेदथ प्रकार यलाथरइं॥ त्रसत्रिजानइं

रसफासउ संठाणादेसीउवावि विहाणाइंसहस्ससो ६ इच्चेएथावरातिविहा समासेणवियाहिया इत्तोयतिसेतिविहे
कहीस्यइ मइएहकहिउएक। ७ तेऊकायअग्निनाजीव॥ उदारमोटिकाबेंद्रीया॥ एहपूर्वइंकहियात्रसजी तेहना तेहनाभेदसांभलुअह्मो ८ बिहुंप्रका
हणतीर्थंकरनउंऽचुह्मनइं ॥ वायुकायनाजीवजांणिवा द्विकत्रसजीवानथातिमज्र बातदविक्रसेदेजाणिवा। शिष्यसुरुकहतायतइ रअग्निना

वुछामिअणुपुव्वसो ७ तेउवाउयबोधवा उरालायतसातहा इच्चेयतसातिविहा तेसिंभेयसुणेहमे ८ दुविहाते
जीवजाणवा एकसूक्ष्मतअकायवी तेहविस्मयएकेकना एमबिहुंप्रकारेवजीकह्या ९ बादरदेषीताजअग्निकाय अनेकप्रकारइतजी दी
उउबादरतऊकाय लिलदएपर्यासावीजा। तानीवअनइवजीपर्याप्ता। तविदावीयाकहिया पता
अपर्याप्ता॥

उजीवाय सुहुमाबायरातहा पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेवदुहापुणो ९ बायराजेउपज्जत्ता णेगहातेवियाहिया इं
बजताअग्निनाबोकरा।अग्नि स्वलेसहितातःफुलिकहीयइकोजाति तातानीवरइउपरिथीपडतादी। अनेकघणिप्रकारइएक एकप्रकारइबइबीजउप्रकार सु
कणीयासहितराखअग्नितेह उपरिदीसइसटकइबलइउची १० सइतघावलीविद्युतकहतांवीज आदिदईनइं॥ नहीजेहनउं
क दियाथकु विपरीत ॥ नवावली॥ ली न्याथहाजाणिवी॥

गालेमुम्मुरे अगणी अच्चीजालातहेवय १० उक्काविज्जूयबोधवा णेगहाएवमाईउ एगविहमनाणत्ता सु
क्ष्मअग्निकायतकहिया ११ तेसूक्ष्मअग्निकायसर्वलोकचऊदराज ॥ लोकनादेश एतलाविचालउंकहतांअनंता तऽग्निनउंकहेसुसादिरसपर्यवसितनइ॥ संततश्ला
तीर्थंकरइ मांदिरापीछेएकदेखानिविभइविलागिबादर निविधइं। कालनउविभाग। अनादिअपर्यवसितथए त्यारथकीर १२ हमाद्रीअ
ऽग्निछिडीवीएमोदिछिडी नइ कामिनथी॥

हुमातेवियाहिया ११ सुहुमासव्वलोगंमि लोगदेसेयबायरा इत्तोकालविभागंतु तेसिंवुच्छंचउव्विहं १२ संतइप ११७

१४

श्रीअनादिका अनिजेहनउऽपर्यवसितअतउ थितिआउषाआश्रीआदिएणि अनंउअंतपणइसवकाय १३ त्रिणअहोरात्रएतलि॥ उतकृष्टीकहीतीर्थं
तनावइअ पानहीसत्य।अग्निसइजनाविन वइसवसितकायथितआश्री॥ थकीमूकाणइथकइं दिनउपराचउवीसपहर।
ग्निकाय॥ हीकइयइ॥

पणाइया अपज्जवसियाविया ठिइंपडुच्चसाइया सपज्जवसीयाविया १३ तिन्नेवअहोरत्ता उक्कोसेणवि
करइ आउषानी थितजे अंतर्मुहूर्तजघन्यथोमीतउनवसम १४ असंख्यातकालउतकृष्टी अंतर्मुहूर्तजघन्यनवसमयथकी। अग्निमाहिछीनीसरी
ग्निकायनीकही॥ यथकीआरंसीमावीछिइमील शी आरंसीमावरीबइयमीलगी। ग्निमाहिरहिनेहकाय
नकहोइलिहकाय

याहिया आउठिइतेऊणं अंतमुहुत्तंजहन्निया १४ असंखकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तंजहन्निया कायठिईतेऊणं
तहअग्निकायनइमूकइ १५ अनंताकालनुअंतरउतकृ नवसमयथकी आरंसीमावरी॥ बोकइथकइयोलानइ तेउकायनाजीवनइवस्तु १६ एहअग्नि
उप८नुकाजस्ह प्रउतउ थियकीलगीतेअंतमहूर्तजघन्य कायाइंमशरीरइं अंतरएतलउंजायइ

तेकायंअमुंचउ १५ अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तंजहन्नयं विजढंमिसएकाए तेउजीवाणअंतरं १६ एए
कायनावर्णथकी ~~संस्थानताआदेशथकी~~ संस्थानताआदेशथकी विधाननाभेदकोरसहस्रगमेथएणइंजाणइं १७ बिहुंप्रकारवायुकायनीजी तेहनाएकसूक्ष्म
गंधथकीरसथकीफरसथकी वजांणिवा बीजाबादरवायुकाय

सिंवन्नउचेव गंधउरसफासउ संठाणादेसउवावि विहाणाइंसहस्ससो १७ दुविहावाउजीवाउ सुहुमाबा
नीजीवनी तेहवलीएकपर्याप्ता एमएकेकबिहुंप्रकारजीवजाणवा बादरजेवायुकायना पंचप्रकारनेवकह्यातीर्थंकरइं रहीरनइवायइंतेउत्कलि
लिवा॥ बीजाअपर्याप्ता॥ १९। जीवपर्याप्ता॥ कावंतोलीयारूपतेमंडलिका

यरातहा पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेवदुहापुणो १८ बायराजेउपज्जत्ता पंचहातेपकित्तिया उक्कलियामंडलिया
घनोदधि गुंजता सोहिरवाय १७ इणादिकअनेकजेई अनेकघणेप्रकारएहआदि परंपणाप्रकारनेवनही सूक्ष्मनेदकह्यातीर्थंकरइं २०
रूपातवाइगुं तमुहवात नाथइतमेवनंक॥ देईनइएकजकेहनु २प्रकार
घनवात जावाइ

घणगुंजासुद्धवायाय १९ संवट्टगवायाय णेगहाएवमायउ एगविहमणाणत्ता सुहुमातेवियाहिया अप

MEMORIAL

॥उत्तरा० ११९

सुहमासव्वलोगंमि लोगदेसेयबायरा एत्तोकालविभागंउ तेसिंवुछंचउव्विहं २२ संतइंपप्पणाइया अ

पज्जवसियाविय ठिइंपडुच्चसाईया सपज्जवसियाविय २३ तिन्नेवसहस्साइं वासाणुक्कोसियाभवे आउठि

ईवाउणं अंतोमुहुत्तंजहन्निया २४ असंखकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तंजहन्निया कायठिईवाउणं तं

कायंतुअमुंचउ २५ अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तंजहन्नयं विजढंमिसएकाए वाऊजीवाणअंतरं २६

एएसिंवन्नउचेव गंधउरसफासउ संठाणादेसउवावि विहाणाइंसहस्ससो २७ उरालातसाजेउ चउव्विहा

तेपकित्तिया बेइंदियतेइंदिय चउरोपंचेंदियाचेव २८ बेइंदियाउजेजीवा दुविहातेपकित्तिया अपज्जत्त 119

मपज्जत्ता एवमेवदुहाभवे २९ किमिणोसोमंगलाचेव अलसीमाइवाहया वासीमुहायसिप्पीया संखासंखणगा

तहा ३० पल्लोयाणुल्लयाचेव तहेववराडगा जलूगाजालगाचेव चंदणायतहेवय ३१ इइबेंदियाएए णेगहाएवमा

हिया लोएगदेसेतेसव्वे नसव्वत्थवियाहिया ३२ संतइंपप्पणाइया अपज्जवसियाविय ठिइंपडुच्चसाईया सपज्जवसियाविय

य ३३ वासाइंबारसेवउ उक्कोसेणवियाहिया बेइंदियआउठिई अंतोमुहुत्तंजहन्निया ३४ संखिज्जकालमुक्कोसं

अंतोमुहुत्तंजहन्नयं बेइंदियकायठिई तंकायंतुअमुंचउ ३५ अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तंजहन्नियं बेइंदिय

जीवाणं अंतरेयंवियाहियं ३६ एएसिंवन्नउचेव गंधउरसफासउ संठाणादेसउवावि विहाणाइंसहस्ससो ३७ ते

॥उपरबु
११८

दियजीवसंसारिकजीव॥ बिंबंप्रकारेकहियातीर्थंकरइं एकपर्यापताबीजाअपर्याप्ता तेवचउरिंद्रियनालेदप्रका ३७ कुंथुयानीजातिकीडीनीजातिउदंसा नत्कली

इंदियाउजाजीवा दुविहातेपकित्तिया पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिंभेएसुणेहमे ३७ कुंथुपिपीलिउद्दंसा उक्कलुद

दीतिमज तृणाहारकट्ठहारएहतेंद्रीय मालुकायहारकएहतेंद्रिय ३८ कपासअट्ठिमिंजाएहलोक तिंदुकतउसमिंजगएहगुम्म सदावरीतेंद्री पदानीजा
जीवलोकप्रकीवलज्यो जीवगुम्मगमर्थीबलज्यो मूलप्रकीजीवज्यो गमथीजीवज्यो यविशेषंजाणवा तिजाणवी

हियातहा तणहारकट्ठहारा मालुगापत्तहारगा ३८ कप्पासट्ठिमिंजाया तिंदुगातउसमिंजगा सदावरीयगुम्मी

इंद्रीयकायतेंद्रीयजीवलोक ३९ इंदगोपमामोजाववीकाव प्रकारेतेंद्रीयलोक॥ एकदेशविभागनिविषे सतेहसघलाइंनहीबि ४१ संतानप्रवाहमा
प्रकीजीवज्यो इंद्रगोपआदिदईअनेक सोहिलोकरथरामांहिं त्रीजिलोकिंअढाईदीपन सर्वलोकनइंविषइए थीआश्रीबेंद्रीय
माहइं कहिउं तीर्थंकरइ॥

य बोधव्वाइंदगाईया ३९ इंदगोवगमाईया णेगहाएवमाईउ लोएगदेसेतेसव्वे नसव्वत्थवियाहिया ४० संतइंप्पप

अनादिबि अनइआगलिभुगतकेवमदा॥ नवप्रकीबितआश्रीविचार॥ अंतमहीतमुपाबइं ४२ एगुणपचासअहोरात्रि उतकृष्टीकहीतीर्थंकरेंगणधरें ते
जघन्यइकभवीइनहीकइयमनहीं तिहांरइंसादिआदिसहितबि यांकहितादिवस

णाइया अपज्जवसियावि य ठिइंपडुच्चसाईया सपज्जवसियावि य ४१ एगूणपण्णहोरत्ता उक्कोसेणवियाहिया तें

द्रीयजीवनीआउ॥ अंतवसमयप्रकीआरंभीबिधमी ४२ तेंद्रियमांबिंघणेकरइंसंख्या अंतमुहूर्तइदहजघन्यप्रकी॥ एतलितेंद्रीयकायनीबित। तेहनाभेदमां
प्रानीबितजाणवी अंतमुहूर्तजघन्यआउपानीबित उकालरहितलगीएतलोइसंख्या नमुमुकदें
तालकालनीउतम हो॥

दियआउठिई अंतोमुहुत्तंजहन्निया ४२ संखिज्जकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तंजहन्निया तेंदीयतंकायं तेमिलेउअ

नापति ४३ अनंतोकालउतकृष्टोअंतर सर्वकरकनेतदवुअंतमुहूर्तजघन्य तेंद्रियादिकजीवकंबुआ॥ अंतरएकलिउंओति ४४ एहतेंद्रीयजीवनावर्णप्रके
जाहसथीएनस्यतिमांबिजाइ॥ दिकत्रिणभवामणतिहांति इंकरइंलविकशति

मुंचउ ४३ अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तंजहन्नयं तेंदियजीवाणं अंतरेणवियाहियं ४४ एएसिंवण्णओचेव ११८

गंधप्रकीरसप्रकीफरस संस्थाननाआदेशप्रकीपणि विधानप्रकारसहस्रगमे ४५ चउरिंद्रीयकेजीवबहलोकमांहि बिहूंप्रकारेतेहकह्यातीर्थंकरइं एकपर्याप्ता।
प्रकी॥ एकअ

गंधउरसफासउ संठाणादेसउवावि विहाणाइंसहस्ससो ४५ चउरिंदियाउजेजीवा दुविहातेपकित्तिया पज्जत्तम

पर्याप्ता तेहचउरिंद्रीयनाभेदप्रकारसां ४६ अंधियाचउरिंद्रीयजातिविशेष माखीअनइ मसानीजाति भमरा चउरिंद्रीयकीडोकोई॥ बिंकणअनइकुंकणजुआ ४७
मलीअजोशिष्यमुककहताप्रति पोतियाचउरिंद्रीयनीजाति॥ एहजुगचउरिंद्रीय अनइ जातिविशेषइनइपतं चउरिंद्रीयजातिविशेष॥
गीया

पज्जत्ता तेसिंभेएसुणेहमे ४६ अंधियापोत्तियाचेव मच्छियामसगातहा भमरेकीडपयंगेय ढिंकुणेकुंकुणेतहा ४७

कुकडनामीरगरनाम निंदावर्तनामाबीछीनीजाति डोलानामा भिंगरडनामा विरलीनामाअछवेधकनामा ४८ अछिजनामामागधनामा अछरोडनाम

कुंकडेसिंगरीडीय नंदावत्तेयवींछिए डोलभिंगिरीडीय विरलीअछिवेहिया ४८ अछिलेमाहएअछे सेमएवि

विचित्रनामाचित्र पत्रनामा उहिंजालीयानामा जलकारीयनाम नीयनातंबिंकानामएहसर्वचुरिंद्री यजातिजोकरूतदप्रकीजाणिवा ४९ एणिंप्रकारइंचउरिंद्री यइवहकह्यातह॥ अनेकघणेप्रकारेतेह आदिदेईनइ लोकचउदराज नाएकदेशविभाग

चित्तेचित्तपत्तय उहिंजलियाजलकारीय नीयातंबगाइया ४९ इयचउरिंदियाएए णेगहाएवमाइउ लोगस्सएग

नइविषिं तेसघलाचउरिंद्रीयकहियाबि संततप्रवाहमार्गआश्री अपर्यवसितअनंत नवबितकायबितआश्री अनंतानंतचउरिंद्रीयसपर्या ५१ ब
तीर्थंकरइंपरंमगलइलोकमा ५० जाईइंतिहाररइचउ पणइजेयइं सादिआदिसहित वसितअंतसहितयाणिजइ
पीनथी॥ रिंद्रीअनादिकालनाबइ॥नि

देसंमि तेसव्वपरिकित्तिया ५० संतइंप्पप्पणाइया अपज्जवसियावि य ठिइंपडुच्चसाइया सपज्जवसियावि य ५१ छ

मसवाधानी उतकृष्टीबितकहीवीतरागइं चउरिंद्रियजीवआउषानीबित नवसमयप्रकीआरंभीमाबेरी ५२ संख्याताकालनीउतकृष्टी अंत
मुहूर्तजघन्यचउरिंद्रीयनीबित

च्चेवयमासाउ उक्कोसेणवियाहिया चउरिंदियआउठिई अंतोमुहुत्तंजहन्निया ५२ संखिज्जकालमुक्कोसं अं

मुहुर्त्त जघन्य थिति चउरिंद्रीय जीव नी काय स्थितिकही चउरिंद्रिय मा वलि विलि काय॥ चउरिंद्रियनी मुकीडी जातीतउ तकाइ नउ ५३ अनंता कालनी अनंती उत्सर्प्पणी अवसर्प्पणी उत्कृष्ट॥ पर्वइंका विउतनवउत्त नेहडउ मुहुर्त्त जघन्य रिंद्रीय

॥उत्तराध्य तामुहुत्तं जहन्निया चउरिंदीयाणं कायठिई तेकायं अमुंचउ ५३ अणंतकालमुक्कोसं अंतमुहुत्तं जहन्नयं वि

१२५ पाना नी कायामुंकीनइ ग्यानथी कायाइ एतलउ पूर्वइ कहि उतेतलु आंतम्मरो जिउं नी थंकिरह ५४ एह चउरिंद्रि जीवना वर्ण थकी गंधथकी रसथकी फरसथकी संस्थान ना आदेस थकी पुण विधान प्रकार करीयइ कारइं सहस्र गमे संस्थान

जढंमि मरणकाए अंतरयं वियाहिया ५४ एएसिं वन्नओ चेव गंधओ रसफासओ संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो

५५ पंचेंद्री जीव जे चोविहारा चिउं प्रकारे तेह कह्या तीर्थंकरि तेके नारकीना तीर्यंचना मनुष्यना देवताना निकाय॥ निकाय१ निकाय२ जाति ३ ५६ नारकी सात प्रकाररा

५५ पंचिंदियाओ जे जीवा चउव्विहा ते वियाहिया नेरईया तिरिक्खाउ मणुया देवा य आहिया ५६ नेरइया सत्तविहा

रत्नप्रभादिक सात पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता तेह ना भेद सांभलउ सुगुरु कहइ ताप्रति ५७ रत्नकांड रत्नमय नाना प्रकार नाना प्रकाश वालुकानी बहुलता नासरिखी पंकका तेह तिविधि तिंग अजिताथ कहइ॥ नाम नाम कांति छि पालना पत्थर सरिखी कांति छि तिम आला की तिहिं नामा चु बहवी जाणवी नाकांति

पुढवीसु यस्सी यलव पहवत्तमपहवत्ता तेसिं तेएसु णेदमे ५७ रयणाभा सक्कराभा वालुयाभा आहिया पंकाभा पंकाभा ४

॥नेइमप ना ५ धूमनाउ तमः धका अत्यंत अंधकार॥ एणि प्रकारइं नारकी एह सात प्रकारे अतिजाणसु कहिया तीर्थंकरइं ५८ लोकनउ देस नारकना देस छि तेह सर्व नारकी कहिया विषय अधो लोकनइ विषइ एकलोक फलसरी रत्न लेते कुपातलमतम॥ पर्वी जोवामिल सी ल्याउ अंतर की कांति = मवनाह प्रनाकहीइ सातमी

धूमाभा तमा तमतमा इइ नेरइयाएए सत्तहा परिकित्तिया ५८ लोगस्स एगदेसंमि तेसव्वे उ वियाहिया इत्तो

कालनु विभाग विचार तिनारकीकहसुं आदि सपर्यंव सिनइ आदि सपर्य वसितथ एछि अंथ कार ५९ संतति प्रवाह आश्री विचा॥ अनइ अपर्यवसित ते अंत रहित प्रकारइ एह नारकी सार रिकाम॥ अनइ अपर्य वसितजेह नो अंत नथी वेदमो तथीम दा कहसु सदा॥ आयु स्थिति आश्री सादि सहित अनइ सपर्य वसित अंत १२५

कालविभागं तु तसिं वुच्छं चउव्विहं ५९ संतइं पप्पणाइया अपज्जवसियाविय ठिइं पडुच्च साइया सपज्जव

महीतपणों वि ६० सागरो॥ नारकीतरमाउ उत्कृष्टीकहीतीर्थंकरइं प्रथम रत्नप्रभा नारक पृथ्वीनइ वि दसहजार वरसनी पहेलाउ ६१ त्रिण सा पमपल्योनी॥ तरनी अपेक्षाइ प्रहज घन्याउ मीनउ तरनी अपेक्षाइ जाणिवी॥

सियाविय ६० सागरोवममेगं उ उक्कोसेण वियाहिया पढमाए जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ६१ तिण्णेव सा

गरोपमनुं उत्कृष्ट उकहि वे तीर्थंकरइं बीजी सर्करप्रभा नारकी एकसागरोपम पहिल वेदनइ प्रतर जघन्य॥ लाघुतरनी अपेक्षाइ॥ ६२ सात सागरोपमनुं आउखु उत्कृष्टीकही तीर्थंकरइं॥ त्रीजा वालुका नारकी वेदनइ॥ आऊखउ

गराउ उक्कोसेण वियाहिया दोच्चाए जहन्नेणं एगं तु सागरोवमं ६२ सत्तेव सागराउ उक्कोसेण वियाहिया तइ

प्रतर जघन्य पाकुं ता त्रिण सागरोपमपहिला प्रतर नी अपेक्षाइ जाणिवउ॥ ६३ दससागरोपमनउ आउखु उत्कृष्टुं कह्युं तीर्थंकरइ चोथी नारक पृथ्वी वेदनइ॥ सात सागरोपम प्रतरइ जघन्य पाकुं ता मनुष्य हिलाउ

याएजाहन्नेणं तिण्णेव उसागरोवमा ६३ दससागरोवमाउ उक्कोसेण वियाहिया चउत्थीए जहन्नेणं सत्तेव उ

तरनी अपेक्षाइ जाणिवी ६४ सातसागरोपमनउं आउखु उत्कृष्टुं कह्युं तीर्थंकरि गणधरि पांचमी धूमप्रभा इं नारकी निवहलि प्रतरइ जघन्य दससागरोपमनुं पहिल लाघुतरनी अपेक्षाइ ६५ बावीससागरोपमनुं

सागरोवमा ६४ सत्तरससागराउ उक्कोसेण वियाहिया पंचमीए जहन्नेणं दसउ सागरोवमा ६५ बावीससाग

आउखु उत्कृष्टुं कह्युं तीर्थंकरइ छट्ठी तमप्रभा नारकी वेदनइ प्रतर जघन्य॥ सत्तरसागरोपमनुं पहिला प्रतरनी अपेक्षाइ जाणिवउं ६६ तेत्रीससागरोपम नउ आउखउ॥ उत्कृष्ट उकहि॥ तीर्थंकर गणधरि सातमी तमतमप्रभा नारकीनइ उजघन्य॥

राउ उक्कोसेण वियाहिया छट्ठीए जहन्नेणं सत्तरससागरोवमा ६६ तित्तीससागराउ उक्कोसेण सत्तमीए जह

बावीससागरोपमनुं जाणिवउं ६७ जेतली आउखानी थिति नारकीनी कही तीर्थंकरइं तेह॥ जघन्यनी नारकीमरीनि इनारकी काय थित जाणिवी नारकी मरीनि नारकी न थाइ जघन्य पणि अनइ उत्कृष्ट उं आउखु कायथितकही आउखाजेतली हुइ थइ॥

न्नेणं बावीसं सागरोवमा ६७ जा चेव उआउ नेरइयाणं वियाहिया सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया भवे ६८

उत्तराध्ययन
१२१

अनंताकालनुउत्कृष्टे । नवसमयथकीप्रारंभीमांवेरहिं विजढंमिकहतांछोड्यइथकेंसएकह नारकीतिजवलीअंतर ६८ एहनारकीनावर्णथकी गं-
घनीरसथीजअंतमुहूर्तजघन्य। तेआपणानारकीमरीनीकायाइं॥ अंतरंपतलंजहृष्टइं थवपद प्रराणाइं॥

अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहन्नयं विजढंमि सएकाए नेरईयाणं तु अंतरं ६८ एएसिं वण्णओ चेव गं-

धथ रसथ फरस संस्थाननाआदेशथकीपणि विधानप्रकारसहस्रगमेछताइं ७० पंचेंद्रीयतीर्यंचजीव इविधाविहुंप्रकारकहियाती एकसमूर्छिम
का की थकी वीकरइं

धओ रसफासओ संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ७० पंचिंदियतिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया समुछिम

तीर्यंचजेंहनइं बीजातिर्यंचजेहनइं ग॥ ७१ समूर्छिमगर्भजतिर्यंचकहिया भत्स्यादिकतसमूर्छिमसजलजइजलमांहिं॥ खगआकाशइंचालइतेखचर। तेहजन
मनतीपर्यामि तेनइंविषइं त्रयप्रकारंजे तेहथलीत्रिहुंप्रकारेजाइजलच चालितेइजलचरकहीइंथलचरथोडागाइंइ॥ पंखीयाचकोकागमोरप्रमुख। ते।जचरना
नजकंपइ॥ हतिमनतीप्र थयिकइपइ। रथ जचररखचर इ भुधतेममूर्छिमजइंगर्भजतेइचालइतेथलचर। समुर्छिमगर्भजपणइ॥ जीवना

तिरिक्खाओ गब्भवक्कंतियातहा ७१ दुविहा ते तिविहा जलयरा थलयरा तहा खहयरायबोधव्वा तेसिंभेए

तदश्रहोमांपछिमु एकमाछिला॥ कछपकाछवा ग्राहकता॥ मकरमाछामाछि॥ सुसमारनामाजलचरजीवनीजाति॥ पंचेभेदेजलचरजीव ७३ लोकअसंख्यएक
कहकहतातुति ७२ नीजातिमाछी नीजा। तिमाछी त्यामीवर तानीजातिविशेष। तदकोणिवीछांगतरागनालाप्प्य कहिया तीर्थंकरइं॥ देशनिविधिजतल
नाजीव। माहिरहइ २

सुणेहमे ७२ मछायकछभाया गाहायमगरातहा सुसमारायबोधव्वा पंचहाजलयरातहा ७३ लोएगदेसेते

चरहिं परंतहीसघलाइचकहरा तेकतलाकालअंतरजलचर कहस्यंतेकतीर्थकरतंकहइ ७४ संतततप्रवाहमार्गआश्रीजी अनइअपर्यवसितअंतरहित
तेहस निविषइंरहवतंकहितेतीर्थ कालनुविलागविवरत कहइमादिरमपर्यवसितरश्र इहतिवारइंएजलचरजीव पणिबइं
घ ला करइं नादिअ अपर्यवसित अ ग्र। नादिकालना बइ॥

सवे नसव्वत्थवियाहिया एत्तोकालविभागंतु तेसिंवुछंचउव्विहं ७४ संतइंपप्पणाईया अपज्जवसियाविय

कायस्थितिनवस्थितिआ अनेइंसपर्यवसितआगलि ७५ एकपूर्वकोडिनी उत्कृष्टीकहीतीर्थकरइं आउखानीस्थितसमूर्छिमजल
थीमादिसाआदिसहीत॥ पणिछेहनतेंअंतबइं॥ चरजी वनी

ठिइंपडुच्चसाइया सपज्जवसियावि'य ७५ एकायपुव्वकोडीउ उक्कोसेणवियाहिया आउठिईजलयराणं

१२१

नवसमयथीआरंभीमांवेरहिंथकी ७६ पूर्वकोडिपृथुत्वनीकायस्थिति उत्कृष्टीकहीतीर्थंकरइं कायस्थितिजलचरनीजलचर॥ अंतेमुहूर्तजघन्यजयइंज
अंतर्मुहूर्त तेजघन्य रतनवजातलपृथुत्वकहीएइं मुआजचरमांहिंउपजइउसातआवा लचरमांहिंपूर्वेकहोतेअंतर्म
नवजगइंप त्कृष्टीजइ॥

अंतोमुहुत्तंजहन्निया ७६ पुव्वकोडीपुहुत्तंतु उक्कोसेणवियाहिया कायठिईजलयराणं अंतोमुहुत्तंजहन्नि

७७ अनंताकालनुउत्कृष्टोअंतर। अंतर्मुहूर्तजघन्यपणि पोतानीकायाजलचरसंबं वलीकेरीतइजलचरतुंजलचरमांहिं एहजलचरनावर्णथ
कथनिगोदमांहिंजाइतेहनणी धीछांडइथकइं आविंउएतलाकाळनिंअंतरिआवइ ७८ कीचेवपदपूर्ण गाइं

या ७७ अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तंजहन्निया विजढंमिसएकाए जलयराणंतुअंतरं ७८ एएसिंवण्णओचेव

गंधथकीरसथकीफरस संस्थाननाआदेशथकीपणि विधानप्रकारसहस्रगमेछयइं ७९ च्यारपगनाधणीचउपदकहीयइ। एबिहुंप्रकारथलचरजाइं चउ
सथकीपणि॥ परिसर्पकहतांउपरिसर्पभुज भुइंचालितेभुजचरा॥
परिसर्प

गंधउरसफासउ संठाणादेसउवावि विहाणाइंसहस्ससो ७९ चउप्पयायपरिसप्पा दुविहाथलयराभवे चउ

पदचिहुंप्रकार तेमुझकहतांप्रतइंसांभलउ ८० भुजचालइतेभुजंनाम गंडीकहतांकमलनाकोकसरी घोडाआ गाइबलद हाथीउंटआदि
भुजपरिसर्पउरहीइचालइ घाब्दातलाविपगछेहनातेगंडी दिकए बिंखुरार गंडीपदवीपसिंध
उरपरि॥ पहानपसहितपगातनपद॥ कखरा

प्पयाचउव्विहाउ तेमेकित्तियउसुण ८० एगखुराउखराचेव गंडीपयसणप्पया हयमाईगोणमाई गयमाईसी

हसिंहआदे ८१ भुजाबइचालइतेभुजपरि एणिप्रकारेसर्पबिहुंप्रकारेजाइं गोहनोरिलिप्रमुखभुजपरि तेहनुजपरिसर्पतिहनाएक ८२ लोकचउदराज
सणप्प हा॥ सर्पादिइचालइतेउरपरिसर्प सर्पआदिदेईउरपरिसर्प प्रकारनाअनेकप्रकारकइं नाएकादशविला

हमाईणो ८१ भुउरगपरिसप्पा परिसप्पाउविहाभवे गोहाइअहिमाईया इक्किकाणेगहाभवे ८२ लोएगदे

गनिविधिंत नहीसर्वत्रसघलइंचउदराज एतलाकल्याअनंतरकाल तेहथकीथलचरनुकहस्युंतेमादिर संततप्रवाहमार्गआश्रीएहे अनि अपर्यवसितछेह
जइंथलचर मांहिंइमकह्यातीर्थंकरइं॥ नउविलागविचरतउ॥ सपर्यवसितरसनादिनउपर्यवसितथए थलचरअनादिकालनाबइ थलचरतुआगलिअनंतइं
सघ जइ॥ चिहुंप्रकार॥ ८३ जाकालयलिअतन थी

सेतेसवे नसवत्थवियाहिया एत्तोकालविभागंतु तेसिंवुछंचउव्विहं ८३ संतईप्पप्पणाईया अपज्जवसियाविय

उपरबो
१३३

विउप्पकुव्वमाइया सपज्जवसियाविय ८४ पलिउवमाइंतिन्नि उ उक्कोसेणवियाहिया आउठिई थलयराणं अंतोमुहु

त्तंजहन्निया ८५ पलिउवमाइंतिन्नि उ उक्कोसेणवियाहिया पुव्वकोडीपुहुत्तेणं अंतोमुहुत्तंजहन्निया ८६ कायठिई

थलयराणं अंतरंतेसिमंभवे कालमणंतमुक्कोसं अंतोमुहुत्तंजहन्नयं ८७ विजढंमिसएकाए थलयराणंअंतरं

चम्मेउलोमपक्खीय तइयासमुग्गपक्खीया ८८ विययपक्खीयबोधव्वा पक्खिणोयचउव्विहा लोएगदेसेतेसव्वे न

सव्वत्थवियाहिया ८९ संतइंपप्पणाइया अपज्जवसियाविय ठिइंपडुच्चसाइया सपज्जवसियाविय १९० पलिउ १३३

वमस्सभागो असंखिज्जइमोभवे आउठिईखहयराणं अंतोमुहुत्तंजहन्निया १९१ असंखभागोपलियस्स उक्को

सेणउ साहिउ पुव्वकोडीपुहुत्तेणं अंतोमुहुत्तंजहन्निया १९२ कायठिईखहयराणं अंतरंतेसिमंभवे अणंतकाल

मुक्कोसं अंतोमुहुत्तंजहन्नयं १९३ वण्णओगंधओचेव रसफासओ संठाणादेसओवावि विहाणाइंसहस्ससो १९४

मणुयादुविहभेयाउ तेमेकित्तयउसुणह संमुच्छिमायमणुया गब्भवक्कंतियातहा १९५ गब्भवक्कंतियाजेउ तिविहा

तेवियाहिया अकम्मकम्मभूमीय अंतरदीवगातहा १९६ पन्नरसतीसइविहा भेयाअट्ठवीसई संखाउकम्मसोतेसिं

इइएसावियाहिया १९७ संमुच्छिमाणएसेव भेउहोइआहिउ लोगस्सएगदेसंमि तेसव्वेवियाहिया १९८ संतइंपप्पणाइया

अपज्जवसियाविय ठिइंपडुच्चसाइया सपज्जवसियाविय १९९ पलिउवमाइंतिन्नि उ उक्कोसेणवियाहिया आउठिई

गर्भज मनुष्यनी जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी २०० पल्योपम त्रिणनी उत्कृष्टी कहीइ वीतरागि पूर्वकोडि पृथक्त्व जघन्य उत्कृष्टे १ नव लगी पृथक्त्व कहीइ ... तर्मुहूर्त पूर्वकोडिवाला ... लगी

उ०प०टबु मणुयाणं अंतोमुहुत्तं जहन्निया २०० पलिउवमाइं तिन्नि उ उक्कोसेण वियाहिया पुव्वकोडीपुहुत्तेणं अंतोमुहु १

१२३

कायस्थिति मनुष्यनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी अनंतो काल उत्कृष्टो अंतर अंतर्मुहूर्त जघन्य ... २ एह मनुष्यना वर्णथकी गंधरस फरसथकी जीवहणी तेहमांहि ... संस्थानथकी ... पणि ... नउ मनुष्यनई अंतरनई रह्या आवइ तउ

कायठिई मणुयाणं अंतरं तेसिमं भवे अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहन्नियं २ एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफास

संस्थानना आदेशथकी पणि विधानप्रकार सहस्रगमे जाणइ ३ देवता चिहुं प्रकारे कह्या तेमु कहुं तो सांभलो। तीर्थंकरइ श्रीहो शिष्य भूमिका इहवीने विषे उपना। ज्योतिषीनवि ... मिलवन पति चमरेंद्रादि। मानि उपना कविविधश्री तरि पर्वत ... निवासी ... लिक, चाली

ओ संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ३ देवा चउव्विहा वुत्ता ते मे कित्तयओ सुण भोमिज्जवाणमंतर जोइसवेमा

सौधर्मादिक विमानविषइ उपनाते विमानवासी ४ दसप्रकार भवनवासी आठप्रकारे वाणमंतर कहीइ कोउ कीडनिचालइ तेवनचर पांचप्रकार ज्योतिषी कहीइ बिहुं प्रकारे वैमानिक देवता कहीइ ५ असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार ...

णिया तहा ४ दसहा उ भवणवासी अट्ठहा वणचारिणो पंचविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तहा ५ असुरानागसुव

र्णकुमार ३ विद्युत ४ अग्निकुमार ५ आदिया कहीया द्वीपकुमार ६ उदधि ७ दिसि ८ वायुकुमार ९ स्तनित कुमार १० ए दसभवनपति जाणवा कहीइ ६ पिशाच १ भूत २ यक्ष ३ राक्षस ४ किंनर ५ कुमार ... दसप्रकार १०

ण्णा विज्जूअग्गीअ आहिया दिवोदहिदिसावाया थणिया भवणवासिणो ६ पिसायभूयाजक्खाय रक्खसाकिन्नराय

किंपुरुष ६ महोरग ७ गंधर्व ८ एआठप्रकारे वाणव्यंतर ७ चंद्रमा १ सूर्य २ नक्षत्र ३ ग्रह ४ तारा ५ नाम ... मानुष्यक्षेत्र बाहरि मानुष्यक्षेत्रमांहि पांचप्रकारे ज्योतिषी तेहमांहि थिरज्योतिषी ... चाली ... वली। चरिज्योतिषी

किंपुरिसा महोरगा य गंधव्वा अट्ठविहा वाणमंतरा ७ चंदसूरा य नक्खत्ता गहतारागणा तहा ठियाविचारिणो चेव पंचहा जो

१२३

तिषी देवता ८ विमानवासी ते वैमानिक देवता बिहुं प्रकारे कह्या। तीर्थंकरइ ... कल्पनी ... तेह कल्पनई अतिक्रमी ... कल्पातीत ... देवलोक उपना तेहना ... ग्रैवेयक ... कल्पातीत देवता ... मानिकादिक ... वसिम ९

इसिया ८ वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया कप्पोवगा य बोधव्वा कप्पाईया तहेव य ९ कप्पोवगा बारसहा

सौधर्मनामा १ ईशाननामा देव २ सनत्कुमार देव ३ माहेंद्रदेव ४ ब्रह्मदेवलोक ५ लांतकनामा देवलोक ६ महाशुक्र देवलोक ७ सहस्रार देवलोक ८ आनत देव ९ प्राणत देवलोक १० आरण देवलोक ११ अच्युत देवलोकना देवता १२

सोहम्मीसाणगा तहा सणंकुमारमाहिंदा बंभलोगा य लंतगा १० महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा आरणा अच्चु

कनादे कल्पातीत नवग्रैवेयक ११ बिहुं प्रकार कह्या तीर्थंकरइ ... वैमानिक देवता ... ग्रैवेयकनादेवता पांचप्रकार १२ नवग्रैवेयक ... अनुत्तर

या चेव इइ कप्पोवगा सुरा ११ कप्पाईया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया गेविज्जाणुत्तरा चेव गेविज्जा नवविहा तहा १२ हिट्ठि

मांहि हेठलु हेठलनी ... मध्यम ... मध्यविचलात्रिकनी अपेक्षाइ हेठलु ... उपरला ... मध्यमत्रिकनी ... ग्रैवेयकना देवता १३

माहिट्ठिमा चेव हिट्ठिमामज्झिमा तहा हिट्ठिमाउवरिमा चेव मज्झिमाहिट्ठिमा तहा १३ मज्झिमामज्झिमा चेव मज्झिमाउवरिमा त

उपरिलात्रिकनी अपेक्षाइं हेठलुं एतलई सातमुं ग्रैवेयकनादेवता। उपरिलात्रिकनी अपेक्षाइ एतलइ आठमुं ग्रैवेयकना देवता १४ उपरलात्रिकनी अपेक्षाइ एतलइ नवमुं ग्रैवेयकना देवता। एणेप्रकार ग्रैवेयकना अनुत्तर देवता कह्या विजयनामा अनुत्तर पहिलो। बीजुं वैजयंतनामा अनुत्तर जयंतनामा त्रीजुं ... अपराजित ... देवता

हा उवरिमाहिट्ठिमा चेव उवरिमामज्झिमा तहा १४ उवरिमाउवरिमा चेव इइ गेविज्जगा सुरा विजयावेजयंता य जयंताअपरा

जितनामा ४ सर्वार्थसिद्धनामा पांचमुं ए पंच अनुत्तरविमान अनुत्तरविमानना देवता कहीइ ... एणिप्रकारि ... आनकप्रकार ... विमानिकदेवता कह्या देवलोक १२ ग्रैवेयक ९ अनुत्तर ५ नी अपेक्षाइ लोकाग्र ... तेह सर्व ... वैमानिकदेवता ... १६ लोकनि विषि ... अतिरिक्त ... ३

जिया १५ सव्वट्ठसिद्धगा चेव पंचहाणुत्तरा सुरा इइ वेमाणिया एए णेगहा एवमायओ १६ लोगस्स एगदेसंमि ते सव्वे प

११उपरचु
१३४

रिकित्तिया इत्ताकालविजागेंतु तमिउ ववउविहं १७ संतइंपप्पणाइया अपज्जवसियाविय ठिइंपडुच्च साइया

सपज्जवसियाविय १८ साहियंसागरंइक्कं उक्कोसेणठिईभवे भोमिज्जाणजहन्नेणं दसवाससहस्सिया १९ पलिउवम

मेगंतु उक्कोसेणठिईभवे वंतराणंजहन्नेणं दसवाससहस्सिया २० पलिउवममेगंतु वासलक्खेणसाहियं पलिउवम

मेगंसागरा जोइसेसुजहन्निया २१ दोचेवसागराइं उक्कोसेणविआहिया सोहम्मंमिजहन्नेणं एगंचपलिउवमं २२

सागराणियसत्तेव उक्कोसेणठिईभवे ईसाणंमिजहन्नेणं साहियंपलिउवमं २३ सागराणियसत्तेव उक्कोसेण १३४

ठिईभवे सणंकुमारेजहन्नेणं दुन्निउसागरोवमा २४ साहियासागरासत्त उक्कोसेणठिईभवे माहिंदंमिजहन्नेणं

साहियादुन्निसागरा २५ दसेवसागराइं उक्कोसेणठिईभवे बंभलोएजहन्नेणं सत्तउसागरोवमा २६ चउद्दससागराइं

उक्कोसेणठिईभवे महासुक्केजहन्नेणं चउदससागरोवमा २७ अट्ठारससागराइं उक्कोसेणठिईभवे सहस्सारेजहन्ने

णं सत्तरससागरोवमा २८ सागराअउणवीसंतु उक्कोसेणठिईभवे आणयंमिजहन्नेणं अट्ठारससागरोवमा २९ वी

संतुसागराइं उक्कोसेणठिईभवे पाणयंमिजहन्नेणं सागराअउणवीसइ ३० सागराइक्कवीसंतु उक्कोसेणठिईभवे

आरणंमिजहन्नेणं वीसइसागरोवमा ३१ बावीससागराइं उक्कोसेणठिईभवे अच्चुयंमिजहन्नेणं सागराइक्कवीसइं

३२ तेवीससागराइं उक्कोसेण पढमंमिजहन्नेणं बावीसंसागरोवमा ३३ चउवीससागराइं उक्कोसेण बीयंमिजहन्ने

उत्तरज्झ १२५

त्रेवीससागरोपम ३५ प० चवीससागरोपमनी उत्कृष्टुं आउखुं कहिउं त्रीजाग्रीवेकनि विषइं देवतानी जघन्य चोवीससागरोपम ३६ छवी

एं तेवीसंसागरोवमा ३५ पणवीससागराइं उक्कोसेणं ठिईभवे तइयंमि जहन्नेणं चउवीसंसागरोवमा ३६ छवी

ससागरोपमनी उत्कृष्टी स्थितकहइ आउखानी चोथाग्रीवेकनां देवतानी जघन्य थी सागरोपम पचवीस ३७ सागरोपम सतावीस उत्कृष्टी पंचमाग्रीवेकनइ विषि देवतानी जघन्य थी सागरोपम छ

ससागराइं उक्कोस चउत्थंमि जहन्नेणं सागरोपणवीसई ३७ सागरोसत्तवीसंउ उक्कोस पंचमीजहन्नेणं सागरोछवी

वीसनी ३८ सागरोपम अठावीसनी उत्कृष्टी छठाग्रीवेकनां देव॥ आउखानी स्थिति तानि जघन्य थी सागरोपम सतावीसनी ३९ सागरोपम उगणत्रीसनी उत्कृष्टी॥ सातमा ग्रीवेकनि विषि देवता आउखानी स्थितकहइ

सइ ३८ सागरोअठवीसंउ उक्कोय छठंमि जहन्नेणं सागरासत्तवीसइ ३९ सागरोउगणतीसंउ उक्कोसेय सत्तम

नी जघन्य थी सागरोपम अठावीसनी ४० त्रीससागरोपमनी उत्कृष्टी॥ आठमाग्रीवेकनइ विषि सागरोपम उगणत्रीस ४१ सागरोपम एकत्री तथा आउखानी कहइ देवतानी जघन्य थी

मिजहन्नेणं सागरोअठवीसइ ४० तीसंउसागराइं उक्कोय अठमंमि जहन्नेणं तीसईसागरोवमा ४१ सागराएकत्ती

सनी उत्कृष्टी नवमाग्रीवेकनि विषि त्रीससागरोपम ४२ तेत्रीससागरोपमनी उत्कृष्टी स्थितकहइ चारविजयादिक विजय वैजयंत जयंत अपराजित ए विमाननि विषइ तथा आउखानी देवतानी जघन्य थी

संउ उक्कोय नवमंमि जहन्नेणं तीसईसागरावमा ४२ तेत्तीससागराइं उक्कोसेणं ठिईभवे चउसुंपि विजयाईसु ज

घन्य थी एकत्रीससागरोपम ४३ जघन्यथी उत्कृष्टी पणि नही तेत्रीससागरोपम महाविजय मोटउं विमान सर्वार्थसिद्ध तिहां देवतानी स्थिति कहिइं ४४ जे देवतानी तीर्थंकर गणधरइ॥

हन्नेणेकतीसइ ४३ अजहन्नमणुक्कोसं तेत्तीसंसागरोवमा महाविमाणसव्वट्ठे ठिईएसा वियाहिया ४४ जा १२५

आउखानी स्थिति देवतानी तीर्थंकरइ कही तेतली जातिइं देवतानी॥ जघन्य पणि उत्कृष्टी पणि कायस्थिति कहीजे देवनि कायस्थिति तेतली अनंतकाल उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्त जघन्य

जाचेवउआउठिई देवाणंतुवियाहिया साठिईकायठिई जहन्नुक्कोसिआभवे ४५ अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तंज

घन्यथी आपणी पोतानी कायाथकी मरी ४६ अनंतकाल उत्कृष्टथकी मांहि फरी नवसम आनतनवमा देवलो॥ ग्रीवेक आदि देवनां अंतर

हन्नयं विजढंमिसएकाए देवाणंहुज्जअंतरं ४६ अणंतकालमुक्कोसं वासपुहुत्तंजहन्नयं आणयाईणदेवाणं गेवि

संख्याता सागरोपम उत्कृष्टथकी अंतर जेह॥ अनिनव वरस जघन्य॥ अनुत्तरविमानवासी देवतानां॥ ए देवतानि अंतरकहइ ४७ ४८

ज्जाणंतुअंतरं ४७ संखिज्जसागरुक्कोसा वासपुहुत्तंजहन्नयं अणुत्तराणयदेवाणं अंतरंतुवियाहियं ४८ एएसिं

वर्णथकी गंधथकी रस फरसथकी संस्थानथकी आदेशथकी पणि विधान प्रकार सहस्र गमे कहइ ४९ संसारी जीव च्यारगति नाअनि सिद्धना जीव ए बिंहु प्रकारे जीव विशेष कहिया तीर्थंकरइं

वण्णओचेव गंधओरसफासओ संठाणादेसओवावि विहाणाइंसहस्ससो ४९ संसारत्थायसिद्धाय इइजीवावियाहिया

रूपीजे अजीव ते बिहुं प्रकारे॥ अरूपी अजीव ते बिहुं प्रकारे कहिया तीर्थंकरइ ५० ए प्रकारइं जीव अजीव सद्दहीइं सर्वनयनइं अनुमतमांहि रमइ॥

रूविणोचेवरूवीय अजीवाद्दुविहाविय ५० इइजीवमजीवेय सुच्चासद्दहिऊणय सव्वनयाणमणुमए रमिज्जासंजमे

तिहार पछी घणा वरस सामान्य चारित्र पालीनइ तपसंयम कीया पछी आगमि करीसइं आपणो आत्मा संलेखनाइं करइ ५२ साधु चारित्रीउं बार वरस

मुणी ५१ तओबहूणिवासाणि सामन्नमणुपालिया इमेणकम्मजोगेण अप्पाणंसंलिहेमुणी ५२ बारसेवउवासाइं सं

एहवी मलेस्याइं उत्कृष्टी जघन्य । संवच्छर कहतां वरस ताईं मध्यम तप मध्यम कालिवी । छमासी नी तो कहां एमनि मेले पना दुवाला करीं वली तेह बाद आयाम वीतराग ५३ पहिली तिहां करिना । वरस च्यार लगी तउ ॥ विगइ नो परित्याग करइ । बीजा उपरीलो एतलि आयंबिल नीवी करइ॥

गलऊ कोसियाम्त्वे संवच्छरमज्झिमिया छम्मासाय आदन्निया ५३ पढमेवासचउक्कंमि विगईनिज्जूहणंकरे बी-एवास
च्यार लगी॥ विचित्र यति जो छट्ठ अट्ठम दिकघणे तप करइ उप वासादिक ५४ एकउपवास नइ पारणि आंबिल इहवु करी तिहां मास संवच्छर वरस लगी एतलि वरस रहवा॥ निकार पछी संवच्छर अर्द्ध एतलि छमास लगी अनि विकृष्ट तप छठ अट्ठमादिक आचरइ ५५ निकार पछी मास ठांम वरस अर्द्ध संवच्छर एतलि वरस मास ठांम धवा
चउक्कंमि विचित्तंतवंचरे ५४ एगंतरमायामं कटुसंवच्छरेदुवे ततोसंवच्छरद्धंतु नाइविगिठंतवंचरे ५५ ततोसंवच्छर
एतलि विकृष्ट आक करइ । एतजो विनो बीमार आयाम सर्व इ आयाम मास एतलि तेह इग्यार मास करइ ५६ एतलि वरस रहवा करइ विचाल इ अनेक तप॥ सर्व लगी मुनि च्यार रीते मास छमास॥ आकरो तप करि तिहां आंबिल करि निरंतर पाचमासि करइ नइ विष इ॥ करइ आदि विचली आंबिल करि एतलइ १२ वरस मध्यम

द्धं विगिठंतवंचरे परिमियंचेवआयामं तम्मिसंवच्छरेकरे ५६ कोडीसहियमायाम कटुसंवच्छरेमुणी मासद्धं
मास पमण का । आहारादिक परिहरीनि॥ ५७ कंदर्पी भावना १ आभिओगी भावना २ किल्बिषी भावना ३ मोहनी भावना ४ असुरनी भावना ५ पांच कहीं भावना उरगतिनी॥ मरण निं अवसरि विराधना करइ करीं॥ संक्षेप परिहरी नइ तुमारि कारण थकी दुर्गति कहीइ आज्ञा विराधक जाण वत उ कारि

मासिएणंतु आहारेणतवंचरे ५७ कंदप्पमाभिउगं किब्बिसतंमोहमासुरतंच एयाउदुग्गईउ मरणंमिविराहियाहुंति
५८ असार निस्सार करी जाणिवा॥ नियाणुं करइं अथवा नियाणा करइं करइं । एणि प्रकारइ जे मरणि। तेह जीव नइ वली दुर्लभ बोधि कहइ ५९ देव तत्त्व गुरु तत्त्व धर्म तत्त्व ए आदिक नाश करना मिथ्यादर्शन नइ रागि रातां । जीव नी हिंसा आदिक ना घातक । मरइ मरणं मइ जीव । एतलि परिमिति जिन धर्म पामिवु दोहिलुं॥ नाम दीक्षा नइ बिहुं पइ रत्ता॥ ए बे तत्त्व सम्यक्ष॥ ज्ञान रत्ता नइ

५८ मिछादंसणरत्ता सनियाणाहुंतिहिंसगा इइजेमरंतिजीवा तेसिंपुणदुलहाबोहि ५९ सम्मदंसणरत्ता अनि
शुक्ल लेस्या निर्मल परिणाम इं नाथ । एणि प्रकारइं जे मरण तेह जीव नइ बोधि बीज सुलभ तुरत । कृष्णादिक ६० मिथ्यात्व दर्शन निर्निबन्धे तजे निरगाइं । गाम ग्वाले । तप बेची नियाणो करनार सो नगरादिक अथवा सदृश्य । जीव प्राणी॥ धर्म सहित तउ जाण इ॥ कृष्ण लक्षी भेद को गाम नगरादिक नाम । ते निहत्था निक स्वलेस्या

याणो सुक्किलेसमोगाढा इइजेमरंतिजीवा सुलहातेसिंभवेबोहि ६० मिछादंसणरत्ता सनियाणाकिण्हलेसमोगाढा
पाद्र्यो अध्यवसाय सहित बइ = ३१

एणि प्रकारि मरण लहिं जीव तेह जीव नि पणि आगलि सवली बोधि बीज धर्म तेहि दुर्लभ पामिवु । ६१ आगम ना वचन निं विषइं रत्ता॥ श्री जिन आगम ना वचन जिको इं करइ तेहि मिथ्यात्वी मल हीन मल निवारी भाव इ करी नि एतलि जिन वचन मधुर॥ क्षायोपशमिक संसार

इइजेमरंतिजीवा तेसिंपुणदुलहाबोहि ६१ जिणवयणेअणुरत्ता जिणवयणंजेकरंतिभावेणं अमलाअसंकिलिठा
ते जीव संसार थोडो भमी अंत कालि धर्म एतलि धाम करी मोक्ष जाइ॥ ६२ बालमरण १ अकाम मरण २ ते बहु वार मरइ । अनिच्छा काम नी वांछा विना तिहां दुःख सहइ अकाम मरण घणी वार करइ॥ जिनो मरइ इह लोक बापडा रांक घणा दुःख लहइ॥ परंतु जिन ना वचन नइ जाणइ वली ज्ञान नी आज्ञा फल लहइ नहीं॥

तहुंतिपरित्तसंसारी ६२ बालमरणाणिबहुसो अकाममरणाणिबहुयाणि मरिहिंतितेवराया जिणवयणंजेनयाणंति
६३ बहु आगम अभिज्ञान सूत्र अर्थ ना जाण॥ एणि प्रकारइ गुणी । आचार्य उपाध्याय स्थविर आगला॥ घणुं बहु उपाय करी समाधि उपजावइ गुणग्राही॥ करइ नइ ए लता॥ आलोयणा आलोचना सांभलवा ने योग्य॥ कंदर्प कामकथा क्रीडा इत्यादिक । ६४ चेष्टा करइ ए च्यार करइ॥

६३ बहुआगमविन्नाणा समाहिउप्पायगायगुणगाही एएणंकारणेणं अरिहाआलोयणंसोउं ६४ कंदप्पकुक्कुयाइं
बोली हास्य विनोद आदि नइ शील कहतां फल पाखंड रसिक प्रवाह इत्यादिक हास्य नइ विकथा । विम्हापन कहतां विस्मय पमाडि उपरकि नेत्र निकंदर्पी नीला ६५ मंत्र योग जोगी भूति आदि । कर्माइ कामना इं सूतक दिस निं मालग्या योग कहतां तेह । दोनि कर्म रक्षा निमित्त घर माहि बाहिर कौतुकादि

तहसीलसहावहासविगहाहिं विम्हावेंतायपरं कंदप्पभावणंकुणइ ६५ मंताजोगंकाउं भूईकम्मंचजेप
कहइ कौतुक । ज्ञाता उपजावती हिंतिक आभी योगी भावना आभियोगादेवता ६६ श्रुत ज्ञानादिक ना अवर्णवादी केवली । धर्माचार्य गुरु नी आशातना करतउ एहवा । माया करतउ कुसुमिकरइ । भवनई अर्द्धइसर सवला । नाना रवति योगपना वर्णकरइ ए विभ नीत पाक वली ज्ञान ना दोष ना बोलणहार । ति हीन मूर्ख एहवु कहतउ संघ । पणा अवगुण धांन सली दिंगी देवता माहि इंजाइ ए वर्ज्य॥ एहवी मायं नीतिं दाक रइ । नेरनि कहता

उंजंति सायरसइढिहेउं अभिउगंभावणंकुणई ६६ नाणस्सकेवलीणं धम्मायरियस्ससंघसाहूणं माईय
अवगुण कहि हिंडना । किल्बिष बंधी भावना । किं ६७ घणा काल लगी रोस नी वासना चिरं जा तिम वली निमित्तादिक वली मादिक श्री तरकादिक एणि बिहुं प्रकारि विहं अवता अवर्णवादि । क्लिष्ट दुर्गता नि किल्बिषीया मुकई नदी अथवा आधि पाची वासी ते दानि वि सज्ज्या इ इ निमित्त सहाय कारणि बालणा २॥ देवता माहि इज इ उपजइ॥ करी निर्धारण न एरो सच हा वइ नइ पणि निमि तेनो अव साहार॥

वन्नवाई किब्बिसंभावणंकुणई ६७ अणुबद्धरोसपसरो तहयनिमित्तंमिहोइपडिसेवी एएहिंकारणेहिं

उत्तरसू
१३१

अथ पर्यंते नतिवं तस्य रक्षणं। निग्रहमणोरित्याराकरइ। जी ज्ञा आराधा

असुरपरीवाररवनीअसुरनीलाव॥ ८६ एवं आत्मस्थ आरक्तपरिइकरीनिवेदनात्॥ ज्ञान आगतितेनविशेषाते ... गतीनाम आराधना...

आसुरीं भावणं जणइ २६६ एवं गच्छ विमलतरकणेच्च काले एवं कालपवेसो अणागाम्मरमेवा जम्म णामर

णाणिबंधंति २६७ इय पाउकरे बुद्धे नायएपरिनिव्वुए छत्तीसं उत्तरज्झाए भवसिद्धियसमिए त्ति बेमि २६८ इति

जीवाजीवविभक्तिअध्ययनं अर्थात् समाप्तं संपूर्ण ३६ अथ एवं छत्तीस उत्तराध्ययन एह ग्रंथ उत्तराध्ययननाम ... संसार

कहिउं श्रीभगवंतइं एह छत्तीस अध्ययन॥ कल्याणकारि निर्युक्तिनुकरणहार। दिगम्बराचार्य वडइं मुक्तिगामी थइं

श्रीजीवाजीवविभत्ती अज्झयणं सम्मत्तं ३६ अथ निर्युक्तिकार एतद्ग्रंथमाहात्म्यमाह जे किर भवसिद्धीया परित्तसं

थोडा संसारी भव्य ते निश्चइं भव्यजीव एहवा थइं छत्तीस उत्तराध्ययन। १ तेह कारणथकी जिनाज्ञि। अनंतगमसहित तिहां गमाक सहित ... अध्ययन ... अनंता अर्थ तेणइं अनंतां ज्ञानी कहिया ... विषयाइं सहित ...

सारीया भव्वा य ते किर पढंति ए छत्तीसं उत्तरज्झाए १ तम्हा जिणपण्णत्ते अणंतगमपज्जवेहिं संजुत्ते अज्झाए जहाजो

जोग्य। गुरु धर्माचार्यनु उत्तराध्ययनना २ ... गुरुपरंपराइं विधिइं ... एणि प्रकारिं जिके कोइ साधु भवील बीजा नइ उपदेस ... तेह थाइ निर्जराइ ... कर्मनी विशुद्धि ... प्रसाद पामी ... विधि करी ... सूत्र अर्थ ... प्राणी जाणवु ...

गं गुरुप्पसाया अहिज्जिज्जा २ जाणविहिं उवहाणा एवं गुणजुत्तं अज्झयणाणं सोमज्झविहिणा सोयाव्वइ त्ति

कर्मक्षपावि निर्मल थाइ ३ जेह विनय उत्तराध्ययन नइ विषइं आदर सहित ... जे जीवने ... सुधर्मास्वामि ... अक्षर ... जे जीव इस वइं ...

क्खरं विउलं ३ जस्साढत्ता एए कहवि समप्पंति विग्घरहियस्स सो लहिइ सुहसमीयं वरमामंति ४ इति

नुं ज्ञानवंते १ १३१

उत्तराध्ययननी चूलिका एतलाक ... अध्ययनना नामकहइ छइ॥ प्रथम विनय अध्ययन। २ परीसह अध्ययन २ चउरंगीया अध्ययन ३ असंखय अध्ययन ४ अकाममरण अध्ययन ५ खुड्डनियंठीया अध्ययन ६ एलकाख्य अध्ययन ७ कपि

कुलियासमत्ता अथ अध्ययननामानि विणयसुयपरीसह चउरंगिज्ज असंखय अकाम खुड्डनियंठिज्ज उरब्भिज्ज काबि

लनामा अध्ययन ८ नमिप्रव्रज्या अध्ययन ९ द्रुमपत्रीया अध्ययन १० बहुश्रुत अध्ययन ११ हरिकेशीनामा अध्ययन १२ चित्रसंभूतिनामा अध्ययन १३ इषुकारीनामा अध्ययन १४ सभिक्षुनामा अध्ययन १५ ब्रह्मचर्यनामा अध्ययन १६ पाप

लिज्जं नमिपव्वज्जा दुमपत्तं १० बहुसुयं हरिएसिज्जं चित्तसंभूइ उसुयारिज्जं सभिक्खु बंभगुत्ति १६ पाव

श्रमणीया अध्ययन १७ संजतीनामा अध्ययन १८ मृगापुत्रीया अध्ययन १९ निग्रंथीनामा अध्ययन २० समुद्रपालीया अध्ययन २१ रहनेमीया अध्ययन २२ केशीगौतम अध्ययन २३ अष्टप्रवचन माता अध्ययन २४

समणिज्जं संजइज्जं १८ मियापुत्तियं नियंठिज्जं २० समुद्दपालीयं रहनेमी २२ केसीगोयम समिईओ अट्ठ पवयणमा

विजय जयघोषनामा अध्ययन २५ सामाचारीनामा अध्ययन २६ खलुंकारवनामा अध्ययन २७ मोक्षमार्गनामा अध्ययन २८ सम्यक्त्वपराक्रमनामा अध्ययन २९ तपोमार्ग अध्ययन ३० चरणविधिनामा अध्ययन

जन्नइज्जं सामायारी २६ खलुंकिज्जं मोक्खमग्गगई सम्मत्तपरक्कमं सुगमं ३० तवमग्गं चरणविहीऊ

प्रमादस्थानकनामा अध्ययन ३२ अष्टकर्मप्रकृतिनामा अध्ययन ३३ लेश्यानामा अध्ययन ३४ अणगारमार्गनामा अध्ययन ३५ जीवाजीवविभक्तिनामा अध्ययन ३६ ... बत्रीस सूत्र ... मुक्तिगामी ... कल्याण

पमायठाणं च कम्मपयडी ३३ लेसा अणगारमग्गं जीवाजीवविभत्ती बत्तीसं जिणगणहरसुणिवुत्ते उत्तर

ध्ययनात ... नमस्कार ५ ... सूत्र अर्थ करी परिपूर्ण ग्रंथ ... हजार मान ... श्लोक संख्या ... रचित ...

ज्झयणे पणिवयामि ३५ इति श्रीउत्तराध्ययननामानि सूत्रार्थमीलनेग्रंथसंख्यायामयमसहस्रमितिः॥ श्री॥ वा।

D. B. H. DAJI ... MEDICAL
डाक्टर भाऊदाजी ...

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June, 2017

३५८ब्र
१५९

ना·पृष्ठ प·२३

१३६